दिल्ली-डायरी

[ता० १०-९-'४७ से ३०-१-'४८ तकके प्रार्थना-प्रवचनोंका संग्रह]

गांधीजी

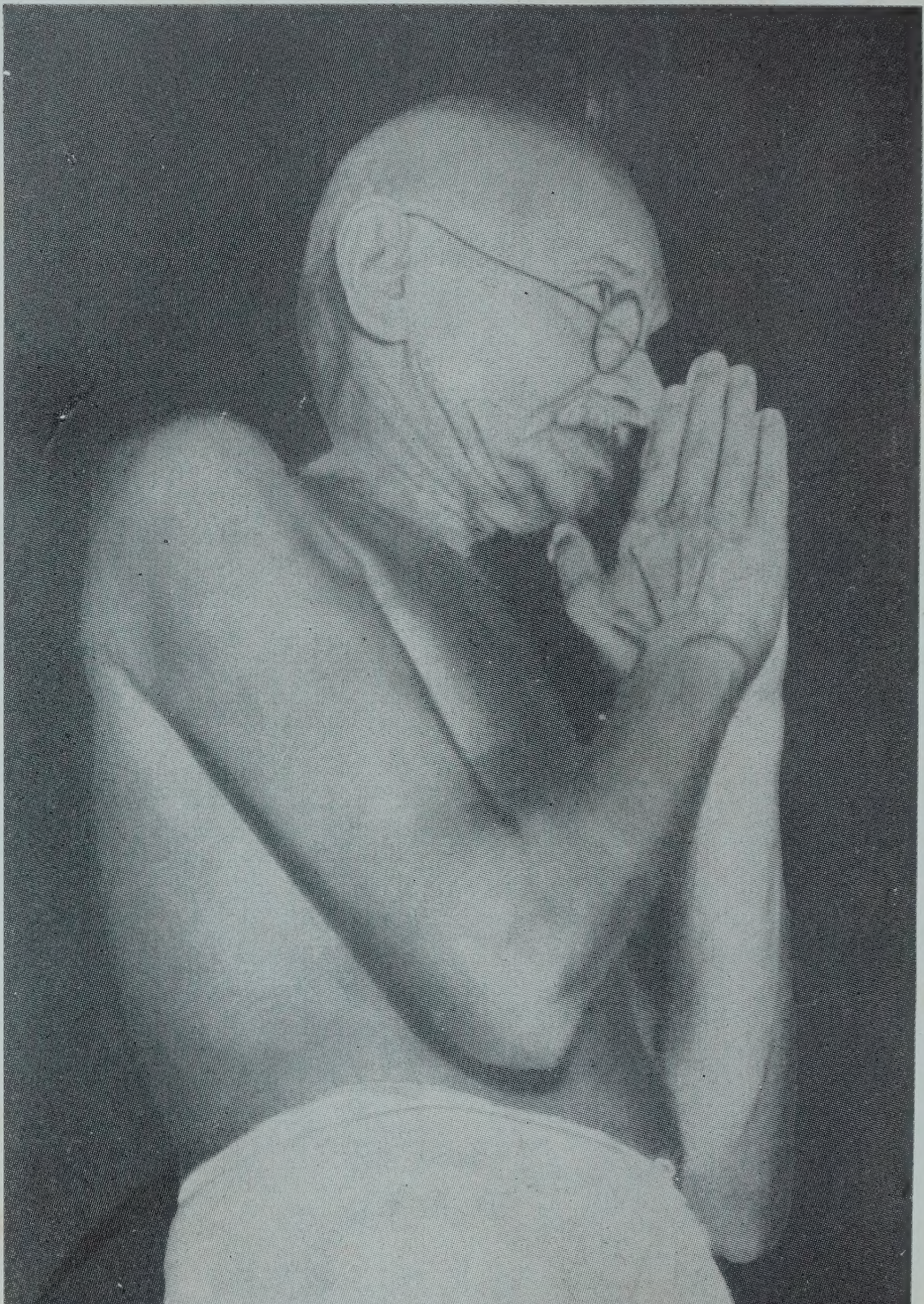
"मैं जो रोज बोलता हूं, जो बहस करता हूं, वह भी प्रार्थना ही है।"

— गांधीजी

नवजीवन

नवजीवन प्रकाशन मंदिर

अहमदाबाद-१४



दिल्ली-डायरी

[ता. १०–९–'४७ से ३०–१–'४८ तकके प्रार्थना-प्रवचनोंका संग्रह]

गांधीजी

"मैं जो रोज बोलता हूं, जो बहस करता हूं, वह भी प्रार्थना ही है।"
— गांधीजी

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर
अहमदाबाद–१४

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद–१४

पहली आवृत्ति ६०००
पुनर्मुद्रण ४०००

रु० ३.०० जनवरी, १९६०

प्रकाशकका निवेदन

१५ अगस्त, १९४७ के पहले और अुसके बादकी अनेक घटनाओंसे भरे हुअे दिनोंका अितिहास आज ही बयान करनेका काम बेवक्तका माना जायगा। फिर भी अितना तो निश्चयके साथ कहा जा सकता है कि अिन दिनोंमें गांधीजीने अपनी प्रार्थना-सभाओंमें अिकट्ठे होनेवाले श्रोताओंके सामने जो प्रवचन दिये थे, वे अिस अितिहासका अेक अमर अध्याय बन जायंगे। अीश्वरकी प्रार्थनामें अपार श्रद्धा और भक्ति रखनेवाले अिस पुरुषके हृदयसे निकले हुअे प्रवचनोंसे अुन दिनोंमें अेक अितिहास रचा गया है। खुद गांधीजीने अपने अेक प्रवचनमें कहा है कि "मैं जो रोज बोलता हूं, जो बहस करता हूं, वह भी प्रार्थना ही है।" (पृ० २९९)

अिन प्रवचनोंके स्वभावतः तीन भाग किये जा सकते हैं: (१) नोआखालीकी यात्रामें दिये गये प्रवचन; (२) कलकत्तेमें दिये गये प्रवचन; और (३) जीवनके अन्तिम दिनोंमें दिल्लीमें दिये गये प्रवचन। अिस छोटीसी पुस्तकमें गांधीजीके दिल्लीके प्रवचनोंका संग्रह किया गया है। दूसरे दो भागोंके प्रवचन भी जल्दीसे जल्दी अलग अलग पुस्तकोंमें अिकट्ठे करनेका हमारा अिरादा है।

अिस संग्रहको स्वतंत्र हिन्दुस्तानके लिअे गांधीजीका अन्तिम सन्देश कहा जा सकता है। भगवान करे अुनकी कल्पनाके हिन्दुस्तानको प्रत्यक्ष रूप देनेके हमारे प्रयत्नोंमें अुनकी आत्मा हमेशा हमें बल देती रहे!

अहमदाबाद, २०–३–'४८

प्रस्तावना

गांधीजीने अपने जीवनके आखिरी साढ़े चार महीनोंमें प्रार्थनाके बाद श्रोताओंके सामने जो प्रवचन दिये, अुन्हें लगभग ४०० पृष्ठकी अिस पुस्तकमें अिकट्ठा किया गया है। जैसा कि पुस्तकका नाम सुझाता है, वह सचमुच ही १० सितम्बर, १९४७ से ३० जनवरी, १९४८ तकके अुनके दिल्ली-निवासकी डायरी है। सब कोअी जानते हैं कि जिन घटनाओंके कारण देशमें अितनी हत्याअें हुअीं, लाखों-करोड़ोंकी जायदाद बरबाद हुअी और अिससे भी ज्यादा नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यकी चीजोंका नाश हुआ, अुनसे गांधीजीको अपार दुःख हुआ था। गांधीजीने अपने दिलमें जिस भयंकर व्यथाका अनुभव किया और हम लोगोंके जीवन और व्यवहारमें अिन्सानियतके अूंचे अुसूलोंको फिरसे कायम करनेके लिअे मनुष्यकी शक्तिसे बाहर जो मेहनत की, अुसकी कुछ झांकी हमें अिस पुस्तकमें मिलती है। जैसा कि गांधीजीके सब लेखों और भाषणोंमें आम तौर पर पाया जाता है, अिस पुस्तकमें अिकट्ठे किये गये प्रवचनोंमें अुन्होंने अनेक क्षेत्रोंके अनेक विषयोंकी चर्चा की है। लेकिन अुनकी सबसे ज्यादा ध्यान खींचनेवाली और महत्त्वपूर्ण बातें वे हैं, जो अुन्होंने हिन्दुस्तानकी जनताके अलग अलग भागोंमें, खासकर हिन्दुओं, सिक्खों और मुसलमानोंमें शान्ति और मेल-मिलाप कायम करनेके बारेमें कही हैं। यह हकीकत हमारे जीवन और कामकी दुःखभरी टीका है कि गांधीजीने जो मकसद अपने सामने रखा, अुसे हासिल करनेके बदले अुन्हें अपनी जान देनी पड़ी। अिस पुस्तकको पढ़नेसे यह साफ मालूम होता है कि अगर अुनकी कोशिशोंसे कौमी अेकता कायम न की जा सके, तो अुन्हें जीवनमें कोअी रस नहीं रह गया

था। पिछली ३० जनवरीको जो करुण घटना घटी, अुसकी पूव-सूचना देनेवाले निराशाके स्वर भी हमें गांधीजीके प्रवचनोंमें से निकलते सुनाअी देते हैं। सत्य और अहिंसा बहुतसे अैसे तरीकोंसे काम करते हैं, जिन्हें हम समझ नहीं सकते। और यह संभव है कि गांधीजी अपने जीवनमें जो चमत्कार न कर सके, वह अपने बलिदानके द्वारा वे अब कर सकें। मुझे पक्का विश्वास है कि जिस शान्ति और मेलके लिअे अुन्होंने अपना जीवन बिताया और अन्तमें अपनी जान भी दे दी, अुस शान्ति और मेलको फिरसे अिस देशमें कायम करनेमें यह पुस्तक अुपयोगी साबित होगी।

१७–३–'४८ **राजेन्द्रप्रसाद**

विषय-सूची

प्रकाशकका निवेदन ३

प्रस्तावना राजेन्द्रप्रसाद ५

प्रकरण

१. १०–९–’४७ : मुर्दोंका शहर ३; शरणार्थियोंका सवाल ३; सच्चा सिक्ख ६ ३–७

२. १२–९–’४७ : सरहदी सूबेकी खबरें ७; गुस्सा पागलपनका छोटा भाअी है ८; बीती बातें भूल जाअिये ८; राष्ट्रीय स्वयंसेवक-संघ १० ७–१०

३. १३–९–’४७ : सरकार पर भरोसा रखिये १०; भगवान सबका रक्षक है ११; दोनों अुपनिवेशोंका फर्ज १२; आसफअली साहब १२ १०–१३

४. १४–९–’४७ : हमारा पतन १३; शरणार्थी-कैम्पोंकी सफाअी १३; सरकारों और जनताका फर्ज १४ १३–१५

५. १५–९–’४७ : आत्म-चिन्तन १५; अपनी सरकार पर भरोसा रखिये १६ १५–१६

६. १७–९–’४७ : जबरदस्ती नहीं १७; गुस्सेको दबाअिये १८; मजदूरोंका फर्ज १९ १७–२०

७. १८–९–’४७ : प्रार्थना अखण्ड है २०; गजेन्द्र-मोक्ष २०; दिल्लीके बाद पंजाब २१; फौज और पुलिसका फर्ज २१ २०–२२

८. १९–९–’४७ : बातोंको बढ़ा-चढ़ाकर मत कहो २२; बहादुर और निडर बनो २२ २२–२३

९. २०–९–’४७ : भगवान डर भगाता है २३; अल्पसंख्यकोंकी हिफाजत २४; भाअी दुश्मन बन गये? २५; शरणार्थी २५; मुसलमानोंकी वफादारी जरूरी है २५ २३–२६

१०. २१–९–’४७ : अेतराज करनेवालेका मान रखा गया २७; बिना फलका पेड़ सूख जाता है २७; अपने घरोंमें ही रहो २८; सरकार अिस्तीफा कब दे? २८ २७–२८
११. २२–९–’४७ : अेतराज अुठानेवालोंका फर्ज २९; अुम्दा रवादारी ३०; अगर हिन्दुस्तान फर्जको भूलता है ३१; बिना लाअिसेन्सके हथियार ३१; बहुमतका फर्ज ३२ २९–३२
१२. २३–९–’४७ : खुला अिकरार ३२; ज्ञानके रत्न ३३; बहादुरीसे मरनेकी कला ३३; शरणार्थियोंके लिअे घर ३४ ३२–३४
१३. २४–९–’४७ : हिन्दुस्तानकी कमजोर नाव ३५; सरकारोंको अेक मौका दो ३५; जूनागढ़ ३६ ३५–३६
१४. २५–९–’४७ : संघ सरकारका फर्ज ३६; धर्मकी जीत ३७; दगाबाजीकी सजा ३७; पुलिस और फौजका फर्ज ३८; लपटोंको कैसे बुझाया जाय? ३८ ३६–३८
१५. २६–९–’४७ : ग्रन्थसाहब ३९; गांधीजीकी अभिलाषा ३९; शर्मकी बात ४०; अन्याय नहीं सहना चाहिये ४०; हिन्दू ही हिन्दू धर्मको बरबाद कर सकते हैं ४१; सत्यकी ही जय होती है ४१ ३९–४२
१६. २७–९–’४७ : राम ही सबसे बड़ा वैद्य है ४२; ग्रन्थसाहबकी याद ४३; क्या यह भारी भूल है? ४४; भयंकर गैर-रवादारी और दस्तन्दाजी ४४; मेरी श्रद्धा कमजोर हो गअी है? ४५ ४२–४५
१७. २८–९–’४७ : मि० चर्चिलका अविवेक ४६ ४६–४९
१८. २९–९–’४७ : भाअीके खूनका नतीजा ४९ ४९–५०
१९. ३०–९–’४७ : सरकारका फर्ज ५१; अेक व्यक्तिकी ताकत ५२; हिन्दुस्तानी मुसलमान ५२ ५१–५२
२०. १–१०–’४७ : सेवाका विशाल क्षेत्र ५३; शान्तिकी शर्तें ५३; बदला सच्चा अिलाज नहीं है ५४; मुसलमान दोस्तोंके तार ५५; बुजदिली और जंगलीपनकी हद ५५ ५३–५६
२१. २–१०–’४७ : सिक्ख गुरुओंका सन्देश ५६; किरपाणका सही अुपयोग ५७; बरसगांठकी बधाअियां ५७ ५६–५८

२२. ३–१०–'४७ : सब अेकसे दोषी हैं ५८; सत्याग्रह और दुराग्रह ५८; अच्छा काम खुद अपना आशीर्वाद है ५९; छावनियोंमें सफाअीका काम ५९; अेक फ्रांसीसी दोस्तकी सलाह ६० ५८–६१
२३. ४–१०–'४७ : कम्बलोंके लिअे अपील ६१ ६१–६२
२४. ५–१०–'४७ : मेरी बीमारी ६३; अेक असंगत सुझाव ६३; मि० चर्चिलका दूसरा भाषण ६४ ६३–६५
२५. ६–१०–'४७ : अनाजकी समस्या ६५; स्वावलम्बन ६६; विदेशी मददका मतलब ६७; केन्द्रीकरण या विकेन्द्रीकरण ६७; अनाजकी कमीका किस तरह सामना किया जाय? ६८; प्रेसिडेण्ट ट्रूमेनकी सलाह ६८ ६५–६९
२६. ७–१०–'४७ : ज्यादा कम्बलोंके लिअे अपील ६९; कांग्रेसके सिद्धान्तोंके प्रति सच्चे रहिये ७०; अनाजका कण्ट्रोल ७०; वजीरोंको चेतावनी ७०; रामराजका रहस्य ७१ ६९–७२
२७. ८–१०–'४७ : पैसोंके बजाय कम्बल दीजिये ७२; बहादुरोंकी अहिंसा ७२; अखबारोंका फर्ज ७३; फौज और पुलिसका फर्ज ७४ ७२–७५
२८. ९–१०–'४७ : जल्दी कम्बल दीजिये ७५; शान्तिसे सुनना ही काफी नहीं ७५; पाकिस्तानके अल्पमतवाले ७५ ७५–७६
२९. १०–१०–'४७ : और कम्बल मिले ७७; खाने और कपड़ेकी तंगी ७७ ७७–७८
३०. ११–१०–'४७ : चरखा-जयन्ती ७९; हरिजनोंके लिअे बिल्ले ७९; दशहरा और बकर-अीद ८०; दक्षिण अफ्रीकाका सत्याग्रह ८० ७९–८०
३१. १२–१०–'४७ : शरणार्थियोंके बारेमें दो बातें ८१ ८१–८२
३२. १३–१०–'४७ : शरणार्थियोंसे ८२ ८२–८४
३३. १४–१०–'४७ : अेक अच्छी मिसाल ८४; सिक्ख दोस्तोंसे बातचीत ८५; सरकारको कमजोर न बनाअिये ८५; अपने ही दोष देखिये ८५ ८४–८६

३४. १५–१०–'४७ : सुनहले काम कीजिये ८६; हिन्दी या हिन्दुस्तानी? ८७ ८६–८८
३५. १६–१०–'४७ : मैसूरका अुदाहरण ८८; अच्छा बरताव ८९; राजसेवकोंसे अपेक्षा ८९; पूरबी पाकिस्तानके अल्पमतवाले ९० ८८–९०
३६. १७–१०–'४७ : सबसे बड़ा अिलाज ९१; कम्बल ९१; कण्ट्रोल हटा दिया जाय ९२; दक्षिण अफ्रीकाका सत्याग्रह ९२ ९१–९३
३७. १८–१०–'४७ : कुरुक्षेत्रके लिअे कम्बल भेजे गये ९४; राष्ट्रभाषा ९४ ९४–९६
३८. १९–१०–'४७ : क्या यह स्वराज है? ९६; अेकमात्र रास्ता ९८ ९६–९९
३९. २०–१०–'४७ : क्या यह आखिरी गुनाह है? ९९; और ज्यादा कम्बल आये १००; अेक खुला खत १०० ९९–१०१
४०. २१–१०–'४७ : दूसरा गुनाह १०१; कानूनमें दस्तन्दाजी ठीक नहीं १०२ १०१–१०३
४१. २२–१०–'४७ : अेक अुर्दू अखबारका हिस्सा १०३; रियासतें किधर? १०४; दशहरा और बकर-अीद १०५ १०३–१०५
४२. २३–१०–'४७ : अपने दोस्तोंके साथ ठहरे हुअे शरणार्थियोंसे १०६; और दूसरा गुनाह १०७; वर्धाकी कोढ़-निवारक कान्फरेन्स १०७ १०६–१०८
४३. २४–१०–'४७ : अेकमात्र लगन १०८; अपनी श्रद्धा अुज्ज्वल रखिये १०९; कोढ़की समस्या १०९ १०८–११०
४४. २५–१०–'४७ : दिल्लीके कैदी ११०; ये क्लासें नहीं चाहिये ११६; जेल दिमागी अस्पतालोंका काम करें १११; कैदियोंका फर्ज ११२ ११०–११२
४५. २६–१०–'४७ : दशहरेका सबक ११३; काश्मीरकी घटनाअें ११३; कलकत्तामें शान्तिका राज ११४; शाबाश रतलाम! ११४ ११३–११५

४६. २७–१०–’४७ : छोड़नेके लिअे मजबूर किया जा रहा है? ११५; नैतिक बनाम जिस्मानी ताकत ११६; नागरिकोंका फर्ज ११६ ११५–११७
४७. २८–१०–’४७ : ओमानदारीका बरताव ११७; अलीगढ़के विद्यार्थी ११७; बिना टिकट सफर करना बुरा है ११८ ११७–११९
४८. २९–१०–’४७ दिलीपकुमार राय ११९; काश्मीरकी मुसीबतें १२० ११९–१२१
४९. ३०–१०–’४७ : अहिंसाका काम १२१ १२१–१२३
५०. ३१–१०–’४७ : आदर्श बरताव १२३; मन-मन्दिर १२४; अमीर और गरीब १२४; जबरन धर्म बदलना बुरा है १२४ १२३–१२५
५१. १–११–’४७ : भगवानका घर १२५; शेख अब्दुल्ला १२६; कुरुक्षेत्रके शरणार्थी १२७ १२५–१२७
५२. २–११–’४७ : पूरा सहयोग जरूरी है १२७; समयका तकाजा १२९; आजाद हिन्द फौजके अफसर १२९; पाकिस्तान बढ़ावा दे रहा है १३० १२७–१३१
५३. ३–११–’४७ : साम्प्रदायिकताका जहर १३२; अनाजका कण्ट्रोल हटा दिया जाय १३२; कण्ट्रोल बुराओी पैदा करता है १३२; अनुभवी लोगोंकी सलाह १३४; लोकशाही और विश्वास १३४ १३२–१३४
५४. ४–११–’४७ : गुस्सेकी अुपज १३५; आधा सच बनाम झूठ १३६; खुशहाल निराश्रित १३७; दिल्लीमें मेरा फर्ज १३७; दूसरे अिलजामोंका जवाब १३८; सूअरोंका कतल १३८; क्या पाकिस्तान मजहबी राज है? १३९; मवेशियोंके साथ बरताव १३९ १३५–१४०
५५. ५–११–’४७ : हरिजनोंकी कामके लायक बननेकी योग्यता १४०; शाकाहार कैसे फैलाया जाय? १४१; अपने घरोंमें जमे रहिये १४१; अहिंसामें पक्का विश्वास १४२; योग्य आदमीकी तारीफ करनी ही चाहिये १४३ १४०–१४४

५६. ६–११–’४७ : तोड़ी-मरोड़ी हुअी बातें १४४; कण्ट्रोल हटा दिये जायं १४५; खादी बनाम मिलका कपड़ा १४६ १४४–१४७

५७. ७–११–’४७ : टेहर गांवका दौरा १४७; अेक सबक १४८; शरणार्थियोंको सलाह १४८ १४७–१४९

५८. ८–११–’४७ : सिक्ख धर्मग्रंथके हिस्से भी पढ़े जायं १४९; रुअीकी गांठोंके लिअे अपील १५०; खादीकी पैदावार १५०; स्वावलम्बन और सहयोग १५१; दयाकी देवी १५२ १४९–१५२

५९. ९–११–’४७ : दीवाली न मनाअी जाय १५३; विदेशी बस्तियोंकी आजादी १५५ १५३–१५५

६०. १०–११–’४७ : भगवानके सेवक बनिये १५६; पानीपतका मुआअिना १५७; डॉ० गोपीचन्द १५८ १५६–१५८

६१. ११–११–’४७ : जूनागढ़ १५९; यूनियनमें प्रवेश १५९; काश्मीर और हैदराबाद १६१; काश्मीरका विभाजन? १६२ १५९–१६२

६२. १२–११–’४७ : दीवालीका अुत्सव १६२; सच्ची रोशनी १६२; जख्मी काश्मीर १६३; नफरत और शक निकाल दीजिये १६३ १६२–१६४

६३. १३–११–’४७ : विक्रम संवत १६४; बुरी ताकतोंको जीतिये १६४; कांग्रेस अुसूल पर डटी रहेगी १६५; धर्ममें दबावकी गुंजाअिश नहीं १६५; कांग्रेस महासमितिकी बैठक १६६ १६४–१६७

६४. १४–११–’४७ : रामनाम सबसे बड़ा है १६७; शरणार्थियोंका लौटना १६८ १६७–१६८

६५. १५–११–’४७ : राष्ट्रका पिता? १६९; कण्ट्रोल नुकसानदेह हैं १६९ १६९–१७०

६६. १६–११–’४७ : भगवानको पाना १७०; रामपुर स्टेट — तब और अब १७०; सत्याग्रह सबसे बड़ा हथियार १७१; सत्याग्रहका अर्थ १७२; अफ्रीकाके बारेमें हिन्दू-मुस्लिम अेक हैं १७२ १७०–१७३

६७. १७–११–'४७ : हिन्दुस्तान और दक्षिण अफ्रीका १७३; राष्ट्र-समूहमें हिन्दुस्तान १७४; रंगद्वेष १७४; अिन्सान जैसा सोचता है वैसा ही बनता है १७५; जनताकी आवाज १७६ १७३–१७७
६८. १८–११–'४७ : अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीके प्रस्ताव १७७; हिन्दू-मुस्लिमोंके आपसी सम्बन्ध १७७; पानीपतके मुसलमानोंका मामला १७८; कण्ट्रोल हटने पर लोगोंसे अपेक्षा १७८ १७७–१७९
६९. १९–११–'४७ : शर्मनाक दृश्य १७९; सिक्खोंके दोष १८१; किरपाण १८१; फौज और पुलिस १८२; शेरवानीकी कुरबानी १८३; फख्र और दोस्ती १८४ १७९–१८४
७०. २०–११–'४७ : अब असहयोगकी जरूरत नहीं १८५; ओखला-छावनीका मुआअिना १८५; अफसरोंके बारेमें १८६; शरणार्थियोंकी बददियानती १८६; हिन्दुस्तानके मवेशी १८६; गोशालाओंका अिन्तजाम १८७ १८५–१८८
७१. २१–११–'४७ : हिन्दुस्तानकी डेरियां १८८; बछड़ोंका वध १८९; सतीशबाबूका ग्रन्थ १८९; 'हिन्दू' और 'हिन्दुत्व' १८९; आम छावनियां १९०; अधर्मका काम १९१; रोमन कैथोलिकों पर जुल्म १९१ १८८–१९२
७२. २२–११–'४७ : सोनीपतके ओीसाओी १९३; जैसेको तैसा? १९३; सही बरतावकी अपील १९४; शरणार्थियोंके बीच सहयोग १९४; सरकारकी दुविधा १९५; व्यापारियोंसे अपील १९५ १९३–१९६
७३. २३–११–'४७ : प्रार्थनामें शान्ति १९६; समयसे बाहर १९६; हिंसा ठीक नहीं १९६; हरिजनों पर जुल्म १९७ १९६–१९८
७४. २४–११–'४७ : रचनात्मक कामकी जरूरत १९८; सबसे ताजा झगड़ा १९८; किरपाण और अुसका अर्थ १९९; बुरा सुझाव २०१; पाकिस्तानके बुरे काम २०२ १९८–२०२
७५. २५–११–'४७ : शरणार्थी या दुःखी? २०२; मुसलमानोंके घरों पर कब्जा न किया जाय २०३; अुचित मांग २०४; लौटनेकी शर्त २०४ २०२–२०४

७६. २६–११–'४७ : बेबुनियाद अिलजाम २०५; भगाअी हुअी औरतें २०५; फसल काटनेमें मदद देनेवाले २०६; किसान-राज २०६ २०५–२०७
७७. २७–११–'४७ : कोअी बात नामुमकिन नहीं २०७; शेरे-काश्मीर २०७; सच है तो भयानक है २०८ २०७–२०९
७८. २८–११–'४७ : गुरु नानकका जन्मदिन २०९; व्यापारमें साम्प्रदायिकता नहीं चाहिये २१०; सोमनाथ-मन्दिरका जीर्णोद्धार २११; बुराअीके लिअे पैसा न दिया जाय २११; काठियावाड़ शान्त है २१२ २०९–२१२
७९. २९–११–'४७ : दिल्लीमें शराबखोरी २१२; मस्जिदोंका नुकसान २१२; भगाअी हुअी लड़कियां २१३; कण्ट्रोल २१३; शौककी चीजों पर टैक्स लगाया जाय २१४; होमगार्ड २१४ २१२–२१४
८०. ३०–११–'४७ : आसन लाअिये २१५; काठियावाड़से तार २१५; हिन्दू महासभा और आर० अेस० अेस० से अपील २१७; मस्जिदोंमें मूर्तियां २१७ २१५–२१८
८१. १–१२–'४७ : 'अगर' का अिस्तेमाल क्यों करते हो? २१८; सच्चे बनिये २१९; सत्यकी खोज २२० २१८–२२१
८२. २–१२–'४७ : पानीपतका दौरा २२१; दो मंत्री २२१; शरणार्थियोंकी शिकायतें २२३ २२१–२२४
८३. ३–१२–'४७ : वादोंकी अहमियत २२४; सिंधके हरिजन २२५; फिर काठियावाड़के बारेमें २२६; दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानी २२६ २२४–२२७
८४. ४–१२–'४७ : विदेशोंमें प्रचार क्यों? २२८; अच्छी खबर २२८; साम्प्रदायिक व्यापारी-मंडल २२९; बर्माके प्रधान-मंत्री २२९ २२८–२३१
८५. ५–१२–'४७ : मुसलमानोंका लौटना २३१; कण्ट्रोल २३२ २३१–२३४
८६. ६–१२–'४७ : सच्चे पड़ोसी बननेकी शर्त २३४ २३४–२३६

८७. ७–१२–’४७ : भगाओ हुओ औरतें २३६ २३६–२३८
८८. ८–१२–’४७ : मुस्लिम संस्थाकी चेतावनी २३८; सिंधके दुःखभरे पत्र २३९; फिर कण्ट्रोलके बारेमें २३९; कण्ट्रोल हटानेका मतलब २४० २३८–२४१
८९. ९–१२–’४७ : वायु-परिवर्तन २४१; खूनसे बदतर २४२; कस्तूरबा-ट्रस्टकी बहनोंसे २४२ २४१–२४३
९०. १०–१२–’४७ : चरखेका अर्थ २४३; चरखा और साम्प्रदायिक मेल २४५; जिओ और जीने दो २४५ २४३–२४५
९१. ११–१२–’४७ : कुरानकी आयत २४६; मुस्लिम शान्ति-मिशनकी गारण्टी २४७ २४६–२४८
९२. १२–१२–’४७ : शरणार्थियोंकी तकलीफें २४८; दूसरा पहलू २४९; कलकत्तेका हुल्लड़ २४९ २४८–२५०
९३. १३–१२–’४७ : चरखेका सन्देश २५० २५०–२५३
९४. १४–१२–’४७ : अेक दोस्ताना काम २५३; नओ तालीम २५३ २५३–२५५
९५. १५–१२–’४७ : शर्मनाक नाफरमानी २५५; अन्धाधुन्धी और रिश्वतखोरी २५५; आश्वासन निरी चालाकी है २५६; विश्वाससे विश्वास पैदा होता है २५७; डर ठीक नहीं २५८; अखण्ड हिन्दुस्तानका नागरिक २५८ २५५–२५९
९६. १६–१२–’४७ : अंकुश हटानेका नतीजा २५९; तनखाहें और सिविल सर्विस २६० २५९–२६१
९७. १७–१२–’४७ : जबरदस्ती कब्जा २६१; मीठी बातें २६२; लौटनेकी शर्तें २६२; पूर्व अफ्रीकाके हिन्दुस्तानी २६३ २६१–२६४
९८. १८–१२–’४७ : भ्रमसे भरी दलील २६४; निरा अज्ञान २६५; अधर्म २६७ २६४–२६७
९९. १९–१२–’४७ : जसरा गांवका दौरा २६७; कीमतें और अंकुशका हटना २६८; पेट्रोल पर अंकुश २६८; मिश्र खाद २६९ २६७–२६९

१००. २०–१२–’४७ : बुजदिली छोड़ दीजिये २७०; ग्रामोद्योग २७१; पूंजी और मेहनत २७१ २७०–२७२
१०१. २२–१२–’४७ : धार्मिक स्थलोंको बिगाड़ा न जाय २७२; यूनियनके मुसलमानोंका फर्ज २७३; कांग्रेसके बन जाअिये २७४ २७२–२७६
१०२. २३–१२–’४७ : प्रार्थनाका समय २७६; बहावलपुरके गैर-मुस्लिम २७६; पाकिस्तानके शरणार्थी २७७; नोआ-खालीकी खबर २७७ २७६–२७८
१०३. २४–१२–’४७ : क्या वह अहिंसा थी? २७८; गुस्सा ठीक नहीं २७९; क्रिस्मसकी बधाअियां २७९ २७८–२८०
१०४. २५–१२–’४७ : काश्मीरका सवाल २८०; जम्मूकी घटना २८१; पाकिस्तानका अभिमान २८२; गजनवीको फिरसे बुलाना २८२ २८०–२८३
१०५. २६–१२–’४७ : तिबिया कॉलेज २८३; भगाअी हुअी औरतें २८४; सौदा नहीं २८५ २८३–२८५
१०६. २७–१२–’४७ : विचार, वाणी और कर्मका मेल २८६; पंचायतका फर्ज २८६; मवेशीकी तरक्की २८७; जमीनको अुपजाअू बनाअिये २८७; आदर्श नागरिक बनिये २८८ २८६–२८८
१०७. २८–१२–’४७ : खुले मैदानमें सभाअें २८८; कण्ट्रोलका हटना २८९ २८८–२९०
१०८. २९–१२–’४७ : हकीम साहबकी यादगार २९०; खुलेमें सभाअें २९१; फिर काश्मीर २९१; रुपयोंकी पहुंच २९३; अचरजभरा विरोध २९३; यूनियनके मुसलमानोंको सलाह २९४ २९०–२९४
१०९. ३०–१२–’४७ : आम जनताका निजाम २९५; बहावल-पुरके हिन्दू और सिक्ख २९५; सिन्धमें गैर-मुस्लिम २९५; विठोबाका मन्दिर २९६; बम्बअीमें राशनिंग २९६ २९५–२९६
११०. ३१–१२–’४७ : दिल बदले बिना न लौटें २९७; शरणार्थियोंके लौटे बिना सच्ची शान्ति नहीं २९७;

शरणार्थी और मेहनतकी रोटी २९८; पूरी प्रार्थनाका ब्रॉड-कास्ट २९९; बढ़ाकर कहनेसे अपना ही मामला कमजोर २९९ २९७–२९९

१११. १–१–'४८: आत्माकी खुराक ३००; हरिजन और शराब ३०० ३००–३०२

११२. २–१–'४८: नोआखालीका टोप ३०१; भजन ३०२; अविश्वास बुजदिलीकी निशानी है ३०२ ३०१–३०२

११३. ३–१–'४८: शान्ति अन्दरकी चीज है ३०३; कैम्प-जीवनका आदर्श ३०३ ३०३–३०४

११४. ४–१–'४८: लड़ाओीका मतलब ३०५; बुजदिलीसे भी बुरा ३०६ ३०५–३०६

११५. ५–१–'४८: अंकुश हटनेका नतीजा ३०७; ऊनी और रेशमी कपड़ा ३०८; सूती कपड़ा और सूत ३०८; पेट्रोलका राशनिंग ३०८; कपड़ेका कण्ट्रोल ३१० ३०७–३१०

११६. ६–१–'४८: यह दबाव बन्द होना चाहिये ३११; हड़तालोंका रोग ३११; सच्चा लोकराज ३१२; आवक-जावकमें सम-तोल होना चाहिये ३१२ ३११–३१३

११७. ७–१–'४८: गलत अुपवास ३१३; विद्यार्थियोंकी हड़-ताल ३१३; पाकिस्तानसे आये शरणार्थियोंकी शिकायतें ३१४; शरणार्थियोंका फर्ज ३१४; कराचीकी वारदातें ३१५ ३१३–३१५

११८. ८–१–'४८: हरिजन और शराब ३१५; विद्यार्थियोंमें सब पार्टियां हैं ३१६; सत्याग्रह क्यों नहीं? ३१६; यूनियनमें साम्प्रदायिकताको जगह नहीं ३१७; बहावलपुरका डेप्यु-टेशन ३१८ ३१५–३१८

११९. ९–१–'४८: बहादुरी और धीरजकी जरूरत ३१९; रहनेके घरोंकी समस्या ३१९; अेक गलतफहमी ३२०; बिड़ला-भवनमें क्यों? ३२०; सफेदपोश लुटेरे ३२१ ३१९–३२१

१२०. १०–१–'४८: अनुशासनकी जरूरत ३२१; बहावल-पुरके भाअियोंसे ३२२; अीरान और हिन्दुस्तान ३२२; खुद निर्णय कीजिये ३२३ ३२१–३२४

१२१. ११–१–'४८ : प्रार्थना-सभामें शान्ति ३२४; आन्ध्रका खत ३२४; सब पार्टियोंसे अपील ३२५; आत्मघाती वृत्ति ३२५ ३२४–३२६

१२२. १२–१–'४८ : अूपरी शान्ति बस नहीं ३२६; अुपवासका निर्णय ३२७; हिन्दुस्तानके मानमें कमी ३२८; औश्वर अेक-मात्र सलाहकार ३२८; मृत्यु ही सुन्दर रिहाअी ३२९; आन्ध्रके दो खत ३३०; बहावलपुरवाले धीरज रखें ३३१ ३२६–३३१

१२३. १३–१–'४८ : बहावलपुरके शरणार्थी ३३२; कौन गुनहगार है? ३३२; हिन्दू-सिक्खोंका फर्ज ३३४; दिल्लीकी जांच ३३५ ३३२–३३५

१२४. १४–१–'४८ : तारोंका ढेर ३३५; पाकिस्तानसे दो शब्द ३३६; मेरा सपना ३३७ ३३५–३३९

१२५. १५–१–'४८ : मौत दुःखोंसे छुटकारा दिलाती है ३३९; रुला रुलाकर मारना ३४०; सरदार पटेल ३४०; अुपवासका मकसद ३४२; अुलटे अर्थकी गुंजाअिश नहीं ३४२ ३३९–३४३

१२६. १६–१–'४८ : औश्वरकी कृपा ३४४; सच्ची सद्‌भावना ३४४; अुपवासका अच्छेसे अच्छा जवाब ३४५ ३४४–३४६

१२७. १७–१–'४८ : मेरी जिन्दगी भगवानके हाथमें है ३४७; दिलकी सफाअी ३४७; पाकिस्तानसे दो शब्द ३४८; फाकेसे मैं खुश हूं ३४९ ३४७–३४९

१२८. १८–१–'४८ : आगेका काम ३४९; अुपवासका पारणा ३५२; प्रतिज्ञाकी आत्मा ३५३ ३४९–३५४

१२९. १९–१–'४८ : मुबारकबाद और चिन्ता ३५४; चेतावनी ३५६; बहुत बड़ा काम सामने पड़ा है ३५६ ३५४–३५७

१३०. २०–१–'४८ : समझदार बनिये ३५७; प्रधानमंत्रीका श्रेष्ठ काम ३५८; काश्मीरका प्रश्न ३५९; ग्वालियर, भावनगर और काठियावाड़की रियासतें ३५९ ३५७–३६०

१३१. २१–१–’४८ : प्रार्थनामें बम ३६०; हिन्दू धर्मकी कुसेवा ३६०; बम फेंकनेवाले पर दया ३६१; बहावलपुर और सिन्ध ३६१; गलत मुकाबला ३६२ ३६०–३६३
१३२. २२–१–’४८ : पंडित नेहरूका अुदाहरण ३६३; गरीबी लज्जाकी बात नहीं है ३६३; फिर ग्वालियर ३६४ ३६३–३६५
१३३. २३–१–’४८ : नेताजीका जन्मदिन ३६५; सावधानीकी जरूरत ३६६; मैसूर, जूनागढ़ और मेरठ ३६६; गद्दारोंसे कैसे निपटा जाय ? ३६७ ३६५–३६७
१३४. २४–१–’४८ : कैदियों और भगाअी हुअी औरतोंकी अदला-बदली ३६८ ३६८–३७०
१३५. २५–१–’४८ : दिल्लीमें पूर्ण शान्ति ३७०; महरोलीका अुर्स ३७०; ‘अब मुझे छोड़ दें’ ३७१; भाषावार प्रान्त ३७२ सीमा-कमीशनकी जरूरत नहीं ३७२ ३७०–३७२
१३६. २६–१–’४८ : आजादी-दिन ३७३; कण्ट्रोलका हटना और यातायात ३७४; घूसखोरीका राक्षस ३७६ ३७३–३७६
१३७. २७–१–’४८ : मुसलमान और प्रार्थना-सभा ३७६; महरोलीका अुर्स ३७६; सरहदी सूबेमें और ज्यादा हत्याअें ३७८; अजमेरके हरिजन ३७८; मीरपुरके दुःखी ३७९ ३७६–३८०
१३८. २८–१–’४८ : बहावलपुरके दोस्तोंसे ३८०; राजधानीमें शान्ति ३८१; दक्षिण अफ्रीकाका सत्याग्रह ३८१; मैसूरके मुसलमान ३८३; दाताओंसे दो शब्द ३८३ ३८०–३८४
१३९. २९–१–’४८ : बहावलपुरके लिअे डेप्युटेशन ३८५; मैं अुनका सेवक हूं ३८६; मेहनतकी रोटी ३८८; किसान ३८८; मद्रासमें खुराककी तंगी ३८९ ३८५–३८९

दिल्ली-डायरी

१

१०–९–'४७

मुर्दोंका शहर

आजकी सभामें कर्फ्यूके कारण कम लोग आये थे, फिर भी गांधीजी सारी दिल्लीके लिअे बोले थे। अुन्होंने कहा, जब मैं शहादरा पहुंचा, तो मैंने अपने स्वागतके लिअे आये हुअे सरदार पटेल, राजकुमारी और दूसरे लोगोंको देखा। लेकिन मुझे सरदारके ओठों पर हमेशाकी मुस्कराहट नहीं दिखाअी दी। अुनका मसखरापन भी गायब था। रेलसे अुतरकर मैं जिन पुलिसवालों और जनतासे मिला अुनके चेहरों पर भी सरदार पटेलकी अुदासी दिखाअी दे रही थी। क्या हमेशा खुश दिखाअी देनेवाली दिल्ली आज अेकदम मुर्दोंका शहर बन गअी है? दूसरा अचरज भी मुझे देखना बदा था। जिस भंगी-बस्तीमें ठहरनेमें मुझे आनन्द होता था, वहां न ले जाकर मुझे बिड़लाओंके आलीशान महलमें ले जाया गया। अिसका कारण जानकर मुझे दुःख हुआ। फिर भी अुस घरमें पहुंचकर मुझे खुशी हुअी, जहां मैं पहले अकसर ठहरा करता था। मैं भंगी-बस्तीके वाल्मीकि भाअियोंके बीच ठहरूं, या बिड़ला-भवनमें ठहरूं, दोनों जगह मैं बिड़ला भाअियोंका ही मेहमान बनता हूं। अुनके आदमी भंगी-बस्तीमें भी पूरी लगनके साथ मेरी देखभाल करते हैं। अिस फेरबदलका कारण सरदार नहीं हैं। वह वाल्मीकि-बस्तीमें मेरी हिफाजतके बारेमें किसी तरह डरनेकी कमजोरी कभी नहीं दिखा सकते। भंगियोंके बीच रहकर मुझे बड़ी खुशी होती है, हालांकि नअी दिल्लीकी कमेटीके कसूरसे मैं अुन घरोंमें तो नहीं रह सकता, जिनमें भंगी लोग मछलियोंकी तरह अेक साथ ठूंस दिये जाते हैं।

शरणार्थियोंका सवाल

मुझे बिड़ला-भवनमें ठहरानेका कारण यह है कि भंगी-बस्तीमें जहां मैं ठहरा करता था, वहां अिस समय शरणार्थी लोग ठहराये गये

हैं। अुनकी जरूरत मुझसे कअी गुनी बड़ी है। लेकिन हमारे यहां शरणार्थियोंका कोअी भी सवाल खड़ा हो, यह क्या अेक राष्ट्रके नाते हमारे लिअे शरमकी बात नहीं है? पंडित नेहरू और सरदार पटेलके साथ कायदे आजम जिन्ना, लियाकतअली साहब और दूसरे पाकिस्तानी नेताओंने यह अैलान किया था कि हिन्दुस्तानी संघ और पाकिस्तानमें अल्पमतवालोंके साथ वैसा ही बरताव किया जायगा, जैसा कि बहुमत-वालोंके साथ। क्या हर डोमिनियनके हाकिमोंने यह मीठी बात दुनियाको खुश करनेके लिअे ही कही थी, या अिसका मतलब दुनियाको यह दिखाना था कि हमारी कथनी और करनीमें कोअी फर्क नहीं है, और हम अपना वचन पूरा करनेके लिअे जान भी दे देंगे? अगर अैसा ही है, तो मैं पूछता हूं कि हिन्दुओं, सिक्खों, गौरवभरे आमिलों और भाअीबन्दोंको अपना घर — पाकिस्तान — छोड़नेके लिअे क्यों मजबूर किया गया? क्वेटा, नवाबशाह और कराचीमें क्या हुआ है? पश्चिम पंजाबकी दर्दभरी कहानियां सुनने और पढ़नेवालोंके दिलोंको तोड़ देती हैं। पाकिस्तान या हिन्दुस्तानी संघके हाकिमोंके लाचारी दिखाकर यह कहनेसे काम नहीं चलेगा कि यह सब गुण्डोंका काम है। अपने यहां रहनेवाले लोगोंके कामोंकी पूरी जिम्मेदारी अपने सिर लेना हर डोमिनि-यनका फर्ज है। "अुनका काम क्या और क्यों करनेका नहीं, बल्कि 'करने और मरने' का है।" अब वे साम्राज्यवादके कुचल डालनेवाले बोझके नीचे चाहे या अनचाहे कोअी काम करनेके लिअे मजबूर नहीं किये जाते। आज वे आजादीसे जो चाहें, कर सकते हैं। लेकिन अगर अुन्हें अीमानदारीसे दुनियाके सामने अपना मुंह दिखाना है, तो अिसका मतलब यह नहीं हो सकता कि अब दोनों डोमिनियनोंमें कोअी कानून-कायदा रहेगा ही नहीं। क्या यूनियनके मंत्री अपना दिवालियापन जाहिर करके दुनियाके सामने बेशर्मीसे यह मंजूर कर लेंगे कि दिल्लीके लोग या शरणार्थी खुशीसे और खुद होकर कानूनको नहीं पालना चाहते? मैं तो मंत्रियोंसे यह आशा करूंगा कि वे लोगोंके पागलपनके सामने झुकनेके बजाय अुनके पागलपनको दूर करनेकी कोशिशमें अपने प्राणोंकी बाजी लगा देंगे।

सारे भाषणमें गांधीजीकी आवाज बहुत धीमी थी, फिर भी वे मुर्दोंके शहरकी तरह दिखाओी देनेवाली दिल्लीके अपने दौरेका बयान करते रहे। बयानके बीच अुन्होंने अेक जगह कहा, जिस मकानमें मैं रहता हूं, अुसमें भी फल या शाक-भाजी नहीं मिलती। क्या यह शरमकी बात नहीं है कि कुछ मुसलमानोंके मशीनगन या बन्दूक वगैरासे गोलीबार करनेके कारण सब्जीमण्डीमें शाक-भाजीका मिलना बन्द हो गया? शहरके अपने दौरेमें मैंने यह शिकायत सुनी कि शरणार्थियोंको राशन नहीं मिलता। जो कुछ दिया भी जाता है, वह खाने लायक नहीं होता। अिसमें अगर दोष सरकारका है, तो अुतना ही दोष शरणार्थियोंका भी है, जिन्होंने जरूरी कामकाजको भी रोक दिया है। अुन्होंने यह क्यों नहीं समझा कि अैसा करके वे अपने आपको नुकसान पहुंचा रहे हैं? अगर अुन्होंने अपनी तमाम सच्ची शिकायतोंको दूर करनेके लिअे सरकार पर भरोसा किया होता और कायदा पालनेवाले नागरिकोंकी तरह बरताव किया होता, तो मैं जानता हूं, और अुन्हें भी जानना चाहिये, कि अुनकी ज्यादातर मुसीबतें दूर हो जातीं।

मैं हुमायूंके मकबरेके पास मेवोंकी छावनीमें गया था। अुन्होंने मुझसे कहा कि हमें अलवर और भरतपुर रियासतोंसे निकाल दिया गया है। मुसलमान दोस्तोंने जो कुछ भेजा है, अुसके सिवा हमारे पास खानेकी कोअी चीज नहीं है। मैं जानता हूं कि मेव लोग बड़ी जल्दी अुभाड़े जा सकते हैं और गड़बड़ी पैदा कर सकते हैं। लेकिन अुसका यह अिलाज नहीं है कि अुन्हें न चाहने पर भी यहांसे निकालकर पाकिस्तान भेज दिया जाय। अुसका सच्चा अिलाज तो यह है कि अुनके साथ अिन्सानोंका-सा बरताव किया जाय और अुनकी कमजोरियोंका किसी दूसरी बीमारीकी तरह अिलाज किया जाय।

अिसके बाद मैं जामिया मिलिया गया, जिसके बनानेमें मेरा बड़ा हाथ रहा है। डॉ० जाकिर हुसेन मेरे प्यारे दोस्त हैं। अुन्होंने सचमुच दुःखके साथ मुझे अपने अनुभव सुनाये; लेकिन अुनके मनमें किसी तरहकी कड़वाहट नहीं थी। कुछ समय पहले अुन्हें जालंधर जाना पड़ा था। अगर अेक सिक्ख केप्टन और रेलवेके अेक हिन्दू कर्मचारीने

समयपर वहां अुनकी मदद न की होती, तो मुसलमान होनेके कसूरमें गुस्सेसे पागल बने सिक्खोंने अुन्हें जानसे मार दिया होता। डॉ० जाकिर हुसेनने अिन दोनोंका अहसान मानते हुअे अपना यह अनुभव मुझे सुनाया। जरा खयाल तो कीजिये कि अिस राष्ट्रीय संस्थाको, जहां कअी हिन्दुओंने शिक्षा पाअी है, आज यह डर है कि कहीं गुस्सेसे भरे शरणार्थी और अुन्हें अुकसानेवाले लोग अुस पर हमला न कर दें। मैं जामिया मिलियाके अहातेमें किसी तरह ठहराये गये १०० से ज्यादा शरणार्थियोंसे मिला। जब मैंने अुनकी मुसीबतोंकी दर्दभरी कहानी सुनी, तो मेरा सिर शरमसे नीचा हो गया। अिसके बाद मैं दीवान हॉल, वेवल कैंटीन और किंग्सवेकी शरणार्थियोंकी छावनीमें गया। वहां मैं सिक्ख और हिन्दू शरणार्थियोंसे मिला। वे पंजाबकी मेरी पिछली सेवाओंको अब तक भूले नहीं थे। लेकिन अिन सारी छावनियोंमें कुछ गुस्सेभरे चेहरे भी दिखाअी दिये, जिन्हें माफ किया जा सकता है। अुन्होंने मुझे हिन्दुओंकी तरफ कठोरता दिखानेके लिअे कोसते हुअे कहा,'हम लोगोंकी तरह आपने मुसीबतें नहीं सही हैं। हमारी तरह आपके भाअी-बेटे और सगे-सम्बन्धी नहीं मारे गये हैं। हमारे जैसे आप दर दरके भिखारी नहीं बनाये गये हैं। आप यह कहकर हमें कैसे धीरज बंधा सकते हैं कि आप दिल्लीमें अिसीलिअे ठहरे हैं कि हिन्दुस्तानकी राजधानीमें शान्ति और अमन कायम करनेमें भरसक मदद कर सकें?' यह सच है कि मैं मरे हुअे लोगोंको वापिस नहीं ला सकता। लेकिन मौत सारे प्राणियों —— अिन्सान, जानवरों वगैरा —— को भगवानकी दी हुअी देन है। फर्क सिर्फ समय और तरीकेका है। अिसलिअे सही बरताव ही जीवनका सही रास्ता है, जो अुसे जीने लायक और सुन्दर बनाता है।

सच्चा सिक्ख

आज दिनमें अेक सिक्ख दोस्त मुझसे मिले थे। अुन्होंने कहा कि वे जन्मसे तो सिक्ख हैं, लेकिन ग्रन्थसाहबकी दृष्टिसे वे सच्चे सिक्ख होनेका दावा नहीं कर सकते। मैंने अुन भाअीसे पूछा कि आपकी नजरमें कोअी अैसा सिक्ख है? तो वे अेक भी अैसा सिक्ख नहीं बता सके। तब मैंने नरमीसे कहा कि मैं अैसा सिक्ख होनेका दावा करता

हूं। मैं ग्रन्थसाहबके मानोंमें सच्चे सिक्खका जीवन बितानेकी कोशिश कर रहा हूं। अेक समय था, जब ननकाना साहबमें मुझे सिक्खोंका सच्चा दोस्त कहा गया था। गुरु नानक मुसलमान और हिन्दूमें कोअी भेद नहीं मानते थे। अुनके लिअे सारी दुनिया अेक थी। मेरा सनातन हिन्दू धर्म अैसा ही है। सच्चा हिन्दू होनेके नाते मैं सच्चा मुसलमान होनेका भी दावा करता हूं। मैं हमेशा मुसलमानोंकी महान प्रार्थना गाता हूं, जिसमें कहा गया है कि खुदा अेक है और वह दिन-रात सारी दुनियाकी हिफाजत करता है।

गांधीजीने सब शरणार्थियोंसे कहा कि आप सचाअी और निडरतासे रहें और साथ ही किसीसे बैर या नफरत न करें। आप गुस्सेमें बिना सोचे-समझे नादानी भरे काम करके महंगे दामों मिली आजादीके सुनहले सेवको फेंक न दें।

२

१२–९–'४७

सरहदी सूबेकी खबरें

आज शामकी प्रार्थना-सभामें अपना भाषण शुरू करते हुअे गांधीजीने कहा, सरहदी सूबेसे जो चिन्ता पैदा करनेवाली खबरें मिल रही हैं, अुनसे मुझे बहुत दुःख होता है। मैं अुस सूबेको अच्छी तरह जानता हूं। हफ्तों मैंने अुस सूबेका दौरा किया है और मैं खान भाअियोंके घरमें पूरी सलामतीसे रहा हूं। अिसलिअे मुझे सरहदी सूबेके भूतपूर्व मंत्री श्री गिरधारीलाल पुरीका तार पढ़कर बेहद दुःख हुआ, जिसमें लिखा है कि अुन्हें और अुनकी पत्नीको (दोनों अच्छे कार्यकर्ता हैं) जल्दीसे जल्दी किसी सुरक्षित जगह हटा दिया जाय। अैसी खबरोंसे मेरा सिर शरमसे झुक जाता है। आज जो सरकार वहां राज कर रही है अुसका और कायदे आजमका यह देखनेका फर्ज है कि मुसलमानोंकी तरह वहांके सब हिन्दू और सिक्ख भी पूरी तरह सुरक्षित रहें।

गुस्सा पागलपनका छोटा भाओी है

सरहदी सूबेकी दुःखभरी घटनाओंकी निन्दा करते हुअे गांधीजीने लोगोंको समझाया कि गुस्सा करनेसे कोओी नतीजा नहीं निकलेगा। गुस्सेसे बदलेकी भावना पैदा होती है, और आज बदलेकी भावना ही यहांकी और दूसरी जगहकी भयंकर घटनाओंके लिअे जिम्मेदार है। दिल्लीकी घटनाओंका बदला पश्चिम पंजाब या सरहदी सूबेमें लेकर मुसलमानोंको क्या फायदा होगा; या पश्चिम पंजाब और सरहदी सूबेमें अपने भाअियों पर होनेवाले जुल्मोंका बदला दूसरी जगह लेनेसे हिन्दुओं और सिक्खोंको क्या मिलेगा? अगर अेक आदमी या अेक गिरोह पागल बन जाय, तो क्या सभीको पागल बन जाना चाहिये? मैं हिन्दुओं और सिक्खोंको यह चेतावनी देता हूं कि मारने, लूटने और आग लगानेके कामोंसे वे अपने ही धर्मोंका नाश कर रहे हैं। मैं धर्मका विद्यार्थी होनेका दावा करता हूं। मैं जानता हूं कि कोओी धर्म पागलपनकी सीख नहीं देता। यही बात अिस्लामके लिअे भी सच है। मैं सबसे प्रार्थना करता हूं कि आप अपने पागलपनके काम अेकदम बन्द कर दें। आप आगे आनेवाली पीढ़ियोंको अपने बारेमें यह कहनेका मौका न दें कि आपने आजादीकी मीठी रोटी खो दी, क्योंकि आप अुसे पचा न सके। याद रखिये कि आपने अिस पागलपनको बन्द न किया, तो दुनियाकी नजरोंमें हिन्दुस्तानकी कोओी कदर नहीं रह जायगी।

बीती बातें भूल जाअिये

मैं दुनियाकी सबसे सुन्दर मसजिद — जामा मसजिदमें गया था। वहां मुस्लिम भाओी-बहनोंको मुसीबतमें देखकर मुझे बड़ा दुःख हुआ। मैंने दुखियोंको यह कहकर ढाढ़स बंधानेकी कोशिश की कि हर अिन्सानको अेक-न-अेक रोज मरना ही है। मरे हुअे लोगोंके लिअे रोना बेकार है। अुससे वे वापस नहीं आ जायंगे। हर शहरीका यह फर्ज है कि वह अिस बड़े देशके भविष्यको बचाये। बहुतसे मुसलमान दोस्त रोजाना मुझसे मिलने आते हैं। अुन्हें मैं यही सलाह देता हूं कि वे अपनी हालतके बारेमें साफ-साफ बतायें। मुझे अुनसे

यह सुनकर दुःख होता है कि दिल्ली या हिन्दुस्तानके दूसरे हिस्सोंमें मुसलमानोंकी जान खतरेमें है। अिससे बड़े दुःखकी बात और क्या हो सकती है? आप लोगोंसे मेरी प्रार्थना है कि आप मुझ बूढ़ेकी बातों पर ध्यान दें, जिसने अपनी लम्बी जिन्दगीमें बहुतसे अनुभव किये हैं। मुझे अिस बातका पक्का विश्वास है कि बुराअीका बदला बुराअीसे चुकानेसे कोअी फायदा नहीं होता। भलाअीके बदले भलाअी करना भी कोअी खूबी नहीं है। बुराअीका बदला भलाअीसे चुकाना ही सच्चा रास्ता है। कअी मुसलमान दोस्त दिल्लीमें शान्ति और अमन कायम करनेके काममें मदद पहुंचाना चाहते हैं। लेकिन आज तो दिल्लीमें अुनकी अमली सेवाओंसे फायदा अुठाना असंभव है।

दिल पर गहरा असर डालनेवाले शब्दोंमें गांधीजीने सिक्खों, हिन्दुओं और मुसलमानोंसे अपील की कि वे बीती हुअी बातोंको भूल जायं। वे अपनी मुसीबतोंका खयाल छोड़कर आपसमें दोस्तीका हाथ बढ़ायें और शान्तिसे रहना तय कर लें। मुसलमानोंको हिन्दुस्तानी संघके मेम्बर होनेमें गर्व अनुभव करना चाहिये। अुन्हें तिरंगेको जरूर सलामी देनी चाहिये। अगर वे अपने मजहबके प्रति वफादार हैं, तो अुन्हें किसी हिन्दूको अपना दुश्मन नहीं समझना चाहिये। अिसी तरह हिन्दुओं और सिक्खोंको शान्ति-पसन्द मुसलमानोंका अपने बीचमें स्वागत करना चाहिये। मुझसे कहा गया है कि यहांके मुसलमानोंके पास हथियार हैं। अगर यह सच है, तो अुन्हें वे हथियार तुरन्त यहांकी सरकारको सौंप देने चाहिये और सरकारको अुनके खिलाफ कोअी कार्रवाअी नहीं करनी चाहिये। हिन्दुओं और सिक्खोंको भी, अगर अुनके पास हथियार हों, तो सरकारको सौंप देने चाहिये। मैंने यह भी सुना है कि पश्चिम पंजाबकी सरकार वहांके मुसलमानोंको हथियार बांट रही है। अगर यह सच है, तो बुरी बात है, और आगे जाकर अिससे अुनकी ही बरबादी होगी। यह काम आगेसे बन्द होना चाहिये। कहीं भी किसीके पास बगैर लायसेन्सका हथियार नहीं रहना चाहिये।

आप लोगोंसे मेरी बिनती है कि आप जल्दी-से-जल्दी दिल्लीमें शांति कायम करें; ताकि मैं पूर्व और पश्चिम पंजाब जानेके लिअे रवाना हो

सकूं। मेरे सामने सिर्फ अेक ही मिशन है और हरअेकके लिअे मेरा वही सन्देश है। आप अपने बारेमें दूसरोंको यह कहनेका मौका दीजिये कि दिल्लीके लोग कुछ समयके लिअे पागल हो अुठे थे, मगर अब अुनमें समझदारी आ गअी है। आप लोग अपने प्राअिम मिनिस्टर और डिप्टी प्राअिम मिनिस्टरको फिरसे अपने सिर अूंचे करनेका मौका दें। आज तो शरम और दुःखसे अुनके सिर झुक गये हैं। आपको बेशकीमती विरासत मिली है। आपको याद रखना चाहिये कि अुस पर सबका सम्मिलित अधिकार है। आपका फर्ज है कि आप अुसकी हिफाजत करें और अुसे बेदाग बनाये रखें।

राष्ट्रीय-स्वयंसेवक-संघ

अन्तमें गांधीजीने राष्ट्रीय-स्वयंसेवक-संघके गुरुसे अपनी और डॉ० दीनशा मेहताकी मुलाकातका जिक्र करते हुअे कहा — मैंने सुना है कि अिस संस्थाके हाथ भी खूनसे सने हुअे हैं। संघके गुरुजीने मुझे भरोसा दिलाया कि यह झूठ है। अुनकी संस्था किसीकी दुश्मन नहीं है। अुसका मकसद मुसलमानोंको मारना नहीं है। वह तो सिर्फ अपनी ताकतभर हिन्दू धर्मकी हिफाजत करना चाहती है। अुसका मकसद शान्ति बनाये रखना है। अुन्होंने (गुरुजीने) मुझसे कहा कि मैं अुनके विचारोंको जाहिर कर दूं।

३

१३–९–'४७

सरकार पर भरोसा रखिये

अपने भाषणके शुरूमें गांधीजीने सन् १९१५ के अुन दिनोंका जिक्र किया, जब वे स्व० प्रिंसिपाल रुद्रके घरमें रहते थे। प्रिंसिपाल रुद्र जितने पक्के हिन्दुस्तानी थे, अुतने ही पक्के अीसाअी भी थे। अुन्होंने स्व० हकीम साहब और डॉ० अन्सारीसे मेरी पहचान कराअी। ये दोनों हिन्दुओं, मुसलमानों और दूसरे हिन्दुस्तानियोंको अेकसे प्यार और अिज्जतकी नजरसे देखते थे। मैं जानता हूं कि हकीम साहब

हजारों गरीब हिन्दुओंका मुफ्त अिलाज करते थे। बेशक, वे पूरी दिल्लीके प्यारे सरदार थे। क्या अिन लोगोंको बुरा कहा जा सकता है? यह शरमकी बात है कि डॉ० अन्सारीकी लड़की जोहरा और अुनके खाविन्द डॉ० शौकदुल्लाको हिन्दुओं और सिक्खोंके डरसे अपना घर छोड़कर अेक होटलमें रहना पड़े। मैं साफ साफ कह देना चाहता हूं कि जिन मुसलमानोंमें हकीम साहब जैसे आदमी हुअे हैं, वे अगर हिन्दुस्तानी संघमें पूरी हिफाजतसे न रह सकें, तो मैं जीना पसन्द नहीं करूंगा। मुझे बताया गया है कि हिन्दुस्तानी संघके सारे मुसलमान पांचवीं कतारके आदमी हैं, सबको अेक साथ समेटनेवाली अिस निंदा पर मैं भरोसा नहीं करता। संघमें साढ़े चार करोड़ मुसलमान हैं। अगर वे सब अितने बुरे हैं, तो वे अिस्लामकी ही कब्र खोदेंगे। कायदे आजमने संघके मुसलमानोंसे कहा है कि वे संघके प्रति वफादार रहें। गद्दारोंसे निपटनेके मामलेमें लोगोंको अपनी सरकार पर भरोसा रखना चाहिये। अुन्हें कानूनको अपने हाथमें नहीं लेना चाहिये।

भगवान सबका रक्षक है

अिसके बाद गांधीजीने प्रार्थना-सभामें आये हुअे लोगोंको बताया कि आज मैं सिर्फ अेक ही शरणार्थी कैम्पका मुआअिना कर सका, जो पुराने किलेमें है। अुसमें बहुतसे मुसलमान शरणार्थी हैं। जैसे जैसे मेरी मोटर भीड़में आगे बढ़ी वैसे वैसे और ज्यादा शरणार्थी आते हुअे जान पड़े। अगरचे भीड़ ज्यादा थी और अुनका नायक गैरहाजिर था, फिर भी मैंने शरणार्थियोंको हिम्मत दिलानेवाले कुछ शब्द कहने पर जोर दिया। मुस्लिम कार्यकर्ताओंने भीड़से बिनती की कि वे बैठ जायं और शान्तिसे मेरी बात सुनें। वे लोग बैठ गये; सिर्फ जो किनारे पर थे, वे खड़े रहे। अुनकी नजरोंमें गुस्सा भरा था। जो लोग कुछ बोलनेके लिअे अुतावले हो रहे थे, अुन्हें स्वयंसेवकोंने समझा-बुझाकर चुप कर दिया। मुझे ज्यादा कुछ नहीं कहना था। मैंने दीवान चमनलालके कन्धोंका सहारा लेकर अुनसे कहा कि अपनी कमजोर आवाजमें मैं जो थोड़े शब्द बोलूं, अुन्हें आप अपनी बुलन्द आवाजमें दुहरा दें। शरणार्थियोंसे मैंने कहा कि

आप लोग शान्त हो जायं और अपने दिलोंसे गुस्सेको निकाल दें। अेक भगवान ही सबका रक्षक है, अिन्सान नहीं, फिर वह कितने ही अूंचे पद पर क्यों न हो। अिन्साननें जिसे बिगाड़ दिया है, अुसे भगवान ही सुधारेगा। अपनी तरफसे मैं वचन देता हूं कि जब तक दिल्लीमें वैसी ही शान्ति कायम नहीं हो जायगी, जैसी दोनों फिरकोंके बहुतसे आदमियोंके पागल हो अुठनेके पहले थी, तब तक मैं चैन न लूंगा।

दोनों अुपनिवेशोंका फर्ज

आज मैं बहुतसे हिन्दू और मुसलमान दोस्तोंसे मिला। दोनों फिरकोंके दर्दियोंने अपनी वही दुःखभरी कहानी सुनाअी। मैं तो दोनोंका अेकसा सेवक हूं। मैं चाहता हूं दोनों फिरकोंके लोग आपसमें मिलकर निश्चय कर लें कि आबादीका फेरबदल अेक घातक फन्दा है। अुसमें पड़नेसे ज्यादा तकलीफोंके सिवा और कुछ हासिल नहीं होगा। समस्याका हल अिसमें है कि दोनों फिरकोंके लोग अपने-अपने पुराने घरोंमें शान्ति और दोस्तीसे रहें। मौजूदा मनमुटावको हमेशाकी दुश्मनी बना देना पागलपन होगा। हरअेक अुपनिवेशका यह लाजिमी फर्ज है कि वह अपने यहांके अल्पसंख्यकोंको पूरी हिफाजतकी गारण्टी दे। अुनके लिअे दो ही रास्ते हैं — या तो वे आपसमें मिल-जुलकर अिस सवालको हल कर लें, या फिर आपसमें लड़ मरें और दुनियाको अपने पर हंसनेका मौका दें।

हिन्दुस्तानी संघसे गये हुअे मुस्लिम शरणार्थियोंकी मददके लिअे फण्ड अिकट्ठा करनेके बारेमें कायदे आजमने जो जोशीली अपील निकाली है, अुसमें अुन्होंने पाकिस्तानमें मुसलमानों द्वारा किये जानेवाले बुरे कामोंका कोअी जिक्र नहीं किया। यह ठीक नहीं है। मैं चाहता हूं कि दोनों अुपनिवेशोंकी सरकारें खुले तौर पर और हिम्मतके साथ अपने यहांके बहुसंख्यकोंके बुरे कामोंको स्वीकार करें।

आसफअली साहब

अन्तमें मैं हमारे अमेरिकाके राजदूत आसफअली साहबके खिलाफ किये गये अेक शकभरे अिशारेका जिक्र करना चाहता हूं। जबसे मैं अुन्हें जानता हूं, तभीसे वे अेक पक्के कांग्रेसी रहे हैं। वे हकीम साहब

और डॉ० अन्सारीके वैसे ही दोस्त थे, जैसे वे आज मौलाना साहबके दोस्त हैं। मौलाना साहब कअी बरसों तक कांग्रेसके प्रेसिडेण्ट रहे और पक्के राष्ट्रवादीके नामसे मशहूर हैं। मैं जानता हूं कि आसफअली साहबको अमेरिकासे बुलाया नहीं गया है, बल्कि वे बहुतसे अहम सवालों पर प्रधान-मंत्रीसे सलाह-मशविरा करनेके लिअे खुद यहां आये हैं। यह शरमकी बात है कि अैसे मुसलमान भी हरअेक हिन्दू और सिक्खके साथ बेखटके न रह सकें। अेक भी मुसलमानका राजधानी दिल्लीमें खतरा महसूस करना बुरी बात होगी।

४

१४–९–'४७

हमारा पतन

गांधीजीने कहा कि मैं अीदगाह और अुसके सामनेके दो शरणार्थी-कैम्पोंमें गया था। वहां किसी भी मुसलमानकी आंखोंमें गुस्सा नहीं था। वे गरीब मालूम होते थे। अुनमें अेक बहुत बूढ़ा आदमी था, जिसकी सिर्फ हड्डियां ही नजर आती थीं। अुसकी हरअेक पसली दिखाअी पड़ती थी। अुसे कअी जगह छुरे लगे थे। अुसके पास अेक औरत थी, जो अुतनी ही जख्मी थी। वह अितनी बूढ़ी नहीं थी, मगर अुसकी हालत गिरी हुअी थी। जब मैंने अुन्हें देखा, तो शर्मके मारे मेरा सिर झुक गया। मेरे लिअे तो सब मर्द और औरतें बराबर हैं, फिर वे किसी भी मजहबको माननेवाले क्यों न हों।

शरणार्थी-कैम्पोंकी सफाअी

अिसके बाद शरणार्थी-कैम्पोंकी गन्दगीका जिक्र करते हुअे गांधीजीने कहा कि वे अितने गन्दे हैं, जिसका बयान नहीं किया जा सकता। अीदगाहमें जो तालाब है, वह सूखा पड़ा है। मैंने यह नहीं पूछा कि शरणार्थी अपना पानी कहांसे लेते हैं। कैम्पमें रहनेवाले किसी तरह अपनी कुदरती जरूरतें पूरी करते हैं। अगर मैं कैम्पका नायक होता, और

फौज और पुलिस मेरे हाथमें होती, तो मैं खुद फावड़ा-कुदाली अपने हाथमें लेता और फौज व पुलिससे अिस काममें मदद मांगता। अिसके बाद शरणार्थियोंसे कहता कि वे भी हमारी ही तरह करें, ताकि कैम्पोंमें पूरी पूरी सफाअी हो सके। वहांकी जमीन पर अितना कूड़ा-करकट जमा है कि जब तक अुसे पूरी तरह साफ न किया जाय, तब तक किसी अिन्सानको वहां रहनेके लिअे नहीं कहा जा सकता। अिसके लिअे रुपये-पैसेकी कोअी जरूरत नहीं है। सिर्फ थोड़ी दूरदृष्टि और गन्दगीको जरा भी सहन न करनेवाली सफाअीकी भावनाकी जरूरत है। हिन्दू शरणार्थी-कैम्पोंकी भी बिलकुल यही हालत है। गन्दगी रखना अिस देशकी ही खराबी है, अुसे दुर्गुण कहना ज्यादा अच्छा रहेगा। अिस दुर्गुणको अेक आजाद देशके नाते हम जितनी जल्दी हटा सकें, अुतना ही हमारे लिअे ठीक होगा।

सरकारों और जनताका फर्ज

अिन कैम्पोंसे हटकर गांधीजीके विचार मौजूदा तोड़-फोड़ और बरबादीकी तरफ मुड़े, जो अैसे पैमाने पर हुअी है कि अुसने देशकी प्रगतिको रोक दिया है। अुन्होंने सवाल किया — अितने हिन्दू और सिक्ख पश्चिमके पाकिस्तानी सूबोंसे भागकर क्यों आ रहे हैं? क्या हिन्दू या सिक्ख होना कोअी गुनाह है? या वे महज अपनी जिदके कारण वहांसे आ रहे हैं? या अुनके धर्म-भाअियोंने पूर्वमें जो कुछ किया हैं, अुसकी सजा अुन्हें दी गअी है? अिसके बाद हिन्दुस्तानी संघके बारेमें सोचते हुअे गांधीजी बोले — दिल्लीके मुसलमान डरकर अपने घर क्यों छोड़ना चाहते हैं? क्या दोनों अुपनिवेशोंकी सरकारें खत्म हो गअी हैं? जनताने अपनी सरकारोंकी अुपेक्षा क्यों की? अगर मुसलमानोंके पास बगैर लाअिसेन्सके हथियार हैं, तो यह काम सरकारका है कि वह अुन लोगोंसे अुन्हें छीन लेती, और अगर सरकारमें अैसा करनेकी ताकत नहीं है, तो अुसके वजीरोंको अपनेसे ज्यादा काबिल लोगोंके लिअे जगह खाली करनी पड़ती। सरकार तो, जैसी जनता अुसे बना दे, वैसी ही बनती है। मगर किसी आदमीका अपने हाथमें कानून लेना बिलकुल बेजा और लोकशाहीके खिलाफ है। यह अराजकता, चाहे वह पाकिस्तानमें

हो, चाहे हिन्दुस्तानी संघमें, अिससे कभी कोअी लाभ नहीं हो सकता। मैं दिल्लीमें अपना 'करो या मरो' का मिशन पूरा करनेके लिअे ठहरा हुआ हूं। यह भाअीके हाथों भाअीका खून, यह राष्ट्रीय आत्मघात या ख़ुदकुशी और आपको अपनी ही सरकारको धोखा देते देखनेकी मेरी बिलकुल अिच्छा नहीं है। भगवान करे आप फिरसे समझदार बनें!

५

१५–९–'४७

आत्म-चिन्तन

रातमें जब मैंने धीरे धीरे गिरनेवाले जीवनप्रद पानीकी आवाज सुनी — जो और मौकों पर मनको खुश करनेवाली होती — तो मेरा मन दिल्लीकी खुली छावनियोंमें पड़े हुअे हजारों शरणार्थियोंकी तरफ दौड़ गया। मैं चारों तरफसे अपनेको पानीसे बचानेवाले बरामदेमें आरामसे सो रहा था। अगर अिन्सान बेरहम बनकर अपने भाअी पर जुल्म न करता, तो ये हजारों मर्द, औरतें और मासूम बच्चे आज बेआसरा न बनते, और अुनमें से बहुतसे भूखे न रहते। कुछ जगहोंमें तो वे घुटने घुटने पानीमें ही होंगे। अिसके सिवा अुनके लिअे कोअी चारा नहीं। क्या यह सब अुनके लिअे अनिवार्य या लाजिमी है? मेरे भीतरसे मजबूत आवाज आअी — नहीं। क्या यह महीनेभरकी आजादीका पहला फल है? अिन पिछले २० घण्टोंमें ये ही विचार मुझे लगातार सताते रहे हैं। मेरा मौन मेरे लिअे वरदान बन गया है। अुसने मुझे अपने दिलको टटोलनेकी प्रेरणा दी है। क्या दिल्लीके नागरिक पागल हो गये हैं? क्या अुनमें जरासी भी अिन्सानियत बाकी नहीं रही है? क्या देशका प्रेम और अुसकी आजादी अुन्हें बिलकुल अपील नहीं करती? अगर अिसका पहला दोष मैं हिन्दुओं और सिक्खोंको दूं, तो मुझे माफ कर दिया जाय। क्या वे नफरतकी बाढ़को रोकने लायक अिन्सान नहीं बन सकते? मैं दिल्लीके मुसलमानोंसे जोर देकर यह कहूंगा कि वे सारा डर छोड़ दें, भगवान पर भरोसा करें और अपने सारे हथियार सरकारको सौंप दें।

क्योंकि हिन्दुओं और सिक्खोंको यह डर है कि मुसलमानोंके पास हथियार हैं। अिसका यह मतलब नहीं कि हिन्दुओं और सिक्खोंके पास कोअी हथियार नहीं हैं। सवाल सिर्फ डिग्रीका है। किसीके पास कम होंगे, किसीके पास ज्यादा। या तो अल्पमतवालोंको न्यायके लिअे भगवान पर या अुसके पैदा किये हुअे अिन्सान पर भरोसा रखना होगा, या जिन लोगों पर वे विश्वास नहीं करते अुनसे अपनी हिफाजत करनेके लिअे अुन्हें अपनी बन्दूक, पिस्तौल वगैरा हथियारों पर भरोसा करना होगा।

अपनी सरकार पर भरोसा रखिये

मेरी सलाह बिलकुल निश्चित और अचल है। अुसकी सचाअी जाहिर है। आप अपनी सरकार पर यह भरोसा रखिये कि वह अन्याय करनेवालोंसे हर शहरीकी रक्षा करेगी, फिर अुनके पास कितने ही ज्यादा और अच्छे हथियार क्यों न हों। आप अपनी सरकार पर यह भी भरोसा रखिये कि वह अन्यायसे बेदखल किये गये अल्पमतके हर मेम्बरके लिअे हरजाना मांगेगी और वसूल करेगी। दोनों सरकारें सिर्फ अेक ही बात नहीं कर सकतीं : वे मरे हुअे लोगोंको जिला नहीं सकतीं। दिल्लीके लोग अपनी करतूतोंसे पाकिस्तान सरकारसे न्याय मांगनेका काम मुश्किल बना देंगे। जो न्याय चाहते हैं, अुन्हें न्याय करना भी होगा। अुन्हें बेगुनाह और सच्चे बनना होगा। हिन्दू और सिक्ख सही कदम अुठायें और अुन मुसलमानोंसे लौट आनेको कहें, जिन्हें अपने घरोंसे निकाल दिया गया है। अगर हिन्दू और सिक्ख यह हर तरहसे अुचित कदम अुठानेकी हिम्मत दिखा सकें, तो वे शरणार्थियोंकी समस्याको अेकदम आसानसे आसान कर देंगे। तब पाकिस्तान ही नहीं, सारी दुनिया अुनके दावोंको मंजूर करेगी। वे दिल्ली और हिन्दुस्तानको बदनामी और बरबादीसे बचा लेंगे। मैं तो लाखों हिन्दुओं, सिक्खों और मुसलमानोंकी आबादीके फेरबदलके बारेमें सोच भी नहीं सकता। यह गलत चीज है। पाकिस्तानकी बुराअीको हम हिन्दुस्तानसे आबादीका फेरबदल न करनेका पक्का और सही अिरादा करके ही मिटा सकते हैं। मेरा खयाल है कि मैं आखिर तक हिम्मतके साथ अिस बातकी हिमायत करूंगा, फिर चाहे मैं अकेला ही अिसे माननेवाला क्यों न होअूं।

६

१७-९-'४७

जबरदस्ती नहीं

गणेश लाअिन्सके लम्बे-चौड़े अहातेमें दिल्ली क्लाथ मिलके मजदूरों और बाहरके दूसरे लोगोंकी बड़ी भारी भीड़ अिकट्ठी हुअी थी। गांधीजी मजदूर भाअियोंकी बिनती पर वहां गये थे। जब कभी गांधीजी भंगी-बस्तीमें ठहरते थे, तब ये ही मजदूर अुनकी सेवाके लिअे स्वयंसेवकोंका अिन्तजाम करते थे। साढ़े छह बजे प्रार्थनासभामें पहुंचकर गांधीजीने लाअुड स्पीकरके जरिये बोलनेकी कोशिश की, लेकिन अुस मशीनमें कुछ खराबी होनेसे दूसरी मशीन लगाअी गअी। अुसने कुछ काम तो दिया, लेकिन अुसकी आवाज अितनी तेज नहीं थी कि सभाके आखिरी कोने तक सुनाअी दे। अिस पर अेक पंजाबी दोस्तने कहा कि मैं गांधीजीका अेक-अेक शब्द अपनी जोरदार आवाजमें दुबारा कह सुनाअूंगा। यह तरकीब काम दे गअी। गांधीजीने कहा, कल शामके मेरे अनुभवके बाद मैंने यह तय कर लिया है कि जब तक सभाका अेक-अेक आदमी प्रार्थना करनेके लिअे राजी न हो, तब तक आम प्रार्थना नहीं करूंगा। मैंने कभी कोअी चीज किसी पर नहीं लादी। तब फिर प्रार्थना-जैसी अूंची आध्यात्मिक या रूहानी चीज तो मैं लाद ही कैसे सकता हूं? प्रार्थना करने या न करनेका जवाब दिलके भीतरसे मिलना चाहिये। अिसमें मुझे खुश करनेका तो कोअी सवाल ही नहीं अुठ सकता। मेरी प्रार्थनासभायें सचमुच जनप्रिय बन गअी हैं। मालूम होता है कि अुनसे लाखों आदमियोंको फायदा पहुंचा है; लेकिन अिस आपसी खिंचावके समय मैं अुन लोगोंके गुस्सेको समझ सकता हूं, जिन्होंने बड़ी बड़ी मुसीबतें सही हैं। मेरी प्रार्थना करनेकी शर्त यही है कि अुसका जो भाग किसीको अेतराजके लायक मालूम हो, अुसे छोड़नेकी मुझसे आशा न रखी जाय। या तो प्रार्थना जैसी है वैसी ही दिलसे स्वीकार की जाय या अुसे नामंजूर कर दिया जाय। मेरे लिअे कुरानकी आयत पढ़ना प्रार्थनाका अैसा हिस्सा है, जिसे छोड़ा नहीं जा सकता।

आजके अहम सवाल पर लौटते हुअे गांधीजीने कहा, मैं आपके गुस्से और अुससे पैदा होनेवाले अुतावलेपनको समझ सकता हूं। लेकिन अगर आप अपनी आजादीके लायक बनना चाहते हैं, तो आपको अपना गुस्सा दबाना होगा और न्याय पानेकी भरसक कोशिश करनेके लिअे अपनी सरकार पर विश्वास रखना होगा। मैं आपके सामने अपना अहिंसाका तरीका नहीं रख रहा हूं, हालांकि मैं अुसे रखना बहुत पसन्द करूंगा। लेकिन मैं जानता हूं कि आज मेरी अहिंसाकी बात कोअी नहीं सुनेगा। अिसलिअे मैंने आपको वह रास्ता अपनानेकी बात सुझाअी है, जिसे सारे लोकशाही हुकूमतवाले देश अपनाते हैं। लोकशाहीमें हर आदमीको समाजी अिच्छा यानी राजकी अिच्छाके मुताबिक चलना होता है और अुसीके मुताबिक अपनी अिच्छाओंकी हद बांधनी होती है। स्टेट लोकशाहीके द्वारा और लोकशाहीके लिअे राज चलाती है। अगर हर आदमी कानून अपने हाथमें ले ले, तो स्टेट नहीं रह जायगी; वह अराजकता हो जायगी, यानी समाजी नियम या स्टेटकी हस्ती मिट जायगी। यह आजादीको मिटा देनेका रास्ता है। अिसलिअे आपको अपने गुस्से पर काबू पाना चाहिये और राजको न्याय पानेका मौका देना चाहिये। मेरी रायमें अगर आप सरकारको अपना काम करने देंगे, तो अिसमें कोअी शक नहीं कि हर हिन्दू और सिक्ख शरणार्थी शान और अिज्जतके साथ अपने घर लौट जायगा। मैं यह कबूल करता हूं कि आप लोगोंको पाकिस्तानमें बहुत कुछ सहना पड़ा है। कअी घर अुजड़ गये और बरबाद हो गये हैं, सैकड़ों-हजारों जानें गअी हैं, लड़कियां भगाअी गअी हैं, जबरन लोगोंका धर्म बदला गया है। लेकिन अगर आप अपने पर काबू रखें और अपनी बुद्धि पर गुस्सेको हावी न होने दें, तो लड़कियां लौटा दी जायंगी, जबरदस्तीके धर्म-परिवर्तनको झूठ करार दिया जायगा, और आपकी जमीन-जायदाद भी आपको लौटा दी जायगी। लेकिन अगर आप शान्तिसे न्याय पानेके काममें दखल देंगे और अपना मामला बिगाड़ लेंगे, तो यह सब नहीं हो सकेगा। अगर आप यह आशा करते हों कि आपके मुसलमान भाअी-बहनोंको हिन्दुस्तानसे निकाल दिया

जाय, तो आप अिन सब चीजोंके होनेकी आशा नहीं रख सकते। मैं तो अैसी किसी बातको बहुत भयानक समझता हूं। आप मुसलमानोंके साथ अन्याय करके न्याय नहीं पा सकते। अिसके अलावा, अगर यह सच है कि पाकिस्तानमें अल्पमतवालों यानी हिन्दुओं और सिक्खोंके साथ बहुत बुरा बरताव किया गया, तो यह भी सच है कि पूर्व पंजाबमें भी अल्पमतवालों यानी मुसलमानोंके साथ बुरा बरताव किया गया है। अपराधको सोनेकी तराजूमें नहीं तोला जा सकता। दोनों तरफके अपराधको मापनेका मेरे पास कोअी सबूत नहीं है। यह जान लेना काफी होगा कि दोनों पार्टियां दोषी हैं। दोनों राज्योंके लिअे ठीक ठीक समझौता करनेका आम रास्ता यह है कि दोनों पार्टियां साफ दिलसे अपना पूरा-पूरा दोष स्वीकार करें और समझौता कर लें। अगर दोनोंमें कोअी समझौता न हो सके, तो वे सामान्य तरीकेसे पंच-फैसलेका सहारा लें। अिससे दूसरा जंगली रास्ता लड़ाअीका है। मुझे तो लड़ाअीके विचारसे ही नफरत होती है। लेकिन आपसी समझौता या पंच-फैसलेके अभावमें लड़ाअीके सिवा कोअी चारा नहीं रह जायगा। फिर भी अिस बीच मुझे आशा है कि लोग अपना पागलपन छोड़कर समझदार बनेंगे और जिन मुसलमानोंने अपनी अिच्छासे पाकिस्तान जानेका चुनाव नहीं किया है, अुन्हें अुनके पड़ोसी सुरक्षा या सलामतीके पक्के विश्वासके साथ अपने घरोंको लौट आनेके लिअे कहेंगे। यह काम फौजकी मददसे नहीं किया जा सकता। यह तो लोगोंके समझदार बननेसे ही हो सकता है। मैंने अपना आखिरी फैसला कर लिया है। मैं भाअी-भाअीकी लड़ाअीमें हिन्दुस्तानकी बरबादीको देखनेके लिअे जिन्दा नहीं रहना चाहता। मैं लगातार भगवानसे प्रार्थना किया करता हूं कि हमारी अिस पवित्र और सुन्दर धरती पर अिस तरहका कोअी संकट आये, अुसके पहले ही वह मुझे यहांसे अुठा ले। आप सब अिस प्रार्थनामें मेरा साथ दें।

मजदूरोंका फर्ज

मैं हिन्दू और मुसलमान मजदूरोंको अेक साथ मिल-जुलकर काम करनेके लिअे धन्यवाद देता हूं। अगर आप पूरे अेकेसे काम करेंगे, तो

देशके सामने अेक अुम्दा मिसाल रखेंगे। मजदूरोंको अपने बीच साम्प्रदायिकताको कोअी जगह नहीं देनी चाहिये। क्या मैंने यह नहीं कहा है कि अगर आप अपनी ताकतको पहचान लें और समझदारीके साथ रचनात्मक कामोंमें अुसे लगायें, तो आप सच्चे मालिक और शासक बन जायंगे और आपको रोजी देनेवाले, आपके ट्रस्टी और मुसीबतमें साथ देनेवाले दोस्त बन जायंगे। यह सुखकी घड़ी तभी आयेगी, जब वे यह जान लेंगे कि सोने और चांदीकी पूंजीके बनिस्बत, जिसे मजदूर जमीनके भीतरसे निकालते हैं, वे मजदूर ही ज्यादा सच्ची पूंजी हैं।

७

१८-९-'४७

प्रार्थना अखण्ड है

दरियागंजसे आनेके बाद गांधीजी बिड़ला भवनके अहातेमें अिकट्ठी हुअी छोटीसी प्रार्थनासभामें गये। अुन्होंने कहा, 'अगर अेक भी आदमी कुरानकी आयत पर अेतराज अुठायेगा, तो मैं आम लोगोंके लिअे प्रार्थना नहीं करूंगा। प्रार्थनाका मकसद किसीकी भावनाओंको चोट पहुंचाना नहीं है। साथ ही, मैं प्रार्थनाओंका कोअी हिस्सा छोड़ भी नहीं सकता, जिन्हें मैंने बड़ी सावधानी और सोच-विचारके बाद चुना है। आप अपने हाथ अुठाकर बतायें कि मैं प्रार्थना करूं या न करूं।' लेकिन किसीने हाथ नहीं अुठाया, अिसलिअे हमेशाकी तरह प्रार्थना की गअी। आज कुरानकी आयत आखिरमें पढ़नेके बजाय प्रार्थनाके शुरूमें पढ़ी गअी।

गजेन्द्रमोक्ष

प्रार्थनाके बाद गांधीजीने कहा, रोटी जैसे शरीरका भोजन है, अुसी तरह प्रार्थना आत्माका भोजन है। यह देखकर मुझे खुशी होती है कि आप अुसकी कीमत जानते हैं।

गजेन्द्रमोक्षके भजनके बारेमें बोलते हुअे गांधीजीने कहा, हमें तो हिन्दुस्तानको जंगलीपनके पंजेसे छुड़ाना है। यह भारी काम भगवानकी दयासे ही पूरा हो सकता है।

दिल्लीके बाद पंजाब

मैं दरियागंजमें मुसलमान दोस्तोंसे मिला था। मुझे तब तक शान्ति और आराम नहीं मिलेगा, जब तक अेक-अेक मुसलमान, हिन्दू और सिक्ख हिन्दुस्तान और पाकिस्तानमें फिरसे अपने घरमें नहीं बस जायगा। अगर कोअी मुसलमान दिल्ली या हिन्दुस्तानमें नहीं रह सका और कोअी सिक्ख पाकिस्तानमें नहीं रह सका, तो हिन्दुस्तानकी सबसे बड़ी मसजिद जामा मसजिद या ननकाना साहब और पंजा साहबका क्या होगा? क्या अिन पवित्र स्थानोंमें दूसरे काम होने लगेंगे? अैसा कभी नहीं हो सकता। (जगहकी कमीसे यहां दूसरी जोरदार मिसालें नहीं दी गअी हैं।)

मैं पंजाब जा रहा हूं; ताकि वहांके मुसलमानोंको अुनकी गलती सुधारनेके लिअे कह सकूं। लेकिन जब तक मैं दिल्लीके मुसलमानोंके लिअे न्याय नहीं पा सकता, तब तक पंजाबमें सफल होनेकी आशा नहीं कर सकता। मुसलमान दिल्लीमें पीढ़ियोंसे रहते आये हैं। अगर हिन्दू और मुसलमान फिरसे भाअीकी तरह रहने लगें, तो मैं पंजाबकी तरफ बढ़ूंगा और पाकिस्तानमें दोनों जातियोंके बीच मेल पैदा करनेके लिअे कुछ करूंगा या मरूंगा। मैं अपने काममें तभी सफल हो सकूंगा, जब यूनियनके लोग अीमानदार रहेंगे और मुसलमानोंके साथ अन्याय नहीं करेंगे। हिन्दू धर्म महासागरकी तरह है। महासागर कभी गन्दा नहीं होता। यही यूनियनके बारेमें भी सच होना चाहिये। हिन्दुओं और सिक्खोंने जो मुसीबतें सही हैं, अुससे अुनका गुस्सा होना स्वाभाविक है। लेकिन अपने लिअे न्याय पानेका काम अुन्हें अपनी सरकार पर छोड़ देना चाहिये।

फौज और पुलिसका फर्ज

फौज और पुलिस पर यह अिलजाम लगाया जाता है कि वे अपने बरतावमें तरफदारी करते हैं। अगर यह सच है, तो बड़े दुःखकी बात है। अगर कानून और व्यवस्थाके रक्षक ही तरफदार बन जायं और अपराध करने लगें, तो कानून और व्यवस्था कैसे कायम रखी जा सकती है? मैं फौज और पुलिसवालोंसे अपील करता हूं कि वे तरफदारी

और बेअीमानीसे बचे रहें। जाति या धर्मका फर्क किये बिना अुन्हें लोगोंके वफादार सेवक बने रहना है।

८

१९-९-'४७

बातोंको बढ़ा-चढ़ाकर मत कहो

पांच बजे शामको गांधीजी अपने ठहरनेकी जगहसे निकले और अुन्होंने कूचा ताराचन्द नामक अेक छोटेसे हिन्दू लत्तेका मुआअिना किया। अेक हिन्दू प्रतिनिधिने हिन्दुओंकी अेक बड़ी सभामें बोलते हुअे कहा कि यह लत्ता चारों तरफसे मुसलमानोंसे घिरा हुआ है। अुन्होंने हिन्दुओंकी तकलीफोंका बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बयान किया और यह कहते हुअे अपना भाषण खत्म किया कि अिस लत्तेके सारे मुसलमान ज्यादातर लीगी हैं और अुन्होंने हिन्दुओंके खिलाफ भयंकर आन्दोलन चला रखा है। अिसलिअे अिस जगहसे सारे मुसलमान हटा दिये जायं। अुनका मत यह था कि पाकिस्तानके मुसलमान वहां जैसा बरताव कर रहे हैं, ठीक वैसा ही बरताव हमें यहां करना चाहिये।

बहादुर और निडर बनो

अिसका जवाब देते हुअे गांधीजीने कहा कि मैं अिस बातसे सहमत नहीं हो सकता कि जिस तरह पाकिस्तानके मुसलमान वहांके सारे गैर-मुसलमानोंको अपने यहांसे खदेड़ रहे हैं, अुसी तरह हिन्दुस्तानको अपने यहांकी सारी मुस्लिम जनताको पाकिस्तान भेज देना चाहिये। दो गलत काम मिलकर अेक सही काम नहीं बना सकते। अिसलिअे आप लोगोंसे मेरी प्रार्थना है कि आप मेरी सलाह पर गौर करें और अपने दिलोंमें किसी किस्मका डर रखे बिना बहादुरीसे काम करें और अिस बातमें गर्व महसूस करें कि आप बहुत बड़ी मुस्लिम जनताके बीचमें रह रहे हैं। अिसके बाद गांधीजी पाटौदी हाअुसके अनाथालयमें गये और वहांकी जिम्मेदार पार्टियोंसे कहा कि जिन अनाथोंको डरकी वजहसे कहीं हटा दिया गया है, अुन्हें वापिस ले आअिये। गांधीजीसे कहा गया कि पड़ोसके

मुसलमानोंके घरोंमें से गोलीबार हुआ था, जिससे अेक बच्चा मर गया और दूसरा जख्मी हुआ। यह करीब सातवीं सितम्बरकी बात है। मौलाना अहमद सअीद और गांधीजीके साथके दूसरे मुसलमानोंने कहा कि पड़ोसके मुसलमान अिस बातका खयाल रखेंगे कि अनाथालयके बच्चोंको कोअी नुकसान न होने पाये। अिसके बाद गांधीजी श्री भार्गवके मकानके पास गये। मुसलमानोंके बीचमें रहनेवाले ये अकेले हिन्दू थे। वह जगह मुसलमानोंसे खचाखच भरी हुअी थी। गांधीजीने कहा कि अपनी बारह बरसकी अुमरसे मैं सोचा करता था कि हिन्दू, मुसलमान और दूसरे हिन्दुस्तानी भाअियों और दोस्तोंकी तरह साथ साथ रहें। मुझे अुम्मीद है कि मुसलमान भाअी मेरा यह सपना सच्चा करेंगे।

बिड़ला भवनके बगीचेमें होनेवाली प्रार्थनासभामें जो थोड़ेसे लोग अिकट्ठा हुअे थे, अुनके सामने ये सारी बातें रखते हुअे गांधीजीने कहा कि आप लोग भी मेरी अिस प्रार्थनामें शामिल हों कि या तो भगवान मेरा यह सपना सच्चा कर दे या मुझे अुठा ले; जिससे मुझे वह दुःख-दायक दृश्य न देखना पड़े, जिसमें हिन्दुस्तानके अेक हिस्सेमें सिर्फ मुसलमान रह रहे हों और दूसरेमें सिर्फ हिन्दू।

९

२०–९–'४७

भगवान डर भगाता है

चूंकि किसीने कुरान शरीफकी आयतें पढ़ने पर अेतराज नहीं किया, अिसलिअे आजकी प्रार्थना हमेशाकी तरह जारी रही।

अपने भाषणमें गांधीजीने आज गाअी गअी प्रार्थनाका जिक्र करते हुअे कहा: अुसमें कविने कहा है कि जो लोग भगवान पर भरोसा करते हैं, अुनके दिलोंसे वह सारा डर दूर कर देता है।

आज हिन्दू और सिक्ख दिल्लीके मुसलमानोंको डरा रहे हैं। जो लोग खुद डरसे छूटना चाहते हैं, अुन्हें दूसरोंके दिलोंमें डर पैदा नहीं करना चाहिये।

बन्नू सीमाप्रान्तका अेक शहर है, जहां मैं अेक मुसलमान दोस्तके घरमें रह चुका हूं। बन्नूसे कुछ लोग मेरे पास आये और अुन्होंने शिकायत की कि अगर गैरमुस्लिमोंको वहांसे जल्दी ही हटाया न गया, तो वे सब मार डाले जायंगे और बरबाद हो जायंगे। वे मुसलमान दोस्त, जिनके घरमें मैं ठहरा था, पहलेकी ही तरह अपने विश्वासोंके पक्के हैं। मगर वे अकेले ही अैसे हैं, अिसलिअे वे चाहे जितनी कोशिश करें, वहांके गैरमुस्लिमोंको बचा नहीं सकते। दूसरे मुसलमान, जिनमें सरहदके मुसलमान भी शामिल हैं, रोजाना आकर अैसी हरकतें करते हैं, जिनसे गैरमुस्लिमोंके दिलोंमें डर पैदा हो। अिसलिअे समय रहते गैर-मुस्लिमोंको वहांसे हटा लिया जाना चाहिये। मैंने अुनसे कहा कि मेरे हाथमें तो अधिकार नहीं है, मगर मैं आपका किस्सा पण्डितजी और सरदार पटेलको सुना दूंगा। अुन दोस्तोंने बिनती की कि अुनकी मददके लिअे हिन्दू फौज भेजी जाय। अिस पर मैंने अुनसे वही बात कही जो मैं पहले कअी बार कह चुका हूं कि आपको भगवानके सिवा और कोअी नहीं बचा सकता। कोअी भी अिन्सान दूसरेको बचा नहीं सकता। हममें से कोअी भी नहीं कह सकता कि कल या अेक मिनटके बाद भी वह जिन्दा रहेगा या नहीं। अेक भगवान ही अैसा है, जो पहले था, अब भी है और आगे भी हमेशा रहेगा। अिसलिअे आपका फर्ज है कि आप अुसीको पुकारें और अुसीका भरोसा रखें। जो भी हो, कोअी आदमी कभी किसी भी हालतमें बुराअीका बदला बुराअीसे न ले।

अल्पसंख्यकोंकी हिफाजत

आगे चलकर गांधीजीने कहा कि पाकिस्तानके हिन्दुओं और सिक्खोंका अिस तरह डरना वहांकी सरकारके लिअे बहुत बड़े कलंककी बात है और खुद कायदे आजम द्वारा दिलाये गये अल्पसंख्यकोंकी हिफाजतके विश्वासोंके खिलाफ है। हिन्दुस्तानी संघकी बहुसंख्यक जातिकी ही तरह पाकिस्तानकी बहुसंख्यक जातिका यह फर्ज है कि वह अपने यहांके अुन अल्पसंख्यकोंकी हिफाजत करे जिनकी अिज्जत, जिन्दगी और जायदाद अुसके हाथमें है।

भाओी दुश्मन बन गये?

यह बात मेरी समझमें नहीं आती कि जो लोग भाओी-भाओीकी तरह रहे हैं, जलियांवाला बागके हत्याकांडमें जिनका खून अेक साथ बहा है, आज वे अेक दूसरेके दुश्मन कैसे हो गये? जब तक मैं जिन्दा हूं, तब तक तो यही कहूंगा कि अैसा नहीं होना चाहिये। अिससे मेरे दिलमें जो दुःख बना रहता है, अुसमें मैं हर दिन, हर पल भगवानसे शान्तिकी प्रार्थना करता रहता हूं। अगर शान्ति नहीं हुओी, तो मैं भगवानसे यही प्रार्थना करूंगा कि वह मुझे अुठा ले।

शरणार्थी

आज बरसात होते देखकर मुझे दिल्लीके और पूर्व और पश्चिम पंजाबके शरणार्थियोंका खयाल आता है। वे बेघर, बेआसरा होकर किसके पापोंका फल भोग रहे हैं? मैंने सुना है कि हिन्दुओं और सिक्खोंका ५७ मील लम्बा काफला पश्चिम पंजाबसे पूर्व पंजाबमें आ रहा है। अिस खयालसे मेरा सिर घूमने लगता है कि यह कैसे हो सकता है? दुनियाके अितिहासमें अिसके जोड़की कोओी घटना नहीं मिलेगी। और अिससे मेरा सिर शरमके मारे झुक जाता है; जैसा कि आप सबका सिर भी झुक जाना चाहिये। यह अिस बातके पूछनेका वक्त नहीं है कि किसने ज्यादा बुराओी की है और किसने कम। यह वक्त तो अिस पागलपनको रोकनेका है।

मुसलमानोंकी वफादारी जरूरी है

किसीने मुझसे कहा कि हिन्दुस्तानी संघका हरअेक मुसलमान पाकिस्तानके प्रति वफादार है, हिन्दुस्तानके प्रति नहीं। अिस अिलजामसे मैं अिनकार करता हूं। लगातार अेकके बाद दूसरा मुसलमान मेरे पास आकर अिससे अुलटी बात मुझसे कह गया है। हर हालतमें यहांके बहुसंख्यकोंको अल्पसंख्यकोंसे डरनेकी जरूरत नहीं है। आखिरकार हिन्दुस्तानके साढ़े चार करोड़ मुसलमान अिस देशकी लम्बाओी-चौड़ाओीमें फैले हुओे हैं। गांवोंमें रहनेवाले मुसलमान तो सेवाग्रामके मुसलमानोंकी तरह गरीब और सीधे-सादे हैं। अुन्हें पाकिस्तानसे कोओी मतलब नहीं। अुन्हें

क्यों निकाला जाय? अगर कोअी देशद्रोही हों, तो अुनसे हमेशा कानूनके जरिये निपटा जा सकता है। देशद्रोहीको हमेशा गोली मार दी जाती है, जैसा कि मि० अेमरीके लड़के तकके बारेमें हुआ था; जो भी मैं मंजूर करता हूं कि देशद्रोहियोंसे अिस तरह बरतना मेरा रास्ता नहीं है। दूसरे लोगोंने मुझसे कहा कि कुछ मुसलमान अफसर यहां अिसलिअे रखे जा रहे हैं कि हिन्दुस्तानके सारे मुसलमानोंको पाकिस्तानके प्रति वफादार रखा जा सके। कुछ लोग कहते हैं कि मुसलमान सारे हिन्दुओंको काफिर मानते हैं। मगर पढ़े-लिखे मुसलमानोंने मुझसे कहा है कि यह बिलकुल गलत बात है, क्योंकि हिन्दू भी खुदाकी प्रेरणासे लिखे गये धर्मग्रन्थोंको अुसी तरह मानते हैं, जिस तरह मुसलमान, अीसाअी और यहूदी लोग। जो हो, मैं सभी हिन्दुओं और सिक्खोंसे अपील करता हूं कि वे अपने दिलोंसे मुसलमानोंका सारा डर दूर कर दें, अुनके साथ दयाका बरताव करें, अुन्हें अपने पुराने घरोंमें आकर रहनेके लिअे कहें और अुनकी हिफाजतकी गारण्टी दें। मुझे पूरा विश्वास है कि अिस तरह आप पाकिस्तानके मुसलमानोंसे, यहां तक कि सरहदी सूबेके कबायलियोंसे भी भला बरताव पा सकेंगे। हिन्दुस्तानकी शान्ति और जिन्दगीके लिअे यही अेक रास्ता है। हिन्दुस्तानसे हरअेक मुसलमानको भगाने और पाकिस्तानसे हरअेक हिन्दू और सिक्खको भगानेका नतीजा यह होगा कि दोनों अुपनिवेशोंमें लड़ाअी होगी और देश हमेशाके लिअे बरबाद हो जायगा। अगर दोनों अुपनिवेशोंमें यह आत्मघाती नीति बरती गअी, तो अुससे पाकिस्तान और हिन्दुस्तान दोनोंमें अिस्लाम और हिन्दू धर्मका नाश हो जायगा। भलाअी सिर्फ भलाअीसे ही पैदा होती है। प्यारसे प्यार पैदा होता है। जहां तक बदला लेनेकी बात है अिन्सानको यही शोभा देता है कि वह बुराअी करनेवालेको भगवानके हाथमें छोड़ दे। अिसके सिवा दूसरा कोअी रास्ता मैं नहीं जानता।

२१-९-'४७

अेतराज करनेवालेका मान रखा गया

बिड़ला भवनके मैदानमें प्रार्थनाके वक्त जब अेक आदमीने 'अल-फातेहा' पढ़ने पर अेतराज किया, तो प्रार्थना रोक दी गअी। मगर गांधीजीने सभाके सामने भाषण दिया। अुन्होंने कहा कि मैं अेतराज करनेवालेसे बहस नहीं करना चाहता। लोगोंके दिलोंमें आज जो गुस्सा भरा हुआ है, अुसे मैं समझता हूं। वातावरण अैसा तंग है कि मैं अेतराज करनेवाले अेक आदमीकी भी अिज्जत करना अुचित समझता हूं। मगर अिसका यह मतलब नहीं है कि मैंने भगवानको या अुसकी प्रार्थनाको अपने दिलसे हटा दिया है। प्रार्थनाके लिअे पवित्र वातावरणकी जरूरत है। अैसे अेतराजोंसे हरअेकको यह बात दिलमें रख लेनी चाहिये कि जो लोग जनसेवा करना चाहते हैं अुन्हें अपनेमें अपार धीरज और सहिष्णुता रखनेकी जरूरत है। किसीको दूसरों पर अपने विचार लादनेकी कोशिश कभी नहीं करनी चाहिये।

बिना फलका पेड़ सूख जाता है

गांधीजीने अिसके बाद कहा कि मैं श्रीमती अिन्दिरा गांधीके साथ अेक अैसे मोहल्लेमें गया था, जहां हिन्दू बहुत बड़ी तादादमें रहते हैं। अुसके पड़ोसमें ही मुसलमानोंका अेक बड़ा मोहल्ला है। हिन्दुओंने "महात्मा गांधीकी जय" कहकर मेरा स्वागत किया। मगर वे नहीं जानते कि अगर हिन्दू, मुसलमान और सिक्ख अेक-दूसरेके साथ शान्तिसे नहीं रह सकते, तो मेरे लिअे कोअी जय नहीं है, और न मैं जिन्दा ही रहना चाहता हूं। मैं अिस सचाअीको आपके दिलोंमें जमानेकी पूरी-पूरी कोशिश कर रहा हूं कि अेकतामें ताकत है और फूटमें कमजोरी। जिस तरह अेक वृक्ष, जिसमें फल नहीं लगते, आखिरमें सूख जाता है, अुसी तरह अगर मेरी सेवाका मनचाहा नतीजा न निकला, तो मेरा शरीर

भी बेकाम हो जायगा। जितना यह सच है, अुतना ही सच यह भी है कि अिन्सानको फलकी परवाह किये बगैर अपना काम करना चाहिये। आसक्तिसे अनासक्ति ज्यादा अच्छी है। मैं सिर्फ अिस सचाअीकी व्याख्या करके समझा रहा हूं। जिस शरीरकी अुपयोगिता खत्म हो गअी है; वह बरबाद हो जायगा और अुसकी जगह दूसरा नया शरीर लेगा। आत्माका कभी नाश नहीं होता। वह सेवाके कामोंके जरिये मुक्ति पानेके लिअे नये शरीर बदलती रहती है।

अपने घरोंमें ही रहो

अुस हिस्सेके मुसलमानोंसे हुअी चर्चाका जिक्र करते हुअे गांधीजीने कहा कि मैंने अुन लोगोंको यही सलाह दी है कि अगर आपके हिन्दू पड़ोसी आपको सतायें, यहां तक कि आपको मार डालें, फिर भी आप अपने घर न छोड़ें। अगर यह बात आपकी समझमें न आये, तो मौतसे बचनेके लिअे अपनी जगह बदलनेकी आपको आजादी है। अगर आप मेरी सलाह मानेंगे, तो अिस तरह अिस्लाम और हिन्दुस्तान दोनोंकी सेवा करेंगे। जो हिन्दू और सिक्ख मुसलमानोंको सतायेंगे, वे अपने धर्मको नीचे गिरायेंगे और हिन्दुस्तानको अैसा नुकसान पहुंचायेंगे, जिसे कभी ठीक नहीं किया जा सकता। यह सोचना निरा पागलपन है कि साढ़े चार करोड़ मुसलमानोंको बरबाद किया जा सकता है या अुन सबको पाकिस्तान भेजा जा सकता है। कुछ लोगोंने कहा है कि मैं अैसा करना चाहता हूं। मेरी यह अिच्छा कभी नहीं रही कि फौज और पुलिसकी मददसे मुसलमान शरणार्थियोंको अुनकी जगहों पर फिरसे बसाया जाय। मैं यह जरूर मानता हूं कि जब हिन्दू और सिक्खोंका गुस्सा शान्त हो जायगा, तो वे खुद ही अिन शरणार्थियोंको अिज्जतके साथ वापस ले जायेंगे। मुझे अुम्मीद है कि मुसलमानों द्वारा खाली किये हुअे मकानोंको सरकार अच्छी हालतमें रखेगी और जब तक शरणार्थी अुनमें न लौटें, तब तक ट्रस्टीकी तरह अुनकी देख-रेख करेगी।

सरकार अिस्तीफा कब दे?

अेक अखबारने बड़ी गम्भीरतासे यह सुझाव रखा है कि अगर मौजूदा सरकारमें शक्ति नहीं है, यानी अगर जनता सरकारको अुचित

काम न करने दे, तो वह सरकार अुन लोगोंके लिअे अपनी जगह खाली कर दे, जो सारे मुसलमानोंको मार डालने या अुन्हें देशनिकाला देनेका पागलपनभरा काम कर सकें। यह अेक अैसी सलाह है जिस पर चलकर देश खुदकुशी कर सकता है और हिन्दू धर्म जड़से बरबाद हो सकता है। मुझे लगता है कि अैसे अखबार तो आजाद हिन्दुस्तानमें रहने लायक ही नहीं हैं। प्रेसकी आजादीका यह मतलब नहीं कि वह जनताके मनमें जहरीले विचार पैदा करे। जो लोग अैसी नीति पर चलना चाहते हैं, वे अपनी सरकारसे अिस्तीफा देनेके लिअे भले कहें, मगर जो दुनिया शान्तिके लिअे अभी तक हिन्दुस्तानकी तरफ ताकती रही है, वह आगेसे अैसा करना बन्द कर देगी। हर हालतमें जब तक मेरी सांस चलती है, मैं अैसे निरे पागलपनके खिलाफ अपनी सलाह देना जारी रखूंगा।

११

२२-९-'४७

अेतराज अुठानेवालोंका फर्ज

मेरा यह विश्वास है कि प्रार्थनामें अेक भी अेतराज अुठानेवाले आदमीके सामने झुकनेमें और प्रार्थनाको रोकनेमें मैंने अकलमन्दी दिखाअी है। फिर भी, यहां अिस घटनाकी ज्यादा विस्तारसे छानबीन करना अनुचित न होगा। हमारी प्रार्थना आम लोगोंके लिअे खुली अिसी अर्थमें है कि जनताके किसी भी आदमीको अुसमें शामिल होनेकी मनाअी नहीं है। वह खानगी मकानके अहातेमें की जाती है। अुचित बात यह है कि सिर्फ वे ही लोग प्रार्थनामें शामिल हों, जो कुरानकी आयतोंके साथ पूरी प्रार्थनामें सच्चे दिलसे श्रद्धा रखते हैं। बेशक, यह कायदा खुले मैदानमें होनेवाली प्रार्थना पर भी लागू होना चाहिये। प्रार्थनासभा कोअी बहस या चर्चा करनेकी सभा नहीं है। अेक ही मैदानमें कअी जातियोंकी प्रार्थनासभायें होनेके बारेमें भी कल्पना की जा सकती है। सभ्यताका यह तकाजा है कि जो किसी खास प्रार्थनाका विरोध करते हों, वे अुसमें शामिल न हों। अिस कायदेको न माननेसे किसी सभामें

गड़बड़ी पैदा हुअे बिना नहीं रह सकती। अगर मरजीके खिलाफ होनेवाले हर काममें दस्तंदाजी करना आम बात हो जाय, तो पूजा-अुपासनाकी आजादी, यहां तक कि सार्वजनिक भाषणकी आजादी भी मजाक बन जायगी। सभ्य समाजमें अिस बुनियादी हकको काममें लेनेके लिअे संगीनोंका सहारा लेनेकी जरूरत नहीं पड़नी चाहिये। सब लोगोंको यह हक मानना चाहिये और अुसकी कदर करनी चाहिये।

अुम्दा रवादारी

कांग्रेसके सालाना जलसोंमें अुसके प्रदर्शनी-मैदानमें अलग अलग धार्मिक सम्प्रदायों या सियासी पार्टियोंकी कअी सभायें होती देखकर मुझे बड़ी खुशी होती थी। अिन सभाओंमें अलग अलग मतके और अेक दूसरेके बिलकुल विरोधी विचार प्रकट किये जाते, लेकिन न तो कभी सभाके काममें रुकावट पैदा की जाती या किसीको सताया जाता और न पुलिसकी मददकी जरूरत पड़ती। कभी लोग अिस बुनियादी कानूनको तोड़ते भी थे तो जनता अुनकी निन्दा करती थी।

लेकिन आज तारीफके लायक रवादारीकी वह भावना कहां चली गअी? क्या अिसका कारण यह है कि आजादी पा लेनेके बाद हम अुसका बेजा अिस्तेमाल करके अुसकी परीक्षा कर रहे हैं? हम अुम्मीद करें कि आजकी यह गैररवादारी राष्ट्रके जीवनमें कुछ ही दिन टिकेगी।

मुझसे यह न कहा जाय — जैसा कि अकसर मुझसे कहा गया है — कि अिसका अेकमात्र कारण मुस्लिम लीगके बुरे काम हैं। मान लीजिये कि यह बात सच है। लेकिन क्या हमारी सहिष्णुता या रवादारी अितनी खोखली है कि वह किसी गैरमामूली खिंचावके सामने हार मान लेगी? सच्ची शराफत और सहिष्णुताको बुरेसे बुरे खिंचावका भी सामना करनेके योग्य होना चाहिये। जब ये दोनों गुण अपनी यह ताकत खो देंगे, तो वह दिन हिन्दुस्तानका बुरा दिन होगा। हम अपने कामोंसे अपने टीकाकारोंको (हमारे टीकाकार बहुतसे हैं) आसानीसे यह कहनेका मौका न दें कि हम आजादीके लायक नहीं हैं। अैसे टीकाकारोंको जवाब देनेके लिअे मेरे दिमागमें कअी दलीलें अुठती हैं। लेकिन अुनसे कोअी सन्तोष नहीं होता। जब हमारी

रवादारीसे भरी और मिलीजुली तहजीब अपने आप जाहिर नहीं होती, तो हिन्दुस्तान और अुसके करोड़ों लोगोंको प्यार करनेवालेके नाते मेरे स्वाभिमानको चोट पहुंचती है।

अगर हिन्दुस्तान फर्जको भूलता है

अगर हिन्दुस्तान अपने फर्जको भूलता है, तो अेशिया मर जायगा। यह ठीक ही कहा गया है कि हिन्दुस्तान कअी मिली-जुली सभ्यताओं या तहजीबोंका घर है, जहां वे सब साथ साथ पनपी हैं। हम सब अैसे काम करें कि हिन्दुस्तान अेशियाकी या दुनियाके किसी भी हिस्सेकी कुचली और चूसी हुअी जातियोंकी आशा बना रहे।

बिना लाअिसेन्सके हथियार

अब मैं बिना लाअिसेंसके छिपे हुअे हथियारोंके हौवे पर आता हूं। अिसमें कोअी शक नहीं कि दिल्लीमें अैसे कुछ हथियार मिले हैं। थोड़े बहुत हथियार लोग अपने आप मेरे पास भी पहुंचाते रहे हैं। छिपे हुअे हथियारोंको हर तरकीबसे बाहर निकालना ही होगा। जहां तक मैं जानता हूं, दिल्लीमें अभी तक जोर-जबरदस्तीसे जो हथियार निकाले गये हैं, अुनकी तादाद बहुत ज्यादा नहीं है। ब्रिटिश हुकूमतके दिनोंमें भी लोगोंके पास छिपे हथियार रहते थे। तब किसीने अुनकी परवाह नहीं की। जब आपको किसी जगह छिपे बारूदखानोंका यकीन हो जाय, तो अुन्हें हर तरकीबसे अुड़ा दीजिये। आअिन्दा फिरसे अिस तरह बातका बतंगड़ बनानेका मौका न आने पावे, अिसका ध्यान रखिये। हम अंग्रेजों पर अेक कानून लागू करें और अपने आपके लिअे दूसरा कानून बनायें — जब कि हम सियासी तौर पर आजाद होनेका दावा करते हैं — यह ठीक नहीं। अगर आपको किसीको मारना है, तो अुसके बारेमें हलकी बात न कहें। सब कुछ कहने और करनेके बाद ६० सालकी जी-तोड़ मेहनतसे जीती हुअी आजादीके लायक बननेके लिअे हम बड़ीसे बड़ी कठिनाअियोंका भी बहादुरीसे सामना करें। कठिनाअियोंका अच्छी तरह मुकाबला करनेसे हम ज्यादा योग्य बनेंगे और ज्यादा अूंचे अुठेंगे।

बहुमतवाले लोग अगर अल्पमतवालोंको अिस डरसे मार डालें या यूनियनसे निकाल दें कि वे सब दगाबाज साबित होंगे, तो यह बहुमतवालोंकी बुजदिली होगी। अल्पमतके हकोंका सावधानीसे ख़याल रखना ही बहुमतवालोंको शोभा देता है। जो बहुमतवाले अल्पमतके हकोंकी परवाह नहीं करते, वे हंसीके पात्र बनते हैं। पक्का आत्म-विश्वास और अपने नामधारी या सच्चे विरोधीमें बहादुरीभरा विश्वास ही बहुमतवालोंका सच्चा बचाव है। अिसलिअे मैं सच्चे दिलसे यह बिनती करता हूं कि दिल्लीके सारे हिन्दू, सिक्ख और मुसलमान दोस्त बनकर गले मिलें और बाकीके हिन्दुस्तानके सामने, क्या मैं कहूं कि सारी दुनियाके सामने, अेक अूंची और शानदार मिसाल पेश करें। हिन्दुस्तानके दूसरे हिस्सोंने क्या किया है या वे क्या कर रहे हैं, यह दिल्लीको भूल जाना चाहिये। तभी वह व्यक्तिगत बदलेके जहरीले घेरेको तोड़नेका गौरवभरा दावा कर सकती है। अगर कभी जरूरी हो, तो सजा देने और बदला लेनेका काम राज्यका है, न कि शहरियोंका। शहरियोंको कानून कभी अपने हाथमें नहीं लेना चाहिये।

१२

२३–९–'४७

खुला अिकरार

प्रार्थनाके बाद गांधीजीने अुस माफीका जिक्र किया, जो कल श्री मनु गांधी और आभा गांधीने सभामें पढ़कर सुनाअी थी। अुन्होंने कहा, अितवार शामको प्रार्थनामें जब वे दोनों भजन गा रही थीं, तो वे लय चूक गअीं और अपनी हंसीको नहीं रोक सकीं। अिससे मुझे बड़ा दुःख हुआ। अिससे जाहिर होता है कि लड़कियोंने प्रार्थनाके महत्त्वको नहीं समझा। बादमें अुन्होंने मुझसे अपनी अिस गलतीके लिअे माफी मांगी। माफी मांगनेकी कोअी जरूरत नहीं थी, क्योंकि मैं अुनसे नाराज नहीं था। अुलटे मैं अपने आप पर नाराज हुआ;

क्योंकि दोनों लड़कियोंकी शिक्षा मेरी देखरेखमें हुआी थी, फिर भी मैं अुनके दिलमें यह बात नहीं बैठा सका कि प्रार्थना करते समय अुन्हें अपने आपको भगवानमें लीन कर देना चाहिये। लड़कियोंके पछताने पर मुझे थोड़ी शान्ति मिली। लेकिन मैंने अुन्हें सलाह दी कि वे आम सभामें अपनी गलती कबूल करें। अुन्होंने खुशीसे मेरी बात मान ली। मेरा यह विश्वास है कि अीमानदारीसे खुले आम अपनी गलती कबूल करनेसे गलती करनेवाला पवित्र बनता है और दुबारा गलती करनेसे बचता है।

ज्ञानके रत्न

कुरानकी आयत पर अेतराज अुठानेकी बातको याद करते हुअे गांधीजीने कहा, पाकिस्तानमें हिन्दुओं और सिक्खोंके साथ जो बुरा बरताव किया गया, अुसका विरोध करनेका आपको हक है। लेकिन अुस कारणसे आपको कुरानकी आयतका विरोध नहीं करना चाहिये। गीता, कुरान, बाअिबिल, गुरु ग्रन्थसाहब और जन्दअवस्तामें ज्ञानके रत्न भरे पड़े हैं, हालांकि अुनके अनुयायी अुनके अुपदेशोंको झूठ साबित कर देते हैं।

बहादुरीसे मरनेकी कला

आजके अपने कामकी चर्चा करते हुअे गांधीजीने कहा, मैं आज दिनमें रावलपिंडी और डेरागाजीखांके हिन्दुओं और सिक्खोंके डेपुटेशनसे मिला था। रावलपिंडी जैसे शहरको बनानेवाले हिन्दू और सिक्ख ही हैं। वे सब वहां खुशहाल थे। लेकिन आज वे बेआसरा बने हुअे हैं। अिससे मुझे बड़ा दुःख होता है। अगर हिन्दुओं और सिक्खोंने आजके लाहौरको नहीं बनाया, तो और किसने बनाया? आज वे अपने वतनसे निकाल दिये गये हैं। अिसी तरह मुसलमानोंने दिल्लीको बनानेमें कुछ कम हिस्सा नहीं लिया है। पिछली १५ अगस्तको हिन्दुस्तानका जो रूप था, अुसे बनानेमें सारी जातियोंने अेक साथ मिलकर हाथ बंटाया है। मुझे अिसमें कोअी शक नहीं कि पाकिस्तानके अधिकारियोंको पाकिस्तानके हर हिस्सेमें बचे हुअे हिन्दुओंको और सिक्खोंको पूरी सलामतीकी

गारण्टी देनी चाहिये। अिसी तरह दोनों सरकारोंका यह फर्ज है कि वे अेक-दूसरीसे अपने अपने अल्पमतवालोंके लिअे अैसी सलामती और रक्षाकी मांग करें। मुझसे कहा गया है कि अभी रावलपिंडीमें १८ हजार और वाह छावनीमें ३० हजार हिन्दू और सिक्ख बचे हुअे हैं। मैं तो अुन्हें दुबारा यही सलाह दूंगा कि अुन्हें अपने घरबार छोड़नेके बनिस्बत आखिरी आदमी तक मर-मिटनेके लिअे तैयार रहना चाहिये। अिज्जत और बहादुरीसे मरनेकी कलाके लिअे भगवानमें जीती-जागती श्रद्धाके सिवा किसी खास तालीमकी जरूरत नहीं है। तब न तो औरतें और लड़कियां भगाअी जायेंगी और न जबरन किसीका धर्म बदला जा सकेगा। मैं आपकी अिस अुत्सुकताको जानता हूं कि मुझे जल्दीसे जल्दी पंजाब जाना चाहिये। मैं भी यही करना चाहता हूं। लेकिन अगर मैं दिल्लीमें सफल नहीं हुआ, तो पाकिस्तानमें मेरा सफल होना मुमकिन नहीं है। मैं पाकिस्तानके सब हिस्सों और सूबोंमें फौज या पुलिसकी हिफाजतके बिना जाना चाहता हूं। वहां अेक भगवान ही मेरा रक्षक होगा। मैं वहां हिन्दुओं और सिक्खोंकी तरह मुसलमानोंका दोस्त बनकर जाअूंगा। मेरी जिन्दगी वहां मुसलमानोंके हाथमें रहेगी। मुझे आशा है कि अगर कोअी मेरी जान लेना चाहेगा, तो मैं खुशीसे अुसके हाथ मरूंगा। तब मैं खुद भी वैसा ही करूंगा, जैसा कि सबको करनेकी सलाह देता हूं।

शरणार्थियोंके लिअे घर

शरणार्थियोंने मुझसे मकानोंके लिअे भी कहा है। मैंने अुनसे कहा कि नीचे धरती और अूपर आसमानका चंदोवा तना हुआ है। मुसलमानोंके द्वारा डरकर खाली किये गये मकानोंमें रहनेके बजाय आपको अिसी आसरेसे सन्तोष करना चाहिये। अगर आप सब मिलकर काम करें, तो अेक ही दिनमें जरूरी रहनेकी जगह तैयार कर सकते हैं। अिसके अलावा, अैसा करके आप मुस्लिम शरणार्थियोंका गुस्सा ठण्डा कर सकते हैं और शहरमें अैसा वातावरण पैदा कर सकते हैं कि मैं तुरन्त पंजाब जा सकूं।

१३

२४–९–'४७

हिन्दुस्तानकी कमजोर नाव

प्रार्थनामें गाये गये भजनको अपने भाषणका विषय बनाते हुअे गांधीजीने कहा कि अिस भजनके भावको हिन्दुस्तानकी मौजूदा हालत पर पूरी तरह लागू किया जा सकता है। अुसमें कविने भगवानसे प्रार्थना की है कि वह अुसकी कमजोर नावको सागर-पार कर दे।

सरकारोंको अेक मौका दो

आज बदलेकी भावना सारे वातावरणमें फैली हुअी है। दिल्लीके हिन्दू और सिक्ख नहीं चाहते कि मुसलमान यहां रहें। वे यह दलील देते हैं कि जब हमको पाकिस्तानसे निकाल दिया गया है, तब मुसलमानोंको हिन्दुस्तानी संघमें या कमसे कम दिल्लीमें क्यों रहने दिया जाय? मुस्लिम लीगने ही पहले लड़ाअी शुरू की है। गांधीजीने कहा कि मैं मानता हूं कि "लड़कर लेंगे पाकिस्तान" का नारा लगानेमें मुस्लिम लीगने गलती की है। मैंने कभी भी अिस बातको नहीं माना कि अैसा कभी हो सकता था। दरअसल जोर-जबरदस्तीसे देशके दो टुकड़े करनेमें अुन्हें कभी सफलता न मिलती। अगर कांग्रेस और अंग्रेज सरकार राजी न होती, तो आज पाकिस्तान कायम नहीं हो सकता था। मगर अब तो कोअी अुसे बदल नहीं सकता। पाकिस्तानके मुसलमान अुसके हकदार हैं। आप थोड़ी देरके लिअे सोचिये कि आपको आजादी कैसे मिली। आजादीकी लड़ाअी लड़नेवाली कांग्रेस थी। अुसका हथियार मन्द विरोधका था। ब्रिटिश सरकारने हिन्दुस्तानके मन्द विरोधके सामने घुटने टेक दिये और यहांसे चली गअी। जोर-जबरदस्तीसे पाकिस्तानका खात्मा करनेका मतलब स्वराज्यका खात्मा करना होगा। हिन्दुस्तानमें दो सरकारें हैं। अिस देशके शहरियोंका फर्ज है कि वे दोनों सरकारोंको आपसमें फैसला करनेका मौका दें। अिस रोजानाकी खून-खराबीसे तो व्यर्थकी बरबादी होती है। अिससे किसीको कोअी फायदा नहीं होता, बल्कि देशका बेहद नुकसान होता है।

अगर लोग अराजक होकर आपसमें लड़ते हैं, तो वे यही साबित करेंगे कि आजादीको हजम करनेकी अुनमें ताकत नहीं है। अगर दोनोंमें से अेक अुपनिवेश अखीर तक सही बरताव करता रहे, तो वह दूसरेको भी अिसी तरह बरतनेके लिअे लाचार कर देगा। सही बरताव करके वह सारी दुनियाको अपनी तरफ खींच लेगा। बेशक, आप हिन्दुस्तानी संघको अेक अैसी हिन्दू स्टेट बनाकर कांग्रेसके अितिहासको नये सिरेसे नहीं लिखना चाहेंगे जिसमें दूसरे मजहबोंको माननेवालोंके लिअे कोअी जगह न हो। मुझे अुम्मीद है कि आप अैसा कोअी कदम नहीं अुठायेंगे जिससे आपके पिछले भले कामों पर पानी फिर जाय।

जूनागढ़

आज जूनागढ़में जो कुछ चल रहा है, अुसकी कल्पना कीजिये। क्या जूनागढ़ और काठियावाड़की करीब करीब सभी दूसरी रियासतोंमें युद्ध होगा? अगर काठियावाड़के दूसरे राजा और रियासती जनता अेक हो जायं, तो मुझे अिसमें कोअी शक नहीं कि जूनागढ़ काठियावाड़की दूसरी सभी रियासतोंसे अलग नहीं रहेगा। अिसके लिअे यह बहुत जरूरी है कि सब लोग कानूनके मुताबिक काम करें।

१४

२५-९-'४७

संघ सरकारका फर्ज

प्रार्थना शुरू होनेसे पहले किसीने गांधीजीको अेक पुर्जा भेजा, जिसमें लिखा था कि पाकिस्तानकी सरकार वहांसे हिन्दुओं और सिक्खोंको खदेड़ रही है, और आप हिन्दुस्तानी संघकी सरकारको सलाह देते हैं कि हिन्दुस्तानी संघमें मुसलमानोंको नागरिकताके पूरे अधिकारोंके साथ रहने दिया जाय। संघ सरकार यह दुगुना बोझ कैसे सह सकती है?

प्रार्थनाके बाद अिस सवालका जवाब देते हुअे गांधीजीने कहा कि मैंने यह नहीं कहा कि संघ सरकारको पाकिस्तानमें हिन्दुओं और सिक्खोंके साथ हुअे बुरे बरतावकी तरफ ध्यान नहीं देना चाहिये। संघ सरकारका

फर्ज है कि वह अिनकी रक्षाके लिअे पूरी-पूरी कोशिश करे। मगर मेरा जवाब यह नहीं हो सकता कि आप सारे मुसलमानोंको यहांसे भगा दें और अिस तरह पाकिस्तानके बदनाम तरीकोंकी नकल करें। जो लोग अपनी खुशीसे पाकिस्तान जाना चाहते हैं, अुन्हें सरहद तक हिफाजतके साथ पहुंचा देना चाहिये। हिन्दुस्तानी संघकी सरकारका फर्ज है कि वह पाकिस्तानमें रहनेवाले हिन्दुओं और सिक्खोंकी हिफाजतका भरोसा दिलाये। मगर अिसके लिअे सरकारको सोच-विचार कर काम करनेका मौका दिया जाय और हरअेक हिन्दुस्तानी अुसे अीमानदारीके साथ पूरा-पूरा सहयोग दे। शहरियोंका अपने हाथोंमें कानून ले लेना कोअी सहयोग देना नहीं कहा जायगा। हमारी आजादी अभी सिर्फ अेक माह और दस दिनकी बच्ची है। अगर आप बदला लेनेका अपना पागलपन-भरा रवैया जारी रखेंगे, तो आप अिस बच्चीको बचपनमें ही मार डालेंगे।

धर्मकी जीत

अिसके बाद रामायणकी कहानी बयान करते हुअे गांधीजीने कहा कि लंकाकी लड़ाअी दो बराबर पार्टियोंके बीचकी लड़ाअी नहीं थी। अुसमें अेक तरफ जबरदस्त राजा रावण था और दूसरी तरफ देशनिकाला पाये हुअे राम थे। मगर रामकी जीत अिसलिअे हुअी कि वे अपने धर्मका कड़ाअीसे पालन कर रहे थे। अगर दोनों ही पार्टियां अधर्म करने लगतीं, तो कौन किसकी तरफ अुंगली अुठा सकती थी? यह सवाल अुनके बरतावको अुचित नहीं ठहरा सकता था कि किसने ज्यादा बुराअी की, या किसने बुराअीकी शुरुआत की?

दगाबाजीकी सजा

आप लोग बहादुर हैं। आपने जबरदस्त ब्रिटिश साम्राज्यका मुकाबला किया है। क्या आज आप कमजोर हो गये हैं? बहादुर लोग भगवानके सिवा और किसीसे नहीं डरते। अगर मुसलमान दगाबाजी करते हैं, तो अुनकी दगाबाजी अुन्हें बरबाद कर देगी। किसी भी स्टेटमें यह सबसे बड़ा गुनाह माना जाता है। कोअी भी स्टेट दगाबाजोंको आसरा नहीं दे सकती। मगर शकके कारण लोगोंको निकाल देना ठीक नहीं है।

पुलिस और फौजका फर्ज

मैंने सुना है कि पुलिस और फौज हिन्दुस्तानी संघमें हिन्दुओंकी और पाकिस्तानमें मुसलमानोंकी तरफदारी करती है। यह सुनकर मुझे बहुत दुःख होता है। जब पुलिस और फौज विदेशी सरकारके मातहत थी, तब वह अच्छी तरह सोच भी नहीं सकती थी कि वह देशकी क्या सेवा कर सकती है। लेकिन आज वह अपने अंग्रेज अफसरों सहित देशकी सेवक है। आज अुससे आशा की जाती है कि वह अीमानदारीसे और गैर-तरफदारीसे काम करे।

जनतासे मेरी अपील है कि वह पुलिस और फौजसे न डरे। आखिर आपके लम्बे-चौड़े देशकी करोड़ोंकी आबादीकी तुलनामें वे लोग बहुत थोड़े हैं। अगर देशकी जनताका बरताव सही रहे, तो पुलिस और फौजके लिअे भी सही बरताव करनेके सिवा और कोअी रास्ता न रह जाय।

लपटोंको कैसे बुझाया जाय?

अिसके बाद गांधीजीने बताया कि आज मैं गवर्नर जनरलसे मिला था। अुसके बाद दिल्लीकी सारी जातियोंके खास-खास कार्यकर्ताओं और शहरियोंसे मिला। फिर मैंने कांग्रेस वर्किंग कमेटीकी बैठकमें हिस्सा लिया। हर जगह अिसी अेक सवाल पर चर्चा हुअी कि नफरत और बदलेकी लपटोंको कैसे बुझाया जाय। अिन्सानका फर्ज है कि वह अपनी कोशिशमें कुछ अुठा न रखे। तब वह विश्वासके साथ अुसका नतीजा भगवानके हाथोंमें सौंप सकता है, जो सिर्फ अुन्हींकी मदद करता है, जो अपनी मदद खुद करते हैं।

१५

२६-९-'४७

प्रार्थना शुरू होनेसे पहले गांधीजीने हमेशाकी तरह पूछा कि मैं अपनी प्रार्थनामें कुरानकी कुछ आयतें भी पढ़ूंगा; क्या किसीको अिस पर अेतराज है? अेक नौजवानने कहा कि 'आपको अपनी प्रार्थनासे कुरानकी आयतें निकाल देनी चाहिये।' गांधीजीने जवाब दिया कि मैं अैसा तो नहीं कर सकता। मगर मैं पूरी प्रार्थना बन्द करनेके लिअे तैयार हूं। श्रोताओंने कहा कि हम यह नहीं चाहते। हम पूरी प्रार्थना चाहते हैं। अिस पर अेतराज करनेवाला नौजवान चुप हो गया।

ग्रन्थसाहब

गांधीजीने कहा कि आज कुछ सिक्ख दोस्त मुझसे मिलने आये थे, जो बाबा खड़गसिंहके अनुयायी थे। अुन लोगोंने कहा कि आजकी खून-खराबी सिक्ख धर्मके खिलाफ है। सच पूछा जाय तो यह किसी भी धर्मके खिलाफ है। अुनमें से अेक भाअीने ग्रंथसाहबसे अेक बड़ा अच्छा भजन सुनाया, जिसमें गुरु नानकने कहा है कि भगवानको अल्लाह, रहीम, वगैरा किसी भी नामसे पुकारा जा सकता है। अगर भगवान हमारे दिलमें है, तो अुसे किसी भी नामसे पुकारनेमें कुछ बनता-बिगड़ता नहीं। कबीरकी तरह गुरु नानककी भी यही कोशिश रही कि सारे धर्मोंका समन्वय हो। मैंने वह भजन सबको सुनानेके खयालसे लिख लिया था, मगर यहां लाना भूल गया। कल अुसे लाअूंगा।

गांधीजीकी अभिलाषा

लाहौरके पंडित ठाकुरदत्त मेरे पास आये और अुन्होंने मुझे अपनी दुःखभरी कहानी सुनाअी। अपनी हालत बयान करते हुअे वे रो पड़े। अुन्हें लाचार होकर लाहौर छोड़ना पड़ा था। अुन्होंने मुझसे कहा कि 'आपने पाकिस्तानमें अपनी जगह पर मर जाने, मगर गुण्डोंसे घबड़ाकर न भागनेकी जो सलाह दी है, अुसे मैं पूरी तरह मानता हूं। मगर अुस पर अमल करनेकी ताकत मुझमें नहीं थी। अब मैं चाहता हूं कि वापिस लाहौर चला जाअूं और मौतका सामना करूं।' मैं नहीं

चाहता था कि वे अैसा करें। मैंने अुनसे कहा कि आप और दूसरे हिन्दू और सिक्ख दोस्त, दिल्लीमें फिरसे सच्ची शान्ति कायम करनेमें मुझे मदद दें। तब मैं नअी ताकतके साथ पश्चिम पाकिस्तानकी तरफ बढ़ूंगा। मैं लाहौर, रावलपिंडी, शेखपुरा और पश्चिम पंजाबकी दूसरी जगहोंमें जाअूंगा। मैं सरहदी सूबे और सिंधमें भी जाअूंगा। मैं सबका सेवक और भला चाहनेवाला हूं। मुझे विश्वास है कि कोअी मुझे कहीं भी जानेसे न रोकेगा। और मैं फौजकी हिफाजतमें नहीं जाअूंगा। मैं अपनी जिन्दगी लोगोंके हाथोंमें रख दूंगा। जो हिन्दू और सिक्ख पाकिस्तानसे खदेड़ दिये गये हैं, अुनमें से हरअेक जब तक अपने-अपने घरोंको अिज्जतके साथ नहीं लौटता, तब तक मैं चैनकी सांस नहीं लूंगा।

शर्मकी बात

पण्डित ठाकुरदत्त अेक मशहूर वैद्य हैं। कअी मुसलमान अुनके मरीज और दोस्त हैं, जिनका वे मुफ्त अिलाज करते रहे हैं। यह शरमकी बात है कि अुन्हें भी लाहौर छोड़ना पड़ा। अिसी तरह हकीम अजमलखांने दिल्लीमें हिन्दू और मुसलमानोंकी अेकसी सेवा की थी। अुन्होंने तिब्बिया कॉलेज शुरू किया जिसका अुद्घाटन मैंने किया था। अगर हकीम अजमलखांके वारिसोंको दिल्ली और तिब्बिया कॉलेज छोड़ना पड़ा, तो यह अेक शरमकी बात होगी। सभी मुसलमान दगाबाज नहीं हो सकते। और जो दगाबाज साबित होंगे, अुन्हें सरकार कड़ी सजा देगी।

अन्याय नहीं सहना चाहिये

मैं हमेशा सब तरहकी लड़ाअीके खिलाफ रहा हूं। मगर यदि पाकिस्तानसे अिन्साफ पानेका कोअी दूसरा रास्ता नहीं रह जायगा और पाकिस्तानकी जो गलतियां साबित हो चुकी हैं, अुनकी तरफ ध्यान देनेसे वह हमेशा अिनकार करता रहेगा और अुन्हें हमेशा कम करके बतानेका अपना तरीका जारी रखेगा, तो हिन्दुस्तानी संघकी सरकारको अुसके खिलाफ लड़ाअी छेड़नी ही पड़ेगी। लेकिन लड़ाअी कोअी मजाक नहीं है। कोअी भी लड़ाअी नहीं चाहता। अुसमें बरबादीके सिवा और कुछ नहीं है। मगर अन्यायको सहनेकी सलाह मैं किसीको नहीं दे सकता। अगर किसी अिन्साफकी बातमें सारे हिन्दू नष्ट हो

जायं, तो मैं अिसकी परवाह नहीं करूंगा। अगर लड़ाअी छिड़ जाय, तो पाकिस्तानके हिन्दू वहां पांचवीं कतारवाले नहीं बन सकते। कोअी भी अिसे बर्दाश्त नहीं करेगा। अगर वे पाकिस्तानके प्रति वफादार नहीं हैं, तो अुनको पाकिस्तान छोड़ देना चाहिये। अिसी तरह जो मुसलमान पाकिस्तानके प्रति वफादार हैं, अुन्हें हिन्दुस्तानी संघमें नहीं रहना चाहिये। सरकारका फर्ज है कि वह हिन्दुओं और सिक्खोंके लिअे अिन्साफ हासिल करे। जनता सरकारसे अपना मनचाहा करा सकती है। रही मेरी बात, सो मेरा रास्ता जुदा है। मैं तो अुस भगवानका पुजारी हूं जो सत्य और अहिंसाका स्वरूप है।

हिन्दू ही हिन्दू धर्मको बरबाद कर सकते हैं

अेक वक्त था, जब सारा हिन्दुस्तान मेरी बात सुनता था। आज मैं दकियानूसी माना जाता हूं। मुझसे कहा गया है कि नअी व्यवस्थामें मेरे लिअे कोअी जगह नहीं है। नअी व्यवस्थामें लोग मशीनें, जलसेना, हवाअी सेना और न जाने क्या क्या चाहते हैं। अिसमें मैं शामिल नहीं हो सकता। अगर लोगोंमें यह कहनेका साहस हो कि जिस ताकतके जरिये अुन्होंने आजादी हासिल की है, अुसीकी मददसे वे अुसे टिकाये भी रखेंगे, तो मैं अुनका साथ दे सकता हूं। तब मेरी शरीरकी कमजोरी और अुदासी पलक मारते दूर हो जायगी। मुसलमान लोग यह कहते सुने जाते हैं कि "हंसके लिया पाकिस्तान, लड़के लेंगे हिन्दुस्तान।" अगर मेरी चले, तो मैं हथियारके जोरसे अुन्हें हिन्दुस्तान कभी न लेने दूं। कुछ मुसलमान सारे हिन्दुस्तानको मुसलमान बनानेकी बात सोच रहे हैं। यह काम लड़ाअीके जरिये कभी नहीं हो सकेगा। पाकिस्तान हिन्दू धर्मको कभी बरबाद नहीं कर सकेगा। सिर्फ हिन्दू ही अपने आपको और अपने धर्मको बरबाद कर सकते हैं। अिसी तरह अगर पाकिस्तान बरबाद हुआ, तो वह पाकिस्तानके मुसलमानों द्वारा ही बरबाद होगा, हिन्दुस्तानके हिन्दुओं द्वारा नहीं।

सत्यकी ही जय होती है

दो दिन पहले प्रार्थना खतम होने पर अेक भाअीने गांधीजीसे पूछा था कि अगर आप सचमुच महात्मा हैं, तो अैसा चमत्कार

दिखाअिये जिससे हिन्दुस्तानके हिन्दू और सिक्ख बच जायें। अिसका जिक्र करते हुअे गांधीजीने कहा कि मैंने कभी भी महात्मा होनेका दावा नहीं किया, सिवा अिसके कि मैं आप सबसे बहुत कमजोर हूं। मैं आप लोगों जैसा ही अेक मामूली अिन्सान हूं। मुझमें और दूसरोंमें सिर्फ अितना ही फर्क हो सकता है कि दूसरोंके बजाय भगवान पर मेरा भरोसा ज्यादा पक्का है। अगर सभी हिन्दुस्तानी — हिन्दू, सिक्ख, पारसी, मुसलमान और अीसाअी — हिन्दुस्तानके लिअे अपनी जान देनेको तैयार हों, तो अिस देशको कभी नुकसान नहीं पहुंच सकता। मैं चाहता हूं कि आप लोग ऋषियोंकी अिस वाणीको याद रखें — "सत्यमेव जयते नानृतम्" — सत्यकी ही जय होती है, झूठकी नहीं।

१६

२७-९-'४७

राम ही सबसे बड़ा वैद्य है

अपना भाषण शुरू करते हुअे गांधीजीने अुस अखबारी खबरका जिक्र किया, जिसमें अुनकी बीमारीका हाल छपा था। गांधीजीने कहा कि यह खबर मेरी जानकारीके बगैर छपी है और अिससे मुझे दुःख हुआ है। बीमारी अैसी नहीं थी जिससे मेरे काममें बाधा पड़ती। अिसके सिवा मैं अपनेको पहलेसे अच्छा महसूस कर रहा हूं। अिस बीमारीको अितना महत्त्व नहीं देना चाहिये था। अुस खबरमें डॉ० दीनशा मेहताको मेरा निजी वैद्य कहा गया है, यह गलत है। डॉ० मेहताने मुझसे कहा है कि अिस तरहके बयानके लिअे वे जिम्मेदार नहीं हैं। वे मेरे बुलाने पर मेरे पास आये थे, मगर वैद्यकी तरह नहीं। वे अपनी आध्यात्मिक कठनाअियां हल करानेके लिअे आये थे। डॉ० मेहता अेक कुदरती अिलाज करनेवाले हैं। वे मेरे दोस्त हैं, जिन्होंने मुझे अकसर मदद दी है। मगर डॉक्टरकी हैसियतसे अुनकी मददकी मुझे जरूरत नहीं पड़ी।

डॉ० सुशीला नय्यर, डॉ० जीवराज मेहता, डॉ० बी० सी० रॉय और स्वर्गीय डॉक्टर अन्सारी मेरे निजी डॉक्टर रहे हैं। मगर अुनमें से किसीने मुझे पहलेसे बताये बगैर मेरी तन्दुरुस्तीके बारेमें कोअी चीज अखबारमें नहीं दी। आज मेरा अेकमात्र वैद्य मेरा राम है। जैसा कि प्रार्थनामें गाये गये भजनमें कहा गया है: राम सारी शारीरिक, मानसिक और नैतिक बुराअियोंको दूर करनेवाला है। कुदरती अिलाजके डॉक्टर दीनशा मेहतासे चर्चा करते हुअे यह सत्य पूरी तौर पर मेरे सामने स्पष्ट हो गया। मेरी रायमें कुदरती अिलाजमें रामनामका स्थान पहला है। जिसके दिलमें रामनाम है, अुसे और किसी दवाअीकी जरूरत नहीं है। रामके अुपासकको मिट्टी और पानीके अिलाजकी भी जरूरत नहीं है। यही सलाह मैं दूसरे जरूरतमन्द लोगोंको भी देता रहा हूं। अब दूसरा कोअी रास्ता पकड़ना मुझे शोभा नहीं देगा।

यहां बड़े बड़े हकीम, वैद्य और डॉक्टर हैं, जिन्होंने सेवाके लिअे ही अिन्सानोंकी सेवा की है। डॉ० जोशी दिल्लीके अेक मशहूर सर्जन थे, जो धनी और गरीब हिन्दू-मुसलमानोंकी अेकसी सेवा करते थे। वे गरीबोंका मुफ्त अिलाज करते थे, अुन्हें खाना देते थे और घर लौटनेका खर्च भी देते थे। लेकिन डॉक्टरीका अितना बड़ा ज्ञान पानेके बाद भी वे भगवानके सिवा और किसीका सहारा नहीं चाहते थे।

ग्रन्थसाहबकी याद

अिसके बाद गांधीजीने ग्रन्थसाहबका वह भजन पढ़ा, जिसका अुन्होंने कल शामको जिक्र किया था। अुन्होंने कहा कि वह गुरु अर्जुनदेवका बनाया हुआ था, लेकिन हिन्दू धर्मग्रन्थके कअी भजनोंकी तरह सन्तोंके अनुयायी खुद भजन बनाकर भी अुनमें गुरुका नाम दे देते थे। अुस भजनमें यह कहा गया है कि आदमी भगवानको राम, खुदा वगैरा कअी नामोंसे पुकारता है। कोअी तीर्थयात्रा करते हैं और पवित्र नदीमें नहाते हैं और कोअी मक्का जाते हैं। कोअी मंदिरमें भगवानकी पूजा करते हैं, तो कोअी मसजिदमें अुसकी अिबादत करते हैं। कोअी आदरसे अुसके सामने सिर झुकाते हैं। कोअी वेद पढ़ते हैं, तो कोअी कुरान। कोअी नीले कपड़े पहनते हैं और कोअी सफेद। कोअी अपनेको

हिन्दू कहते हैं और कोअी मुसलमान। नानक कहते हैं कि जो सच्चे दिलसे भगवानके नियमोंको पालता है, वही अुसके भेदको जानता है। हिन्दू धर्ममें सब जगह यही अुपदेश दिया गया है। अिसलिअे अुन लोगोंके पागलपनको समझना कठिन है, जो साढ़े चार करोड़ मुसलमानोंको हिन्दुस्तानसे बाहर करना चाहते हैं।

क्या यह भारी भूल है?

अिसके बाद गांधीजीने अेक आर्यसमाजी दोस्तके खतका जिक्र किया, जिसमें कहा गया था कि कांग्रेस पहले तीन बड़ी-बड़ी गलतियां कर चुकी है। अब वह सबसे बड़ी चौथी गलती कर रही है। वह गलती कांग्रेसकी अिस अिच्छामें है कि हिन्दुओं और सिक्खोंके साथ मुसलमानोंको भी हिन्दुस्तानमें फिरसे बसाया जाय। गांधीजीने कहा, जो भी मैं कांग्रेसकी तरफसे नहीं बोल रहा हूं, फिर भी खतमें जिस गलतीके बारेमें कहा गया है, अुसे करनेके लिअे मैं पूरी तरहं तैयार हूं। मान लीजिये कि पाकिस्तान पागल हो गया है, तो क्या हमें भी पागल बन जाना चाहिये? हमारा अैसा करना सबसे बड़ी गलती और सबसे बड़ा अपराध होगा। मुझे विश्वास है कि जब लोगोंका पागलपन दूर हो जायगा, तो वे महसूस करेंगे कि मेरा कहना ठीक है और अुनका गलत।

भयंकर गैररवादारी और दस्तन्दाजी

अिसके बाद गांधीजीने अुस बातका जिक्र किया, जो अुन्होंने श्री राजकुमारीसे सुनी थी। अुन्होंने कहा, राजकुमारी अिस समय स्वास्थ्य-विभागकी मंत्री हैं। वह सच्ची अीसाअी हैं और अिसलिअे हिन्दू और सिक्ख होनेका दावा करती हैं। वह सारी हिन्दू और मुस्लिम छावनियोंमें सफाअी और तन्दुरुस्तीकी देखरेख रखनेकी कोशिश करती हैं। चूंकि पहले-पहल मुस्लिम छावनियोंमें जानेवाले हिन्दुओंका मिलना करीब-करीब असंभव था, अिसलिअे अुन्होंने मुस्लिम छावनियोंकी सेवाके लिअे अीसाअी आदमियों और लड़कियोंका अेक गिरोह तैयार किया। अिससे कुछ चिढ़े हुअे और बेसमझ लोग अीसाअियोंको डरा-धमका रहे हैं, और बहुतसे अीसाअियोंने अपने घर छोड़ दिये हैं। यह

भयंकर चीज है। राजकुमारीसे यह जानकर मुझे खुशी हुई कि अेक जगह हिन्दुओंने गरीब ओसाअियोंको रक्षाका वचन दिया है। मुझे आशा है कि सारे भागे हुअे ओसाओ जल्दी ही शान्तिसे अपने घरोंको लौट सकेंगे और अुन्हें शान्तिसे बेखटके बीमार और दुःखी अिन्सानोंकी सेवा करने दी जायगी।

मेरी श्रद्धा कमजोर हो गओ है?

अखबारोंने लड़ाओके बारेमें कही गओ मेरी बातोंको अिस तरह जनताके सामने पेश किया है: कलकत्तेसे मुझे यह पूछा गया है कि क्या मैं सचमुच लड़ाओकी हिमायत करने लगा हूं? मैंने जिन्दगी भर अहिंसाके पालनका व्रत लिया है। मैं कभी लड़ाओकी हिमायत कर ही नहीं सकता। मेरे द्वारा चलाये जानेवाले राजमें न तो फौज होगी और न पुलिस। लेकिन मैं हिन्दुस्तानी संघकी सरकार नहीं चला रहा हूं। मैंने तो सिर्फ कओ तरहकी संभावनायें बताओ हैं। हिन्दुस्तान और पाकिस्तानको आपसी सलाह-मशविरा करके अपने मतभेद दूर करने चाहिये। अगर अिस तरह वे किसी समझौते पर न पहुंच सकें, तो अुन्हें पंचफैसलेका सहारा लेना चाहिये। लेकिन अगर अेक पार्टी अन्याय ही करती रहे और अूपर बताये दो रास्तोंमें से अेक भी मंजूर न करे, तो तीसरा रास्ता सिर्फ लड़ाओका ही खुला रह जाता है। जिन परिस्थितियोंने मुझसे यह बात कहलवाओ, अुन्हें लोगोंको समझना चाहिये। दिल्लीमें प्रार्थनाके बादके अपने सारे भाषणोंमें मुझे लोगोंसे यह कहना पड़ा कि वे कानून अपने हाथमें न लें और अपने लिअे न्याय पानेका काम सरकार पर छोड़ दें। मैंने लोगोंके सामने पाकिस्तान सरकारसे न्याय पानेके सही तरीके रखे, जिनमें राजके कानूनको तोड़कर किसीको मारने-पीटने या सजा देनेकी बात शामिल नहीं है। अगर लोगोंने यह गलत तरीका अपनाया, तो सभ्य सरकारका काम असंभव हो जायगा। मेरी अिस बातका यह मतलब नहीं कि अहिंसामें मेरी श्रद्धा जरा भी घटी है।

२८-९-'४७

मि० चर्चिलका अविवेक

आज शामकी सभामें हमेशाके बनिस्बत ज्यादा लोग जमा हुअे थे। गांधीजीने पूछा, सभामें कोअी अैसा आदमी है जिसे कुरानकी खास आयतें पढ़ने पर अेतराज हो? सभाके दो आदमियोंने विरोधमें अपने हाथ अुठाये। गांधीजीने कहा, मैं आपके विरोधकी कदर करूंगा, जो भी मैं जानता हूं कि प्रार्थना न करनेसे बाकीके लोगोंको बड़ी निराशा होगी। अहिंसामें पक्का विश्वास रखनेके कारण असके सिवा दूसरा कुछ मैं कर नहीं सकता; फिर भी यह कहे बिना नहीं रह सकता कि आपको अपना विरोध करनेवाले अितने बड़े बहुमतकी अिच्छाओंका अनादर नहीं करना चाहिये। आपका यह बरताव हर तरहसे अनुचित है। मैं आगे जो बात कहूंगा, अुससे आपको यह समझ लेना चाहिये कि किसीके बहकावेमें आकर आपने जो गैररवादारी दिखाअी है, वह अुस चिढ़ और गुस्सेकी निशानी है जो आज सारे देशमें दिखाअी देता है, और जिसने मि० विन्स्टन चर्चिलसे हिन्दुस्तानके बारेमें बहुत कड़वी बातें कहलवाअी हैं। आज सुबहके अखबारोंमें रूटर द्वारा तारसे भेजा हुआ मि० चर्चिलके भाषणका जो सार छपा है, अुसे मैं हिन्दुस्तानीमें आपको समझाता हूं। वह सार अिस तरह है:

"आज रातको यहां अपने अेक भाषणमें मि० चर्चिलने कहा — 'हिन्दुस्तानमें जो भयंकर खूंरेजी चल रही है, अुससे मुझे कोअी अचरज नहीं होता।'

"अुन्होंने कहा — 'अभी तो अिन बेरहम हत्याओं और भयंकर जुल्मोंकी शुरुआत ही है। यह राक्षसी खूंरेजी वे जातियां कर रही हैं, ये जुल्म अेक-दूसरी पर वे जातियां ढा रही हैं, जिनमें अूंचीसे अूंची संस्कृति और सभ्यताको जन्म देनेकी शक्ति है और जो ब्रिटिश ताज और ब्रिटिश पार्लियामेण्टके रवादार और गैरतरफदार

शासनमें पीढ़ियों तक साथ साथ पूरी शांतिसे रही हैं। मुझे डर है कि दुनियाका जो हिस्सा पिछले ६० या ७० बरससे सबसे ज्यादा शान्त रहा है, अुसकी आबादी भविष्यमें सब जगह बहुत ज्यादा घटनेवाली है। और, आबादीके घटनेके साथ ही अुस विशाल देशमें सभ्यताका जो पतन होगा, वह अेशियाके लिअे अुसकी सबसे बड़ी निराशा और दुःखकी बात होगी।'"

आप सब जानते हैं कि मि० चर्चिल खुद अेक बड़े आदमी हैं। वे अिंग्लैण्डके अूंचे कुलमें पैदा हुअे हैं। मार्लबरो परिवार अिंग्लैण्डके अितिहासमें मशहूर है। दूसरे विश्वयुद्धके शुरू होने पर जब ग्रेट ब्रिटेन खतरेमें था, तब मि० चर्चिलने अुसकी हुकूमतकी बागडोर संभाली थी। बेशक, अुन्होंने अुस समयके ब्रिटिश साम्राज्यको खतरेसे बचा लिया। यहां यह दलील देना गलत होगा कि अमेरिका या दूसरे मित्र राष्ट्रोंकी मददके बिना ग्रेट ब्रिटेन लड़ाअी नहीं जीत सकता था। मि० चर्चिलकी तेज सियासी बुद्धिके सिवा सब मित्र राष्ट्रोंको अेक साथ कौन मिला सकता था? अुन्होंने जिस महान राष्ट्रकी लड़ाअीके दिनोंमें अितनी शानसे नुमाअिन्दगी की, अुसने अुनकी सेवाओंकी कदर की। लेकिन लड़ाअी जीत लेनेके बाद अुस राष्ट्रने ब्रिटिश द्वीपोंको, जिन्होंने लड़ाअीमें जन-धनका भारी नुकसान अुठाया था, नया जीवन देनेके लिअे चर्चिल-सरकारकी जगह मजदूर-सरकारको पसन्द करनेमें कोअी हिचकिचाहट नहीं दिखाअी। अंग्रेजोंने समयको पहचानकर अपनी अिच्छासे साम्राज्यको तोड़ देने और अुसकी जगह बाहरसे न दिखाअी देनेवाला दिलोंका ज्यादा मशहूर साम्राज्य कायम करनेका फैसला कर लिया। हिन्दुस्तान दो हिस्सोंमें बंट गया है, फिर भी दोनों हिस्सोंने अपनी मरजीसे ब्रिटिश कामनवेल्थके मेम्बर बननेका अैलान किया है। हिन्दुस्तानको आजाद करनेका गौरवभरा कदम पूरे ब्रिटिश राष्ट्रकी सारी पार्टियोंने अुठाया था। अिस कामके करनेमें मि० चर्चिल और अुनकी पार्टीके लोग शरीक थे। भविष्य अंग्रेजों द्वारा अुठाये गये अिस कदमको सही साबित करेगा या नहीं, यह अलग बात है। और अिसका मेरी अिस बातसे कोअी ताल्लुक नहीं है कि चूंकि मि० चर्चिल सत्ताके फेरबदलके

काममें शरीक रहे हैं, अिसलिअे अुनसे अुम्मीद की जाती है कि वे अैसी कोअी बात न कहें या करें, जिससे अिस कामकी कीमत कम हो। बेशक, आधुनिक अितिहासमें तो अैसी कोअी मिसाल नहीं मिलती, जिसकी अंग्रेजोंके सत्ता छोड़नेके कामसे तुलना की जा सके। मुझे प्रियदर्शी अशोकके त्यागकी बात याद आती है। मगर अशोक बेमिसाल हैं और साथ ही वह आधुनिक अितिहासके व्यक्ति नहीं हैं। अिसलिअे जब मैंने रूटर द्वारा प्रकाशित किया हुआ मि० चर्चिलके भाषणका सार पढ़ा, तो मुझे दु:ख हुआ। मैं मान लेता हूं कि खबरें देनेवाली अिस मशहूर संस्थाने मि० चर्चिलके भाषणको गलत तरीकेसे बयान नहीं किया होगा। अपने अिस भाषणसे मि० चर्चिलने अुस देशको हानि पहुंचाअी है जिसके वे अेक बहुत बड़े सेवक हैं। अगर वे यह जानते थे कि अंग्रेजी हुकूमतके जुअेसे आजाद होनेके बाद हिन्दुस्तानकी यह दुर्गति होगी, तो क्या अुन्होंने अेक मिनटके लिअे भी यह सोचनेकी तकलीफ अुठाअी कि अुसका सारा दोष साम्राज्य बनानेवालोंके सिर पर है; अुन "जातियों" पर नहीं, जिनमें चर्चिल साहबकी रायमें "अूंचीसे अूंची संस्कृतिको जन्म देनेकी ताकत है"? मेरी रायमें मि० चर्चिलने अपने भाषणमें सारे हिन्दुस्तानको अेक साथ समेट लेनेमें बेहद जल्दबाजी की है। हिन्दुस्तानमें करोड़ोंकी तादादमें लोग रहते हैं। अुनमें से कुछ लाखने जंगलीपनका काम किया है, जिनकी करोड़ोंमें कोअी गिनती नहीं है। मैं मि० चर्चिलको हिन्दुस्तान आने और यहांकी हालतका खुद अध्ययन करनेकी दावत देता हूं। मगर वे पहलेसे ही किसी विषयमें निश्चित मत रखनेवाले अेक पार्टीके आदमीकी हैसियतसे नहीं, बल्कि अेक गैरतरफदार अंग्रेजकी तरह आयें, जो अपने देशकी अिज्जतका खयाल किसी पार्टीसे पहले रखता है और जो अंग्रेज सरकारको अपने अिस काममें शानदार सफलता दिलानेका पूरा अिरादा रखता है। ग्रेट ब्रिटेनके अिस अनोखे कामकी जांच अुसके परिणामोंसे होगी। हिन्दुस्तानके बंटवारेने अनजाने अुसके दो हिस्सोंको आपसमें लड़नेका न्योता दिया। दोनों हिस्सोंको अलग-अलग स्वराज देना, आजादीके अिस दान पर धब्बे जैसा मालूम होता है। यह कहनेसे कोअी फायदा नहीं कि दोनोंमें से कोअी

भी अुपनिवेश ब्रिटिश कामनवेल्थसे अलग होनेके लिअे आजाद है। अैसा करनेसे कहना सरल है। मैं अिस पर और ज्यादा कुछ नहीं कहना चाहता। मेरा अितना कहना यह बतानेके लिअे काफी होगा कि मि० चर्चिलको अिस विषय पर ज्यादा सावधानीसे बोलनेकी जरूरत क्यों थी। परिस्थितिकी खुद जांच करनेके पहले ही अुन्होंने अपने साथियोंके कामकी निन्दा की है।

आप लोगोंमें से बहुतोंने मि० चर्चिलको अैसा कहनेका मौका दिया है। अभी भी आपके लिअे अपने तरीकोंको सुधारने और मि० चर्चिलकी भविष्य-वाणीको झूठ साबित करनेके लिअे काफी वक्त है। मैं जानता हूं कि मेरी बात आज कोअी नहीं सुनता। अगर अैसा न होता और लोग अुसी तरह मेरी बातोंको मानते होते, जिस तरह आजादीकी चर्चा शुरू होनेसे पहले मानते थे, तो मैं जानता हूं कि जिस जंगलीपनका मि० चर्चिलने बड़ा रस लेते हुअे बढ़ा-चढ़ाकर बयान किया है, वह कभी नहीं हो पाता और आप लोग अपनी माली और दूसरी घरेलू मुश्किलोंको सुलझानेके ठीक रास्ते पर होते।

१८

२९–९–'४७

भाअीके खूनका नतीजा

मुझसे कहा गया है कि पाकिस्तान और हिन्दुस्तानके दो अुपनिवेशोंमें लड़ाअी छिड़नेकी सम्भावनाका मैंने जो जिक्र किया है, अुससे पश्चिमके देशोंमें घबराहट पैदा होती जान पड़ती है। मुझे पता नहीं कि अखबारोंके संवाददाताओंने बाहर क्या खबरें भेजी हैं। भाषणों या बयानोंके सारांश जब तक बोलनेवालेके मतको ठीक ठीक न बताते हों, तब तक अुन्हें छपवाना हमेशा खतरनाक होता है। मैंने १८९६ में दक्षिण अफ्रीकाके बारेमें अेक पुस्तिका लिखी थी। अुसके गलत सारांशकी कीमत मुझे करीब करीब अपने प्राणोंसे चुकानेकी नौबत आ गअी थी। वह सारांश अितना गलत था कि मुझ पर मार पड़नेके २४ घण्टोंके

अन्दर ही दक्षिण अफ्रीकाके यूरोपियनोंका गुस्सा यह जानकर पछतावेमें बदल गया कि अेक बेकसूरको अैसे अपराधके लिअे मुसीबत सहनी पड़ी, जो अुसने कभी किया ही नहीं था। अिससे हमें यही सबक सीखना चाहिये कि किसी आदमीने जो बातें कहीं ही नहीं, या जो काम किये ही नहीं, अुनके लिअे अुसे जिम्मेदार न ठहराया जाय।

मैं मानता हूं कि मैंने अपने भाषणोंमें लड़ाअीकी जो चर्चा की है, अुसके किसी भी हिस्सेका यह मतलब नहीं लगाया जा सकता कि अुसमें पाकिस्तान या हिन्दुस्तानके बीच लड़ाअीको अुकसाया गया है या अुसका समर्थन किया गया है। हां, अगर लड़ाअीका नाम लेना ही मना हो तो बात दूसरी है। हमारे बीचमें अेक अंधविश्वास है कि अगर किसी घरमें कोअी बच्चा भी सांपका नाम ले दे, तो सांप वहां दिखाअी पड़ जाता है। मुझे अुम्मीद है कि हिन्दुस्तानमें लड़ाअीके बारेमें किसीमें भी अिस तरहका अन्धविश्वास नहीं है।

मेरा दावा है कि मौजूदा हालतकी छानबीन करके और निश्चयके साथ यह बताकर कि दोनों अुपनिवेशोंके बीच लड़ाअीका कारण कब पैदा होगा, मैंने दोनों राज्योंकी सेवा की है। यह लड़ाअीको अुकसानेके लिअे नहीं, बल्कि अुसे भरसक टालनेके लिअे किया गया है। मैंने यह भी कहा था कि अगर जनताने वहशियाना हत्यायें, लूट और आग लगानेके काम जारी रखे, तो वह अपनी अपनी सरकारको लड़नेके लिअे मजबूर कर देगी। परिस्थितियोंसे पैदा होनेवाले लाजमी नतीजोंकी तरफ जनताका ध्यान खींचना क्या गलत है?

हिन्दुस्तान जानता है और दुनियाको जानना चाहिये कि मेरी पूरी ताकत भाअी-भाअीकी खून-खराबीको रोकने और अुसे लड़ाअीकी शकल लेनेसे रोकनेमें लग रही है। अहिंसाको अिन्सान पर काबू रखनेवाले कानूनकी शकलमें स्वीकार करनेवाला आदमी जब लड़ाअीका नाम लेनेकी हिम्मत करता है, तब वह सिर्फ अुसे टालनेमें अपनी ताकत लगा देनेके लिअे ही अैसा कर सकता है। मेरी असली स्थिति यह है, और मुझे अुम्मीद है कि मैं अपनी मौतके दिन तक अिससे अलग न होअूंगा।

१९

३०-९-'४७

सरकारका फर्ज

प्रार्थनाके बाद भाषण देते हुअे गांधीजीने कहा कि आज मेरे पास मियांवलीके कुछ भाअी आये थे। अपने जिन दोस्तोंको वे पाकिस्तानमें छोड़ आये हैं, अुनके बारेमें अुन्होंने अपनी चिन्ता जाहिर की। अुन्होंने मुझसे कहा कि अुन्हें डर है कि जो लोग पीछे रह गये हैं, अुनका या तो जबरदस्ती धर्म बदल दिया जायगा या भूखों मारकर या और किसी तरहसे अुनकी जान ले ली जायगी और औरतोंको भगाया जायगा। अुन्होंने पूछा कि क्या हिन्दुस्तानी संघकी सरकारका यह फर्ज नहीं है कि वह अुन लोगोंको अिन सारी मुसीबतोंसे बचावे? अिसी तरहकी बातें दूसरे हिस्सोंसे भी मेरे पास आअी हैं। मैं मानता हूं कि सरकारका यह फर्ज है कि जो लोग हिफाजतके लिअे अुसका मुंह ताकते हैं, अुनकी वह हिफाजत करे, या अिस्तीफा दे दे। और जनताका भी फर्ज है कि वह सरकारके हाथ मजबूत करे।

पाकिस्तानके अल्पसंख्यकोंकी हिफाजत करनेके दो रास्ते हैं। सबसे अच्छा रास्ता यह है कि कायदे आजम जिन्ना साहब और अुनके वजीर अल्पसंख्यकोंमें अुनकी हिफाजतका विश्वास पैदा करें, जिससे अुन्हें अपनी रक्षाके लिअे हिन्दुस्तानकी ओर न देखना पड़े। पाकिस्तान सरकारका फर्ज है कि जिन मकानोंको अल्पसंख्यक छोड़ आये हैं, अुनकी ट्रस्टीकी तरह देखरेख करे। बेशक, जबरदस्ती धर्म बदलने व औरतोंको भगानेकी घटनायें नहीं होनी चाहिये। अेक छोटीसी लड़कीको भी, चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान, हिन्दुस्तान या पाकिस्तानमें अपने आपको पूरी तरहसे सुरक्षित महसूस करना चाहिये। किसीके मजहब पर कहीं भी हमला नहीं होना चाहिये। लोकशाहीमें जनता अपनी सरकारको बना या बिगाड़ सकती है। वह अुसे ताकतवर या कमजोर बना सकती है। मगर अनुशासनके बिना वह कुछ नहीं कर सकेगी।

अेक व्यक्तिकी ताकत

जहां तक मेरा सम्बन्ध है, आप लोगोंको नाराज करके भी मैं अिस बातको दोहराना चाहूंगा कि हमारे धर्मकी रक्षा करना हमारे ही हाथमें है। हरअेक बच्चेको यह तालीम मिलनी चाहिये कि वह अपने धर्मके लिअे अपनी जान दे सके। प्रह्लादकी कहानी आप सब जानते ही हैं। बारह सालकी अुम्रमें वह अपने विश्वासके लिअे अपने बापके भी खिलाफ हो गया था। हर धर्ममें अैसी बहादुरीके अुदाहरण मिलते हैं। मैंने अपने बच्चोंको यही तालीम दी है। मैं अपने बच्चोंके धर्मका रक्षक नहीं हूं। औरतोंको अबला कहना भूल है। जो औरत अपने विश्वासको मजबूतीसे पकड़े हुअे है, अुसे अपनी अिज्जत या अपनी श्रद्धा पर हमला होनेका डर रखनेकी जरूरत नहीं है। सरकारको आपकी हिफाजत करनी चाहिये। मगर मान लीजिये कि वह अिसमें कामयाब नहीं होती, तो क्या आप अपने धर्मको अुसी तरह बदल देंगे जिस तरह आप अपने कपड़े बदल डालते हैं?

हिन्दुस्तानी मुसलमान

मुसलमानों पर होनेवाले हमलोंका जिक्र करते हुअे गांधीजीने पूछा कि हिन्दुस्तानके मुसलमान कौन हैं? ये सबके सब अितनी बड़ी तादादमें अरबसे नहीं आये। थोड़ेसे मुसलमान बाहरसे आये थे। मगर ये करोड़ों हिन्दूसे मुसलमान बने हैं। जो लोग खुद सोच-समझकर अपना धर्म बदलते हैं, अुनकी मुझे परवाह नहीं है। मगर जो अछूत या शूद्र मुसलमान बने हैं वे सोच-समझकर नहीं बने हैं। आपने हिन्दू धर्ममें छुआछूतको जगह देकर और अिन नामधारी अछूतोंको दबाकर मुसलमान बन जानेके लिअे लाचार कर दिया है। अुन भाअियों और बहनोंको मारना या अुन्हें दबाना आपको शोभा नहीं देता।

२०

१-१०-'४७

सेवाका विशाल क्षेत्र

प्रार्थनाके बाद भाषण देते हुअे गांधीजीने कहा कि शामको अेक बहनने मुझे अेक खत भेजा था। अुसमें लिखा था कि 'मैं और मेरे पतिदेव दोनों सेवा करना चाहते हैं। मगर कोअी बताता नहीं कि हम लोग क्या करें'। अैसे सवाल बहुतसे लोग पूछते हैं। सबको मैं अेक ही जवाब देता हूं: सत्ता या हुकूमतका क्षेत्र बहुत छोटा रहता है, मगर सेवाका क्षेत्र तो बहुत बड़ा है। वह अुतना ही बड़ा है जितनी बड़ी धरती है। अुसमें अनगिनत कार्यकर्ता समा सकते हैं। अुदाहरणके लिअे, दिल्ली शहरमें कभी आदर्श सफाअी नहीं रही। शरणार्थियोंके बहुत बड़ी तादादमें आ जानेसे यहां और भी ज्यादा गन्दगी बढ़ गअी है। शरणार्थी-छावनियोंकी सफाअी जरा भी सन्तोषके लायक नहीं है। कोअी भी अिस कामको अपने हाथमें ले सकता है। अगर आप शरणार्थी-छावनियों तक न भी जा सकें, तो अपने आसपास सफाअी तो रख सकते हैं। और अिसका सारे शहर पर जरूर असर पड़ेगा। रहनुमाअीके लिअे कोअी किसी दूसरेकी ओर न देखे। बाहरी सफाअीके साथ दिल और दिमागकी सफाअी भी जरूरी है। यह अेक बड़ा काम है और अिसमें महान सम्भावनायें भरी पड़ी हैं।

शान्तिकी शर्तें

मैं बाबा बचित्तरसिंह द्वारा बुलाअी गअी दिल्लीके खास खास नागरिकोंकी अेक सभामें गया था। पण्डित जवाहरलाल नेहरू अुस सभामें भाषण देनेवाले थे। मगर लियाकतअली साहब अुनसे चर्चा करनेके लिअे आ गये, और चार बजे कांग्रेस वर्किंग कमेटीकी बैठकमें और पांच बजे केबिनेटकी अेक बैठकमें अुन्हें शामिल होना था, अिसलिअे अुन्होंने अपनी लाचारी जाहिर की। बाबा बचित्तरसिंहने मुझसे अुस सभामें बोलनेके लिअे

कहा और मैंने मंजूर कर लिया। मैंने सभामें आये हुअे लोगोंसे सवाल पूछनेके लिअे कहा। अेक भाअी सवाल पूछने खड़े हुअे, मगर पूछनेमें अुन्होंने पूरा भाषण ही दे डाला। अुसका सारांश यह था कि दिल्लीके लोग मुसलमानोंके साथ शान्तिसे रहनेके लिअे तैयार हैं, मगर शर्त यह है कि वे हिन्दुस्तानी संघके वफादार रहें और अुनके पास जो बिना लाअिसेंसके हथियार और लड़ाअीका सामान है अुसे सरकारको सौंप दें। अिस विषयमें दो मत नहीं हो सकते कि जो लोग हिन्दुस्तानी संघमें रहना चाहते हैं अुन्हें संघके वफादार रहना ही चाहिये, फिर वे किसी भी मजहबके हों।

अिसके सिवा, अुन्हें खुद अपने बगैर लाअिसेंसके हथियार सरकारको सौंप देने चाहिये। मगर मैंने अुन दोस्तसे कहा कि आपकी अिन दो शर्तोंमें तीसरी अेक शर्त और जोड़ दीजिये। वह यह कि अिन शर्तों पर अमल करानेका काम सरकार पर छोड़ दिया जाय।

बदला सच्चा अिलाज नहीं है

आज पुराने किलेमें करीब ५० हजार और हुमायूंके मकबरेके मैदानमें अिससे भी ज्यादा मुसलमान शरणार्थी पड़े हुअे हैं। वहां अुनके बुरे हाल हैं। पाकिस्तान और हिन्दुस्तानी संघके हिन्दू और सिक्ख शरणार्थियोंके दुःख-दर्दका बयान करके अिन मुस्लिम शरणार्थियोंके दुःख-दर्दको सही बताना गलत चीज है। अिसमें कोअी शक नहीं कि हिन्दुओं और सिक्खोंने पाकिस्तानमें बड़ी बड़ी मुसीबतें सही हैं। हिन्दुस्तानी संघकी सरकारका फर्ज है कि वह अिन हिन्दुओं और सिक्खोंके लिअे पाकिस्तान सरकारसे न्याय हासिल करे। लाहौर अपने अच्छे अच्छे स्कूलों और कालेजोंके लिअे मशहूर है। वे खानगी आदमियों द्वारा बनवाये गये हैं। पंजाबी लोग बड़े मेहनती होते हैं। वे पैसा कमाना और अुसे अच्छे अच्छे कामोंमें खर्च करना जानते हैं। लाहौरमें हिन्दुओं और सिक्खोंके बनाये हुअे अच्छेसे अच्छे अस्पताल हैं। ये सब स्कूल, कालेज, अस्पताल और निजी जायदाद अुनके सच्चे मालिकोंको फिरसे दिलवानी होगी। लेकिन लोग खुद बदला लेना चाहेंगे, तो यह सब नहीं हो सकेगा। यह देखना हिन्दुस्तानी संघकी सरकारका

फर्ज है कि पाकिस्तान सरकार हिन्दुओं और सिक्खोंके साथ न्याय करे। अिसी तरह मुसलमानोंके लिअे यूनियनसे न्याय हासिल करना पाकिस्तान सरकारका फर्ज है। आप दोनों अेक-दूसरेके बुरे कामोंकी नकल करके न्याय नहीं पा सकते। अगर दो आदमी घोड़ों पर सवार होकर घूमने निकलते हैं और अुनमें से अेक गिर जाता है, तो क्या दूसरेको भी गिर जाना चाहिये? अैसा करनेका नतीजा तो यही होगा कि दोनोंकी हड्डियां टूट जायंगी। मान लीजिये कि मुसलमान यूनियनके वफादार नहीं रहेंगे और अपने हथियार नहीं सौंपेंगे, तो क्या अिसलिअे आप निर्दोष मर्दों, औरतों और मासूम बच्चोंका कतल जारी रखेंगे? गद्दारोंको अुचित सजा देना सरकारका काम है। हिन्दुस्तानने दुनियामें जो अच्छा नाम कमाया है, अुस पर दोनों राज्योंके लोगोंके जंगली कामोंने स्याही पोत दी है। अिस तरह दोनों अपने अपने महान धर्मोंको बरबाद करने और गुलाम बननेका सौदा कर रहे हैं। आप भले अैसा कर सकते हैं। लेकिन मैं, जिसने हिन्दुस्तानकी आजादी पानेके लिअे अपनी जिन्दगी दांव पर लगा दी, अुनकी बरबादी देखनेके लिअे जिन्दा नहीं रहूंगा। मैं हर सांसमें भगवानसे प्रार्थना करता हूं कि या तो वह मुझे अिन लपटोंको बुझानेकी ताकत दे या अिस धरतीसे अुठा ले।

मुसलमान दोस्तोंके तार

मेरे पास अुम्मन और मध्यपूर्वकी दूसरी जगहोंके मुसलमान दोस्तोंने तार भेजे हैं, जिनमें यह आशा जाहिर की गअी है कि हिन्दुस्तानकी मौजूदा भाअी-भाअीकी लड़ाअी ज्यादा दिनों तक नहीं टिकेगी। हिन्दुस्तान जल्दी ही अपना पुराना नाम फिर पा लेगा और हिन्दू व मुसलमान भाअी-भाअी बनकर अेक साथ रहने लगेंगे।

बुजदिली और जंगलीपनकी हद

मुझे यह खबर सुनकर बड़ा दुःख हुआ कि दिल्लीके अेक अस्पताल पर पासके गांववालोंने हमला किया, जिसमें चार बीमार मारे गये और थोड़े ज्यादा बीमार घायल हुअे। यह बुजदिली और जंगलीपनकी हद है। अिसे किसी भी हालतमें ठीक नहीं कहा जा सकता।

दूसरी अेक रिपोर्टमें कहा गया है कि नैनीसे अलाहाबाद आनेवाली रेलमें से कुछ मुसलमान मुसाफिरोंको बाहर फेंक दिया गया। मुझे तो अैसे कामोंका कारण ही समझमें नहीं आता। अुनसे हर हिन्दुस्तानीका सिर शरमसे झुक जाना चाहिये।

२१

२–१०–'४७

सिक्ख गुरुओंका सन्देश

अपना भाषण शुरू करते हुअे गांधीजीने कहा, आज दिनमें बाबा खड़गसिंहके मन्त्री सरदार सन्तोखसिंहसे मेरी बात हुअी। अुन्होंने मुझसे कहा कि आपने सभामें गुरु अर्जुनदेवका जो भजन सुनाया, ठीक वैसी ही बात गुरु गोविन्दसिंहने भी कही है। ज्यादातर लोग गलतीसे यह सोचते हैं—अिस बारेमें कअी सिक्ख भी बहुत कम जानते हैं—कि गुरु गोविन्दसिंहने अपने अनुयायियोंको मुसलमानोंकी हत्या करना सिखाया था। सिक्खोंके दसवें गुरुने, जिनका भजन मैंने पढ़कर सुनाया है, कहा है कि अिससे कुछ बनता-बिगड़ता नहीं कि मनुष्य कैसे, कहां और किस नामसे भगवानकी पूजा करता है। भगवान हर मनुष्यका अेक ही है और हर मनुष्यकी जाति भी अेक ही है। गुरु गोविन्दसिंहने कहा है कि मनुष्य मनुष्यमें कोअी फर्क नहीं किया जा सकता। व्यक्तियोंके स्वभाव या शकल-सूरतमें फर्क हो सकता है, लेकिन वे सब अेक ही मिट्टीके बने हैं। अुनकी भावनायें अेक ही हैं। सब मरते हैं और मिट्टीमें मिल जाते हैं। सब आदमी अुसी हवा और अुसी सूरजका अुपभोग करते हैं। गंगा अपना ताजगी देनेवाला पानी मुसलमानको देनेसे अिनकार नहीं करेगी। बादल सबको अेकसा पानी देते हैं। सिर्फ नैतिक दृष्टिसे सोया हुआ आदमी ही अपने साथीमें फर्क करता है। अिसलिअे, अगर आप महान सिक्ख गुरुओं और दूसरे मजहबी नेताओंके सन्देशको सच्चा मानते हैं, तो आपको यह महसूस करना चाहिये कि आपमें से किसीका भी यह कहना गलत है कि हिन्दुस्तानी संघ सिर्फ हिन्दुओंसे बना शुद्ध हिन्दूराज ही होना चाहिये।

किरपानका सही अुपयोग

गांधीजीने आगे कहा, अिससे मेरा यह मतलब नहीं कि सिक्खोंने अहिंसाका व्रत लिया है। वे अहिंसाके पुजारी नहीं हैं। लेकिन सरदार सन्तोखसिंहने मुझे बताया कि गुरु गोविन्दसिंहके दिनोंमें मुसलमान अधर्म करने लगे थे। अिसलिअे गुरुने अपने अनुयायियोंको मुसलमानोंसे लड़नेका आदेश दिया। सिक्ख जो किरपान अपने साथ रखते हैं, वह निर्दोषोंको अन्यायीके जुल्मसे बचानेके लिअे है। वह अन्यायके खिलाफ लड़नेके लिअे है, न कि निर्दोषों, औरतों और बच्चों, या बूढ़ों और अपंगोंका खून करनेके लिअे। मुसलमानोंके खिलाफ लड़ते समय भी अिस कानूनकी कदर की जाती थी कि दोनों तरफके घायलोंकी अेकसी सेवा और देखभाल की जाय। लेकिन आज बिलकुल गलत मकसदके लिअे किरपानका अुपयोग किया जाता है। जो सिक्ख किरपानका गलत अुपयोग करता है, अुसे किरपान रखनेका हक नहीं है।

बरसगांठकी बधाअियां

आज दिनभर मेरे पास मुलाकातियोंका तांता-सा बंधा रहा। अुनमें विदेशी राजदूत और लेडी माअुण्टबेटन भी थीं। वे सब मुझे बधाअी देने आये थे। देश-विदेशसे मेरे पास बधाअीके सैकड़ों तार आये हैं। हर तारका जवाब देना मेरे लिअे असंभव है। लेकिन मैं अपने आपसे पूछता हूं: "क्या अुन्हें बधाअी कहा जा सकता है? क्या अुन्हें मातम-पुर्सी कहना ज्यादा ठीक नहीं होगा?" शरणार्थियोंने भी मुझे फूल भेंट किये, और पैसे और सदिच्छाओंके रूपमें बहुतसे अुपहार दिये। लेकिन मेरे दिलमें तो दुःख और सन्तापके सिवा कुछ नहीं है। अेक जमाना था जब जनता मेरी हर बातको मानती थी, लेकिन आज मेरी बात कोअी नहीं सुनता। आज तो लोगोंसे मैं अेक यही बात सुनता हूं कि वे हिन्दुस्तानी संघमें मुसलमानोंको नहीं रहने देंगे। लेकिन आज अगर मुसलमानोंके खिलाफ अुनकी आवाज है, तो कल पारसियों, अीसाअियों और यूरोपियनों पर क्या बीतेगी यह कौन कह सकता है? बहुतसे दोस्तोंने यह आशा जाहिर की है कि मैं १२५ साल तक जिन्दा

रहूं। लेकिन मैंने तो ज्यादा समय तक जीनेकी अिच्छा ही छोड़ दी है; फिर १२५ बरसका सवाल ही कहां रह जाता है? मैं अिन बधाअियोंको स्वीकार करनेमें बिलकुल असमर्थ हूं। जब नफरत और खूंरेजी वातावरणको गन्दा बना रही हों, तब मैं जिन्दा नहीं रह सकता। अिसलिअे मैं आप सबसे बिनती करता हूं कि आप अपना यह पागलपन छोड़ दें। आप अिस बातको भूल जाअिये कि पाकिस्तानमें गैर-मुस्लिमोंके साथ क्या किया जाता है। अगर अेक पार्टी नीचे गिरती है, तो दूसरीको भी अैसा करना शोभा नहीं देता। आप शान्त मनसे अैसे बुरे कामोंके नतीजों पर तो जरा सोचिये। आपको अपने दिलोंसे सारी नफरत निकाल देनी चाहिये। यह आपका हक और फर्ज है कि आप सरकारके सामने अपनी शिकायतें रखें और अुन्हें दूर करनेकी मांग करें। लेकिन कानूनको हाथमें ले लेना बिलकुल गलत रास्ता होगा। वह रास्ता सबको बरबाद कर देगा।

२२

३–१०–'४७

सब अेकसे दोषी हैं

बधाअीके तारोंकी मुझ पर झड़ी लगी हुअी है। मेरे लिअे अुन सबका जवाब देना असम्भव है। दोस्तोंने मुझे सुझाया है कि मैं बधाअीके कुछ सन्देश अखबारोंमें छपवा दूं। मेरे पास मुसलमान दोस्तोंके भी बड़े सुन्दर सन्देश आये हैं। लेकिन मेरे खयालमें आजका समय अुन्हें छपाने लायक नहीं है। सम्भव है अुनसे आम लोगोंको कोअी फायदा न हो, जो आज सत्य और अहिंसामें विश्वास नहीं करते। मेरी रायमें बुरे काम करनेवाले सभी अेकसे दोषी हैं, फिर वे कोअी भी हों।

सत्याग्रह और दुराग्रह

आजकल मुझे बहुतसी जगहोंमें सत्याग्रह शुरू करनेकी खबरें मिल रही हैं। मुझे अकसर अचरज होता है कि यह नामधारी सत्याग्रह कहीं सचमुच दुराग्रह तो नहीं है! मिलों, रेलवे या पोस्ट आफिसोंकी हड़ताल हो, या कुछ देशी रियासतोंके आन्दोलन हों, सभीका मकसद मुझे अेक

ही दिखाओी देता है——सत्ता छीनना। आज दुश्मनीका तेज जहर सारे समाज पर अपना असर डाल रहा है। जो लोग शान्त मनसे यह नहीं सोचते कि साधन और साध्य दोनों आखिरकार अेक ही चीज हैं, वे अपना मकसद पूरा करनेका कोअी भी मौका नहीं चूकते।

अच्छा काम खुद अपना आशीर्वाद है

मेरे पास अैसे भी खत आते हैं, जिनमें लोग अपने कामोंके लिअे या कोअी आन्दोलन शुरू करनेके लिअे मेरा आशीर्वाद मांगते हैं। मेरी रायमें हर अच्छे कामके साथ आशीर्वाद तो रहता ही है। अुसे मेरे या दूसरे किसीके समर्थनकी जरूरत नहीं होती। आज अेक भले आदमी मेरा आशीर्वाद मांगने आये। वे बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। लेकिन मैंने अुनसे कहा कि मेरा आशीर्वाद क्या मांगते हो? वे भाअी अेकदम मेरे कहनेका मतलब समझ गये। सत्य हमेशा अपने-आप जाहिर होता है। हरअेकको बड़ीसे बड़ी कीमत चुकाकर भी सत्यका पालन करना चाहिये। लेकिन जो सत्याग्रह करते हैं, अुन्हें अपने दिलोंको टटोलकर यह देखना चाहिये कि क्या वे सचमुच सत्यकी खोज कर रहे हैं? अगर अैसी बात नहीं है, तो सत्याग्रह मजाक बन जाता है। जो लोग अैसी चीज पानेकी कोशिश करते हैं जो सचमुच अुनकी नहीं है, वे अहिंसाके जरिये अुसे नहीं पा सकते। असत्य वस्तुकी मांगमें हिंसा भरी होती है, और सत्याग्रह और हिंसामें कोअी मेल हो ही नहीं सकता।

छावनियोंमें सफाअीका काम

अिसके बाद गांधीजीने कहा कि दिल्लीमें हिन्दू, सिक्ख और मुसलमान शरणार्थियोंकी कअी छावनियां हैं। अुनमें और शहरमें काफी गन्दगी है। हरअेक चाहता है कि छावनियोंकी सफाअीके लिअे मेहतर रखे जायं। लेकिन अिस तरह काम नहीं चलेगा। जो लोग छावनियोंमें रहते हैं अुन्हें अपने आसपासकी और पाखानोंकी सफाअी खुद करनी चाहिये। छुआछूतकी कालिख हिन्दू धर्मके यशको घुनकी तरह खा रही है। अिस कालिखको मिटानेका अेक रास्ता यह है कि हम सब भंगी बन जायं। भंगीका काम गन्दा नहीं है। अुससे सफाअी होती है। अगर दिल्लीके नागरिक शहरकी सफाअीकी तरफ खुद ध्यान देंगे, तो वे

दिल्लीको सुन्दर शहर बना देंगे और अुनकी मिसालका दूसरों पर बड़ा गहरा असर होगा। अगर छावनियां चलानेका काम मेरे हाथमें हो, तो मैं छावनियोंमें रहनेवालोंसे कहूंगा कि यहां सारे काम आपको ही करने होंगे। निकम्मे रहकर रोटी खा लेने और अपना दिन ताश, चौपड़ या जुआ खेलकर बरबाद करनेसे शरणार्थियोंका पतन होगा। अुन्हें कताअी, बुनाअी, दर्जीगिरी, बढ़अीगिरी, खेती या दूसरा कोअी अपनी पसन्दका धन्धा हाथमें लेकर खुश होना चाहिये। मुझे अिस बातमें कोअी शक नहीं कि अुन्हें दूसरोंकी सेवाओं पर निर्भर न करके पूरी तरह अपने ही पांवों पर खड़े होना चाहिये। मुझे विश्वास है कि अगर वे काममें रम जायेंगे तो बहुत हद तक अपने दुःख-दर्दको भी भूल जायेंगे। अुन्होंने जो भयंकर मुसीबतें सही हैं अुन्हें मैं जानता हूं। शरणार्थियोंको जिन्होंने सताया है अुन्हें मैं अेक पलके लिअे भी माफ नहीं कर सकता। लेकिन मैं फिर बार-बार जोर देकर यह कहूंगा कि बुराअीका बदला भलाअीसे चुकाना ही सही रास्ता है।

अेक फ्रांसीसी दोस्तकी सलाह

आज अेक दयालु फ्रांसीसी दोस्त मुझसे मिलने आये। अुन्होंने मुझे यह समझानेकी कोशिश की कि मुझे अपना काम पूरा करनेके लिअे १२५ बरस तक जीनेकी अिच्छा रखनी चाहिये। अुन दोस्तने कहा — 'आपने अितना बड़ा काम किया है। अपने देशको आजादी दिलाअी है। आपको आजकी घटनाओंसे मायूस नहीं होना चाहिये। अगर हर घटनाके लिअे भगवान जिम्मेदार है, तो वह बुराअीमें से भी भलाअी पैदा करेगा। आपको दुःखी और निराश नहीं होना चाहिये।' लेकिन फ्रांसीसी दोस्तके हमदर्दीके शब्दोंसे मैं अपने आपको धोखा नहीं दे सकता। आज मुझे लगता है कि पहले मैंने जो कुछ किया है अुसे मुझे भूल जाना होगा। कोअी आदमी अपने पुराने यश पर नहीं जी सकता। जब मैं यह महसूस करूं कि मैं लोगोंकी सेवा कर सकता हूं, तो ही मैं जीनेकी अिच्छा कर सकता हूं। और वह तभी होगा जब लोग अपनी गलती समझें और मेरी बात मानें। मेरी जिन्दगी भगवानके हाथमें है। अगर भगवान मुझसे ज्यादा सेवा लेना चाहेगा,

तो वह मुझे जिन्दा रखेगा। लेकिन आज मुझे सचमुच अैसा लगता है कि मेरे शब्द अपनी ताकत खो बैठे हैं। अुनका जनता पर कोअी असर नहीं पड़ता। और अगर मैं ज्यादा सेवा नहीं कर सकता, तो सबसे अच्छा यही होगा कि भगवान मुझे अिस दुनियासे अुठा ले।

२३

४–१०–'४७

कम्बलोंके लिअे अपील

प्रार्थना करनेवाली पार्टीमें बैठी हुअी डॉ० सुशीला नय्यरकी ओर अिशारा करते हुअे गांधीजीने अपने भाषणमें कहा अिस वक्त वह हिन्दू और मुसलमानोंको अेकसी डॉक्टरी मदद देनेमें अपना सारा ध्यान लगा रही है। वह पुराने किलेके मुसलमान शरणार्थियोंकी सेवामें रोज चार घंटे खर्च करती है। अुसने कल रेडक्रॉस सोसायटीके लोगोंके साथ कुरुक्षेत्र-छावनीका मुआअिना किया, जिसमें रेडक्रॉस सोसायटीके जच्चा-खाना और शिशु-मंगल विभागके डायरेक्टर डॉ० पंडित, प्रो० हॉरेस अलेक्जेण्डर और फ्रेण्डस सर्विस यूनिटके मि० रिचार्ड साअिमोण्डस भी थे। कुरुक्षेत्र-छावनीमें हिन्दू और सिक्ख शरणार्थी रहते हैं। अुनकी तादाद कमसे कम २५००० है और वह रोज बढ़ती जा रही है। शरणार्थियोंके रहनेके लिअे डेरे खड़े किये गये हैं। लेकिन वे सबको आसरा देनेके लिअे काफी नहीं हैं। खुराक आदमीको भुखमरीका शिकार होनेसे बचा सकती है, लेकिन वह समतोल नहीं कही जा सकती। अुससे लोगोंको पूरा पोषण नहीं मिलता और अुनकी बीमारीको रोकनेकी ताकत घटती है। मैं यह कहनेके लिअे मजबूर हो जाता हूं कि अगर अेक पार्टी भी समझदार बनी रहती, तो अिन्सानोंका यह दुःख-दर्द बहुत कम किया जा सकता था। बैर और बदलेकी भावनाने देशमें बुराअीका जहरीला घेरा शुरू कर दिया है और लाखों लोगोंको मुसीबतमें डाल दिया है। आज हिन्दू और मुसलमान बेरहमीमें अेक-दूसरेकी होड़ करते दिखाअी दे रहे हैं। वे औरतों, बच्चों और बूढ़ोंका खून करते भी नहीं शरमाते।

मैंने हिन्दुस्तानकी आजादीके लिअे कड़ी मेहनत की है और भगवानसे प्रार्थना की है कि वह मुझे १२५ बरस जिन्दा रहने दे, ताकि मैं हिन्दुस्तानमें रामराज कायम होते देख सकूं। लेकिन आज अैसी कोअी आशा दिखाअी नहीं देती। लोगोंने कानून अपने हाथोंमें ले लिया है। क्या मैं लाचार बनकर अिस अन्धेरको देखता रहूं?

भगवानसे मैं प्रार्थना करता हूं कि या तो वह मुझे अैसा बल दे कि मेरे बतानेसे लोग अपनी गलतीको समझ जायं और अुसे सुधार लें, या फिर मुझे अिस दुनियासे ही अुठा ले। अेक वक्त था जब आप लोग अपने प्यारके कारण मेरी बातोंको आंख मूंदकर मानते थे; आपका प्यार तो शायद वैसा ही है, मगर जान पड़ता है कि मेरी अपील आपके दिमाग और दिलों पर असर डालनेकी अपनी ताकत खो चुकी है। क्या जब तक आप गुलाम थे तभी तक मैं आपके कामका था और आजाद हिन्दुस्तानमें क्या मेरा कोअी अुपयोग नहीं रहा? क्या आजादीका मतलब सभ्यता और अिन्सानियतसे बिदा लेना है? जो बात मैं पिछले बरसोंमें चिल्ला-चिल्लाकर आपसे कहता रहा हूं, अुसके सिवा अब दूसरा कोअी सन्देश मैं आपको नहीं दे सकता।

आज मैं आपका ध्यान आगे आनेवाली सर्दीके मौसमकी तरफ खींचना चाहता हूं। दिल्ली और पंजाबमें बहुत सर्दी पड़ती है। जो लोग गरम कम्बल या रजाअियां दे सकते हैं अुन सबसे मैं अपील करता हूं कि वे ये चीजें शरणार्थियोंके लिअे दें। मोटे सूतकी चद्दरें भी भेजी जा सकती हैं। भेजनेसे पहले अगर जरूरी हो, तो आप अुन्हें धो डालें और सी लें। अिस अिन्सानियतके काममें हिन्दू-मुसलमान सब हिस्सा लें। मैं चाहता हूं कि आप कोअी चीज किसी खास जातिका नाम लेकर न दें। आप अितना विश्वास रखें कि आपकी भेंट सिर्फ अुन्हींको दी जायगी जो अुसके काबिल हैं। मुझे अुम्मीद है कि कलसे ही अिन चीजोंकी भेंट ज्यादासे ज्यादा तादादमें आने लगेगी। सरकारके लिअे यह मुमकिन नहीं है कि वह लाखों बेआसरा अिन्सानोंको कम्बल दे सके। अिस वक्त तो हिन्दुस्तानके करोड़ों निवासियोंको ही अपने अभागे भाअियोंकी मददके लिअे आगे बढ़ना होगा।

२४

५-१०-'४७

मेरी बीमारी

प्रार्थनाके बाद अपना भाषण शुरू करते हुअे गांधीजीने कहा कि मुझे अिस बातका दुःख है कि मेरी बीमारीकी खबर अखबारोंमें फिर छपी है। मैं नहीं जानता, किसने वह खबर दी है। यह सच है कि मुझे खांसी और कुछ बुखार है। मगर अखबारोंमें अिसकी खबर देनेसे न मुझे लाभ है, न और किसीको। यह खबर बहुतसे लोगोंके लिअे बेकार चिन्ताका कारण बन सकती है। अिसलिअे दोस्तोंसे मेरी बिनती है कि वे फिर कभी मेरी बीमारीकी कोअी खबर न छपवायें।

अेक असंगत सुझाव

मुझे अेक तार मिला है, जिसमें लिखा है कि 'अगर हिन्दू और सिक्ख बदला न लेते, तो शायद आप भी आज जिन्दा न रहते।' अिस सुझावको मैं असंगत मानता हूं। मेरी जिन्दगी तो भगवानके हाथोंमें है, जैसी कि आप सबकी है। जब तक भगवान अिजाजत नहीं देता, तब तक कोअी अिसका खात्मा नहीं कर सकता। अिन्सानोंमें यह ताकत नहीं है कि वे मेरी जिन्दगीको या दूसरे किसीकी जिन्दगीको बचा सकें। अुस तारमें आगे कहा गया है कि ९८ फी सदी मुसलमान दगाबाज हैं और अैन वक्त पर वे पाकिस्तानसे मिलकर हिन्दुस्तानको दगा देंगे। अिस बात परे मैं भरोसा नहीं करता। गांवोंमें रहनेवाली मुस्लिम जनता दगाबाज नहीं हो सकती। मान लीजिये कि वे भी दगाबाज साबित होते हैं, तो वे अिस्लामको ही बरबाद करेंगे। अगर अुनके खिलाफ दगाबाजीका अिलजाम साबित हो गया, तो सरकार अुनसे निपटेगी। मैं पूरी तरहसे मानता हूं कि अगर हिन्दू और मुसलमान अेक-दूसरेके दुश्मन बने रहे, तो अिसके परिणाम-स्वरूप लड़ाअी जरूर होगी। और लड़ाअी हुअी तो दोनों अुपनिवेश बरबाद हो जायंगे। सरकारका फर्ज है कि जो लोग अपनी हिफाजतके लिअे अुस पर निर्भर रहते हैं, अुन सबकी वह हिफाजत करे,

फिर वे लोग चाहे जहां हों और चाहे जिस धर्मको माननेवाले हों। आखिरकार तो कोअी आदमी अपने धर्मको खुद ही बचा सकता है।

मि० चर्चिलका दूसरा भाषण

अिसके बाद मि० चर्चिलके दूसरे भाषणका जिक्र करते हुअे गांधीजीने कहा कि चर्चिल साहबने अिंग्लैण्डकी मजदूर सरकार पर हिन्दुस्तानकी बरबादीका अिलजाम लगाया है। अुन्होंने कहा है कि मजदूर सरकारने अंग्रेजी साम्राज्यको खतम कर दिया और हिन्दुस्तानकी जनताको मुसीबतमें डाला। अुन्होंने अपनी यह शंका जाहिर की है कि यही दुर्गति बरमाकी भी होगी। क्या अिच्छा विचारकी जननी है? क्या चर्चिल साहबका यह विचार अुनकी अिस अिच्छामें से पैदा हुआ है कि बरमाकी भी अैसी ही दुर्गति हो? मि० चर्चिल अेक बड़े आदमी हैं। अुनको फिरसे अिस तरह बोलते जानकर मुझे दुःख हुआ है। अुन्होंने अपने देशसे ज्यादा अपनी पार्टीकी परवाह की है। हिन्दुस्तानमें सात लाख गांव हैं। ये सात लाख गांव पागल नहीं बने हैं। मगर मान लीजिये कि वे भी अैसे बन गये, तो क्या अिसलिअे हिन्दुस्तानको गुलाम बनाना अिन्साफकी बात होगी? क्या सिर्फ अच्छे लोगोंको ही आजादी पानेका हक है? अंग्रेजोंने ही हमें सिखाया है कि नशेकी आजादी होश-हवासकी गुलामीसे हमेशा बेहतर है। हमें ठीक ही सिखाया गया है कि अपनी सरकार अगर बुरा शासन भी करे तो अुसे सहा जा सकता है, और दूसरी अच्छी सरकार अपनी सरकारकी जगह नहीं ले सकती। समाजवाद चर्चिल साहबके लिअे हौआ है। अेक मजदूर समाजवादीके सिवा दूसरा कुछ हो ही नहीं सकता। समाजवाद अेक महान सिद्धान्त है। अुसे ठुकरानेके बजाय अुसका समझदारीसे अिस्तेमाल करनेकी जरूरत है। समाजवादी बुरे हो सकते हैं, समाजवाद नहीं। अिंग्लैण्डमें मजदूर दलकी जीत समाजवादकी जीत है। मजदूर सरकार मजदूरों द्वारा चलाअी जानेवाली सरकार है। अेक अरसेसे मेरा यह मत रहा है कि जब मजदूर पार्टी अपने गौरवको महसूस करेगी, तब वह दूसरी सभी पार्टियोंसे ज्यादा प्रभावशाली होगी। अिंग्लैण्डकी मजदूर सरकारने वहांकी सारी पार्टियोंकी सम्मतिसे हिन्दुस्तानसे

अंग्रेजी हुकूमत अुठा ली है। अुसके अिस महान काम पर दोष लगाना मि० चर्चिलको शोभा नहीं देता। मान लीजिये कि दूसरे चुनावमें चर्चिल साहब जीत जाते हैं, तो निश्चय ही अुनका यह अिरादा नहीं होगा कि हिन्दुस्तानकी आजादीको छीन लें और अुसको दुबारा गुलाम बनायें। अगर वे अैसा करेंगे तो अुन्हें हिन्दुस्तानके करोड़ों लोगोंका जबरदस्त मुकाबला करना पड़ेगा। क्या अुन्होंने थोड़ी देरके लिअे यह भी सोचा है कि बरमाको ब्रिटिश साम्राज्यमें मिलानेका काम कितना शर्मनाक था? क्या अुन्हें याद है कि हिन्दुस्तानको किस तरीकेसे कब्जेमें किया गया था? अुस काले अध्यायको मैं खोलना नहीं चाहता। अुसके बारेमें जितना कम कहा जाय अुतना ही अच्छा है। यह सब कहनेके साथ ही मैं आप लोगोंसे भी कहना चाहूंगा कि आप यह न भूलें कि अगर आप अिन्सानोंके बजाय जानवरोंकी तरह बरतते रहे, तो महंगे दामों मिली हुअी आपकी आजादी दुनियाकी बड़ी ताकतें छीन लेंगी। अगर हिन्दुस्तान पर यह मुसीबत आअी, तो अुसे देखनेके लिअे मैं जिन्दा नहीं रहना चाहता। हिन्दुस्तानको अकेले हाथों बचानेवाला मैं कौन होता हूं? मगर मैं यह जरूर चाहता हूं कि आप मि० चर्चिलकी भविष्य-वाणीको गलत साबित कर दें।

२५

६–१०–'४७

अनाजकी समस्या

अनाजकी मौजूदा गम्भीर परिस्थितिमें डॉ० राजेन्द्रप्रसादको अपनी सलाहका लाभ देनेके लिअे अुनके आमंत्रण पर खुराकके विशेषज्ञ अिकट्ठा हुअे हैं। अिस अहम मामलेमें कोअी भूल होनेसे लाखों अिन्सान भुखमरीसे मर सकते हैं। कुदरती या अिन्सानके पैदा किये हुअे अकालमें हिन्दुस्तानके करोड़ों नहीं, तो लाखों आदमी भूखसे मरे हैं। अिसलिअे यह हालत हिन्दुस्तानके लिअे नयी नहीं है। मेरी रायमें अेक व्यवस्थित समाजमें अनाज और पानीकी कमीके सवालको कामयाबीसे

हल करनेके लिअे पहलेसे ही सोचे हुअे अुपाय हमेशा तैयार रहने चाहिये। अेक व्यवस्थित समाज कैसा हो, और अुसे अिस सवालको कैसे सुलझाना चाहिये, अिन बातों पर विचार करनेका यह समय नहीं है। अिस वक्त तो हमें सिर्फ यही विचार करना है कि अनाजकी मौजूदा भयंकर तंगीको हम किस तरह कामयाबीके साथ दूर कर सकते हैं।

स्वावलम्बन

मेरा खयाल है कि हम लोग यह काम कर सकते हैं। पहला सबक जो हमें सीखना है वह है स्वावलम्बन और अपने आप पर भरोसा रखनेका। अगर हम यह सबक पूरी तरह सीख लें, तो विदेशों पर निर्भर रहने और अिस तरह अपना दिवालियापन जाहिर करनेसे हम बच सकते हैं। यह बात घमण्डसे नहीं, बल्कि हकीकतोंको ध्यानमें रखकर कही गअी है। हमारा देश छोटासा नहीं है, जो अपने अनाजके लिअे बाहरी मदद पर निर्भर रहे। यह तो अेक छोटा-मोटा महाद्वीप है, जिसकी आबादी चालीस करोड़के लगभग है। हमारे देशमें बड़ी-बड़ी नदियां, कअी किस्मकी अुपजाअू जमीनें और कभी न चुकनेवाला पशुधन है। हमारे पशु अगर हमारी जरूरतसे बहुत कम दूध देते हैं, तो अिसमें पूरी तरहसे हमारा ही दोष है। हमारे पशु अिस लायक हैं कि वे कभी भी हमें अपनी जरूरतका दूध दे सकते हैं। पिछली कुछ सदियोंमें अगर हमारे देशकी तरफ दुर्लक्ष्य न किया गया होता, तो आज अुसका अनाज सिर्फ अुसीको काफी नहीं होता, बल्कि पिछले महायुद्धके कारण अनाजकी तंगी भोगती हुअी दुनियाको भी अुसकी जरूरतका बहुत कुछ अनाज हिन्दुस्तानसे मिल जाता। आज दुनियाके जिन देशोंमें अनाजकी तंगी है, अुनमें हिन्दुस्तान भी शामिल है। आज तो यह मुसीबत घटनेके बजाय बढ़ती हुअी जान पड़ती है। मेरा यह सुझाव नहीं है कि जो दूसरे देश राजी-खुशीसे हमें अपना अनाज भेजना चाहते हैं, अुनका अहसान मानते हुअे माल ले लेनेके बजाय हम अुसे लौटा दें। मैं सिर्फ अितना ही कहना चाहता हूं कि हम भीख न मांगते फिरें। अुससे हम नीचे गिरते हैं। अिसमें देशके भीतर अेक जगहसे दूसरी जगह अनाज भेजनेकी कठिनाअियां और शामिल कर

दीजिये। हमारे यहां अनाज और दूसरी खाने-पीनेकी चीजोंको अेक जगहसे दूसरी जगह शीघ्रतासे भेजनेकी सहूलियतें नहीं हैं। अिसके साथ ही यह भी संभव है कि अनाजकी फेर-बदलीके दरमियान अुसमें अितनी मिलावट कर दी जाय कि वह खाने लायक ही न रहे। हम अिस बातसे आंखें नहीं मूंद सकते कि हमें अिन्सानके भले बुरे सब किस्मके स्वभावसे निपटना है। दुनियाके किसी हिस्सेमें अैसा अिन्सान नहीं मिलेगा, जिसमें कुछ न कुछ कमजोरी न हो।

विदेशी मददका मतलब

दूसरे, हम यह भी देखें कि हमें दूसरे देशोंसे कितनी मदद मिल सकती है। मुझे मालूम हुआ है कि हमारी मौजूदा जरूरतोंके तीन फी सदीसे ज्यादा मदद हम नहीं पा सकते। अगर यह बात सही है—मैंने कओी माहिरोंसे अिसकी जांच कराओी है और अुन्होंने अिसे सही माना है—तो मैं पूरी तरह मानता हूं कि बाहरी मदद पर भरोसा करना बेकार है। यह जरूरी है कि हमारे देशमें खेतीके लायक जो जमीन है, अुसके अेक-अेक अिंच हिस्सेमें हम ज्यादा पैसे दिलानेवाली चीजोंके बजाय रोजाना काममें आनेवाला अनाज पैदा करें। अगर हम बाहरी मदद पर जरा भी निर्भर रहे, तो हो सकता है कि अपने देशके भीतर ही अपनी जरूरतका अनाज पैदा करनेकी जो जबरदस्त कोशिश हमें करनी चाहिये अुससे हम बहक जायं। जो परती जमीन खेतीके काममें लाओी जा सकती है, अुसे हम जरूर अिस काममें लें।

केन्द्रीकरण या विकेन्द्रीकरण

मुझे भय है कि खाने-पीनेकी चीजोंको अेक जगह जमा करके, वहांसे सारे देशमें अुन्हें पहुंचानेका तरीका नुकसानदेह है। विकेन्द्रीकरणके जरिये हम आसानीसे काले बाजारको खतम कर सकते हैं और चीजोंको यहांसे वहां लाने-लेजानेमें लगनेवाले वक्त और पैसेकी बचत कर सकते हैं। हिन्दुस्तानके अनाज पैदा करनेवाले देहाती लोग अपनी फसल चूहों वगैरासे बचानेकी तरकीबें जानते हैं। अनाजको अेक स्टेशनसे दूसरे स्टेशन लाने-लेजानेमें चूहों वगैराको अुसे खानेका काफी मौका मिलता है। अिससे देशका करोड़ों रुपयोंका नुकसान होता है। और

जब हम अेक अेक छटाक अनाजके लिअे तरसते हैं, तब देशका हजारों मन अनाज अिस तरह बरबाद हो जाता है। अगर हरअेक हिन्दुस्तानी जहां मुमकिन हो वहां अनाज पैदा करनेकी जरूरतको महसूस करे, तो शायद हम यह भूल जायं कि देशमें कभी अनाजकी तंगी थी। ज्यादा अनाज पैदा करनेका विषय अैसा है जिसमें सबके लिअे आकर्षण है। अिस विषय पर मैं पूरे विस्तारके साथ तो नहीं बोल सका, मगर मुझे अुम्मीद है कि मेरे अितना कहनेसे आप लोगोंके मनमें अिसके बारेमें रुचि पैदा हुअी होगी और समझदार लोगोंका ध्यान अिस बातकी तरफ मुड़ा होगा कि हरअेक शख्स अिस तारीफके लायक काममें मदद कर सकता है।

अनाजकी कमीका सामना किस तरह किया जाय?

अब मैं आपको यह बता दूं कि बाहरसे हमको मिलनेवाले तीन फी सदी अनाजको लेनेसे अिनकार करनेके बाद हम किस तरह अिस कमीको पूरा कर सकते हैं। हिन्दू लोग महीनेमें दो बार अेकादशीका व्रत रखते हैं। अिस दिन वे आधा या पूरा अुपवास करते हैं। मुसलमान और दूसरे फिरकोंके लोगोंको भी, खास करके जब करोड़ों भूखों मरते लोगोंके लिअे अेक-आध दिनका अुपवास करना पड़े, अिसकी मनाही नहीं है। अगर सारा देश अिस तरहके अुपवासकी अहमियतको समझे, तो हमारे खुद होकर विदेशी अनाज लेनेसे अिनकार करनेके कारण जो कमी होगी, अुससे भी ज्यादा कमीको वह पूरी कर सकता है।

मेरी अपनी रायमें तो अगर अनाजके रेशनिंगका कोअी अुपयोग है भी तो वह बहुत कम है। अगर अनाज पैदा करनेवालोंको अुनकी मर्जी पर छोड़ दिया जाय, तो वे अपना अनाज बाजारमें लायेंगे और हरअेकको अच्छा और खाने लायक अनाज मिलेगा, जो आज आसानीसे नहीं मिलता।

प्रेसिडेण्ट ट्रूमेनकी सलाह

अनाजकी तंगीके बारेमें अपनी बात खतम करनेसे पहले मैं आप लोगोंका ध्यान प्रेसिडेण्ट ट्रूमेनकी अमेरिकन जनताको दी गअी अुस सलाहकी तरफ दिलाअूंगा, जिसमें अुन्होंने कहा है कि अमेरिकन लोगोंको

कम रोटी खाकर यूरोपके भूखों मरते लोगोंके लिअे अनाज बचाना चाहिये। अुन्होंने आगे कहा है कि अगर अमेरिकाके लोग खुद होकर अिस तरहका अुपवास करेंगे, तो अुनकी तन्दुरुस्तीमें कोअी कमी नहीं आयेगी। प्रेसिडेण्ट ट्रूमेनको अुनके अिस परोपकारी रुख पर मैं बधाअी देता हूं। मैं अिस सुझावको माननेके लिअे तैयार नहीं हूं कि अिस परोपकारके पीछे अमेरिकाके लिअे माली फायदा अुठानेका गन्दा अिरादा छिपा हुआ है। किसी अिन्सानका न्याय अुसके कामों परसे होना चाहिये, अुनके पीछे रहनेवाले अिरादेसे नहीं। अेक भगवानके सिवा और कोअी नहीं जानता कि अिन्सानके दिलमें क्या है। अगर अमेरिका भूखे यूरोपको अनाज देनेके लिअे अुपवास करेगा या कम खायेगा, तो क्या यह काम हम अपने खुदके लिअे नहीं कर सकेंगे? अगर बहुतसे लोगोंका भूखसे मरना निश्चित है, तो हमें स्वावलम्बनके तरीकेसे अुनको बचानेकी पूरी पूरी कोशिश करनेका यश तो कमसे कम ले ही लेना चाहिये। अिससे अेक राष्ट्र अूंचा अुठता है।

हम अुम्मीद करें कि डॉ० राजेन्द्रप्रसाद द्वारा बुलाअी गअी कमेटी तब तक समाप्त नहीं होगी, जब तक वह देशकी मौजूदा अनाजकी भयंकर तंगीको दूर करनेका कोअी व्यावहारिक तरीका नहीं ढूंढ़ निकालेगी।

२६

७-१०-'४७

ज्यादा कम्बलोंके लिअे अपील

प्रार्थनाके बाद अपना भाषण शुरू करते हुअे गांधीजीने कहा कि परसोंके बादसे कुछ कम्बल मेरे पास और आये हैं। अिन दान देनेवालोंको मैं धन्यवाद देता हूं। मगर मुझे यह कहते हुअे दुःख होता है कि अगर अिसी तरह धीरे-धीरे और अितनी कम तादादमें यह चीज मिलती रही, तो लाखों बेआसरा शरणार्थियोंको हम कम्बल नहीं दे सकेंगे। जनताको अिन्हें अिकट्ठे करनेका अैसा बन्दोबस्त करना चाहिये कि थोड़े वक्तमें बहुत बड़ी तादादमें कम्बल अिकट्ठे किये जा सकें। अिन्हें शरणार्थियोंमें ठीक तरहसे बांटनेके लिअे या तो आप मेरे पास

भेज सकते हैं, या अपनी मर्जीके किसी शख्स या संस्था पर भरोसा करके अुन्हें सौंप सकते हैं।

कांग्रेसके सिद्धान्तोंके प्रति सच्चे रहिये

अिसके बाद गांधीजीने कहा कि मुझे यह कहते दुःख होता है कि देहरादून या अुसके आसपास अेक मुसलमान भाअीका खून हो गया। अुसका अेकमात्र कसूर यह था कि यह मुसलमान था। क्या मैं हिन्दुस्तानी संघके करोड़ों मुसलमानोंको हिन्दुस्तान छोड़ देनेके लिअे कह सकता हूं? आखिर वे कहां जायं? रेलगाड़ियोंमें भी तो वे सुरक्षित नहीं हैं! यह सच है कि पाकिस्तानमें हिन्दुओंकी भी यही दुर्गति हो रही है। मगर दो गलत कामोंसे अेक सही काम नहीं बन सकता। हिन्दुस्तानी संघके मुसलमानोंसे बदला लेकर आप पाकिस्तानके हिन्दुओं और सिक्खोंको कोअी मदद नहीं पहुंचा सकते। मैं आपसे अपील करता हूं कि आप अपने धर्म और कांग्रेसकी नीतिके प्रति सच्चे बनें। क्या पिछले ६० बरसोंमें कांग्रेसने अैसा कोअी काम किया है, जिससे देशके हितको नुकसान पहुंचा हो? अगर अब कांग्रेसमें आपका विश्वास न रहा हो, तो आपको अिस बातकी आजादी है कि आप कांग्रेसी मंत्रियोंको हटाकर अुनकी जगह पर दूसरोंको बैठा दें। मगर आप कानूनको अपने हाथमें लेकर अैसा कोअी काम न करें, जिसके लिअे आपको बादमें पछताना पड़े।

अनाजका कण्ट्रोल

कल अनाजके कण्ट्रोलके बारेमें गांधीजीने अपने जो विचार जाहिर किये थे, अुसका जिक्र करते हुअे अुन्होंने कहा कि मुझे पक्का विश्वास है कि अगर मेरे सुझाव पर अमल किया जायगा, तो २४ घंटेके अन्दर अनाजकी तंगी काफी हद तक दूर हो जायगी। अिस विषयके खास जानकार लोग मेरे अिस सुझावसे सहमत हैं या नहीं यह अलग बात है।

मंत्रियोंको चेतावनी

मेरे पास आकर कअी लोगोंने यह कहा कि जनताके मंत्री पुराने अंग्रेज अमलदारोंकी तरह ही मनमाने ढंगसे काम करते हैं। अिस

पर प्रकाश डालनेवाले कुछ कागजात भी वे लोग मेरे पास छोड़ गये हैं। अिस सिलसिलेमें मैंने मंत्रियोंसे बातचीत नहीं की। मगर अिस मामलेमें मेरी साफ राय है कि जिन बातोंके लिअे हम अंग्रेज सरकारकी आलोचना करते रहे हैं, अुनमें से कोअी भी बात जिम्मेदार मंत्रियोंकी हुकूमतमें नहीं होनी चाहिये। अंग्रेजी हुकूमतके दिनोंमें वाअिसरॉय कानून बनाने और अुन पर अमल करानेके लिअे ऑर्डिनेन्स निकाल सकते थे। तब जुडीशिअल और अेक्जीक्युटिव्ह (न्याय और शासन) के काम अेक ही शख्सके पास रखनेका काफी विरोध किया गया था। तबसे अब तक अैसी कोअी बात नहीं हुअी जिससे अिस विषयमें राय बदलनेकी जरूरत हो। देशमें ऑर्डिनेन्सका शासन बिलकुल नहीं होना चाहिये। कानून बनानेका अधिकार सिर्फ आपकी धारासभाओंको रहे। वजीरोंको जब जनता चाहे तब अुनके पदोंसे हटाया जा सकता है। अुनके कामोंकी जांच करनेका अधिकार आपकी अदालतोंको रहे। अुन्हें अिन्साफको सस्ता, सरल और बेदाग बनानेकी भरसक कोशिश करनी चाहिये। अिस मकसदको पूरा करनेके लिअे 'पंचायत-राज' का सुझाव रखा गया है। हाअीकोर्टके लिअे यह मुमकिन नहीं कि वह लाखों लोगोंके झगड़े निपटा सके। सिर्फ गैर-मामूली हालतोंमें ही आकस्मिक कानून बनानेकी जरूरत पड़ती है। कानून बनानेमें कुछ ज्यादा देर भले लगे, मगर अेक्जीक्युटिव्हको लेजिस्लेटिव्ह असेम्बली पर हावी न होने दिया जाय। अिस वक्त कोअी अुदाहरण तो मुझे याद नहीं है, मगर अलग अलग सूबोंसे मेरे पास जो खत आये हैं, अुनके ही आधार पर मैंने ये बातें कही हैं। अिसलिअे जब मैं जनतासे अपील करता हूं कि वह अपने हाथमें कानून न ले, तब जनताके मंत्रियोंसे भी अपील करता हूं कि जिन पुराने तरीकोंकी अुन्होंने निन्दा की है, अुन्हींको खुद अपनानेके खिलाफ वे सावधानी रखें।

रामराजका रहस्य

जनतासे मैं अेक बार फिर अपील करूंगा कि वह अपनी सरकारके प्रति सच्ची व वफादार बने और या तो अुसकी ताकतको बढ़ाये या अुसे अपनी जगहसे अलग कर दे, जिसका कि अुसे पूरा पूरा अधिकार है।

जवाहरलालजी सच्चे जवाहर हैं। वे कभी हिन्दूराज कायम करनेकी बातका समर्थन नहीं कर सकते और न सरदार ही, जिन्होंने मुसलमानोंकी हिफाजत की है, अैसा कर सकते हैं। जो भी मैं अपने आपको अेक सनातनी हिन्दू कहता हूं, फिर भी मुझे अिस बातका अभिमान है कि दक्षिण अफ्रीकाके स्वर्गीय अिमाम साहब मेरे साथ हिन्दुस्तान आये थे और साबरमती आश्रममें अुनकी मृत्यु हुअी थी। अुनकी लड़की और दामाद अभी भी साबरमतीमें हैं। क्या मैं या सरदार अुन्हें निकाल दें? मेरा हिन्दू धर्म मुझे सिखाता है कि मैं सब धर्मोंकी अिज्जत करूं। यही रामराजका रहस्य है। अगर लोगोंको जवाहरलालजी, सरदार पटेल व अुनके साथियों पर श्रद्धा और विश्वास न रहे, तो वे अुन्हें बदल सकते हैं। लेकिन लोग अुनसे यह अुम्मीद नहीं कर सकते, और अुन्हें करनी भी नहीं चाहिये कि वे अपनी आत्माके खिलाफ हिन्दुस्तानको सिर्फ हिन्दुओंका ही मुल्क मान लें। अिससे तो बरबादी ही होगी।

२७

८-१०-'४७

पैसोंके बजाय कम्बल दीजिये

गांधीजीने कहा कि कुछ कम्बल मेरे पास और आये हैं। दोपहरके बाद अेक दोस्त मेरे पास आये और अुन्होंने मुझे पैसे या कम्बल भेजनेकी अिच्छा जाहिर की। मैंने अुनसे कम्बल भेजनेके लिअे कहा। जब मैं सभामें आ रहा था, तब दूसरे अेक भाअीने कम्बल खरीदनेके लिअे मुझे पांच सौ रुपये दिये जिन्हें मैंने ले लिया। मगर मैं रुपयोंके बजाय कम्बल लेना ज्यादा पसन्द करूंगा।

बहादुरोंकी अहिंसा

अेक भले आदमी मुझसे मिलने आये थे। वे देहरादूनसे आ रहे थे। रेलगाड़ीके जिस डिब्बेमें वे सफर कर रहे थे, वह हिन्दुओं और सिक्खोंसे भरा था। अुस डिब्बेमें चढ़नेवाले अेक नये आदमी पर लोगोंको शक हुआ। पूछने पर अुसने अपनी जात चमार

बताअी। मगर अुसकी कलाअी पर कुछ गुदा हुआ था, जो बताता था कि वह मुसलमान है। अितना काफी था। अुस आदमीको छुरा मारकर जमुनामें फेंक दिया गया। अुन भले आदमीने कहा कि वे अुस दृश्यको देख न सके और अुन्होंने अपना मुंह फेर लिया। मैंने अुन्हें डांटा कि आपने अपनी जानका खतरा अुठाकर भी अुस मुसलमान भाअीको बचानेकी कोशिश क्यों न की? अगर आप अैसा करते तो मुमकिन था कि अुस मुसलमान भाअीकी जान बच जाती, अगरचे आपकी जान चली जाती। यह बहादुरकी अहिंसा होती। यह भी सम्भव था कि आपकी बहादुरीका असर दूसरे मुसाफिरों पर पड़ता और विरोध करनेमें वे भी आपका साथ देते। अुन भले दोस्तने मंजूर किया कि यह बात अुनके दिमागमें अुस वक्त नहीं आअी, अगरचे अुसे आना चाहिये था।

मुझे अिस विचारसे ग्लानि हुअी कि सभी मुसाफिर दिलसे अिस शैतानीभरे काममें शामिल थे, अगरचे तिस पर भी मेरी सलाह यही होती कि अुन भाअीको अपनी जानका खतरा अुठाकर भी अुसका विरोध करना चाहिये था। मैंने महसूस किया है कि अंग्रेज सरकारके खिलाफ हमारी लड़ाअी बहादुरकी अहिंसाके आधार पर नहीं थी। अुसका नतीजा मैं और साथ ही सारा देश भुगत रहा है। अगर हो सके तो मैं अपने जीवनके बचे हुअे दिन लोगोंमें बहादुरकी अहिंसा पैदा करनेमें बिताना चाहता हूं। यह अेक मुश्किल काम है। मैं मंजूर करता हूं कि पाकिस्तानमें जो कुछ हुआ है और हो रहा है वह बहुत बुरा है। मगर हिन्दुस्तानी संघमें जो कुछ हो रहा है, वह भी अुतना ही बुरा है। अिस बातका पता लगाते बैठना फिजूल है कि शुरुआत किसने की, या किसकी गलती ज्यादा थी। अगर दोनों अब दोस्त बनना चाहते हैं, तो अुन्हें बीती हुअी बातें भूलनी होंगी। अगर वे वचन और कर्मसे बदला लेनेकी बात छोड़ दें, तो कलके दुश्मन आज दोस्त बन सकते हैं।

अखबारोंका फर्ज

अखबारोंका जनता पर जबरदस्त असर होता है। सम्पादकोंका फर्ज है कि वे अपने अखबारोंमें गलत खबरें न दें या अैसी खबरें न

छापें, जिनसे जनतामें अुत्तेजना फैले। अेक अखबारमें मैंने पढ़ा कि रेवाड़ीमें मेवोंने हिन्दुओं पर हमला कर दिया। अिस खबरने मुझे बेचैन कर दिया। मगर दूसरे दिन अखबारोंमें यह पढ़कर मुझे खुशी हुअी कि वह खबर गलत थी। अैसे कअी अुदाहरण दिये जा सकते हैं। सम्पादकों और अुप-सम्पादकोंको खबरें छापने और अुन्हें खास रूप देनेमें वहुत ज्यादा सावधानी रखनेकी जरूरत है। आजादीकी हालतमें सरकारोंके लिअे यह करीब करीब असंभव है कि वे अखबारों पर काबू रखें। जनताका फर्ज है कि वह अखबारों पर कड़ी नजर रखे और अुन्हें ठीक रास्ते पर चलाये। पढ़ी-लिखी जनताको चाहिये कि वह भड़कानेवाले या गन्दे अखबारोंकी मदद करनेसे अिनकार कर दे।

फौज और पुलिसका फर्ज

जिस तरह प्रेस किसी राजका मजबूत अंग होता है, अुसी तरह फौज और पुलिस भी हैं। वे किसीकी तरफदारी नहीं कर सकतीं। साम्प्रदायिक आधार पर फौज और पुलिसका बंटवारा बहुत बुरी चीज है। लेकिन अगर फौज और पुलिस साम्प्रदायिक विचारकी बन जाती हैं, तो अुसका नतीजा बरबादी ही होगा। हिन्दुस्तानी संघकी फौज और पुलिसका यह फर्ज है कि वे जान देकर भी अल्पमतवालोंकी हिफाजत करें। वे अपने अिस पहले फर्जको अेक पलके लिअे भी भुला नहीं सकतीं। यही बात मैं पाकिस्तानकी फौज और पुलिसके बारेमें भी कहूंगा, जिन्हें वहांके अल्पमतवालोंकी रक्षा करनी ही चाहिये। पाकिस्तानकी फौज और पुलिस मेरी बात मानें या न मानें, लेकिन मैं यूनियनकी फौज और पुलिससे सही काम करा सकूं, तो मुझे पक्का विश्वास है कि पाकिस्तानको भी अैसा करना पड़ेगा।

अिस बातने सारी दुनिया पर प्रभाव डाला है कि हिन्दुस्तानने बिना खून बहाये आजादी पाअी है। फौज और पुलिसको अपने सही बरतावसे अुस आजादीके लायक बनना होगा। अिसके अलावा, आजाद हिन्दुस्तानमें दोनोंको अीमानदारीसे अपना फर्ज अदा करना चाहिये। जब तक हर नागरिक सरकारकी तरफ अपना फर्ज अदा नहीं करता, तब तक कोअी आजाद सरकार शासन चला ही नहीं सकती। मैं यहां

अुन्हें अहिंसक बनानेकी बात नहीं कर रहा हूं। मैं तो सिर्फ यही कहता हूं कि वे अहिंसाको मानें या न मानें, लेकिन अपना बरताव ठीक रखें। अगर अुन्होंने मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया, तो बादमें अुन्हें पछताना होगा।

२८

९-१०-'४७

जल्दी कम्बल दीजिये

मुझे आज दिनमें कमसे कम ३० कम्बल मिले हैं। मैं दानियोंसे अपील करता हूं कि वे जल्दी जल्दी अपना दान दें, क्योंकि अक्तूबरके दूसरे तीसरे हफ्तेसे दिल्लीमें तेज सर्दी पड़ने लगती है। दान समय पर न दिया जाय, तो वह अपनी कीमत खो देता है।

शान्तिसे सुनना ही काफी नहीं

आप मेरी बात शान्तिसे सुनते हैं, अिसके लिअे मैं आपका अहसान मानता हूं। लेकिन अितनेसे ही काम नहीं चलेगा। अगर मेरी सलाह सुनने लायक है, तो अुस पर आपको अमल भी करना चाहिये।

पाकिस्तानके अल्पमतवाले

पाकिस्तानमें हिन्दू और सिक्ख भयंकर दशामें हैं। पाकिस्तान छोड़कर हिन्दुस्तानी संघमें आनेका काम बड़ा कठिन है। कअी लोग रास्तेमें ही मर जायेंगे। पाकिस्तान छोड़कर यूनियनमें आ जानेके बाद भी शरणार्थी-छावनियोंमें अुनकी दशा बहुत अच्छी नहीं हो जाती। कुरुक्षेत्रकी छावनीमें हजारों लोग आसमानके नीचे पड़े हैं। वहां डाक्टरी मदद काफी नहीं है; न अुन्हें ताकत देनेवाला खाना ही मिलता है। अिसके लिअे सरकारको दोष देना गलत होगा। मैं लोगोंको क्या सलाह दूं? आज दिनमें पश्चिम पाकिस्तानके कुछ दोस्त मुझसे मिले थे। अुन्होंने मुझे अपने दुःख-दर्दकी कहानी सुनाअी और कहा कि

पाकिस्तानमें रह जानेवाले लोगोंको जल्दी ही यूनियनमें ले आना चाहिये। मैं सरकार नहीं हूं। लेकिन आजकी गैर-मामूली हालतोंमें कोअी भी सरकार पूरी तरह चाहने पर भी वह सब नहीं कर सकती जो वह करना चाहती है। पूर्वी बंगालसे खबर आअी है कि वहांसे भी लोगोंने भागना शुरू कर दिया है। मैं अिसका कारण नहीं जानता। मेरे साथ काम करनेवाले -- जिनमें सतीशबाबू और खादी प्रतिष्ठानके दूसरे लोग भी हैं -- प्यारेलालजी, कनु गांधी, अमतुस्सलामबहन और सरदार जीवनसिंहजी आज भी वहां काम कर रहे हैं। मैंने खुद नोआखलीका दौरा करके लोगोंको यह समझानेकी कोशिश की थी कि वे सारा डर छोड़ दें। अिस खबरने मुझे लोगों और सरकारके फर्ज पर सोचनेका मौका दिया है। जो अेक राजको छोड़कर दूसरे राजमें आ रहे हैं, वे यह सोचते होंगे कि हिन्दुस्तानी संघमें अुनकी हालत बड़ी अच्छी हो जायगी। लेकिन अुनका यह खयाल गलत है। पूरे दिलसे चाहने पर भी सरकार अितने शरणार्थियोंके खाने-पीने और रहने वगैराका अिन्तजाम नहीं कर सकती। वह शरणार्थियोंके लिअे फिरसे पहले जैसी हालत पैदा नहीं कर सकेगी। वह लोगोंको यही सलाह दे सकती है कि वे अपनी अपनी जगहों पर जमे रहें और अपनी रक्षाके लिअे भगवानके सिवा किसीकी तरफ न देखें। अगर अुन्हें मरना भी पड़े, तो वे बहादुरीसे अपने घरोंमें ही मरें। स्वभावतः संघकी सरकारका यह फर्ज होगा कि वह दूसरी सरकारसे अपने अल्पसंख्यकोंकी सुरक्षाकी मांग करे। दोनों सरकारोंका यह फर्ज है कि वे मौजूदा हालतोंमें मिल-जुलकर सही बरताव करें। अगर यह अुचित बात नहीं होती, तो अिसका लाजमी नतीजा होगा लड़ाअी। लड़ाअीकी हिमायत करनेवाला मैं आखिरी आदमी होअूंगा। लेकिन मैं यह जानता हूं कि जिन सरकारोंके पास फौजें और हथियार हैं, वे लड़ाअीके सिवा दूसरा रास्ता अख्तियार कर ही नहीं सकतीं। अैसा कोअी रास्ता सर्वनाशका रास्ता होगा। आबादीके फेर-बदलमें होनेवाली मौतसे किसीको कोअी फायदा नहीं होता। फेर-बदलसे राहत-कामकी और लोगोंको फिरसे बसानेकी बड़ी बड़ी समस्यायें खड़ी होती हैं।

२९

१०-१०-'४७

और कम्बल मिले

गांधीजीने जाहिर किया कि मेरे पास और बहुतसे कम्बल आये हैं। कम्बल खरीदनेके लिअे कुछ रुपये और अेक सोनेकी अंगूठी भी दानमें मिली है। बड़ौदासे मुझे अेक तार मिला है, जिसमें बताया गया है कि वहां शरणार्थियोंके लिअे ८०० कम्बल तैयार हैं। और भी ज्यादा तादादमें भेजे जा सकते हैं, बशर्ते रेलसे भेजनेकी अिजाजत मिल जाय। मुझे आशा है कि अिस रफ्तारसे शरणार्थियोंको सर्दीकी बरबादीसे बचानेके लिअे काफी कम्बल अिकट्ठे हो जायेंगे।

खाने और कपड़ेकी तंगी

आज देशमें खाने और कपड़ेकी भारी तंगी है। आजादीके आनेसे यह तंगी पहलेसे ज्यादा भयंकर रूपमें दिखाअी देने लगी है। मैं अिसका कारण समझ नहीं सकता। यह आजादीकी निशानी नहीं है। हिन्दुस्तानकी आजादी अिसलिअे और भी ज्यादा कीमती हो जाती है कि जिन साधनोंसे हमने अुसे पाया है, अुनकी सारी दुनियाने तारीफ की है। हमारी आजादीकी लड़ाअीमें खून नहीं बहा। अैसी आजादीको हमारी समस्यायें पहलेके बजाय ज्यादा तेजीसे हल करनेमें मदद करनी चाहिये।

खुराकके बारेमें मैं कहूंगा कि आजका कण्ट्रोल और रेशनिंगका तरीका गैर-कुदरती और व्यापारके अुसूलोंके खिलाफ है। हमारे पास अुपजाअू जमीनकी कमी नहीं है, सिंचाअीके लिअे काफी पानी है और काम करनेके लिअे काफी आदमी हैं। अैसी हालतमें खुराककी तंगी क्यों होनी चाहिये? जनताको स्वावलम्बनका पाठ पढ़ाना चाहिये। अेक बार जब लोग यह समझ लेंगे कि अुन्हें अपने ही पांवों पर खड़े रहना है, तो सारे वातावरणमें अेक बिजली-सी दौड़ जायगी। यह मशहूर बात है कि असल बीमारीसे जितने लोग नहीं मरते, अुससे कहीं ज्यादा

अुसके डरसे मर जाते हैं। मैं चाहता हूं कि आप अकालके संकटका सारा डर छोड़ दें। लेकिन शर्त यही है कि आप अपनी जरूरतें खुद पूरी करनेका कुदरती कदम अुठायें। मुझे पक्का विश्वास है कि ख़ुराक परसे कण्ट्रोल अुठा लेनेसे देशमें अकाल नहीं पड़ेगा और लोग भुखमरीके शिकार नहीं होंगे।

अुसी तरह हिन्दुस्तानमें कपड़ेकी तंगी होनेका भी कोअी कारण नहीं है। हिन्दुस्तान अपनी जरूरतसे ज्यादा कपास पैदा करता है। लोगोंको खुद कातना और बुनना चाहिये। अिसलिअे मैं तो चाहता हूं कि कपड़ेका कण्ट्रोल भी अुठा दिया जाय। हो सकता है कि अिससे कपड़ेकी कीमत बढ़ जाय। मुझसे यह कहा गया है और मेरा विश्वास है कि अगर लोग कमसे कम छह महीने तक कपड़ा न खरीदें, तो स्वभावत: कपड़ेकी कीमत घट जायगी। और मैंने यह सुझाया है कि अिसी बीच जरूरत पड़ने पर लोगोंको अपनी खादी तैयार करनी चाहिये। अिस मौके पर मैं अपने अिस विश्वास पर अमल करनेकी बात नहीं कहता कि खादीके अिस्तेमालमें दूसरे किसी कपड़ेका अिस्तेमाल शामिल नहीं है। अेक बार लोग अपनी खुराक और कपड़ा खुद पैदा करने लगे कि अुनका सारा दृष्टिकोण ही बदल जायगा। आज हमें सिर्फ सियासी आजादी मिली है। मेरी सलाह पर अमल करनेसे आप माली आजादी भी हासिल करेंगे और अुसे गांवोंका अेक अेक आदमी महसूस करेगा। तब लोगोंके पास आपसमें झगड़नेका समय या अिच्छा नहीं रह जायगी। अिसका नतीजा यह होगा कि शराब, जुआ वगैरा जैसी दूसरी बुराअियां भी छूट जायंगी। तब हिन्दुस्तानके लोग आजादीके हर मानीमें आजाद हो जायेंगे। भगवान भी अुनकी मदद करेगा; क्योंकि वह अुन्हींकी मदद करता है, जो खुद अपनी मदद करते हैं।

११-१०-'४७

चरखा-जयन्ती

प्रार्थनाके बादके अपने भाषणमें गांधीजीने लोगोंको याद दिलाया कि आज भादौं वदी बारस है। अिस दिनको गुजरात, कच्छ और काठियावाड़में रेंटिया-बारस या चरखा-जयन्तीके नामसे लोग जानते हैं। आज जगह जगह सभायें की जाती हैं और लोगोंको चरखेके प्रोग्राम और अुससे जुड़े हुअे कामोंकी याद दिलाअी जाती है। आजका समय अुत्साह और धूमधामसे चरखा-जयन्ती मनानेका नहीं है। मैंने चरखेको अुसके फैले हुअे अर्थमें अहिंसाका प्रतीक कहा है। मालूम होता है कि वह प्रतीक आज खतम हो गया है, वर्ना आप भाअी-भाअीका खून और अिसी तरहके दूसरे हिंसाभरे काम होते न देखते। मैं अपने आपसे पूछता हूं कि क्या चरखा-जयन्तीका अुत्सव बिलकुल बन्द कर देना ठीक न होगा ? लेकिन मेरे दिलमें यह आशा छिपी हुअी है कि हिन्दुस्तानमें कमसे कम कुछ आदमी तो अैसे होंगे, जो चरखेके सन्देशको वफादारीसे मानते होंगे। अुन्हीं लोगोंके खातिर चरखा-जयन्तीका अुत्सव चालू रहना चाहिये।

हरिजनोंके लिअे बिल्ले

मैंने कल अेक बयानमें देखा था कि श्री मण्डल साहब और पाकिस्तान केबिनेटके कुछ दूसरे मेम्बरोंने यह तय किया है कि हरिजनोंसे अैसे बिल्ले लगानेकी आशा रखी जायगी जो अुनके अछूत होनेकी निशानी हों। अुन बिल्लोंमें चांद और तारेकी छाप होगी। यह फैसला हरिजनोंका दूसरे हिन्दुओंसे फर्क दिखानेके अिरादेसे किया गया है। मेरी रायमें अिसका लाजमी नतीजा यह होगा कि जो हरिजन पाकिस्तानमें रहेंगे, अुन्हें आखिरमें मुसलमान बनना पड़ेगा। दिली विश्वास और आत्माकी प्रेरणासे लोग धर्म बदलें, तो अुसके खिलाफ मुझे कुछ नहीं कहना है। अपनी अिच्छासे हरिजन बन जानेके कारण मैं हरिजनोंके मनको जानता हूं। आज अेक भी हरिजन अैसा नहीं है, जो अिस्लाममें शामिल किया जा सके। अिस्लामके बारेमें वे क्या जानते हैं? न वे

यही समझते हैं कि वे हिन्दू क्यों हैं। हर धर्मके माननेवालों पर यही बात लागू होती है। आज वे जो कुछ भी हैं, वह अिसीलिअे हैं कि वे किसी खास धर्ममें पैदा हुअे हैं। अगर वे अपना धर्म बदलेंगे, तो सिर्फ मजबूर होकर, या अुस लालचमें पड़कर, जो अुन्हें धर्म बदलनेके लिअे दिखाया जायगा। आजके वातावरणमें लोग खुद होकर धर्म बदलें, तो भी अुसे सच्चा या कानूनी नहीं मानना चाहिये। धर्मको जीवनसे भी ज्यादा प्यारा और ज्यादा कीमती समझना चाहिये। जो अिस सचाअी पर अमल करते हैं वे अुस आदमीके बनिस्बत ज्यादा अच्छे हिन्दू हैं, जो हिन्दू धर्मशास्त्रोंका जानकार तो है, लेकिन जिसका धर्म संकटके समय टिका नहीं रहता।

दशहरा और बकर-ओद

अिसके बाद गांधीजीने दशहरा और बकर-ओदके पास आ रहे त्योहारोंका जिक्र किया और हिन्दुओं व मुसलमानोंसे अपील की कि वे ज्यादासे ज्यादा सावधान रहें और अिस मौके पर अेक-दूसरेकी भावनाओंको ठेस न पहुंचायें। मैं चाहता हूं कि अिन त्योहारोंके मौके पर दोनों फिरके साम्प्रदायिक दंगोंको जन्म देनेवाले कारणोंसे बचें।

दक्षिण अफ्रीकाका सत्याग्रह

आखिरमें गांधीजीने दक्षिण अफ्रीकामें कलसे शुरू किये जानेवाले सत्याग्रहका जिक्र करते हुअे कहा, वहां सत्याग्रह कुछ समय तक पहले चला था। बीचमें वह थोड़े दिनोंके लिअे बन्द कर दिया गया था। हिन्दुस्तानका मामला संयुक्त राष्ट्रसंघके सामने है और दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुओं और मुसलमानोंने कलसे फिर सत्याग्रह शुरू करनेका फैसला किया है। मेरी अुन लोगोंको यह सलाह है कि वे हिन्दुस्तानी संघ और पाकिस्तानकी सरकारोंकी मदद मांगें। दोनों सरकारोंका यह फर्ज है कि वे दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंकी भरसक मदद करें और अुन्हें बढ़ावा दें। सफल सत्याग्रहकी शर्त यही है कि हमारा मकसद शुद्ध और सही हो और अुसे हासिल करनेके साधन पूरी तरह अहिंसक हों। अगर दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानी अिन शर्तोंका पालन करेंगे, तो अुन्हें जरूर सफलता मिलेगी।

१२-१०-'४७

शरणार्थियोंके बारेमें दो बातें

आज दिनमें मुझे और ज्यादा कम्बल मिले हैं। लोगोंने रजाअियां देनेका वचन भी दिया है। कुछ मिलें भी शरणार्थियोंके लिअे रजाअियां तैयार करवा रही हैं। कम्बलोंकी तरह रजाअियां ओसमें सूखी नहीं रह सकेंगी। वे गीली हो जायंगी। लेकिन अुन्हें ओससे बचानेका अेक आसान रास्ता यह हो सकता है कि रातमें अुन्हें पुराने अखबारोंसे ढंक लिया जाय। रजाअियोंमें अेक फायदा यह है कि वे अुधेड़ी जा सकती हैं, अुनका कपड़ा धोया जा सकता है और रुअीको हाथसे पींजकर दुबारा भरा जा सकता है।

जो अीश्वरकी मदद मांगते हैं, वे बदकिस्मतीको भी खुशकिस्मतीमें बदल सकते हैं। शरणार्थियोंमें कुछ लोग अैसे हैं, जो दु:ख-दर्द अुठानेके कारण कड़वाहटसे भरे हुअे हैं। अुनके दिलोंमें गुस्सेकी आग जल रही है। लेकिन गुस्सेसे कोअी फायदा नहीं होगा। मैं जानता हूं कि वे खुशहाल लोग थे। आज वे अपना सब कुछ खो चुके हैं। जब तक वे अिज्जत, शान और सुरक्षाकी गारण्टीके साथ अपने घरोंको नहीं लौटते, तब तक अुन्हें छावनीके जीवनमें ही अच्छेसे अच्छा काम करना चाहिये। अिसलिअे सोच-समझकर घरोंको लौटनेकी बात तो बड़े लम्बे समयका प्रोग्राम है। लेकिन अिस बीच शरणार्थी लोग क्या करें? मुझे यह बताया गया है कि पाकिस्तानसे आनेवाले लोगोंमें ७५ फी सदी व्यापारी हैं। वे सब तो हिन्दुस्तानी संघमें व्यापार शुरू करनेकी आशा नहीं रख सकते। अैसा करनेसे वे संघकी सारी माली व्यवस्थाको बिगाड़ देंगे। अुन्हें हाथसे काम करना सीखना होगा। डॉक्टरों, नर्सों वगैरा जैसे किसी धन्धेको जाननेवाले लोगोंके लिअे संघमें काम मिलना कठिन नहीं होना चाहिये। जो यह महसूस करते हैं कि पाकिस्तानसे अुन्हें निकाल दिया गया है, अुन्हें यह जानना चाहिये कि वे सारे हिन्दुस्तानके नागरिक हैं, न कि सिर्फ पंजाब, सरहदी सूबे या सिन्धके। शर्त यह है कि वे जहां कहीं जायं, वहांके रहनेवालोंमें दूधमें शक्करकी

तरह घुलमिल जायं। अुन्हें मेहनती बनना और अपने व्यवहारमें अीमानदार रहना चाहिये। अुन्हें यह महसूस करना चाहिये कि वे हिन्दुस्तानकी सेवा करने और अुसके यशको बढ़ानेके लिअे पैदा हुअे हैं, न कि अुसके नाम पर कालिख पोतने या अुसे दुनियाकी आंखोंसे गिरानेके लिअे। अुन्हें अपना समय जुआ खेलने, शराब पीने या आपसी लड़ाअी-झगड़ेमें बरबाद नहीं करना चाहिये। गलती करना अिन्सानका स्वभाव है। लेकिन अिन्सानोंको गलतियोंसे सबक सीखने और दुबारा गलती न करनेकी ताकत भी दी गअी है। अगर शरणार्थी मेरी सलाह मानेंगे, तो वे जहां कहीं भी जायेंगे, वहां फायदेमन्द साबित होंगे और हर सूबेके लोग खुले दिलसे अुनका स्वागत करेंगे।

३२

१३–१०–'४७

शरणार्थियोंसे

कल मैंने शरणार्थियोंकी छावनियोंके बारेमें कुछ बातें कही थीं। अुनमें अंग्रेजोंके समाजी जीवनका अभाव है। आज शामको मैं अुनके बारेमें और ज्यादा बातें कहूंगा, क्योंकि मैं अुन्हें बहुत महत्त्व देता हूं। हालांकि हमारे यहां धार्मिक और दूसरी तरहके मेले भरते हैं और कांग्रेसके जलसे और कान्फरेन्सें होती हैं, फिर भी अेक राष्ट्रके नाते हम ठीक-ठीक अर्थमें केम्प-जीवन बितानेके आदी नहीं हैं। मैं कांग्रेसके कअी जलसों और कान्फरेन्सोंमें शामिल हुआ हूं और दूसरे केम्पोंका भी मुझे अनुभव है। मैं १९१५ में हरद्वारके कुम्भ मेलेमें गया था। वहां मुझे अफ्रीकासे लौटे हुअे अपने साथियोंके साथ भारत-सेवक-समितिके केम्पमें सेवा करनेका सौभाग्य मिला था। अुसके बारेमें अिसके सिवा मुझे कुछ नहीं कहना है कि वहां मेरी और मेरे साथियोंकी प्रेमसे फिकर ली गअी थी। लेकिन हमारे लोग जैसा केम्प-जीवन बिताते हैं, अुसे देखकर मुझे कोअी खुशी नहीं होती। हममें समाजी सफाअीकी भावनाकी कमी है। नतीजा यह होता है कि केम्पमें खतरनाक गन्दगी और कूड़ा-करकट जमा हो जाता है, जिससे छूतकी बीमारियां फैलनेका डर रहता है।

हमारे पाखाने आम तौर पर अितने गन्दे होते हैं कि जिसका बयान नहीं किया जा सकता। लोग सोचते हैं कि वे कहीं भी टट्टी-पेशाब कर सकते हैं। यहां तक कि वे पवित्र नदियोंके किनारोंको भी नहीं छोड़ते, जहां अकसर लोग आया-जाया करते हैं। अिसे लोग अेक तरहका अपना हक समझते हैं कि अपने पड़ोसियोंका थोड़ा भी खयाल किये बिना वे कहीं भी थूक सकते हैं। हमारी रसोअीका अिन्तजाम भी कोअी ज्यादा अच्छा नहीं होता। मक्खियोंका दोस्तोंकी तरह हर जगह स्वागत किया जाता है। रसोअीकी चीजोंको अुनसे बचानेकी कोअी चिन्ता नहीं की जाती। हम यह भूल जाते हैं कि वे अेक पल पहले किसी भी तरहकी गन्दगी और कूड़े-करकट पर बैठी होंगी और किसी छूतकी बीमारीके कीड़े अपने साथ ले आअी होंगी। केम्पोंमें किसी योजनाके आधार पर लोगोंके रहनेका अिन्तजाम नहीं किया जाता। केम्प-जीवनकी यह तसवीर मैं बढ़ा-चढ़ाकर नहीं दिखा रहा हूं। मैं केम्पोंमें होनेवाले शोरगुलका जिक्र किये बिना भी नहीं रह सकता, जो वहां रहनेवालेको सहना पड़ता है।

व्यवस्था, योजना और पूरी पूरी सफाअीके लिअे मैं फौजी केम्पको आदर्श मानता हूं। मैंने फौजकी जरूरतको कभी नहीं माना। लेकिन अिसका यह मतलब नहीं कि अुसमें कोअी अच्छाअी है ही नहीं। अुससे हमें अनुशासन, मिले-जुले समाजी जीवन, सफाअी और समयके ठीक ठीक बंटवारेका, जिसमें हर अुपयोगी कामके लिअे जगह होती है, कीमती सबक मिलता है। फौजी केम्पमें पूरी खामोशी होती है। वह कुछ ही घण्टोंमें खड़ा किया गया केनवासका शहर होता है। मैं चाहता हूं कि हमारी शरणार्थियोंकी छावनियां अिस आदर्शको अपनावें। तब पानी गिरे या न गिरे, लोगोंको किसी तरहकी असुविधा या तकलीफ नहीं होगी।

अगर अिन छावनियोंमें सब लोग सारा काम, यहां तक कि केनवासका शहर खड़ा करनेका काम भी, खुद करें; अगर वे खुद पाखाने साफ करें, झाड़ू लगायें, रास्ते बनायें, नालियां खोदें, खाना पकायें, कपड़े साफ करें, तो छावनियोंका खर्च बिलकुल कम हो जाय। वहां रहनेवालोंको किसी भी कामको शानके खिलाफ नहीं समझना

चाहिये। छावनीसे सम्बन्ध रखनेवाला कोअी भी काम अेकसी अिज्जत रखता है। अगर जिम्मेदारीको समझकर सावधानीसे अिन्तजाम और देखभाल की जाय, तो समाजी जीवनमें सही और जरूरी क्रान्ति पैदा की जा सकती है। तब सचमुच मौजूदा मुसीबत गुप्त वरदानके रूपमें बदल जायगी। तब कोअी शरणार्थी कहीं भी जाय, वह किसी पर बोझ नहीं बनेगा। वह अकेले अपने बारेमें नहीं सोचेगा, बल्कि वैसी ही मुसीबतें अुठानेवाले सभी शरणार्थियोंके बारेमें सोचेगा और जो चीजें और सहूलियतें अुसके साथियोंको नहीं मिल सकतीं, अुन्हें अपने लिअे कभी नहीं चाहेगा। यह बात सिर्फ विचार करते रहनेसे नहीं, बल्कि जानकार आदमियोंकी देखरेख और रहनुमाअीमें काम करनेसे हो सकती है।

कम्बलों और रजाअियोंका मेरे पास आना जारी है। मुझे अुम्मीद है कि बहुत जल्दी हम कह सकेंगे कि आनेवाली ठण्डसे शरणार्थियोंको बचानेके लिअे हमारे पास अिन चीजोंकी कमी नहीं होगी।

३३

१४-१०-'४७

अेक अच्छी मिसाल

अपना भाषण शुरू करते हुअे गांधीजीने लोगोंसे कहा कि आज मेरे पास और ज्यादा कम्बल आ गये हैं। आर्य समाज गर्ल्स स्कूलकी दो अध्यापिकायें और कुछ विद्यार्थिनियां कुछ रुपये और कम्बल मेरे पास लाअी थीं। मगर अिन भेंटोंसे ज्यादा खुशी मुझे अध्यापिकाकी अिस रिपोर्टसे हुअी कि अनाजके कण्ट्रोलके बारेमें अपील निकालकर मैंने जो सलाह दी है कि बाहरसे अनाजका आयात बन्द करने पर हमारे यहां खाद्य-पदार्थोंमें जो कमी आये, अुसे पूरा करनेके लिअे हमें महीनेमें दो बार अुपवास करना चाहिये, अुसे पढ़कर स्कूलकी अध्यापिकाओं और लड़कियोंने हर गुरुवारको अुपवास रखनेका निश्चय किया है। अुन्होंने यह भी तय किया है कि वे अपने बगीचेमें जो कुछ अनाज पैदा हो सकेगा, पैदा करनेकी कोशिश करेंगी। अगर सभी अिस तरह काम करें, तो अनाजकी तंगीका सवाल बहुत थोड़े समयमें हल हो जाय।

बादमें ओीरानके राजदूत (चार्ज-डी-अफेअर्स) और अुनकी पत्नी मुझसे मिलने आये थे। वे बहुतसे कम्बल भेंट करनेके लिअे लाये, जिन्हें मैंने आभार मानते हुअे ले लिया।

सिक्ख दोस्तोंसे बातचीत

आज दिनमें बहुतसे सिक्ख दोस्त मुझसे मिले। वे दो टोलियोंमें अेकके बाद अेक मेरे पास आये। मेरी अुनसे लम्बी चर्चायें हुअीं, जिनका सार यह था कि हम आपस आपसमें लड़कर कोओी भी अुद्देश्य पूरा नहीं कर सकते। जो कुछ कार्रवाओी करना सम्भव हो, अुसे हमें अपनी अपनी सरकारोंके जरिये करना चाहिये।

सरकारको कमजोर न बनाअिये

सरकारने कुछ लोगोंको गिरफ्तार किया, जिसके खिलाफ आन्दोलन हुआ। सरकारको अैसा करनेका अधिकार था। हमारी सरकार निर्दोषोंको जान-बूझकर गिरफ्तार नहीं कर सकती। मगर अिन्सानसे गलती हो सकती है और मुमकिन है कि गलतीसे कुछ निर्दोषोंको तकलीफ अुठानी पड़े। यह काम सरकारका है कि वह अपनी अिस गलतीको सुधारे। प्रजातंत्रमें लोगोंको चाहिये कि वे सरकारकी कोओी गलती देखें, तो अुसकी तरफ अुसका ध्यान खींचें और सन्तुष्ट हो जायं। अगर वे चाहें तो अपनी सरकारको हटा सकते हैं, मगर अुसके खिलाफ आन्दोलन करके अुसके कामोंमें बाधा न डालें। हमारी सरकार जबरदस्त जलसेना और थलसेना रखनेवाली कोओी विदेशी सरकार तो है नहीं। अुसका बल तो जनता ही है।

अपने ही दोष देखिये

सच्ची शांति किस तरहसे कायम की जा सकती है? आप अिस बातसे शायद खुश होंगे कि दिल्लीमें फिरसे शान्ति कायम होती जान पड़ती है। अिस सन्तोषमें मैं हिस्सा नहीं बंटा सकता। हिन्दुओं और मुसलमानोंके दिल अेक-दूसरेसे फिर गये हैं। वे पहले भी आपसमें लड़ा करते थे। मगर वह लड़ाओी अेक या दो दिनकी रहती थी और फिर हरअेक अुसके बारेमें सब कुछ भूल जाता था। आज अुनमें अितनी आपसी कड़वाहट पैदा हो गओी है कि वे अैसा मानने लगे हैं

मानो वे सदियोंके दुश्मन हों। अिस तरहकी भावनाको मैं कमजोरी मानता हूं। आपको अिसे जरूर छोड़ देना चाहिये। सिर्फ तभी आप अेक महान ताकत बन सकते हैं। आपके सामने दो बातें हैं। आप अुनमें से किसीको भी चुन सकते हैं। या तो आप अेक महान फौजी ताकत बन सकते हैं, या अगर आप मेरा रास्ता अख्तियार करें तो अेक अहिंसक और किसीसे भी न जीती जा सकनेवाली ताकत बन सकते हैं। मगर दोनोंके ही लिअे पहली शर्त यह है कि आप अपना सारा डर दूर कर दें।

अेक-दूसरेके पास पहुंचनेका अेकमात्र रास्ता यह है कि हरअेक आदमी दूसरी पार्टीकी गलतियोंको भूल जाय और अपनी गलतियोंको बहुत बड़ी बनाकर देखे। मैं अपनी सारी ताकतसे मुसलमानोंको भी वैसा करनेकी सलाह देता हूं, जैसा कि मैंने हिन्दुओं और सिक्खोंको करनेके लिअे कहा है। कलके दुश्मन आजके दोस्त बन सकते हैं, शर्त यह है कि वे अपने गुनाहोंको साफ साफ मंजूर कर लें। 'जैसेके साथ तैसा' की नीतिसे आपसमें दोस्ती नहीं कायम हो सकती। अगर आप पूरे दिलसे मेरी सलाह पर अमल करेंगे, तो मैं दिल्ली छोड़ सकूंगा और अपना 'करो या मरो' का मिशन पूरा करनेके लिअे पाकिस्तान जा सकूंगा।

३४

१५-१०-'४७

सुनहले काम कीजिये

प्रार्थनाके मैदानमें बिजलीके धोखा दे जानेसे लाअुड स्पीकरने काम करना बन्द कर दिया। अिसलिअे गांधीजीने लोगोंसे कहा कि वे मंचके और नजदीक आ जायें, ताकि वे अुनकी आवाज अच्छी तरह सुन सकें। अपना भाषण शुरू करते हुअे गांधीजीने कहा कि मेरे पास और ज्यादा कम्बल आये हैं और कम्बल खरीदनेके लिअे रुपये भी आये हैं। अेक बहनने २००० रुपयोंका अेक चेक भेजा है। दो मुसलमान दोस्तोंने कम्बल भी भेजे और रुपये भी, जिनसे और भी कम्बल खरीदे जा सकें। मैंने अुनसे बिनती की कि वे अुनको अपने पास रखें और खुद ही अुन्हें

बांट दें। मगर अुन दोस्तोंने कहा कि हमने तय कर लिया है कि ये चीजें हिन्दू और सिक्ख निराश्रितोंमें बांटनेके लिअे हम आपको ही दें। अुन्होंने यह भी कहा कि अेक समय था जब हम आपमें दोष देखते थे। मगर अब हमको पूरा भरोसा हो गया है कि आप सबके दोस्त हैं और किसीके दुश्मन नहीं हैं। जब आज चारों तरफ आपसी अविश्वास और कड़वाहट फैली है, तब अैसे काम ध्यान देने लायक हैं। अंग्रेजीमें अेक किताब है, जिसका नाम है 'सुनहले कामोंकी किताब' (दि बुक ऑफ गोल्डन डीड्स)। आपको अैसी कुछ चीजें अपने पास रखनी चाहिये। भला काम करनेवाले पर किसीको शक नहीं करना चाहिये। अिन दो मुसलमान दोस्तोंने तो मुझे अपने नाम तक नहीं बताये। कहा जाता है कि हरअेक मुसलमान सिक्खोंको अपना दुश्मन समझता है और हरअेक सिक्ख मुसलमानोंको अपना दुश्मन मानता है। यह सच है कि कअी मुसलमान अिन्सानियत खो बैठे हैं, मगर कअी हिन्दुओं और सिक्खोंकी भी यही हालत है। लेकिन व्यक्तियोंके कसूरोंके लिअे पूरी जातिको दोष देना ठीक नहीं है, फिर वे व्यक्ति कितनी ही ज्यादा तादादमें क्यों न हों। कअी हिन्दुओं और सिक्खोंने कहा कि मुसलमान दोस्तोंकी वजहसे अुनकी जानें बची हैं और कअी मुसलमानोंने भी अिसी तरहकी बातें कही हैं। अैसे भले हिन्दू, सिक्ख और मुसलमान हर सूबेमें मिल सकते हैं। मैं चाहता हूं कि अखबारवाले अैसी खबरोंको छापें और अुन बुरे कामोंका जिक्र टालें, जो बदलेकी भावनाको भड़काते हैं। बेशक, अच्छे और अुदार कामोंको बढ़ा-चढ़ाकर नहीं लिखना चाहिये।

हिन्दी या हिन्दुस्तानी?

मैंने अखबारोंमें पढ़ा कि आगेसे यू० पी० की सरकारी भाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी। अिससे मुझे दुःख हुआ। हिन्दुस्तानी संघके सारे मुसलमानोंमें से अेक-चौथाअी यू० पी० में रहते हैं। सर तेजबहादुर सप्रू जैसे कअी हिन्दू हैं जो अुर्दूके विद्वान हैं। क्या अुनको अुर्दू लिपि भूल जानी होगी? अुचित बात यह है कि दोनों लिपियां रखी जायं और सारे सरकारी कामोंमें अुनमें से किसीका भी अुपयोग करनेकी मंजूरी दी जाय। अिसका नतीजा यह होगा कि लोग लाजमी तौर पर

दोनों लिपियां सीखेंगे। तब भाषा अपनी परवाह आप कर लेगी और हिन्दुस्तानी सूबेकी भाषा बन जायगी। अिन दो लिपियोंकी जानकारी फिजूल नहीं जायगी। अुससे आप और आपकी भाषाकी तरक्की होगी। और अैसा कदम अुठाने पर कोअी टीका नहीं करेगा।

आप मुसलमानोंके साथ बराबरीके शहरियोंकी तरह बरताव करें। समानताके बरतावके लिअे यह जरूरी है कि आप अुर्दू लिपिका आदर करें। आप अैसी हालत न पैदा करें जिससे अुनका अिज्जतकी जिन्दगी बिताना असम्भव हो जाय, और फिर दावा करें कि हम नहीं चाहते कि मुसलमान यहांसे चले जायं। अगर सच्चा बराबरीका बरताव होने पर भी वे पाकिस्तान जाना पसन्द करें तो अुनकी मरजी। मगर आपके बरतावमें अैसी कोअी बात नहीं होनी चाहिये जिससे मुसलमानोंमें डर पैदा हो। आपका अपना आचरण ठीक होना चाहिये। तभी आप हिन्दुस्तानकी सेवा कर सकेंगे और हिन्दू धर्मको बचा सकेंगे। यह काम आप मुसलमानोंको मारकर या अुनको यहांसे भगाकर या किसी तरह अुन्हें दबाकर नहीं कर सकते। पाकिस्तानमें चाहे जो होता रहे, फिर भी आपको अुचित काम ही करना चाहिये।

३५

१६–१०–'४७

मैसूरका अुदाहरण

प्रार्थनाके बाद अपने भाषणमें गांधीजीने कहा, मैसूर रियासतमें सत्याग्रह कामयाबीके साथ खतम हो गया, अिससे मुझे सन्तोष हुआ। मैसूर हिन्दुस्तानी संघमें शामिल हो गया है। वहांके लोग कुछ समयसे अुत्तरदायी शासनके लिअे आन्दोलन कर रहे थे। हालमें ही अुन्होंने फिर सत्याग्रह शुरू किया था। अुन्होंने मुझे तार किया था कि हम सत्याग्रहके नियमोंका पूरा पूरा पालन करेंगे और आपको अिस बारेमें जरा भी चिन्ता नहीं करनी चाहिये। मैसूरके प्रधानमन्त्री रामस्वामी मुदालियर देश-विदेशमें काफी घूमे हैं। अुन्होंने स्टेट कांग्रेसके साथ अिज्जतभरा समझौता कर लिया है। अिस खुश करनेवाले नतीजे पर पहुंचनेके लिअे

मैं महाराजा, अुनके दीवान और स्टेट कांग्रेसको बधाअी देता हूं। दूसरी सारी रियासतोंको मैसूरके अुदाहरण पर चलना चाहिये। अिंग्लैण्डके राजाकी तरह सारे राजाओंको पूरी तरह वैधानिक बन जाना चाहिये। अिससे राजा और प्रजा दोनों सुखी होंगे और सन्तोष अनुभव करेंगे।

अच्छा बरताव

मैं खानगी मकानके मैदानमें प्रार्थना-सभा कर रहा हूं। आपको बिड़ला भाअियोंकी भद्रताकी तारीफ करनी चाहिये कि अुन्होंने आपको अपने अहातेमें आने दिया है। यह जानकर मुझे दुःख हुआ कि कुछ आनेवाले लोगोंने बगीचेको नुकसान पहुंचाया और मालीकी अिजाजतके बिना पेड़ोंसे फल तोड़े। बिना अिजाजत आपको बगीचेकी अेक पत्ती भी नहीं तोड़नी चाहिये। अपने दुःख-दर्दमें आपको अच्छे बरतावके मामूली नियम नहीं भूलने चाहिये।

राजसेवकोंसे अपेक्षा

मेरे पास अेक शिकायत आअी है कि मैंने सिविल सर्विसके कर्मचारियों, पुलिस और फौजको अच्छी सेवाओंका जो सर्टिफिकेट दिया है अुसके लायक वे नहीं हैं। मैंने अैसा नहीं किया है। मैंने तो राष्ट्रके अिन लोगोंसे जो अपेक्षा रखी जाती है अुसे बताया है। अिसका यह मतलब नहीं कि अुन्होंने हमारी अिस अपेक्षाके मुताबिक काम किया है। आज हिन्दुस्तानमें सिविल सर्विसवाले, पुलिस और फौज, जिनमें ब्रिटिश अफसर भी शामिल हैं, सब जनताके सेवक हैं। वे दिन अब बीत गये जब वे विदेशी शासकोंसे तनख्वाह पाकर जनताके साथ मालिकों जैसा बरताव करते थे। अब अुन्हें पंचायत राजके वफादार सेवक बनना होगा। अुन्हें मंत्रियोंसे हुक्म लेने होंगे। अुन्हें घूसखोरी, बेअीमानी और तरफदारीसे अूपर अुठना होगा। दूसरी तरफ, लोगोंसे यह अपेक्षा रखी जाती है कि वे शासन-प्रबन्धमें पूरा पूरा सहयोग दें। अगर सिविल सर्विसके कर्मचारी, पुलिस और फौज अपना फर्ज भूलते हैं, तो वे बेवफा माने जायंगे और अिस हालतको सुधारनेके लिअे अुचित कदम अुठाये जायंगे। अिन नौकरियोंमें काम करनेवाले बेअीमान और तरफदार लोगोंके खिलाफ अपनी शिकायतें जाहिर करनेका जनताको पूरा हक है।

पूरबी पाकिस्तानके कुछ लोग मुझसे मिलने आये थे। हिन्दू बड़ी तादादमें पूरबी बंगाल छोड़ रहे हैं। अिस बारेमें मुलाकाती दोस्तोंने मेरी सलाह मांगी। मैंने अकसर जो बात कही है वही मैं अुनके सामने दोहरा सका। मैंने कहा, किसीके डराने-धमकानेसे अपने घर छोड़कर भागना बहादुर मर्दों और औरतोंको शोभा नहीं देता। अुन्हें वहां ठहरना चाहिये और बेअिज्जत होने या आत्म-सम्मान खोनेके बजाय बहादुरीसे मौतका सामना करना चाहिये। अुन्हें जान देकर भी अपने धर्म, अपनी अिज्जत और अपने अधिकारोंकी रक्षा करनी चाहिये। अगर अुनमें यह हिम्मत नहीं है, तो अुनके लिअे भाग आना ही बेहतर होगा। लेकिन अगर वे पूरबी बंगाल छोड़नेका फैसला कर लें, तो डॉक्टरों, वकीलों, व्यापारियों जैसे अूंची जातिके हिन्दुओंका यह फर्ज है कि वे अपने पहले गरीब परिगणित जातियों और दूसरे लोगोंको जाने दें। अुन्हें सबसे पहले नहीं बल्कि सबके आखिरमें पूरबी बंगाल छोड़ना चाहिये। मैं अेक ही समयमें हर जगह मौजूद नहीं रह सकता। लेकिन मैं अपनी आवाज अुन सब तक पहुंचा सकता हूं। मुझसे यह भी कहा गया कि मैं डॉ० आम्बेडकरसे परिगणित जातियोंको यह कहनेकी अपील करूं कि वे लोग अपने धर्म और अपनी अिज्जतके लिअे मर मिटें। मैंने मीटिंगके जरिये खुशीसे यह काम कर दिया।

अुन दोस्तोंने मुझसे कहा कि मैं सुहरावर्दी साहबसे बंगाल जाने और ख्वाजा साहबके मुश्किल काममें मदद देनेके लिअे कहूं। सुहरावर्दी साहब दिल्लीमें नहीं हैं। लेकिन मुझे विश्वास है कि लौटनेके बाद वे जरूर बंगाल जायेंगे। पूरबी बंगालके मुस्लिम नेताओंको अपने यहां अैसी हालत पैदा करनी चाहिये, जिससे वहांके अल्पमतवालोंमें विश्वास पैदा हो। शान्तिके लिअे कोशिश करनेसे सभी लोगोंको फायदा होगा। अगर पाकिस्तान पूरी तरह मुस्लिम राज हो जाय और हिन्दुस्तानी संघ पूरी तरह हिन्दू और सिक्ख राज बन जाय और दोनों तरफ अल्पमतवालोंको कोअी हक न दिये जायं, तो दोनों राज बरबाद हो जायेंगे। मुझे आशा है और मैं प्रार्थना करता हूं कि भगवान दोनोंको अिस खतरेसे बचनेकी समझ दे।

३६

१७–१०–'४७

सबसे बड़ा अिलाज

मुझे अपने दोस्तोंकी तरफसे कअी खत और सन्देश मिले हैं, जिनमें मेरे हमेशा बने रहनेवाले कफके बारेमें चिन्ता बताअी गअी है। जैसे रेडियो पर मेरे भाषणकी बातें फैल गअीं, अुसी तरह मेरे अुस कफकी बात भी फैल गअी, जो शामको खुलेमें अकसर मुझे तकलीफ देता है। फिर भी, पिछले चार दिनोंसे कफ मुझे कम तकलीफ दे रहा है, और मुझे आशा है कि वह जल्दी ही पूरी तरह मिट जायगा। मेरे कफके लगातार बने रहनेका कारण यह है कि मैंने कोअी भी डॉक्टरी अिलाज करानेसे अिनकार कर दिया है। डॉ० सुशीलाने मुझसे कहा कि अगर आप शुरूमें ही पेनिसिलिन ले लेंगे, तो आप तीन ही दिनोंमें अच्छे हो जायंगे, वर्ना कफके मिटनेमें तीन हफ्ते लग जायंगे। मुझे पेनिसिलिनके कारगर होनेमें कोअी शक नहीं है। लेकिन मेरा यह भी विश्वास है कि रामनाम ही सारी बीमारियोंका सबसे बड़ा अिलाज है। अिसलिअे वह सारे अिलाजोंसे अूपर है। चारों तरफसे मुझे घेरनेवाली आगकी लपटोंके बीच तो भगवानमें जीती-जागती श्रद्धाकी मुझे सबसे बड़ी जरूरत है। वही लोगोंको अिस आगको बुझानेकी शक्ति दे सकता है। अगर भगवानको मुझसे काम लेना होगा तो वह मुझे जिन्दा रखेगा, वर्ना मुझे अपने पास बुला लेगा।

आपने अभी जो भजन सुना है, अुसमें कविने मनुष्यको कभी रामनाम न भूलनेका अुपदेश दिया है। भगवान ही मनुष्यका अेकमात्र आसरा है। अिसलिअे आजके संकटमें मैं अपने-आपको पूरी तरह भगवानके भरोसे छोड़ देना चाहता हूं और शरीरकी बीमारीके लिअे किसी तरहकी डॉक्टरी मदद नहीं लेना चाहता।

कम्बल

जिस रफ्तारसे मेरे पास कम्बल और रजाअियां आ रही हैं अुससे मुझे सन्तोष है। अुन्हें जल्दी ही जरूरतवाले लोगोंमें बांट दिया जायगा।

कण्ट्रोल हटा दिया जाय

डॉ० राजेन्द्रप्रसादने जो कमेटी कायम की थी, अुसने अपना सलाह-मशविरा खतम कर दिया है। अुसे सिर्फ अन्नकी समस्या पर ही विचार करना था। लेकिन मैंने कुछ समय पहले यह कहा था कि अनाज और कपड़ा दोनों परसे जल्दीसे जल्दी कण्ट्रोल हटा दिया जाय। लड़ाअी खतम हो चुकी, फिर भी कीमतें अूपर जा रही हैं। देशमें अनाज और कपड़ा दोनों हैं, फिर भी वे लोगों तक नहीं पहुंचते। यह बड़े दुःखकी बात है। आज सरकार बाहरसे अनाज मंगाकर लोगोंको खिलानेकी कोशिश कर रही है। यह कुदरती तरीका नहीं है। अिसके बजाय लोगोंको अपने ही साधनोंके भरोसे छोड़ दिया जाय। सिविल सर्विसके कर्मचारी आफिसोंमें बैठकर काम करनेके आदी हैं। वे दिखावटी कार्रवाअियों और फाअिलोंमें ही अुलझे रहते हैं। अुनका काम अिससे आगे नहीं बढ़ता। वे कभी किसानोंके संपर्कमें नहीं आये। वे अुनके बारेमें कुछ नहीं जानते। मैं चाहता हूं कि वे नम्र बनकर राष्ट्रमें जो फेर-बदली हुअी है अुसे पहचानें। कण्ट्रोलोंकी वजहसे अुनके अिस तरहके कामोंमें कोअी रुकावट नहीं होनी चाहिये। अुन्हें अपनी सूझ-बूझ पर निर्भर रहने दिया जाय। लोकशाहीका यह नतीजा नहीं होना चाहिये कि वे अपने आपको लाचार महसूस करें। मान लीजिये कि अिस बारेमें बड़ेसे बड़े डर सच साबित हों और कण्ट्रोल हटानेसे हालत ज्यादा बिगड़ जाय, तो वे फिर कण्ट्रोल लगा सकते हैं। मेरा अपना तो यह विश्वास है कि कण्ट्रोल अुठा देनेसे हालत सुधरेगी। लोग खुद अिन सवालोंको हल करनेकी कोशिश करेंगे और अुन्हें आपसमें लड़नेका समय नहीं मिलेगा।

दक्षिण अफ्रीकाका सत्याग्रह

मुझे अेक तार मिला है, जिसमें दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहके बारेमें मैंने जो बातें कहीं अुनके लिअे मुझे धन्यवाद दिया गया है। मैंने सिर्फ वही बात कही, जिसके सच होनेमें मैं विश्वास करता हूं। सत्याग्रहमें हार कभी होती ही नहीं। न अुसमें पीछे हटनेकी गुंजाअिश ही है। यहां मैं स्व० पण्डित रामभजदत्तकी कविताकी पहली लाअिन

कहूंगा —"हम मर जायंगे लेकिन हार नहीं मानेंगे।" कविने ये लाअिनें पंजाबके मार्शल लॉके जमानेमें लिखी थीं। अुन दिनों पंजाबके लोगोंको अैसा जलील और बेअिज्जत किया गया था, जिसकी अितिहासमें कोअी मिसाल नहीं मिलती। लेकिन कविकी ये लाअिनें हर समय लागू होती हैं। सत्याग्रहकी शर्त यही है कि हमारा ध्येय सच्चा और सही हो। मुट्ठीभर सत्याग्रही भी हिन्दुस्तानकी अिज्जतको बचाने और बनाये रखनेके लिअे काफी हैं।

अुन्होंने तारमें मुझसे यह भी कहा है कि मैं लोगोंसे वहांके सत्याग्रहियोंकी मददके लिअे पैसे देनेकी अपील करूं। दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानी गरीब नहीं हैं। लेकिन मैं कुछ सत्याग्रहियोंकी जरूरतको समझ सकता हूं। आज हिन्दुस्तान आर्थिक संकटमें से गुजर रहा है। भाअी-भाअीके खून और लाखोंकी तादादमें आबादीकी फेर-बदलीसे हिन्दुस्तानकी आमदनीमें करोड़ोंका घाटा हुआ है। आजकी हालतमें मेरी हिन्दुस्तानियोंसे यह कहनेकी हिम्मत नहीं पड़ती कि वे दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहियोंके लिअे पैसेकी मदद दें। लेकिन अगर कोअी अिस तरहकी मदद देना चाहे तो मुझे खुशी होगी। हिन्दुस्तानके बाहर पूर्व अफ्रीका, मॉरिशस और दूसरी जगहोंमें बड़ी तादादमें हिन्दुस्तानी रहते हैं। अुनमें से ज्यादातर लोग खुशहाल हैं। अुनमें हिन्दू-मुसलमानमें फर्क करनेका भी कोअी सवाल नहीं है। वे सब हिन्दुस्तानी हैं। मैं अुनसे यह आशा रखता हूं कि वे दक्षिण अफ्रीकाके अपने अुन भाअियोंके लिअे पैसे भेजेंगे, जो हिन्दुस्तानकी अिज्जतके लिअे वहां लड़ रहे हैं। सत्याग्रहमें लगे हुअे लोग अैश-आरामकी चीजें नहीं चाहते। अुन्हें सिर्फ रोजानाकी जरूरतें पूरी करनेके लिअे पैसा चाहिये। हिन्दुस्तानके बाहर रहनेवाले हिन्दुस्तानियोंका यह फर्ज है कि वे दक्षिण अफ्रीकावालोंको जरूरी मदद दें।

३७

१८–१०–'४७

कुरुक्षेत्रके लिअे कम्बल भेजे गये

प्रार्थनाके बादके भाषणमें गांधीजीने कहा, यह खबर देते हुअे मुझे खुशी होती है कि और ज्यादा कम्बल और पैसे मुझे मिले हैं। मुझे आशा है कि अगर अिस रफ्तारसे कम्बल मिलते रहे, तो सारे जरूरतवाले शरणार्थियोंको कम्बल देनेमें कोअी कठिनाअी नहीं होगी। मुझे यह जानकर भी खुशी हुअी कि सरदार पटेलने अिसी तरहकी अेक अपील निकाली है। डॉ० सुशीला नय्यर, जो शरणार्थियोंकी दवा-दारूका अिन्तजाम करती हैं, आज सुबह श्रीमती मथाअी, श्रीमती सरन और श्रीमती कृष्णादेवीके साथ कुरुक्षेत्रके लिअे रवाना हो गअी हैं। वह अपने साथ शरणार्थियोंको देनेके लिअे बहुतसे कम्बल और कपड़े ले गअी हैं।

राष्ट्रभाषा

मैंने हिन्दुस्तानीको राष्ट्रभाषाके रूपमें अपनानेके लिअे जो विचार बताये थे, अुसके सम्बन्धमें मेरे पास कअी खत आते रहते हैं। मुझे अिसमें जरा भी शक नहीं कि हिन्दुस्तानी सारे हिन्दुस्तानियोंके अन्तर-प्रान्तीय व्यवहारके लिअे सबसे अच्छी भाषा होगी। आम लोग न तो फारसीसे लदी अुर्दू समझ सकते हैं और न संस्कृतसे भरी हिन्दी। ब्रिटिश राजके खतम हो जाने पर अंग्रेजी अदालतोंकी भाषा या आपसके व्यवहारका सामान्य माध्यम नहीं रह सकती। अंग्रेजीने हमारी राष्ट्र-भाषाकी जगह बरबस छीन ली थी, लेकिन अब अुसे जाना होगा। मैं अंग्रेजीकी अुसकी अपनी जगहमें अिज्जत करता हूं। लेकिन वह हिन्दुस्तानकी राष्ट्रभाषा नहीं बन सकती। अेक आदरणीय दोस्तने यह सुझाया है कि अंग्रेजी भाषा जल्दी ही अुस पदसे हटा दी जाय, जिस पर रहनेका अुसे हक नहीं है। लिखनेवाले दोस्तने यह डर जाहिर किया

है कि 'आपके बार-बार अिस बातको दोहरानेसे लोग अंग्रेजीके साथ साथ अंग्रेजोंसे भी नफरत करने लगेंगे, जो अुसे बोलते हैं। मैं यह जानता हूं कि बदकिस्मतीसे अैसा हुआ, तो सम्भव है कि आप अचानक होनेवाली अिस दुःखभरी बातसे अितने दुःखी हों कि पागल बन जायं।' यह चेतावनी समयकी है। सभामें आकर मेरी बातें सुननेवालोंको यह जानना चाहिये कि मैं किसी काम और अुसके करनेवालेमें हमेशा भेद समझता हूं। किसी कामसे नफरत की जा सकती है, लेकिन अुसके करनेवालेसे कभी नहीं। मैं यह जानता हूं कि काम और करनेवालेके भेदका बिरले ही लोग ध्यान रखते हैं। लोग आम तौर पर अिन दोनोंमें कोअी भेद नहीं देखते और अुनकी निन्दाके दायरेमें काम और कामका करनेवाला दोनों आ जाते हैं। खत लिखनेवाले भाअीने मुझे अिस बातकी भी चेतावनी दी है कि 'राष्ट्रभाषाका विचार करते समय आपको अेंग्लो-अिण्डियन, गोआनी और दूसरे लोगोंका भी खयाल रखना होगा, क्योंकि अंग्रेजी अुनकी मातृभाषा बन गअी है। क्या आपने कभी यह भी सोचा है कि हिन्दी या हिन्दुस्तानी — जो भी आखिरमें अन्तर-प्रान्तीय भाषा बने — भाषाका ज्ञान न होनेके कारण वे अेकदम नौकरियोंसे हटा दिये जायंगे? मैं जानता हूं कि आप अैसा विचार कभी मनमें नहीं लायेंगे।' खत लिखनेवाले दोस्तका यह डर सच्चा है। फिर भी, मैं आशा करता हूं कि दिये हुअे समयमें वे लोग काम चलाने लायक हिन्दुस्तानी सीख लेंगे। अल्पमतवालोंको, फिर वे कितनी ही कम तादादमें क्यों न हों, किसी तरहका दबाव महसूस नहीं करना चाहिये। अैसे सब सवालोंको हल करनेमें ज्यादासे ज्यादा नरमीसे काम लेनेकी जरूरत है।

अुन्हीं अुत्साही दोस्तने मुझे यह भी याद दिलाया है कि मेरे दो लिपियां सीखने पर जोर देनेसे सम्भव है दोनों लिपियां अपनी जगहसे हट जायं और अुनकी जगह रोमन लिपि ले ले। वे दोस्त रोमन लिपिके हिमायती हैं। लेकिन मैं अुनकी अिस बातको नहीं मानता। न मुझे यह डर है कि रोमन लिपि कभी देवनागरी और फारसी लिपिकी जगह ले लेगी। मैं यहां अिस सवालकी दलीलोंमें नहीं जाना चाहता। मैंने

सिर्फ यह दिखानेके लिअे अिस विषयका जिक्र किया है कि अगर हम दो लिपियां सीखनेसे जी चुराते हैं, तो हमारी राष्ट्रीयता बिलकुल थोथी और दिखावटी है। अगर हममें देशप्रेमकी भावना है, तो हमें खुशी खुशी दोनों लिपियां सीख लेनी चाहिये। मैं आपको शेख अब्दुल्ला साहबकी मिसाल देता हूं। आज दोपहरमें ही अुन्होंने मुझे बताया कि काश्मीरकी जेलमें रहकर अुन्होंने आसानीसे हिन्दी भाषा और नागरी लिपि सीख ली है। शेख अब्दुल्ला अगर हिन्दी भाषा और नागरी लिपि सीख सके, तो दूसरे राष्ट्रवादी लोग भी जरूर आसानीसे अुन्हें सीख सकते हैं।

३८

१९–१०–'४७

प्रार्थनाके बाद अपना भाषण शुरू करते हुअे गांधीजीने कहा कि अब दिन छोटे होते जा रहे हैं, अिसलिअे लोगोंको प्रार्थनाका ६ बजे शामका वक्त बहुत देरका मालूम होता है। अिसलिअे सोमवारसे प्रार्थना ६ बजे शुरू होनेके बजाय साढ़े पांच बजे शुरू होगी।

क्या यह स्वराज है?

आज प्रार्थनामें गाये गये भजनका जिक्र करते हुअे गांधीजीने कहा कि अुसके साथ दिलको छूनेवाली स्मृतियां जुड़ी हुअी हैं। भजनावलिके करीब करीब सभी भजनोंके पीछे अेक अितिहास है।

अिन भजनोंका संग्रह स्वर्गीय पण्डित खरेने किया था, जो साबरमती आश्रममें रहते थे और अेक संगीतज्ञ और भक्त थे। अिस काममें काकासाहबसे अुन्हें मदद मिली थी। अिस खास गीतको साबरमती आश्रमके मैनेजर स्वर्गीय मगनलाल गांधी अकसर गाया करते थे। वे मेरे साथ दक्षिण अफ्रीकामें रहे थे और अुन्होंने अपना पूरा जीवन देशसेवाके लिअे दे दिया था। अुनकी आवाज सुरीली और शरीर मजबूत था। हिन्दुस्तान लौटनेके बाद अुनका शरीर कमजोर हो गया था। जिम्मेदारीका जो बोझ अुनके अूपर पड़ा वह अितना ज्यादा था कि

अकेला आदमी अुसे नहीं संभाल सकता था। तामीरी काम और स्वराजका सन्देश करोड़ों तक पहुंचाना कोअी मामूली बात नहीं थी। बड़े करुण स्वरमें वे अिस भजनको गाया करते थे। अिसमें कविने भगवानको प्रत्यक्ष न देख सकने पर निराशा प्रकट की है। अुसके अिन्तजारकी रात अेक युग जैसी मालूम होती है। मगनलालका भगवान स्वराजका सपना सच होने, यानी रामराज कायम होनेमें था। यह सपना बहुत दूर जान पड़ता था। वह सिर्फ तामीरी कामके जरिये ही बनाया जा सकता था। अगर जनता अुसके सामने रखे हुअे तामीरी प्रोग्रामको पूरा करती, तो अुसे आपसी लड़ाअी और खून-खराबीके वे दृश्य नहीं देखने पड़ते जो वह आज देख रही है। कहा जाता है कि पिछली १५ अगस्तको हमें स्वराज मिल गया है। मगर मैं अुसे स्वराज नहीं कह सकता। स्वराजमें अेक भाअी दूसरे भाअीका गला नहीं काटता। आजाद हिन्दुस्तान सबके साथ दोस्त बनकर रहना चाहता है। वह सारी दुनियामें किसीको अपना दुश्मन नहीं मानना चाहता। मगर हाय! आज अुसीके लड़के, अेक तरफ हिन्दू और सिक्ख और दूसरी तरफ मुसलमान, अेक-दूसरेके खूनके प्यासे हो रहे हैं।

यह सब मैंने आपको यह बतानेके लिअे कहा है कि अगर आप सच्चे स्वराजके अपने सपनेको पूरा करना चाहते हैं, तो स्वर्गीय मगनलालकी तरह आपको लगातार अुसके लिअे अुत्सुक रहना पड़ेगा। भगवानका कोअी आकार नहीं है। अिन्सान अुसकी कल्पना कअी आकारोंमें करता है। अगर आप भगवानको रामराजकी शकलमें देखना चाहते हैं, तो अुसके लिअे पहली जरूरत है आत्म-निरीक्षणकी या खुदके दिलकी जांच करनेकी। आपको अपने दोषोंको हजार गुना बड़ा बनाकर देखना होगा और अपने पड़ोसियोंके दोषोंकी तरफसे अपनी आंखें फेर लेनी होंगी। सच्ची प्रगतिका यही अेकमात्र रास्ता है। आज आप गिर गये हैं। मुसलमान हिन्दुओं और सिक्खोंको अपने दुश्मन समझते हैं, और हिन्दू और सिक्ख मुसलमानोंको। वे अेक-दूसरेके धर्मकी बिलकुल अिज्जत नहीं करते। मन्दिरोंको बरबाद करके अुन्हें मसजिदें बना डाला गया है और मसजिदोंको बरबाद करके अुन्हें मन्दिरोंमें बदल दिया गया

है। यह हालत दिल दुखानेवाली है। अिससे दोनों धर्मोंके नाशके सिवा और कुछ नहीं हो सकता।

अेकमात्र रास्ता

मगर आपसी बैरकी अिन लपटोंको कैसे बुझाया जाय? मैंने आपको अेकमात्र रास्ता बतला दिया है। वह यह है कि दूसरे कुछ भी करें, फिर भी आपको अपना बरताव ठीक रखना होगा। पाकिस्तानमें हिन्दुओं और सिक्खोंको जो तकलीफें सहनी पड़ रही हैं अुन्हें मैं जानता हूं। मगर यह जानकर भी मैं अुन्हें अनदेखा करना चाहता हूं। यदि अैसा न करूं तो मैं पागल हो जाअूं। तब मैं हिन्दुस्तानकी सेवा भी न कर सकूं। आप लोग हिन्दुस्तानके मुसलमानोंको अपने सगे भाअी समझें। कहा जाता है कि दिल्लीमें शान्ति है। मगर अिससे मुझे जरा भी सन्तोष नहीं है। यह शान्ति फौज और पुलिसकी वजहसे है। हिन्दुओं और मुसलमानोंके बीच प्यार बिलकुल नहीं रहा। अुनके दिल अभी भी अेक-दूसरेसे खिंचे हुअे हैं। मैं नहीं जानता कि अिस सभामें कोअी मुस्लिम भाअी भी है या नहीं। अगर हो तो पता नहीं कि यहां पर वह दूसरों जैसी ही बेफिकरी अनुभव करता है या नहीं। परसों शेख अब्दुल्ला साहब और कुछ मुसलमान भाअी प्रार्थना-सभामें हाजिर थे। किदवअी साहबके भाअीकी विधवा पत्नी भी आअी थीं। अुनके पतिका बिना किसी अपराधके मसूरीमें खून कर दिया गया। मैं मंजूर करता हूं कि अिन लोगोंके यहां आनेसे मैं बेचैन था। अिसलिअे नहीं कि मुझे अुन पर हमला होनेका डर था, क्योंकि मैं मानता हूं कि मेरी हाजिरीमें कोअी अुन्हें नुकसान नहीं पहुंचा सकता था। मगर अिस बातका मुझे पूरा भरोसा नहीं था कि अुन्हें मेरी हाजिरीमें अपमानित नहीं किया जा सकता। अगर किसी भी तरह अुनका अपमान किया जाता, तो मेरा सिर शरमसे झुक जाता। मुसलमान भाअियोंके बारेमें अिस तरहका डर क्यों होना चाहिये? अुन्हें आपके बीचमें वैसी ही सलामती अनुभव करनी चाहिये जैसी आप खुद करते हैं। यह तब तक नहीं हो सकता जब तक आप अपने दोषोंको बढ़ाकर और अपने पड़ोसियोंके दोषोंको छोटा करके न देखें। आज सारी आंखें हिन्दुस्तान

पर लगी हुआी हैं, जो सिर्फ अेशिया और अफ्रीकाकी ही नहीं, बल्कि सारी दुनियाकी आशा बना हुआ है। अगर हिन्दुस्तानको यह आशा पूरी करनी है, तो अुसे भाअीके हाथों भाअीका खून बन्द करना होगा और सारे हिन्दुस्तानियोंको दोस्तों और भाअियोंकी तरह रहना होगा। सुख और शान्ति लानेके लिअे दिलोंकी सफाअी पहली जरूरत है।

३९

२०–१०–'४७

क्या यह आखिरी गुनाह है?

राजकुमारीने कल प्रार्थनाके बाद मुझे खबर दी कि अेक मुस्लिम भाअी, जो हेल्थ-अफसर थे, जब काम पर थे तब अुनको कतल कर दिया गया। वे कहती हैं कि वह अच्छे अफसर थे। अपना फ़र्ज बराबर अदा करते थे। अुनके पीछे विधवा पत्नी है और बच्चे हैं। पत्नीका रोना यह है कि खूनीके हाथसे अुसका और अुसके बच्चोंका भी खून हो। शौहर ही अुसके सब कुछ थे। अुनका पालन-पोषण वही करते थे।

मैंने कल ही आपसे कहा था कि जैसा देखनेमें आता है, दिल्ली सचमुच शान्त नहीं हुआ है। जब तक अिस तरहकी दुःखद घटनायें होती हैं, हम दिल्लीकी अूपर-अूपरकी शान्ति पर खुशी नहीं मना सकते। यह तो कबरकी शान्ति है। जब लॉर्ड अिरविन, जो अब लॉर्ड हैलिफैक्स हैं, दिल्लीके वाअिसरॉय थे, तब अुन्होंने हिन्दुस्तानकी अूपर-अूपरकी शान्तिको कबरकी शान्ति कहा था। राजकुमारीने मुझे यह भी बताया कि कुरान शरीफके मुताबिक लाशको दफनानेके लिअे काफी मुसलमान दोस्त अिकट्ठे करना भी मुश्किल हो गया था।

अिस किस्सेको सुनकर हर रहमदिल स्त्री-पुरुष मेरी तरह कांप अुठेगा। दिल्लीकी यह हालत! बहुमतका अल्पमतसे डरना, चाहे वह कितना ही ताकतवर क्यों न हो, बुजदिलीकी पक्की निशानी है।

मुझे अुम्मीद है कि सरकार गुनहगारोंको ढूंढ़ निकालेगी और अुन्हें सजा देगी।

अगर यह आखिरी गुनाह है, तो मुझे कुछ नहीं कहना है। फिर भी अिस तरहके गुनाह हमेशा शर्मनाक तो होते ही हैं। मगर मुझे बहुत डर है कि यह तो अेक निशानीभर है। अिससे दिल्लीकी अन्तरात्मा जाग्रत होनी चाहिये।

और ज्यादा कम्बल आये

कम्बलोंके लिअे पैसे आ रहे हैं। अिन सभी दाताओंका मैं बहुत आभार मानता हूं। यह खुशीकी बात है कि किसीने भी यह नहीं कहा कि हमारा दान सिर्फ हिन्दूको या सिर्फ मुसलमानको दिया जाय।

अेक खुला खत

मुझे दुःखके साथ अेक और खतरेकी तरफ आपका ध्यान खींचना है। मैं नहीं जानता कि यह खतरा सच्चा है या नहीं। अेक अंग्रेज भाअी अेक खुली चिट्ठीमें लिखते हैं:

> "हम कुछ लोग अेक निर्जन-से, दंगे-फसादवाले अिलाकेमें पड़े हैं। हम ब्रिटिश हैं और बरसोंसे खुद तकलीफें सहकर भी हमने अिस मुल्कके लोगोंकी सेवा की है। . . . हमें पता चला है कि अेक खुफिया सन्देश भेजा गया है कि हिन्दुस्तानमें जितने अंग्रेज बच गये हैं, अुन्हें कत्ल कर दिया जाय। मैंने अखबारोंमें पण्डित नेहरूका वह बयान पढ़ा है, जिसमें अुन्होंने कहा था कि सरकार हरअेक वफादार आदमीके जान-मालकी हिफाजत करेगी। मगर देहातोंमें पड़े हुअे लोगोंकी हिफाजतका करीब करीब कोअी साधन नहीं। हमारी रक्षाका तो बिलकुल नहीं।"

अिस खुली चिट्ठीके और भी कअी हिस्से यहां दिये जा सकते हैं। मैंने खतरेसे आगाह करनेके लिअे यहां काफी दे दिया है। हो सकता है कि यह डर झूठा ही हो। अैसा कोअी खुफिया सन्देश कहीं भेजा न गया हो। मगर अैसी चीजोंसे बेखबर न रहना बुद्धिमानी है। मुझे अुम्मीद तो यह है कि खत लिखनेवालेका डर बिलकुल बेबुनियाद होगा। मैं अिस बातमें अुनसे सहमत हूं कि दूर दूरके देहाती अिलाकोंमें पड़े हुअे लोगोंकी हिफाजत करनेका सरकारका वादा कोअी मानी नहीं रखता। सरकार वह कर भी नहीं सकती, फिर चाहे सेना व पुलिस

कितनी ही होशियार क्यों न हो। और, हमारी सेना और पुलिस तो अितनी होशियार है भी नहीं। रक्षाका पहला साधन तो अपने दिलमें पड़ा है, और वह है अीश्वरमें अटल विश्वास रखना। दूसरा साधन है पड़ोसियोंकी सद्भावना। अगर ये दोनों नहीं हैं तो अच्छा यही है कि जिस हिन्दुस्तानमें मेहमानोंकी अैसी बेकदरी हो अुसे छोड़ दिया जाय। मगर आज हालत अितनी खराब नहीं है। हम सबका फर्ज है कि जो अंग्रेज हिन्दुस्तानके वफादार सेवक बनकर रहना चाहें, अुनकी तरफ हम खास ध्यान दें। अुनका किसी तरह अपमान नहीं होना चाहिये। अुनकी तरफ जरा भी लापरवाही नहीं होनी चाहिये। अगर हम अपनी अिज्जतका खयाल रखनेवाले आजाद देशके निवासी बनना चाहते हैं, तो प्रेसको और सामाजिक संस्थाओंको अिस बारेमें भी दूसरी कअी चीजोंकी तरह खूब चौकन्ना रहना चाहिये। अगर हम अपने पड़ोसियोंकी अिज्जत नहीं करते, चाहे वे तादादमें कितने ही थोड़े क्यों न हों, तो हम खुद अपनी अिज्जत रखनेका दावा नहीं कर सकते।

४०

२१-१०-'४७

दूसरा गुनाह

प्रार्थनाके बाद अपने भाषणमें गांधीजीने कहा, मैंने अेक दूसरी दुःखभरी घटनाके बारेमें सुना है। लेकिन वह साम्प्रदायिक खून नहीं था। जिसका खून किया गया वह अेक हिन्दू सरकारी अफसर था। अेक सैनिकने अुसे गोलीसे मार दिया, क्योंकि अुसे जैसा करनेके लिअे कहा गया था वैसा अुसने नहीं किया। जरा जरासी बात पर बन्दूक चला देनेकी यह आदत हमारे भविष्यके लिअे बहुत बुरा शकुन है। वैसे तो दुनियामें कअी अैसे जंगली देश हैं, जहांके लोगोंके लिअे जिन्दगीकी कोअी कीमत नहीं होती। जैसे बिना किसी दया-मायाके वे परिन्दों या जानवरोंको गोलीसे मार देते हैं, वैसे ही अिन्सानोंका भी खून कर देते हैं। क्या आजाद हिन्दुस्तान अपनी गिनती अुन्हीं जंगली देशोंमें करायेगा? जो आदमी जीवको बना नहीं सकता वह अुसे ले

भी नहीं सकता। फिर भी मुसलमान हिन्दुओं और सिक्खोंका खून करते हैं और हिन्दू व सिक्ख मुसलमानोंका। जब यह बेरहम खेल खतम हो जायगा, तो अिस खूनी वृत्तिका लाजमी नतीजा यह होगा कि मुसलमान आपसमें मुसलमानोंका खून करेंगे और हिन्दू व सिक्ख आपसमें अेक-दूसरेका खून करेंगे। मुझे अुम्मीद है कि हिन्दुस्तानके लोग बर्बरता और जंगलीपनकी अिस हद तक नहीं पहुंचेंगे। अगर दोनों राज्योंने हिम्मतसे काम लेकर जल्दी ही अिस बुराअीको दूर नहीं किया, तो अुन दोनोंका यही हाल होना है।

कानूनमें दस्तन्दाजी ठीक नहीं

अब मैं दूसरी बात लेता हूं। कुछ जगहोंमें अधिकारियोंने कअी अैसे लोगोंको गिरफ्तार किया जो दंगोंमें शामिल थे। पुरानी हुकूमतके दिनोंमें लोग वाअिसरॉयसे दयाकी अपील करते थे। अुन्हें बनाये हुअे कानूनके मुताबिक काम करना पड़ता था, फिर अुसमें कितना ही बड़ा दोष क्यों न रहा हो। अब लोग अपने मंत्रियोंसे दयाकी अपील करते हैं। लेकिन क्या मंत्री अपनी मरजीके मुताबिक काम करें? मेरी रायमें अुन्हें अैसा नहीं करना चाहिये। मंत्री लोग जैसा चाहें वैसा नहीं कर सकते। अुन्हें कानूनके मुताबिक ही काम करना होगा। राजकी दयाकी निश्चित जगह होती है और काफी सावधानीसे अुसका अुपयोग किया जाना चाहिये। अैसे मामले तभी वापिस लिये जा सकते हैं जब कि शिकायत करनेवाले गिरफ्तार किये हुअे लोगोंको छोड़नेके लिअे अदालतसे अपील करें। भयंकर जुर्म करनेवाले लोग अितनी आसानीसे नहीं छोड़े जा सकते। अैसे मामलोंमें अपराधीके खिलाफ शिकायत करनेवालोंके गवाही न देनेसे ही काम नहीं चलेगा। अपराधियोंको अदालतमें अपना अपराध कबूल करना होगा और अदालतसे माफीकी मांग करनी होगी। और, अगर शिकायत करनेवालोंने अिस बातमें अीमानदारीसे सहयोग दिया, तो अपराधियोंका बिना सजा दिये छोड़ा जाना सम्भव हो सकता है। मैं जिस बात पर जोर देना चाहता हूं वह यह है कि कोअी भी मंत्री अपने प्यारेसे प्यारे आदमीके लिअे भी न्यायके रास्तेमें दस्तन्दाजी नहीं कर सकता। अैसा करनेका अुसे कोअी हक नहीं है। लोकशाहीका

काम है कि वह न्यायको सस्ता बनावे और अैसा अिन्तजाम करे कि वह लोगोंको जल्दी मिल जाय। अुसे लोगोंको यह भी गारण्टी देनी होगी कि शासन-प्रबन्धमें हर तरहकी अीमानदारी और पवित्रताका ध्यान रखा जायगा। लेकिन मंत्रियोंका न्यायकी अदालतों पर असर डालने या अुनकी जगह खुद ले लेनेकी हिम्मत करना लोकशाही और कानूनका गला घोंटना है।

अेक दोस्तने मुझे चेतावनी दी है कि आपके भाषण रेडियो द्वारा लोगोंको सुनाये जाते हैं, अिसलिअे आपको बाहर १५ मिनटसे ज्यादा नहीं बोलना चाहिये। मैं अिस चेतावनीकी कदर करता हूं। अिसलिअे मैंने अुतने ही समयमें अपनी बात काट-छांटकर कह दी है और आगे भी अैसा ही करनेकी आशा रखता हूं।

४१

२२–१०–'४७

प्रार्थनाके बादके अपने भाषणमें गांधीजीने कहा, मुझे अभी भी कम्बल और कम्बल खरीदनेके लिअे पैसे मिल रहे हैं। जिस अुदारतासे यह दान दिया जा रहा है, अुससे मुझे बड़ी खुशी होती है।

अेक अुर्दू अखबारका हिस्सा

आज तीसरे पहर अेक दोस्तने मुझे अेक अुर्दू दैनिकका अेक हिस्सा पढ़कर सुनाया। मैं अुर्दू अखबार बहुत ही कम पढ़ता हूं। मैं अुर्दू जानता तो हूं, लेकिन काफी आसानीसे नहीं पढ़ सकता। दोस्त लोग समय समय पर अुर्दू अखबारोंके हिस्से मुझे पढ़कर सुनाया करते हैं। आज मुझे जो हिस्सा पढ़कर सुनाया गया था, अुसमें सम्पादकने दूसरी भड़कानेवाली बातोंमें यह भी कहा है कि हिन्दुओंने मुसलमानोंको हिन्दुस्तानी संघसे निकालनेका पक्का अिरादा कर लिया है। या तो मुसलमानोंको येहांसे चले जाना होगा या अपने सिर कटा देने होंगे। मुझे आशा है कि यह सिर्फ सम्पादककी ही राय है। अगर यह जनताके काफी बड़े हिस्सेकी राय हो तो बड़ी शरमकी बात है और अिससे हिन्दुस्तानकी हस्ती ही मिट जानेका डर है। मैंने कल शामको बताया

था कि अिस बरबादीकी नीतिके क्या नतीजे हो सकते हैं। आखिरकार अिस नीतिसे हिन्दू और सिक्ख आपसमें ही अेक-दूसरेकी हत्या करने लगेंगे। अेक दोस्तने मुझे बताया है कि अिस दिशामें शुरुआत हो भी चुकी है। लोग अखबारोंको गीता, कुरान और बाअिबल मानने लगे हैं। अुनके लिअे छपा परचा धर्म-पुस्तकका सत्य बन गया है। यह बात सम्पादकों और संवाददाताओं पर बड़ी भारी जिम्मेदारी डालती है। आज तीसरे पहर जो चीज मुझे पढ़कर सुनाअी गअी, वैसी कोअी चीज कभी न छपने दी जानी चाहिये। अैसे अखबार बन्द कर दिये जाने चाहिये।

रियासतें किधर?

अेक दूसरे दोस्तने मुझे रियासतोंमें मची हुअी अन्धाधुन्धीके बारेमें बताया है। अंग्रेजी हुकूमतने रियासतों पर थोड़ा नियंत्रण रखा था। सार्वभौम सत्ताके चले जानेसे वह हट गया। सरदारने अुसकी जगह ली है, लेकिन अुनकी मददके लिअे ब्रिटिश संगीनोंकी ताकत तो नहीं है। यह सच है कि ज्यादातर रियासतें हिन्दुस्तानी संघमें जुड़ गअी हैं। फिर भी वे अपनेको केन्द्रीय सरकारसे बंधी हुअी नहीं समझतीं। बहुतसे राजा यह खयाल करते हैं कि वे ब्रिटिश सार्वभौम सत्ताके जमानेमें जितने आजाद थे अुससे आज कहीं ज्यादा आजाद हैं, और वे अपनी प्रजाके साथ कैसा भी बरताव कर सकते हैं। मैं खुद अेक रियासतका रहनेवाला हूं और राजाओंका दोस्त हूं। अेक दोस्तके नाते मैं राजाओंको यह चेतावनी देना चाहता हूं कि अपने आपको बचानेका अुनके लिअे अेक यही रास्ता है कि वे अपनी प्रजाके सच्चे सेवक और ट्रस्टी बन जायं। वे निरंकुश राजा बनकर नहीं जी सकते। न वे अपनी प्रजाको मिटा ही सकते हैं। हिन्दुस्तानकी तकदीरमें जो भी बदा हो, अगर कोअी राजा निरंकुश शासक बननेका सपना देखते हों तो वे बड़ी गलती कर रहे हैं। वे अपनी प्रजाकी सद्भावना पर ही राजा बने रह सकते हैं। हिन्दुस्तानके लाखों-करोड़ोंने ब्रिटिश साम्राज्यकी ताकतका विरोध किया और आजादी ले ली। आज वे पागल बने दिखाअी देते हैं। लेकिन राजाओंको पागल नहीं बनना चाहिये। मनमानी, लम्पटपन और नशा सचमुच राजाओंका नाश कर देगा।

दशहरा और बकर-ईद

आखिरमें गांधीजीने पास आ रहे दहशरे और ईदके त्यौहारोंका जिक्र करते हुअे कहा, आज हरअेकको अिस बारेमें चिन्ता है। हिन्दुस्तानी संघमें अगर गड़बड़ी पैदा हुई, तो वह हिन्दुओंके जरिये ही पैदा की जा सकती है। मैं आपको याद दिलाना चाहता हूं कि दशहरेका त्यौहार शुरू कैसे हुआ। रामने रावण पर जो विजय पायी थी, अुसका अुत्सव मनानेके लिअे यह शुरू किया गया था। दुर्गापूजाका मतलब है सर्व-व्यापक शक्तिकी पूजा। अिन दस दिनोंके बाद भरत-मिलाप हुआ था। ये सब बातें आत्म-संयमको बताती हैं, न कि आचरणकी शिथिलताको। दुर्गापूजाके ९ दिन अुपवास और प्रार्थनाके दिन हैं। मेरी मां अिन ९ दिनोंमें अुपवास करती थीं। हमें अुन्होंने ज्यादासे ज्यादा अुपवास और संयम पालनेकी बात सिखाअी थी। क्या हिन्दू यह पवित्र अुत्सव अपने भाअियोंको सताकर और मारकर मनायेंगे? हिन्दुस्तानी संघके मुसलमान, जिनमें राष्ट्रवादी मुसलमान भी शामिल हैं, यह नहीं जानते कि कल अुनका क्या होगा। क्या वे संघमें जबरन अपना धर्म बदलवा कर ही रह सकते हैं? यह आखिरी हालत पहलीसे भी ज्यादा बुरी है। मैंने हिन्दुओं और सिक्खोंको जबरन मुसलमान बनानेका विरोध किया था। मैं अुनसे आशा करूंगा कि वे जबरन अपना धर्म बदलनेके बजाय मर जाना ज्यादा पसन्द करेंगे। यही बात मुसलमानों पर भी लागू होती है। अैसे लोगोंसे मुझे कोअी मतलब नहीं जो कपड़ोंकी तरह अपना धर्म भी बदल सकते हैं। अुनसे किसी धर्मको कोअी फायदा नहीं पहुंचेगा, न अुनसे धर्मकी ताकत बढ़ेगी। अिन तीन बातोंमें से किसी पर भी अमल करके हिन्दू धर्मको नहीं बचाया जा सकता। संघमें रहनेवालोंके लिअे सिर्फ यही अिज्जतका रास्ता है कि वे भाअी-भाअी बनकर रहें। वे सब अिन त्यौहारों पर अपने दिलका सारा बैर और कड़वाहट निकाल दें। तब मैं नये आत्म-विश्वाससे पाकिस्तान जा सकूंगा। मुझे तब तक सन्तोष नहीं होगा जब तक अेक अेक हिन्दू, सिक्ख और मुसलमान अिज्जत और सलामतीके साथ अपने-अपने घर नहीं लौट जाता।

४२

२३–१०–'४७

अपने दोस्तोंके साथ ठहरे हुअे शरणार्थियोंसे

गांधीजीने रावलपिंडीके दो शरणार्थियों द्वारा अुन्हें लिखा हुआ अेक खत पढ़ा। वे दिल्ली शहरमें अपने दोस्तोंके साथ ठहरे हुअे हैं। वे अपना सब कुछ खो चुके हैं और जानना चाहते हैं कि अुन जैसे लोगोंके लिअे कम्बल या रजाअियां पानेका कोअी रास्ता है या नहीं। मेरा अुनको यही जवाब है कि कम्बल और रजाअियां मुफ्तमें अुन शरणार्थियोंको बांटी जाती हैं, जो सचमुच बेआसरा हैं और शरणार्थी-केम्पोंमें ठहरे हुअे हैं। जो शरणार्थी अपने दोस्तों और रिश्तेदारोंके साथ ठहरे हैं, अुन्हें ओढ़ने-बिछानेकी चीजें देना मेजबानोंका फर्ज है। मगर मैं अुन लोगोंकी मुश्किलोंकी अच्छी तरह कल्पना कर सकता हूं, जो मुश्किलसे दो जून खाना पाते हैं। अैसे लोग अपने साथ ठहरे हुअे शरणार्थी दोस्तोंको कम्बल नहीं दे सकते। अिसके बारेमें मेरी यह साफ राय है कि अिनको मदद देनेका कुछ न कुछ साधन होना चाहिये। मुश्किल यह है कि कुछ लोग, जो सचमुच बेआसरा नहीं हैं, वे भी कम्बल वगैरा मुफ्तमें मांगेंगे। जो मुझसे मांगें अुन सबको अगर मैं मुफ्तमें कम्बल देना शुरू करूं, तो सबको ये चीजें देना नामुमकिन हो जायगा। मैंने अिस अुम्मीदमें कुछ लोगोंको ये चीजें दी हैं कि कोअी भी मुझे धोखा नहीं देगा और जो लोग मुझसे कम्बल मांगने आते हैं अुन्हें सचमुच अुनकी जरूरत है।

बिड़ला मंदिर शरणार्थियोंसे खचाखच भरा है। बिड़ला-बन्धु भरसक शरणार्थियोंको मदद पहुंचानेकी तकलीफ अुठाते हैं। गोस्वामीजी शरणार्थियोंको मदद देनेकी पूरी पूरी कोशिश कर रहे हैं। मगर यह समस्या अितनी बड़ी है कि अुसे पूरी तरहसे सुलझाना मुश्किल है। मैं सिर्फ अितना ही कह सकता हूं कि मैं नहीं चाहता कि अेक भी आदमी तेजीसे नजदीक आती हुअी अिस सर्दीमें बिना कम्बलके तकलीफ अुठाये।

और दूसरा गुनाह

मुझे अेक दूसरा खून होनेकी बात सुन कर अफसोस हुआ है। अेक गरीब मुसलमान, जिसकी चश्मेकी दुकान थी, अिस अुम्मीदसे अुसे खोलने गया कि अब वातावरण शान्त हो गया होगा। मगर जब वह अपनी दुकान खोल रहा था, अुसका खून कर दिया गया। अैसा क्यों होना चाहिये? पुलिस और फौज क्या कर रही थी? वह दुकान किसी सुनसान जगह पर नहीं थी। किसी पड़ोसीने अिस घटनाको रोकनेकी कोशिश क्यों नहीं की? हिन्दुओं और सिक्खोंके भाअी-बन्धुओं पर पाकिस्तानमें जो बीत रही है, अुससे अुनके दिलोंमें पैदा होनेवाली कड़वाहटको मैं समझता हूं। मगर बदला लेनेकी अिच्छाको तो रोकना ही होगा। अुन्हें हिन्दुस्तानी संघके बेगुनाह मुसलमानोंसे बदला लेकर अपने आपको गिराना नहीं चाहिये। दिल्ली मुसलमानोंका भी वैसा ही घर है, जैसा वह हिन्दुओं और सिक्खोंका है।

वर्धाकी कोढ़-निवारण कान्फरेन्स

मैंने सोचा था कि आज मैं हिन्दुस्तानमें कोढ़की बीमारीकी समस्या पर आपसे कुछ कहूंगा। हिन्दुस्तानमें लाखों आदमी अिस रोगके शिकार हैं। लोग कोढ़की बीमारीसे और कोढ़ियोंसे नफरत करते हैं। मेरी रायमें जो लोग गन्दे विचार रखते हैं, वे शरीरके कोढ़ियोंसे ज्यादा बुरे कोढ़ी हैं। किसी दूसरी बीमारीके बजाय कोढ़की बीमारीके बारेमें ही कलंककी बात क्यों समझी जानी चाहिये?

पहले सिर्फ अीसाअी मिशनरी ही कोढ़ियोंकी सेवाका करीब करीब सारा भार अपने अूपर लिये हुअे थे। मगर बादमें परोपकारकी भावनावाले हिन्दुस्तानियोंने भी (अगरचे बहुत कम तादादमें) अिस सेवाके कामको अपने हाथमें लिया। मैंने अैसी अेक संस्था कलकत्तामें देखी है। अिस तरहके दूसरे जन-सेवक श्री मनोहर दीवान हैं। वे श्री विनोबाके शिष्य हैं और अुनकी प्रेरणासे अुन्होंने यह काम अपने हाथमें लिया है। मैं अुन्हें सच्चा महात्मा मानता हूं। वे डॉक्टर नहीं हैं। मगर अुन्होंने अिस विषय पर अध्ययन किया है और अुनकी दिली कोशिशके परिणाम-स्वरूप वर्धाके पास कोढ़के बीमारोंकी अेक बस्ती बस

गअी है। अेक महारोगी-सेवा-मण्डल भी है, जो मध्यप्रान्तमें कोढ़-निवारणका काम करता है। महारोगी-सेवा-मण्डलकी तरफसे वर्धामें अिस महीनेकी ३० वीं तारीखको कोढ़-निवारण काम करनेवाले भाअियोंकी कान्फरेन्स बुलाअी जा रही है। अिसकी चर्चा पहले-पहल श्री जगदीशन्‌ने की, जो स्वर्गीय श्रीनिवास शास्त्रीके प्रशंसक और शिष्य हैं। श्री जगदीशन् खुद कोढ़के रोगी रह चुके हैं। अुन्होंने कस्तूरबा ट्रस्टके अेडवाअिजरी मेडिकल बोर्डके सामने यह प्रस्ताव रखा और अुसके परिणाम-स्वरूप यह कान्फरेंन्स बुलाअी जा रही है। डॉ० सुशीला नय्यर अिस कान्फरेन्सके सिलसिलेमें वर्धा जा रही हैं। राजकुमारी अमृतकुंवर और डॉ० जीवराज मेहताको अिस कान्फरेन्समें शामिल होना चाहिये था; मगर राष्ट्रीय काममें लगे होनेकी वजहसे वे अिस समय दिल्ली नहीं छोड़ सकते। मैं आपको अिस कान्फरेन्सके बारेमें अिसलिअे बतला रहा हूं कि देशकी अेक अहम समस्याकी तरफ आप लोगोंका ध्यान जाय। क्या आप लोग अपनी शक्ति राष्ट्र-निर्माणके कामोंमें लगायेंगे या भाअी-भाअी आपसमें लड़कर अुस शक्तिको बरबाद करेंगे? फिरकेवाराना नफरत बुरेसे बुरे किस्मका कोढ़ है। मैं चाहता हूं कि लोग अिस कोढ़के प्रति अपने दिलोंमें नफरत और डर पैदा करें, ताकि वे अिस प्राण-घातक रोगसे बच सकें।

४३

२४–१०–’४७

अेकमात्र लगन

प्रार्थनाके बाद अपना भाषण शुरू करते हुअे गांधीजीने कहा कि कुछ दिनों पहले अखबारोंमें निकला था कि २७ अक्तूबरको दिल्लीमें होनेवाली अेशियाटिक लेबर कान्फरेन्सका मैं अुद्घाटन करनेवाला हूं। मैं नहीं जानता, किसने यह खबर अखबारोंमें दी। अिस सबके बारेमें मैं कुछ नहीं जानता। मैंने अेक अखबारनवीससे कहा भी था कि वे अिस रिपोर्टका प्रतिवाद छपवा दें, मगर कोअी प्रतिवाद नहीं निकला। मैं कहना चाहता हूं कि अिस वक्त मैं अपनी सारी शक्ति अुस समस्याको हल करनेमें लगा रहा हूं, जो आज सबसे ज्यादा अहम है। मैं

दूसरी किसी बातमें अपना दिमाग नहीं लगा सकता। हिन्दू, मुसलमान, पारसी, अीसाअी और दूसरे लोग हिन्दुस्तानके अेकसे ही लड़के और लड़कियां हैं और अुन्हें नागरिकताके अेकसे अधिकार हैं। बचपनसे ही मेरे सामने यह आदर्श रहा है। आजादी मिलनेके बाद यह आदर्श गिरता-सा जान पड़ता है। जो भजन आपने अभी सुना है, अुसमें यह कहा गया है कि "चाहे कोअी तुम्हारी तारीफ करे या तुम्हें गाली दे, अुससे तुम्हें खुश या नाराज नहीं होना चाहिये, क्योंकि वह सब भगवानको सौंप देनेके लिअे है।" मैं यही करनेकी कोशिश कर रहा हूं। जिस बातको मैं सच समझता हूं अुसे लगातार कहता रहूंगा, फिर अुसे कोअी पसन्द करे या नापसन्द।

अपनी श्रद्धा अुज्ज्वल रखिये

गांधीजीने अुन लोगोंकी बदकिस्मती पर दुःख जाहिर किया, जो कल तक धनवान थे और आज बेआसरा शरणार्थी हो गये हैं, जिनके तन पर कपड़ा नहीं है और न रहनेको घर है। गांधीजीने कहा कि अगर वे लोग अपनी श्रद्धा अुज्ज्वल रखें और सही रास्ते पर जमे रहें, तो भगवान बहुत जल्द अुनकी मुसीबतें दूर कर देगा।

कोढ़की समस्या

अिसके बाद गांधीजीने कोढ़की समस्याकी तरफ लोगोंका ध्यान खींचते हुअे कहा कि कल मैं अिस विषय पर आपसे कुछ बातें कह चुका हूं। श्री जगदीशन्, जो खुद अिस बीमारीके मरीज रह चुके हैं और अभी हाल ही अुससे चंगे हुअे हैं, कोढ़ियोंकी सेवाके लिअे काफी मेहनत अुठा रहे हैं। वे अकसर मद्रासमें रहते हैं। मगर कोढ़-निवारण कान्फरेन्सके अिन्तजाममें मदद देनेके लिअे दो हफ्ते पहले वर्धा आये हैं। अुन्होंने मुझे कुछ लेख और पत्रव्यवहार भेजे हैं, जिन्हें मैंने आज सबेरे ही पढ़ा है। अुनमें श्री जगदीशन्ने कोढ़ी शब्दका अुपयोग न करनेके लिअे दलीलें दी हैं। अिस शब्दमें अेक नफरतका भाव आ गया है। अुनका कहना है कि जिन्हें यह बीमारी हो अुन्हें कोढ़ी कहनेके बजाय कोढ़के मरीज कहा जाय। खुजली,

हैजा, प्लेग, यहां तक कि मामूली जुकाम भी अैसी छूतकी बीमारियां हैं, जिनसे कोढ़की छूत शायद बहुत कम लगती है। दूसरी छूतकी बीमारियोंके बजाय कोढ़के बारेमें अितनी नफरत क्यों रहनी चाहिये? म आपसे कह चुका हूं कि सच्चे कोढ़ी तो वे हैं जिनके दिल गन्दे ह। किसी अिन्सानको अपनेसे नीचा समझना, किसी जाति या फिरकेको नफरतकी नजरसे देखना, बीमार दिमागकी निशानी है, जिसे मैं शरीरके कोढ़से ज्यादा बुरा समझता हूं। अैसे लोग समाजके असली कोढ़ी हैं। मैं खुद तो शब्दोंको ज्यादा महत्त्व नहीं देता। अगर गुलाबको किसी दूसरे नामसे पुकारा जाय, तो अुसकी खुशबू नहीं चली जायगी।

कल मैंने कहा था कि राजकुमारी अमृतकुंवर और डॉ॰ जीवराज मेहता दिल्लीमें ज्यादा काम होनेकी वजहसे वर्धाकी कान्फरेन्समें शरीक नहीं हो सकेंगे। मुझे यह जानकर खुशी हुअी है कि डॉ॰ जीवराज मेहता कान्फरेन्समें शरीक हो सकेंगे।

आखिरमें मुझे आपको यह सूचना देनी है कि अगली शामको जेलमें प्रार्थना होगी, अिसलिअे शनिवारको मैं आपसे नहीं मिल सकूंगा।

४४

२५–१०–'४७

दिल्लीके कैदी

आज शामकी प्रार्थना दिल्ली सेंट्रल जेलमें कैदियोंके लिअे अुनकी हाजिरीमें हुअी। कुल ३००० कैदी हाजिर थे। प्रार्थनाके बाद गांधीजीने कहा कि जब मुझे कैदियोंके बीच प्रार्थना-सभा रखनेका आमंत्रण मिला, तो मुझे बड़ी खुशी हुअी। मैं खुद पहले कअी बार कैदी रह चुका हूं। मैं दक्षिण अफ्रीका और हिन्दुस्तानमें अलग अलग अवधियों तक जेल भुगत चुका हूं। दक्षिण अफ्रीकामें हिन्दुस्तानी थे जिन्हें कुली कहा जाता था, हबशी थे और तीसरी क्लास यूरोपियनोंकी थी। जेलोंमें अिन तीनोंको अलग अलग रखा जाता था। जब सत्याग्रही कैदी जेलमें बढ़ने लगे, तब हबशियों और हिन्दुस्तानियोंको अेक ही कम्पाअुण्डमें

रखा गया। जेलके कायदे बहुत कड़े थे। सियासी और गैर-सियासी कैदियोंमें कोअी फर्क नहीं किया जाता था। वे सब अेक ही किस्मके अपराधी माने जाते थे। अेक तरहसे यह ठीक भी है। जो लोग कानून तोड़ते हैं वे सब अुसके खिलाफ अपराध करते हैं।

ये क्लासें नहीं चाहिये

हिन्दुस्तानमें आजादीकी लड़ाअी बहुत जबरदस्त हुअी और अूंचेसे अूंचे दरजेके लोगोंने अुसमें हिस्सा लिया। नतीजा यह हुआ कि सिर्फ सियासी और गैर-सियासी कैदियोंमें ही फर्क नहीं किया गया, बल्कि सियासी कैदियोंमें भी अे, बी और सी दरजे रखे गये। अैसे दरजोंमें मेरा विश्वास नहीं है। मैं यह भी मानता हूं कि सभी बड़े या छोटे लोग अपराध करते हैं। कुछ पकड़े जाकर जेल भेज दिये जाते हैं और दूसरे चालाकीसे अुसे बचा जाते हैं। अेक हिन्दुस्तानी जेलके बड़े जेलरने मुझसे कहा था कि 'मेरी देखरेखमें रहनेवाले कैदियोंसे मैं अपने आपको अकसर बड़ा अपराधी समझता हूं।' अूपर जो हम सबका सबसे बड़ा जेलर बैठा हुआ है अुसे कोअी भी धोखा नहीं दे सकता।

जेल दिमागी अस्पतालोंका काम करें

आजाद हिन्दुस्तानमें कैदियोंके जेल कैसे हों? बहुत समयसे मेरी यह राय रही है कि सारे अपराधियोंके साथ बीमारों जैसा बरताव किया जाय और जेल अुनके अस्पताल हों, जहां अिस क्लासके बीमार अिलाजके लिअे भरती किये जायं। कोअी आदमी अपराध अिसलिअे नहीं करता कि अैसा करनेमें अुसे मजा आता है। अपराध अुसके रोगी दिमागकी निशानी है। जेलमें अैसी किसी खास बीमारीके कारणोंका पता लगाकर अुन्हें दूर करना चाहिये। जब अपराधियोंके जेल अुनके अस्पताल बन जायेंगे, तब अुनके लिअे आलीशान अिमारतोंकी जरूरत नहीं होगी। कोअी देश यह नहीं कर सकता। तब हिन्दुस्तान जैसा गरीब देश तो अपराधियोंके लिअे बड़ी बड़ी अिमारतें कहांसे बनावे? लेकिन जेलके कर्मचारियोंकी दृष्टि अस्पतालके डॉक्टरों और नर्सों जैसी होनी चाहिये। कैदियोंको महसूस करना चाहिये कि जेलके अफसर

अुनके दोस्त हैं। अफसर वहां अिसलिअे रखे गये हैं कि वे अपराधियोंको फिरसे दिमागी तन्दुरुस्ती हासिल करनेमें मदद करें। अुनका काम अपराधियोंको किसी तरह सतानेका नहीं है। जनप्रिय सरकारोंको अिसके लिअे जरूरी हुक्म निकालने होंगे, लेकिन अिस बीच जेलके कर्मचारी अपने बन्दोबस्तको अिन्सानियतभरा बनानेके लिअे बहुत कुछ कर सकते हैं। कैदियोंका क्या फर्ज है?

कैदियोंका फर्ज

पहले कैदी रह चुकनेके नाते मैं अपने साथी कैदियोंको सलाह दूंगा कि वे जेलमें आदर्श कैदियों जैसा बरताव करें। अुन्हें जेलके अनुशासनको तोड़नेसे बचना चाहिये। जो भी काम अुन्हें सौंपा जाय, अुसमें अुन्हें अपना दिल और आत्मा दोनों लगा देने चाहिये। मिसालके लिअे, कैदी अपना खाना खुद पकाते हैं। अुन्हें चावल, दाल, या दूसरे मिलनेवाले अनाजको साफ करना चाहिये, ताकि अुसमें कंकड़, रेत, भूसी या कीड़े न रह जायं। कैदियोंको अपनी सारी शिकायतें जेलके अधिकारियोंके सामने अुचित ढंगसे रखनी चाहिये। अुन्हें अपने छोटेसे समाजमें अैसा काम करना चाहिये कि जेल छोड़ते समय वे आये थे अुससे ज्यादा अच्छे आदमी बनकर जायं।

मुझे मालूम हुआ है कि यहांकी जेलमें हिन्दू, सिक्ख और मुसलमान कैदी हैं। अुनमें साम्प्रदायिक जहर नहीं फैलना चाहिये। अुन सबको आपसमें दोस्तों और भाअियोंकी तरह प्रेमसे रहना चाहिये, ताकि जब वे जेलसे निकलें तो बाहरके पागलपनको रोक सकें। मैं सब मुस्लिम कैदियोंसे अीद मुबारक कहता हूं और आशा करता हूं कि गैर-मुस्लिम कैदी भी अपने मुसलमान भाअियोंको अीदकी बधाअियां देंगे।

२६–१०–’४७

दशहरेका सबक

प्रार्थनाके बादके अपने भाषणमें गांधीजीने कहा, सभामें आये हुअे अेक भाअीने खत लिखकर मुझसे यह पूछा है कि जब आपके अनुयायी हर साल रामको रावणका पुतला जलाते हुअे बताते हैं और अिस तरह बदलेकी भावनाको बढ़ावा देते हैं, तब क्या आपके यह कहनेसे कोअी फायदा होगा कि बदला लेना बुरा है? अिस सवालमें दो भुलावेमें डालनेवाली दलीलें हैं। मैं नहीं जानता कि खुद अपने सिवा मेरा और भी कोअी अनुयायी है। अिसके अलावा, दशहरेके अुत्सवका यह अर्थ बिलकुल गलत है। वह बदलेकी भावनाको बढ़ावा नहीं देता; अुलटे वह अिसे बुरी बताकर यह दिखाता है कि बदला लेनेका अधिकार सिर्फ अुस भगवानको ही है, जिसे हिन्दू धर्म रामके नामसे जानता है। भगवान ही अकेला अिन्सानके दिलोंको ठीक ठीक पढ़ सकता है और अिसलिअे वही जानता है कि अुनमें रावण कौन है। अगर हर आदमी अपने आपको राम समझनेका गलत दावा करने लगे तो रावण कौन होगा? अपूर्ण आदमी दूसरे अपूर्ण आदमियोंके जज नहीं बन सकते। हिन्दुओंका मुसलमानों पर और मुसलमानोंका हिन्दुओं पर हमला करना बुजदिली और अधर्म है। वह रास्ता हिन्दू धर्म और अिस्लामकी बरबादीका रास्ता है। अिसलिअे मुझे खुशी है कि अेक सनातनी हिन्दूके नाते मैं हिन्दुओंकी ही नुमाअिन्दगी नहीं करता, बल्कि मुसलमानों और दूसरे धर्मवालोंकी भी करता हूं।

काश्मीरकी घटनायें

आप यह पूछ सकते हैं कि क्या मैं काश्मीरमें होनेवाली घटनाओंके बारेमें जानता हूं? अखबार जितनी खबरें देते हैं अुतनी सब तो मैं जरूर जानता हूं। अगर अखबारोंकी खबरें सच हों, तो काश्मीरकी घटनायें बहुत बुरी हैं। यह अिलजाम लगाया जाता है कि पाकिस्तान सरकार काश्मीर पर यह दबाव डाल रही है कि वह पाकिस्तानमें जुड़ जाय। काश्मीर, हैदराबाद, छोटीसी जूनागढ़ रियासत, या दूसरी किसी

रियासत पर कोअी यह दबाव नहीं डाल सकता कि वह हिन्दुस्तानी संघ या पाकिस्तानमें जुड़ जाय। आखिर अिसका हल क्या है? मैं तो नम्रतासे राजाओं और महाराजाओंसे कहूंगा कि वे अपनी रियासतोंके सच्चे शासक नहीं हैं। आजके राजे-महाराजे ब्रिटिश साम्राज्यवादके पैदा किये हुअे हैं। अब ब्रिटिश सत्ता हिन्दुस्तानसे चली गअी है। आज सारी रियासतोंके सच्चे शासक वहांके लोग हैं और अुन्हींकी अिच्छा सबसे बढ़कर मानी जानी चाहिये। राजा और महाराजा सिर्फ ट्रस्टी बनकर रहेंगे। बिना किसी दबावके, या बिना भीतरी या बाहरी दबावके दिखावेके काश्मीरके लोगोंको यह फैसला करना चाहिये कि काश्मीर किस राजमें जुड़े। यह नियम सब रियासतों पर लागू किया जा सकता है।

कलकत्तेमें शान्तिका राज

मुझे कलकत्तासे अेक तार मिला है जिसमें बताया गया है कि वहां दशहरे और अीदके त्यौहार ज्यादासे ज्यादा शान्तिसे मनाये गये। मैं जब वहां था तब शहरमें कलकत्ता शान्तिसेना खड़ी की गअी थी। तारमें कहा गया है कि शान्तिसेना शहरमें शान्ति बनाये रखनेके लिअे बड़े अुत्साहसे काम कर रही है। अुसने अपने मेम्बर पूर्व बंगालमें भी भेजे हैं। वहां भी दशहरे और अीदके त्यौहार शान्तिसे मनाये गये मालूम होते हैं। दिल्ली और दूसरी जगहोंके लोग कलकत्ताके कदमों पर क्यों नहीं चल सकते? आज दिनमें कुछ मुसलमान मुझसे मिलने आये थे। मैं तो सबका दोस्त हूं और अिसलिअे सब जातियोंके लोग मेरे पास आते हैं। मैंने अुन मुसलमान दोस्तोंको अीद मुबारक कहा, लेकिन आजके अविश्वासके वातावरणमें मेरा दिल खुश नहीं था।

शाबाश रतलाम!

मुझे रतलामके हरिजन-सेवक-संघके सेक्रेटरीका तार मिला है। वहांके महाराजाने यह अैलान किया है कि रियासतमें अुत्तरदायी सरकार कायम की जायगी और वे आगेसे जनताके ट्रस्टी बनकर रहेंगे। यह भी अैलान किया गया है कि रियासतके सारे मन्दिर हरिजनोंके लिअे खोल दिये गये हैं। हरिजन और सवर्ण हिन्दू महाराजाके साथ राज-मन्दिरमें गये। अगर हिन्दू धर्मको जिन्दा रहना है, तो हरअेक हिन्दूके

दिलसे छुआछूतको पूरी तरह निकाल देना होगा। छुआछूतके नासूरके साथ साम्प्रदायिक झगड़ोंका बहुत नजदीकका सम्बन्ध है। भगवानके सामने तो सब आदमी अेकसे हैं। किसी आदमीसे सिर्फ अिसलिअे नफरत करना कि वह हमारे धर्मका नहीं है भगवान और मनुष्यके सामने पाप करना है। यह भी अेक तरहकी छुआछूत ही है।

४६

२७–१०–'४७

छोड़नेके लिअे मजबूर किया जा रहा है?

मेरे पास अिस बातकी शिकायतें आ रही हैं कि यूनियनके मुसलमानोंको अपने बापदादोंके मकान छोड़ने और पाकिस्तान जानेके लिअे मजबूर किया जा रहा है। यह कहा जाता है कि अुनको तरह तरहकी तरकीबोंसे अपने घर छुड़वाकर केम्पोंमें रहने पर मजबूर किया जा रहा है, ताकि वहांसे अुन्हें रेल द्वारा अथवा पैदल भेज दिया जाय। मुझे विश्वास है कि मंत्रि-मण्डलकी यह नीति नहीं है। जब मैं शिकायत करनेवालोंसे यह बात कहता हूं, तो वे हंसते हैं और जवाबमें कहते हैं कि या तो मेरी जानकारी गलत है या सरकारी कर्मचारी अुस नीति पर नहीं चलते। मैं जानता हूं कि मेरी जानकारी बिलकुल सही है। तब क्या कर्मचारी बेवफा हैं? मुझे अुम्मीद है कि अैसा नहीं है। फिर भी यह आम शिकायत है। कही जानेवाली बेवफाअीके मुख्तलिफ कारण दिये जाते हैं। जो कारण सबसे ज्यादा सम्भव हो सकता है वह यह है कि फौज और पुलिसका अधिकांश रूपमें फिरकेवाराना बंटवारा किया गया है और वे मौजूदा द्वेषभावमें बह जाते हैं। मैंने अपनी राय दे दी है कि अगर ये कर्मचारी, जिन पर शान्ति और कानून कायम रखनेकी जिम्मेदारी है, फिरकेवाराना प्रभावमें पड़ जायं, तो सुसंगठित हुकूमतकी जगह बदअमनी आ जाना लाजमी है और अगर यह चलती रहे तो समाज बरबाद हो जायगा। अूंचे दरजेके कर्मचारियोंका यह फर्ज है कि वे फिरकेवाराना जहनियतसे अूपर अुठें और फिर अपनेसे निचले दरजेके कर्मचारियोंमें भी वही अच्छी भावना भरें।

नैतिक बनाम जिस्मानी ताकत

यह जोरके साथ कहा जाता है कि देशमें जनता द्वारा जो सरकारें कायम की गअी हैं, अुनको वह प्रभाव हासिल नहीं हुआ है जो विदेशी हुकूमतको अपनी तलवारके जरिये हिन्दुस्तानी कर्मचारियोंको डराकर अपने काबूमें रखनेके लिअे हासिल था। यह कुछ हद तक ही ठीक है। क्योंकि जनताकी सरकारके हाथमें अेक नैतिक ताकत है, जो विदेशी हुकूमतकी जिस्मानी ताकतसे बेशक बहुत अूंचे दरजेकी है। अिस नैतिक ताकतके लिअे पहलेसे ही यह माना जाता है कि जनताका मत हुकूमतके साथ है। आज अिसकी कमी हो सकती है। हमारे पास अिसकी परीक्षाका और कोअी साधन नहीं है, सिवा अिसके कि केन्द्रीय सरकार अिस्तीफा दे दे। अिस जगह हम खास तौर पर यह जांच रहे हैं कि केन्द्रीय सरकारकी हालत क्या है। अुसे किसी हालतमें भी कमजोर नहीं बनना चाहिये और न कभी अपनेको कमजोर समझना चाहिये। अुसे तो अपनी ताकतका पूरा भान होना चाहिये। अिसलिअे अगर अिसमें कुछ भी सचाअी है कि कर्मचारी पूरी तरह सरकारी हुक्मका पालन नहीं करते, तो अैसे कर्मचारियोंको तुरन्त निकाल देना चाहिये; या मंत्रि-मण्डल या सम्बन्धित मंत्रीको त्यागपत्र देकर अैसी ताकतको जगह देनी चाहिये, जो कामयाबीके साथ कर्मचारियोंकी अराजकता दूर कर सके। जब कि मैं अुन शिकायतोंको, जो मेरे पास आती रहती हैं, संकोचके साथ आपको सुनाता हूं, मुझे यह आशा रखनी चाहिये कि अिनकी तहमें कुछ नहीं है; और यदि कुछ है भी तो अुच्च अधिकारी कामयाबीके साथ अुनको ठीक कर लेंगे।

नागरिकोंका फर्ज

यूनियनके जिन नागरिकों पर अिसका असर पड़ता है अुनका क्या फर्ज है? साफ बात है कि अैसा कोअी कानून नहीं है, जो किसी नागरिकको अपना मकान छोड़ने पर मजबूर करे।

अधिकारियोंको अपने हाथमें खास अधिकार लेने पड़ेंगे, ताकि वे अैसे हुक्म निकाल सकें जैसे कि कहा जाता है वे निकालते हैं। जहां तक मुझे पता है, किसीको कोअी लिखित हुक्म नहीं दिया गया है।

कहा जाता है कि मौजूदा मामलोंमें हजारोंको जबानी हुक्म दिया गया है। अैसे लोगोंकी मदद करनेका कोअी साधन नहीं है, जो डरके मारे किसी भी वरदी पहने हुअे व्यक्तिके हुक्मके सामने अपना सिर झुका देते हैं। अैसे सब लोगोंको मेरी जोरके साथ यह सलाह है कि वे लिखित हुक्म मांगें और अगर सबसे अूंचा अमलदार भी अुनको सन्तोष न दे सके, तो शककी हालतमें वे अदालतसे अुस हुक्मकी सचाअी मालूम करें। अुन लोगोंको, जो बहुसंख्यकके नफरतभरे नामसे पुकारे जाते हैं, कानूनको हाथमें लेनेसे अपनेको सख्तीके साथ रोकना चाहिये। अगर वे अैसा नहीं करेंगे, तो अपने पैरोंमें खुद कुल्हाड़ी मारेंगे। यह अैसा पतन होगा जिससे अुठना मुश्किल हो जायगा। अीश्वर करे जल्दसे जल्द अुनको समझ आ जाय। अुनको बुरी घटनाओंकी खबरसे, चाहे वे सच ही हों, प्रभावित न होना चाहिये। अुनको अपने चुने हुअे मंत्रियों पर भरोसा रखना चाहिये कि वे अिन्साफके लिअे जो जरूरी होगा वही करेंगे।

४७

२८–१०–'४७

अीमानदारीका बरताव

प्रार्थनाके बादके अपने भाषणमें गांधीजीने सभामें आये हुअे अेक भाअीके खतका जिक्र करते हुअे कहा, अुन भाअीने लिखा है कि अुन्होंने खेमोंके व्यापार करनेवाले अेक मुसलमान भाअीसे शरणार्थियोंके लिअे कुछ खेमे, परदे और कनातें किराये पर ली थीं। लेकिन वह व्यापारी पाकिस्तान चला गया है। खत लिखनेवाले भाअी यह नहीं जानते कि अैसी हालतमें वे किराये पर ली हुअी चीजें किन्हें सौंपें। मेरी रायमें अिसके बारेमें अुन्हें सरदार पटेल या श्री नियोगीसे पूछना चाहिये।

अलीगढ़के विद्यार्थी

अलीगढ़ युनिवर्सिटीका अेक विद्यार्थी मेरे पास आया था। अुसने मुझसे कहा कि पाकिस्तानके बहुतसे विद्यार्थी अलीगढ़ नहीं लौटे हैं। लेकिन जो युनिवर्सिटीमें हैं अुन्होंने यह तय कर लिया है कि दोनों

जातियोंमें भाअीचारा और मेल-मिलाप बढ़ानेकी खामोशीके साथ भरसक कोशिश की जाय। मुलाकाती विद्यार्थीने सुझाया कि अैसा करनेका सबसे अच्छा तरीका यह होगा कि हममें से कुछ विद्यार्थी हिन्दू और सिक्ख शरणार्थियोंकी छावनियोंमें जायें और अुनमें कम्बल और दूसरी चीजें बांटें। मैंने अुस भाअीसे कहा कि मैं आपकी हिन्दू और सिक्ख भाअियोंकी सेवा करनेकी अिच्छाकी तारीफ करता हूं। लेकिन आजकी हालतमें अिस तरहकी मददकी जरूरत नहीं है। अिस समय शायद अुसका कोअी नतीजा भी न मिले। मेरी तो विद्यार्थियोंको यही सलाह है कि वे पाकिस्तानमें जायं और वहांके मुसलमानोंसे पूछें कि हिन्दुओं और सिक्खोंने अपने घरबार क्यों छोड़े? जैसे मैं हिन्दुओं और सिक्खोंसे यह आशा करता हूं कि वे घर-बार छोड़कर चले जानेवाले मुसलमानोंसे अपने अपने घरोंको लौटनेको कहें, अुसी तरह विद्यार्थियोंको पाकिस्तानके मुसलमानोंको अिस बातके लिअे राजी करना चाहिये कि वे हिन्दू और सिक्ख शरणार्थियोंके पास जाकर अुनसे अपने घरोंको लौटनेकी बात कहें। आम तौर पर कोअी भी आदमी बिना सही कारणके अपना घर छोड़ना नहीं चाहेगा। मेरी रायमें जब तक अेक-अेक हिन्दू, सिक्ख और मुसलमान अपने अपने घरमें फिरसे नहीं बसाया जाता, तब तक दोनों जातियोंमें शान्ति और दोस्ती कायम नहीं हो सकती।

बिना टिकट सफर करना बुरा है

अिसके बाद गांधीजीने कहा, आजकल बिना टिकट सफर करना अेक आम रोग हो गया है। मालूम होता है लोगोंका यह खयाल हो गया है कि आजादी मिल जानेसे वे रेलों या मोटरोंमें मुफ्त सफर कर सकते हैं। लोगोंके बिना टिकट सफर करनेसे हमारी सरकारको लगभग ८ करोड़का घाटा हो चुका है। यह नुकसान कौन सहेगा? अिसके अलावा, लाखों शरणार्थियोंको खाना और कपड़ा देनेका सवाल है। हिन्दुस्तान अितना धनी नहीं है कि अिस भारी बोझको सह सके। अगर अैसी बातें होती रहीं, तो हिन्दुस्तान बरबाद हो जायगा। अगर रेलोंसे करोड़ोंकी आमदनी होती है, तो यह भी अुतना ही सच है कि रेलोंको चलानेमें करोड़ोंका खर्च भी होता है। अिसलिअे अैसी बुराअी बहुत समय

तक चलती रही, तो हिन्दुस्तान पूरी तरह बरबाद हो जायगा। मैंने सुना है कि पाकिस्तानमें भी यही हालत है।

आप लोगोंको रेलके डिब्बोंमें सफाओीका पूरा पूरा ध्यान रखना चाहिये। रेलके डिब्बोंमें थूकना या दूसरी तरहकी गन्दगी नहीं करनी चाहिये। आजाद हिन्दुस्तानके लोगोंको रेलके नियम तोड़कर बिना किसी खास कारणके चेन खींचना और गाड़ीको रोकना नहीं चाहिये। आजाद देशके लोगोंको अैसा करना शोभा नहीं देता।

अगर मैं रेलवे मैनेजर या मंत्री होता, तो रेलवे कर्मचारियोंको लोगोंसे यह कहनेकी सलाह देता कि अगर आप टिकट नहीं खरीदेंगे तो गाड़ियां रोक दी जायंगी। जब मुसाफिर राजी-खुशीसे टिकट खरीदेंगे तभी गाड़ियां आगे बढ़ेंगी।

४८

२९-१०-'४७

दिलीपकुमार राय

अपना भाषण शुरू करते हुअे गांधीजीने सभामें आये हुअे लोगोंको आज शामकी प्रार्थनामें भजन गानेवाले श्री दिलीपकुमार रायका परिचय दिया। गांधीजीने कहा कि अगरचे मैं संगीत-कलाके बारेमें कुछ नहीं जानता, फिर भी मुझे लगता है कि जब पहले-पहल मैंने सासून अस्पतालमें श्री रायका गाना सुना था, तबसे अब अुनकी आवाज ज्यादा मीठी और मोहक हो गअी है। सासून अस्पतालमें कैदीकी हालतमें मेरा ऑपरेशन हुआ था। शायद दुनियामें बहुत थोड़े लोग अैसे होंगे, जिन्होंने श्री राय जैसी कुदरती मीठी आवाज पाअी हो। वे ऋषि अरविन्दके पाण्डिचेरी आश्रममें रहते हैं। आपको जानना चाहिये कि अुस आश्रममें जाति या धर्मका कोअी भेदभाव नहीं रखा जाता। मुझे याद है कि मरहूम सर अकबर हैदरी अुस आश्रममें तीर्थयात्राकी तरह जाया करते थे। श्री राय अुसी आश्रमके पुराने सदस्य हैं। अिनके दिलमें भी किसीके प्रति कोअी नफरत नहीं है। आज ये दोपहरको मेरे पास आ गये थे। तब अिन्होंने मुझे दो गीत सुनाये — अेक तो 'वन्दे मातरम्' और दूसरा

अिकबालका 'सारे जहांसे अच्छा'। आज शामको जो भजन गाया गया, अुसकी आखिरी लाअिनका मतलब यह है कि धनवानके पास तो करोड़ोंकी धन-दौलत है, महल हैं, घोड़े वगैरा हैं; और भक्तकी तो सारी दौलत अुसका भगवान है, जिसे वह मुरारी, राम, हरि वगैरा नामोंसे पुकारता है। अगर आप अिस बातको अपने दिलमें रख लें, तो आपकी सारी नफरत और द्वेष दूर हो जायं।

काश्मीरकी मुसीबतें

अिसके बाद काश्मीरकी हालतका जिक्र करते हुअे गांधीजीने कहा कि जब वहांके महाराजा साहबने अपनी मुसीबतमें हिन्दुस्तानी संघमें शामिल होनेकी अिच्छा जाहिर की, तो गवर्नर जनरल अुन्हें अिनकार नहीं कर सकते थे। अुन्होंने और अुनकी कैबिनेटने काश्मीरमें हवाअी जहाजसे फौज भेजी। महाराजासे अुन्होंने कह दिया कि हिन्दुस्तानी संघमें काश्मीरका जुड़ना अभी अस्थायी है। अिसका आखिरी निर्णय तो सभी काश्मीरियोंकी निष्पक्ष रायसे होगा और अिस रायके लेनेमें धर्मका कोअी भेदभाव नहीं रखा जायगा। महाराजाने शेख अब्दुल्लाको अपना मंत्री बनानेकी समझदारी की है और अुन्हें मंत्रीके सारे अधिकार दे दिये हैं। अखबारोंमें यह पढ़कर मुझे खुशी हुअी है कि शेख साहबने परि-स्थितिके अनुसार अपनेको बना लिया और महाराजाके आमंत्रणका दिलसे स्वागत किया। काश्मीरकी हालत क्या है? कहा जाता है कि अेक बागी फौज, जिसमें अफरीदी वगैरा हैं, काबिल अफसरोंकी रहनुमाअीमें श्रीनगरकी तरफ बढ़ रही है। वह रास्तेमें पड़नेवाले गांवोंको जलाती और लूटती जाती है। अुसने बिजली-घरको भी बरबाद कर दिया, जिससे श्रीनगरमें अंधेरा छा गया है। अिस बात पर भरोसा करना मुश्किल है कि पाकिस्तानकी सरकारसे बढ़ावा पाये बिना यह फौज काश्मीरमें घुस सकती है। अिस बारेमें किसी निर्णय पर पहुंचनेके लिअे मेरे पास काफी जानकारी नहीं है। और न यह मेरे लिअे जरूरी है। मैं सिर्फ अितना ही जानता हूं कि संघ सरकारका श्रीनगरको फौज भेजना अुचित था, फिर वह फौज बहुत थोड़ी ही क्यों न हो। अिससे हालत अितनी जरूर संभल जायगी कि काश्मीरियोंमें, और खासकर शेख साहबमें,

जिन्हें प्यारसे लोग शेरे-काश्मीर कहते हैं, आत्म-विश्वास पैदा हो जायगा। नतीजा भगवानके हाथमें है। अिन्सान तो सिर्फ कर या मर सकता है। अगर स्पार्टावालोंकी तरह हिन्दुस्तानकी छोटीसी फौज बहादुरीसे काश्मीरकी हिफाजत करती हुअी बरबाद हो जाय, तो मेरी आंखोंमें अेक आंसू भी नहीं आयेगा। और अगर शेख साहब और अुनके मुसलमान, हिन्दू और सिक्ख साथी, मर्द और औरतें सभी काश्मीरकी रक्षा करते हुअे मर जायं, तो भी मैं परवाह नहीं करूंगा। यह बाकीके हिन्दुस्तानके लिअे अेक महान अुदाहरण होगा। अिस तरह बहादुरीसे अपना बचाव करनेका सारे हिन्दुस्तान पर असर पड़ेगा और हम लोग भूल जायंगे कि हिन्दू, मुसलमान और सिक्ख कभी आपसमें दुश्मन थे। तब हम महसूस करेंगे कि सभी मुसलमान, हिन्दू और सिक्ख बुरे और राक्षसी स्वभावके नहीं हैं। सभी धर्मों और जातियोंमें कुछ अच्छे मर्द और औरतें हैं। बेशक, अगर खुद बागियोंकी फौज समझदार बन जाय और यह पागलपनका काम बन्द कर दे, तो मुझे ताज्जुब नहीं होगा। आपको अभी गाये गये भजनकी टेक याद होगी, जिसमें कहा गया है कि 'हम चाहे जिस नामसे भगवानकी पूजा करें, हम सब अुसीके बन्दे हैं और अुसीने हम सबको पैदा किया है।'

४९

३०–१०–'४७

अहिंसाका काम

आज भी हमेशाकी तरह प्रार्थना शुरू होनेसे पहले लोगोंसे पूछा गया कि क्या प्रार्थनामें कुरानकी आयतें पढ़ने पर किसीको अेतराज है? अिस पर अेक भाअी खड़े हुअे और अुन्होंने अिस पर जोर दिया कि आयतें नहीं पढ़ी जानी चाहिये। गांधीजीने पहले यह साफ साफ बतला दिया था कि अगर अैसा कोअी अेतराज अुठता है, तो न मैं सार्वजनिक प्रार्थना करूंगा और न प्रार्थनाके बाद सामयिक घटनाओं पर भाषण दूंगा। अिसलिअे अैसा अेतराज अुठने पर गांधीजीने कहला भेजा कि आज न प्रार्थना होगी और न लोगोंके सामने भाषण होगा।

मगर लोग गांधीजीको देखे बगैर जानेके लिअे तैयार नहीं थे। अिसलिअे गांधीजी सभाके मंच पर पहुंचे और थोड़े शब्दोंमें अुन्होंने लोगोंको बतलाया कि अुन्होंने प्रार्थना क्यों नहीं की और अुनकी समझमें अहिंसाका काम क्या है। अुन्होंने कहा कि किसीका प्रार्थनाके बारेमें अेतराज करना अनुचित है। और खासकर जब वह किसी सार्वजनिक जगह पर न होकर अेक व्यक्तिके निजी अहातेमें हो रही हो तब तो बिलकुल ही अनुचित है। जब बहुत बड़ी तादादमें दूसरे लोगोंके द्वारा अेक अेतराज करनेवालेका मुंह बन्द कर दिये जानेकी सम्भावना हो, तब मेरी अहिंसा मुझे चेतावनी देती है कि मैं अुस शख्सकी अुपेक्षा न करूं, फिर वह अकेला ही क्यों न हो। हां, अगर पूरी सभा प्रार्थनामें कुरानकी आयतें पढ़ने पर अेतराज करे, तब मेरा रास्ता दूसरा होगा। तब मेरा यह फर्ज हो जायगा कि अपमानित होनेका खतरा अुठाकर भी मैं प्रार्थना करूं। अिसके साथ ही यह बात भी ध्यान देने लायक है कि अेक अेतराज करनेवालेके लिअे अितने ज्यादा लोगोंको निराश न किया जाय। अिसका अिलाज मामूली है। अगर ज्यादा तादादवाले लोग अपने आप पर काबू रखें और अकेले अेतराज करनेवालेके खिलाफ अपने दिलोंमें कोअी गुस्सा या बुरी भावना न रखें, तो प्रार्थना करना मेरा फर्ज हो जायगा। यह मुमकिन है कि अगर पूरी सभा अपने अिरादे और काममें अहिंसक हो जाय, तो अेतराज करनेवाला अपने मन पर काबू कर लेगा। मेरी रायमें अहिंसाका अैसा ही असर होता है। अिसके सिवा, मेरी यह भी राय है कि सत्य और अहिंसा थोड़ेसे बुद्धिमान लोगोंकी ही बपौती नहीं है। आचरणके सारे आम नियम, जिन्हें भगवानके हुक्मोंके रूपमें जाना जाता है, सीधे-सादे हैं। और अगर दिली अिच्छा हो तो अुन्हें आसानीसे समझा जा सकता है और अमलमें लाया जा सकता है। अिन्सानको सिर्फ अपने आलसकी वजहसे ही वे नियम मुश्किल जान पड़ते हैं। अिन्सान प्रगतिशील है। कुदरतमें अैसी कोअी चीज नहीं, जो हमेशा अेकसी या स्थिर बनी रहती हो। सिर्फ भगवान ही स्थिर है। क्योंकि वह जैसा कल था वैसा ही आज है और कल भी वैसा ही रहेगा, और फिर भी वह हमेशा क्रियाशील है। यहां हमें

भगवानके गुणोंकी चर्चा नहीं करनी है। हमें तो यह महसूस करना है कि हम हमेशा प्रगतिशील हैं। अिसलिअे मेरी राय है कि अगर अिन्सानको जिन्दा रहना है, तो अुसे ज्यादा ज्यादा सत्य और अहिंसाको अपनाते जाना होगा। व्यवहारके अिन दो बुनियादी नियमोंको ध्यानमें रखकर ही मुझे और आप लोगोंको काम करना और जीना है।

५०

३१–१०–’४७

आदर्श बरताव

गांधीजीकी प्रार्थना-सभामें दो व्यक्तियोंने फिर कुरानकी आयतें पढ़ने पर अेतराज किया। अुनमें से अेक व्यक्ति वही था, जिसने कल अेतराज किया था। दोनोंने अेतराज करते हुअे अपने पर पूरा काबू रखा। गांधीजीने सभासे पूछा कि अगर सभामें आये हुअे कअी सौ लोगोंमें से अेक या दो व्यक्ति अेतराज करते हैं और अिस तरह बचे हुअे लोगोंको निराश करते हैं, तो अुनकी वजहसे मेरा प्रार्थना न करना अुचित है या नहीं? सभ्यता तो अिसमें है कि जिन लोगोंको कुरानकी आयतें पढ़ने पर अेतराज हो, वे मेरी प्रार्थनामें हाजिर ही न हों। आप लोगोंके लिअे अिस रुकावटको टालनेका अेकमात्र रास्ता यह है, जैसा कि मैंने पिछले दिन बतलाया था, कि आप अेतराज करनेवालों पर नाराज न हों और न अुन्हें किसी तरहसे सतायें। पुलिससे भी मैं कहता हूं कि वह अेतराज करनेवालोंको न रोके।

गांधीजीके अिस तरह कहने पर सबने अेक आवाजसे कहा कि हम किसी तरह अुन लोगोंको नहीं सतायेंगे। अिसलिअे प्रार्थना हुअी। श्री दिलीपकुमार राय आज भी सभामें हाजिर थे। अुन्होंने ‘मन-मन्दिरमें प्रीति बसा ले’ भजन गाया।

प्रार्थनाके बाद बोलते हुअे गांधीजीने अेतराज करनेवालोंको अपने आप पर आदर्श काबू रखने और दूसरे सब लोगोंको पूरी शान्ति रखनेके लिअे धन्यवाद दिया।

मन-मन्दिर

श्री दिलीपकुमार राय द्वारा गाये गये भजनकी व्याख्या करते हुअे गांधीजीने कहा कि अिस भजनका राग मामूली होने पर भी काबिल गायकके सधे हुअे गलेसे निकलनेके कारण अुसमें अेक खास मिठास पैदा हो गअी है। भजनकी टेकमें भक्तके मनको मन्दिरकी अुपमा दी गअी है, जिसमें शुद्ध प्यार हमेशा बना रहता है और दिलको प्रकाशित किये रहता है। दिलमें प्रकाश होनेसे नजर साफ होती है। यह सक्रिय अहिंसा है। जिसका मन भगवानमें नहीं लगता, वह भटकता रहता है और अुसमें मन्दिर बननेका गुण नहीं आ पाता।

अमीर और गरीब

निराश्रितोंमें गरीब और अमीरके बीचकी चौड़ी खाअी अभी तक फैली हुअी है। मैंने दिल्लीकी तरह नोआखालीमें भी यह देखा कि अमीर लोग गरीबोंको लाचार और बेबस हालतमें छोड़कर दंगेवाले हिस्सोंसे भाग खड़े हुअे। लेकिन अैसा होना नहीं चाहिये। अमीर और साधनवाले लोगोंको अपने गरीब भाअियोंके साथ हमदर्दी रखनी चाहिये और आफतके समय अुन्हें कभी न छोड़ना चाहिये। अुन सबको या तो अेक साथ तैरकर मुसीबतका समन्दर पार करना चाहिये या अेक साथ डूब मरना चाहिये। मुसीबतके समय अूंच-नीच या गरीब-अमीरका सारा भेद मिट जाना चाहिये। तभी हमारी शरणार्थी-छावनियां सफाअी और ठोस सहकारका नमूना बन जायंगी।

जबरन धर्म बदलना बुरा है

मुझसे कुछ मुसलमान दोस्त मिलने आये थे। अुन्होंने यह शिकायत की कि सैकड़ों मुसलमानोंको जबरन हिन्दू और सिक्ख बना लिया गया है। अिस तरहका धर्म-परिवर्तन बहुत बुरी चीज है। किसी न चाहनेवाले आदमी पर कोअी धर्म जबरन लादा नहीं जा सकता। नामधारी हिन्दू या सिक्ख बनाये जानेवाले हर मुसलमानको यह विश्वास रखना चाहिये कि अुसके धर्म-परिवर्तनको कानूनसे सही नहीं माना जायगा, और हर अैसा मुसलमान अपना पहला धर्म पालनेके लिअे

आजाद है। यही बात अुन हिन्दुओं और सिक्खों पर भी लागू होती है, जिन्हें जबरन मुसलमान बना लिया गया है। अगर अैसा नहीं हुआ तो तीनों धर्म मिट जायंगे। यह देखना लोगोंका फर्ज है कि अल्पमतके लोग बहुमतवालोंसे डरे बिना शान्ति और सलामतीसे रहें। अगर मुसलमान यूनियनसे पाकिस्तान जाना चाहते हैं तो अुन्हें जाने दिया जाय। लेकिन जो मुसलमान हिन्दुस्तानी संघमें रहना चाहते हैं, अुनकी पूरी पूरी हिफाजत की जानी चाहिये। मैं हर हालतमें दबाव या जबरदस्तीके खिलाफ हूं। अिसलिअे मेरी यह बड़ी अिच्छा है कि हमारे यूनियनसे जानेवाले लोग अिज्जत और सलामतीके साथ अपने अपने घरोंको लौट आवें। मैं तो आजकी गैर-कुदरती हालतको हमेशा देखते रहनेके लिअे जिन्दा रहना पसन्द नहीं करूंगा।

५१

१-११-'४७

भगवानका घर

कल जिन भाअीने कुरानकी आयत पढ़ने पर अेतराज अुठाया था, अुन्होंने आज भी प्रार्थना-सभामें अुसका विरोध किया। गांधीजीने कहा कि अिस बातसे मुझे खुशी हुअी कि अेतराज अुठानेवाले भाअीने बड़ी सभ्यतासे कुरानकी आयत पढ़नेका विरोध किया। आजकी बड़ी भारी सभाके बाकीके लोगोंने फिर जाहिर किया कि अुनके मनमें विरोध करनेवाले भाअीके खिलाफ कोअी बैर नहीं है और वे अुन्हें किसी तरहका नुकसान नहीं पहुंचायेंगे। अिसलिअे हमेशाकी तरह प्रार्थना की गअी। गांधीजीने कहा कि श्री दिलीपकुमारने आज जो भजन गाया अुसकी पहली लाअिनका यह मतलब है कि भगवानके भक्तोंका देश वह है, जहां न दुःख है और न रंज है। मेरी रायमें अिसके दो अर्थ हैं। अेक यह कि वे अुस देश यानी हिन्दुस्तानके हैं, जहां न दुःख है न रंज। लेकिन मुझे अैसे किसी समयकी याद नहीं आती जब हिन्दुस्तानमें दुःख या रंजका नाम न रहा हो। अिसलिअे पहला अर्थ कविकी दिली

अिच्छाको ही जाहिर करता है। दूसरे अर्थका सम्बन्ध मनुष्यकी आत्मा और अुसके घर, शरीरसे है। यह आत्मा अुस शरीरमें रहती है जो गीताकी भाषामें सच्चे धर्मका घर है, न कि थोड़ी देर टिकनेवाले काम, क्रोध वगैरा भावोंका। लेकिन अिस कोशिशमें तभी सफलता मिल सकती है, जब कि घरका मालिक काम, क्रोध, लोभ, मोह वगैरा छह नामी दुश्मनोंसे आजाद हो। हर आदमी कोशिश करने पर अिस आनन्दमयी स्थितिको पा सकता है। और अगर काफी बड़े पमाने पर अैसा हुआ, तो हिन्दुस्तानके बारेमें कविका सपना जल्दी ही सच साबित हो सकता है। आज हमारा देश कितना दुःखी है! कुरुक्षेत्र छावनीसे आनेवाली अेक महिला डॉक्टरसे मेरी बात हुअी थी। वहां शरणार्थियोंकी बड़ी बुरी हालत है। छावनीमें और भी ज्यादा डॉक्टरों, नर्सों, दवाओं, खेमों और गरम कपड़ोंकी जरूरत है। बहुतसे लोगोंके पास बदलनेके लिअे दूसरे कपड़े तक नहीं हैं। छोटे छोटे बच्चोंकी मातायें अुन्हें बड़ी मुश्किलसे सरदीसे बचा पाती हैं।

शेख अब्दुल्ला

आप अपने मनमें काश्मीरका ध्यान कीजिये और अपनी आंखोंके सामने वहांके लोगोंकी तसवीर खड़ी कीजिये। जब काश्मीर जाते हुअे हवाअी जहाजोंकी आवाज मैंने आसमानमें सुनी, तो मेरा दिल वहांके प्रधानमंत्री शेख अब्दुल्ला और अुनकी प्रजाकी तरफ दौड़ गया। मैं तो सबका दोस्त हूं और आदमी आदमीके बीच कोअी भेद नहीं करता। मैं गैर-मुस्लिम और मुस्लिम दोनोंका अेकसा नुमाअिन्दा हूं। जो लोग डरकर काश्मीरसे भाग रहे हैं अुन्हें अैसा नहीं करना चाहिये। अुन्हें बहादुर और निडर बनना सीखना चाहिये और अपने घरोंकी रक्षा करनेमें जान देनेको भी तैयार रहना चाहिये। यह बात जवान, बूढ़े या औरत-मर्द सब पर अेकसी लागू होती है। अगर काश्मीरकी सुन्दर धरतीको बचानेमें काश्मीरकी सारी फौज और सारे लोग अपना फर्ज अदा करते हुअे मर जायं, तो मुझे कोअी दुःख नहीं होगा। अफरीदी और दूसरे हमलावर समझदार बनकर काश्मीरको अपना काम खुद करनेके लिअे छोड़ दें तो कितना अच्छा हो!

अन्तमें गांधीजीने कहा, अगर कुरुक्षेत्रके लोग अितनी भयंकर मुसीबतें सह रहे हैं, तो मुझे विश्वास है कि पाकिस्तानके शरणार्थी भी कम दुःखी नहीं होंगे। यह नादानीभरा दुःख-दर्द आजके फैले हुअे पागलपनके लिअे बहुत बड़ी कीमत है। अिसलिअे आप सब अेक बात अपने दिलमें बैठा लें कि अिस मुसीबतसे छुटकारा पानेमें आप सबसे अच्छी मदद यह कर सकते हैं कि अपने दिलोंसे सारा बैर निकाल दें और हर मुसलमान और दूसरी जातिके लोगोंको अपने दोस्त समझें।

५२

२–११–'४७

पूरा सहयोग जरूरी है

श्री ब्रजराजकृष्णने मुझे बताया है कि हमेशासे आजकी सभामें बहुत ज्यादा लोग आये हैं और कुरानकी आयतका विरोध करनेवाले लगभग दस भाअी हैं। अुनमें हमारे कलके दोस्त भी हैं। लेकिन अुन लोगोंने अपने पर पूरा काबू रखकर बड़ी सभ्यतासे अपना विरोध जताया है। मुझसे यह भी कहा गया है कि अिससे भी ज्यादा बड़ी तादादमें लोगोंने दबी जबानसे अपना विरोध जताया है। अिसलिअे प्रार्थनाके पहले मैं सभामें कुछ कहूंगा। मुझे अिस बातकी खुशी है कि लोगोंने काफी खुलकर अपना विरोध जाहिर किया है। मैं यह सोचना पसन्द नहीं करता कि लोग यहां भगवानकी अुपासनामें शामिल होनेके लिअे नहीं, बल्कि मेरे महात्मा कहे जानेके कारण या देशकी मेरी अितनी लम्बी सेवाके कारण मुझे देखने या मेरी बातें सुननेके लिअे आते हैं। प्रार्थना तो अपने आपमें सम्पूर्ण है। अुसका कोअी हिस्सा छोड़ा नहीं जा सकता। भगवानको कअी नामोंसे पहचाना जाता है। गहरी छानबीन की जाय तो अन्तमें पता चलेगा कि दुनियामें जितने आदमी हैं अुतने ही भगवानके नाम हैं। यह ठीक कहा गया है

कि जानवर, परिन्दे और पत्थर भी भगवानकी पूजा करते हैं। आपको भजनावलिमें अेक मुसलमान सन्तकी अैसी कविता मिलेगी, जिसमें कहा गया है कि परिन्दोंका सुबह और शामका गाना यह बताता है कि वे अपने बनानेवाले भगवानके गुण गाते ह। प्रार्थनाके किसी हिस्सेका अिसलिअे विरोध करना कि वह कुरान या दूसरे किसी धर्मग्रन्थसे चुना गया है नादानी है। थोड़ेसे मुसलमानोंमें (फिर अुनकी तादाद कितनी भी क्यों न हो) भले कुछ भी बुराअियां रही हों, लेकिन यह विरोध सारी जाति पर लागू नहीं हो सकता — मुहम्मद साहब या दूसरे किसी पैगम्बर, या अुनके सन्देश पर तो बिलकुल नहीं। मैंने पूरा कुरान पढ़ा है। अुसे पढ़कर मैंने कुछ पाया ही है, कुछ खोया नहीं। मुझे लगता है कि दुनियाके अलग अलग धर्मोंके ग्रन्थ पढ़नेसे मैं ज्यादा अच्छा हिन्दू बना हूं। मैं जानता हूं कि कुरानकी दुश्मनीभरी टीका करनेवाले लोग यहां हैं। बम्बअीके अेक दोस्तने, जिनके बहुतसे मुस्लिम दोस्त हैं, अेक पहेली मेरे सामने रखी है: 'काफिरोंके बारेमें पैगम्बर साहबकी क्या सीख है? क्या कुरानके मुताबिक हिन्दू काफिर नहीं हैं?' मैं तो बहुत पहलेसे अिस नतीजे पर पहुंच चुका हूं कि कुरानके मुताबिक हिन्दू काफिर नहीं हैं। लेकिन अिस बारेमें मैंने अपने मुसलमान दोस्तोंसे बात की है। अपनी जानकारीके आधार पर अुन्होंने मुझे अिसका विश्वास दिलाया कि कुरानमें काफिरका अर्थ है अीश्वरमें विश्वास न रखनेवाला। अुन्होंने मुझसे कहा कि हिन्दू काफिर नहीं हैं, क्योंकि वे अेक अीश्वरमें विश्वास करते हैं। अगर विरोधी टीकाकारोंकी बात आपने मानी, तो क्या आप कुरान और पैगम्बर साहबकी अुसी तरह निन्दा करेंगे, जिस तरह आप भगवान कृष्णकी निन्दा करेंगे, जिन्हें कुछ लोगोंने सोलह हजार गोपियां रखनेवाला लम्पट और विलासी पुरुष बताया है? मैं अपने टीकाकारोंको यह कहकर चुप कर दूंगा कि मेरे कृष्ण पवित्र और बेदाग हैं। मैं लम्पट और दुराचारीके सामने अपना सिर नहीं झुका सकता। आप रोज मेरे साथ जिस भगवानकी आराधना और प्रार्थना करते हैं वह सबमें मौजूद है और सर्व-शक्तिमान है। अिसलिअे आप न तो किसीसे

दुश्मनी कर सकते हैं और न किसीसे डर सकते है, क्योंकि भगवान हर समय आपमें और आपके साथ मौजूद है। सबके साथ मिलकर की जानेवाली प्रार्थना अैसी ही होती है। अिसलिअे अगर आप सब पूरे दिलसे और बिना किसी शर्तके प्रार्थनामें शामिल नहीं हो सकते, तो मैं भगवानकी अैसी अुपासना न करना ही ज्यादा पसन्द करूंगा। अगर आप अिसमें पूरे दिलसे शामिल हो सकें, तो आपको मालूम होगा कि अपने आसपास घिरे हुअे अंधेरेको दूर करनेकी ताकत आपमें दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। अिस बारेमें आप लोग निडर बनकर साफ शब्दोंमें अपनी राय जाहिर करें।

अिस पर लोगोंने बड़ी भावुकतासे कहा, हम चाहते हैं कि प्रार्थना हो और अगर कोअी विरोध करेंगे तो हम अपने मनमें अुनके खिलाफ किसी तरहका बैर या गुस्सा नहीं रखेंगे। अिस पर हमेशाकी तरह प्रार्थना की गअी। गुरुदेवकी पोती नन्दिता कृष्णा कृपालानीने शामका भजन गाया।

समयका तकाजा

काश्मीरकी मुसीबतके बारेमें बोलते हुअे गांधीजीने कहा, हिन्दुस्तानी संघ ज्यादा फौज और दूसरी जरूरी मदद काश्मीरके लिअे भेज रहा है। सरकारके पास कोअी हवाअी जहाज नहीं था, लेकिन यह सुनकर मुझे खुशी हुअी कि खानगी कम्पनियोंने अपने हवाअी जहाज सरकारको सौंप दिये हैं। आज समय व्यवस्थित फौज व व्यवस्थित सरकारके साथ है और लुटेरों व हमलावरोंके खिलाफ है।

आजाद हिन्द फौजके अफसर

लेकिन मुझे यह जानकर दुःख हुआ कि काश्मीरमें हमलावरोंके नेता अुस आजाद हिन्द फौजके दो भूतपूर्व अफसर हैं, जो स्व० सुभाष बोसकी काबिल नेतागिरीमें बहादुरीसे लड़ी थी। अुस फौजमें हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख और दूसरे लोग थे। वे अपना अपना धर्म पालते थे, लेकिन अुनमें जाति या धर्मके नाम पर कोअी भेद नहीं किया जाता था। वे सब आपसमें दोस्ती और भाअीचारेके बन्धनसे जुड़े थे। अुन्हें हिन्दुस्तानी होनेका अभिमान था। मैं अुनके छूटनेके बाद (अगर वे

सचमुच आजाद हिन्द फौजके सिपाही थे) दिल्लीके लाल किलेमें और बाहर अुनसे मिला था। मैं यह नहीं समझ सकता कि अुन्होंने हमलावरोंकी नेतागिरी क्यों की और गांवोंको जलाने व लूटनेमें और बेगुनाह औरतों और मर्दोंका खून करनेमें क्यों हिस्सा लिया? वे न करने लायक बातें करनेका बढ़ावा देकर अफरीदियों और दूसरे कबाअिलियोंको नुकसान पहुंचा रहे हैं। अगर मैं अुनकी जगह होता तो कबाअिलियोंको अिस गलत कामसे रोकता। अगर अुनका यह विचार है कि शेख अब्दुल्ला अिस्लाम या हिन्दुस्तानको नुकसान पहुंचा रहे हैं, तो वे अुनसे मिल सकते हैं। मुझे आशा है कि मेरी अपील अुन अफसरों और कबाअिलियों तक पहुंचेगी और वे अपना यह गलत काम रोकेंगे।

पाकिस्तान बढ़ावा दे रहा है

मैं अिस नतीजे पर पहुंचे बिना नहीं रह सकता कि पाकिस्तान सरकार सीधे या टेढ़े रूपमें काश्मीरके अिस हमलेको बढ़ावा दे रही है। कहा जाता है कि सरहदी सूबेके बड़े वजीरने खुले आम अिस हमलेको बढ़ावा दिया है और दूसरे मुस्लिम राष्ट्रोंसे मददकी अपील भी की है। अिसके अलावा, मैंने अखबारोंमें पढ़ा है कि पण्डित नेहरूकी सरकार पर यह अिलजाम लगाया गया है कि काश्मीरको मदद भेजकर अुसने पाकिस्तानके साथ धोखा किया है, और यह कि काश्मीरको हिन्दुस्तानी संघमें जोड़नेकी कुछ समयसे साजिश चल रही थी। मुझे यह जानकर ताज्जुब होता है कि पाकिस्तानके अेक जिम्मेदार वजीरने हिन्दुस्तानी संघकी सरकारके खिलाफ अैसे असावधानी भरे अिलजाम लगाये हैं। मैं काश्मीरके बारेमें अिसलिअे बोला हूं कि मुझे दोस्तोंसे जो अच्छे समाचार मिले हैं अुन्हें मैं आपको सुनाना चाहता हूं। अुन समाचारोंका कायदे आजमके अिस अैलानसे कोअी मेल नहीं बैठता कि पाकिस्तानका अेक दुश्मन है — मेरे खयालमें 'अेक दुश्मन' से अुनका मतलब हिन्दुस्तानी संघसे है। कराचीके अेक हिन्दू दोस्त और लाहौरके दूसरे हिन्दू दोस्त मुझसे मिले थे। दोनोंने मुझसे यह कहा कि कुछ दिन पहलेके बनिस्बत आज वहांकी हालत बेहतर है और वह दिनोंदिन बेहतर होती जा रही है। अुन दोस्तोंने मुझसे यह भी कहा कि अुन्होंने कमसे

कम अेक मुसलमान परिवार अैसा देखा, जिसने अपने अेक सिक्ख दोस्तको आसरा दिया और अेक कमरा अलग कर दिया, जहां वे ग्रन्थसाहबको पूरी अिज्जतसे रख सकें। मुझे बताया गया कि हिन्दुओं और सिक्खों द्वारा मुसलमानोंको आसरा देनेकी और मुसलमानों द्वारा हिन्दू-सिक्खोंको आसरा देनेकी कअी मिसालें दी जा सकती हैं। मेरे पास कुछ मुसलमान दोस्त भी आते रहते हैं, जो मेरे साथ आबादीकी अितने बड़े पैमाने पर होनेवाली गुनाहभरी अदला-बदलीकी निन्दा करते हैं। ये दोस्त मुझसे कहते हैं कि जिस तरह यूनियनके हिन्दू और सिक्ख शरणार्थी बड़ी बड़ी मुसीबतें झेल रहे हैं, अुसी तरह पाकिस्तानके मुस्लिम शरणार्थी भी बड़ी बड़ी तकलीफें अुठा रहे हैं। कोअी भी सरकार घरोंसे निकाले हुअे और अपने अूपर बोझ बने हुअे लाखों अिन्सानोंके खाने, पीने, रहने वगैराका पूरा पूरा अिन्तजाम नहीं कर सकती। यह पानीकी जबरदस्त बाढ़के समान है। वे दोस्त मुझसे पूछते हैं कि क्या यह पागलपनभरी अदला-बदली किसी तरह रोकी नहीं जा सकती? मुझे अिसमें कोअी शक नहीं कि अगर अेक-दूसरे पर शक करना और अिलजाम लगाना (जो मेरी रायमें बेबुनियाद हैं) अीमानदारीके साथ बिलकुल बन्द कर दिया जाय तो यह रुक सकती है। आप सब मेरे साथ भगवानसे प्रार्थना कीजिये कि वह अिस दुःखी देशको समझ और अकल दे। मैं अुन विरोध करनेवाले भाअियोंको बधाअी देना चाहता हूं, जिन्होंने समझदारीसे अपने पर काबू रखकर बिना किसी दस्तंदाजीके शान्तिसे प्रार्थना होने दी।

३-११-'४७

साम्प्रदायिकताका जहर

अगर अेक जहरसे दूसरा जहर मिल जाय, तो अिस बातका निश्चय कौन करेगा कि पहले कौनसा जहर मौजूद था और बादमें कौनसा मिला? और अगर अिस बातका निश्चय हो भी जाय, तो अिससे फायदा क्या होगा? फिर भी, हम यह जानते हैं कि सारे पश्चिम पाकिस्तानमें यह जहर फैल गया है और वहांकी हुकूमतने अिसे अभी तक जहर नहीं माना है। जहां तक हिन्दुस्तानी संघका सम्बन्ध है, यह जहर थोड़े हिस्सेमें ही फैला है। भगवान करे वह संघके दूसरे हिस्सोंमें न फैले और काबूमें रहे। तब हम अिस बातकी आशा कर सकेंगे कि समय आने पर वह जल्दी ही दोनों हिस्सोंसे निकाल दिया जायगा।

अनाजका कण्ट्रोल हटा दिया जाय

डॉ० राजेन्द्रप्रसादने सूबोंके प्रधानमंत्रियों या अुनके प्रतिनिधियों और दूसरे जानकार लोगोंकी मीटिंग अिसलिअे बुलाअी है कि वे लोग अुन्हें अनाजके कण्ट्रोलके बारेमें मदद और सलाह दे सकें। मुझे लगता है कि आज शामको मैं अिसी बहुत जरूरी विषय पर बोलूं। अिन दिनों मैंने जो कुछ सुना है अुससे मैं अपनी शुरूसे ही बनाअी हुअी अिस रायसे तिलभर भी नहीं हटा हूं कि कण्ट्रोल पूरी तरह जल्दीसे जल्दी हटा दिये जायं। अगर वे रखे भी जायं तो छह माहसे ज्यादा तो हरगिज न रखे जायं। अेक दिन भी अैसा नहीं जाता, जब मेरे पास अिस बारेमें खत और तार न आते हों। अुनमें से कुछ तो बहुत महत्त्वके लोगोंके होते हैं। सभीमें अिस बात पर जोर दिया जाता है कि अनाज और कपड़ेका कण्ट्रोल हटा दिया जाय। मैं दूसरे यानी कपड़ेके कण्ट्रोलको फिलहाल छोड़ देता हूं।

कण्ट्रोल बुराअी पैदा करता है

कण्ट्रोलसे धोखेबाजी बढ़ती है, सत्यका गला घोंटा जाता है, काला बाजार खूब बढ़ता है और चीजोंकी बनावटी कमी बनी रहती है। सबसे

बड़ी बात तो यह है कि कण्ट्रोल लोगोंको कमजोर बनाता है, अुनके काम करनेके अुत्साहको खतम कर देता है। अिससे लोग अपनी जरूरतें खुद पूरी करनेकी सीखको भूल जाते हैं, जिसे वे अेक पीढ़ीसे सीखते आ रहे हैं। कण्ट्रोल अुन्हें हमेशा दूसरोंका मुंह ताकना सिखाता है। अिस दुःखभरी बातसे बढ़कर अगर कोअी दूसरी बात हो सकती है, तो वह है बड़े पैमाने पर चलनेवाला आजका भाअी-भाअीका कतल और लाखोंकी आबादीकी अदला-बदली। अिस अदला-बदलीसे लोग बिला जरूरत मरते हैं, अुन्हें भूखों मरना पड़ता है, रहनेको ठीक घर नहीं मिलते और खासकर आनेवाले तेज जाड़ेसे बचनेके लिअे पहनने-ओढ़नेको ठीक कपड़े मयस्सर नहीं होते। यह दूसरी दुःखभरी बात सचमुच ज्यादा बड़ी दिखाअी देती है। लेकिन हम पहली यानी कण्ट्रोलकी बातको अिसलिअे नहीं भुला सकते कि वह अितनी बढ़ी-चढ़ी नहीं दिखाअी देती।

पिछली लड़ाअीसे हमें जो बुरी विरासतें मिलीं, खुराकका कण्ट्रोल अुन्हींमें से अेक है। अुस समय कण्ट्रोल शायद जरूरी था, क्योंकि बहुत बड़ी मात्रामें अनाज और दूसरी खानेकी चीजें हिन्दुस्तानसे बाहर भेजी जाती थीं। अिस गैर-कुदरती निर्यातका यह नतीजा लाजमी था कि देशमें अनाजकी तंगी पैदा हो। अिसलिअे बहुतसी बुराअियोंके रहते भी राशनिंग जारी करना पड़ा। लेकिन अब हम चाहें तो अनाजका निर्यात बन्द कर सकते हैं। अगर हम अनाजके मामलेमें हिन्दुस्तानके लिअे बाहरी मददकी अुम्मीद न करें, तो हम दुनियाके भूखों मरनेवाले देशोंकी मदद कर सकेंगे।

मैंने अपने दो पीढ़ियोंके लम्बे जीवनमें बहुतसे कुदरती अकाल देखे हैं, लेकिन मुझे याद नहीं आता कि कभी राशनिंगका खयाल भी किया गया हो।

भगवानकी दया है कि अिस साल बारिश अच्छी हुअी है। अिसलिअे देशमें खुराककी सच्ची कमी नहीं है। हिन्दुस्तानके गांवोंमें काफी अनाज, दालें और तेलके बीज हैं। कीमतों पर जो बनावटी कण्ट्रोल रखा जाता है, अुसे अनाज पैदा करनेवाले किसान नहीं समझते — वे समझ भी नहीं सकते। अिसलिअे वे अपना अनाज, जिसकी कीमत अुन्हें

खुले बाजारमें ज्यादा मिल सकती है, कण्ट्रोलकी अितनी कम कीमतों पर खुशीसे बेचना पसन्द नहीं करते। अिस सचाअीको आज सब कोअी जानते हैं। अनाजकी तंगी साबित करनेके लिअे न तो लम्बे-चौड़े आंकड़े अिकट्ठे करनेकी जरूरत है और न बड़े-बड़े लेख और रिपोर्टें निकालना जरूरी है। हम आशा रखें कि कोअी जरूरतसे ज्यादा बढ़ी हुअी आबादीका भूत दिखाकर हमें डरायेगा नहीं।

अनुभवी लोगोंकी सलाह

हमारे मंत्री जनताके हैं और जनतामें से हैं। अुन्हें अिस बातका घमण्ड नहीं करना चाहिये कि अुनका ज्ञान अुन अनुभवी लोगोंसे ज्यादा है, जो मंत्रियोंकी कुर्सियों पर तो नहीं बैठे हैं, लेकिन जिनका यह पक्का विश्वास है कि कण्ट्रोल जितनी जल्दी हटें अुतना ही फायदा होगा। अेक वैद्यने लिखा है कि अनाजके कण्ट्रोलने अुन लोगोंके लिअे, जो राशनके अनाज पर निर्भर करते हैं, खाने लायक अनाज और दाल पाना नामुमकिन बना दिया है। और, अिसलिअे सड़ा-गला अनाज खानेवाले लोग गैर-जरूरी तौर पर बीमारियोंके शिकार बनते हैं।

लोकशाही और विश्वास

आज जिन गोदामोंमें कण्ट्रोलका सड़ा-गला अनाज बेचा जाता है, अुन्हींमें सरकार आसानीसे अच्छा अनाज बेच सकती है, जो वह खुले बाजारमें खरीदेगी। अैसा करनेसे कीमतें अपने-आप ठीक हो जायेंगी और जो अनाज, दालें या तेलके बीज लोगोंके घरोंमें छिपे पड़े हैं, वे सब बाहर निकल आयेंगे। क्या सरकार अनाज बेचने और पैदा करनेवालोंका विश्वास नहीं करेगी? अगर लोगोंको कानून-कायदेकी रस्सीसे बांधकर अीमानदार रहना सिखाया जायगा तो लोकशाही टूट पड़ेगी। लोकशाही विश्वास पर ही कायम रह सकती है। अगर लोग आलसके कारण या अेक-दूसरेको धोखा देनेके कारण मरते हैं, तो अुनकी मौतका स्वागत किया जाय। फिर बचे हुअे लोग आलस, काहिली और बेरहमीभरी खुदगरजीके पापको नहीं दोहरायेंगे।

४-११-'४७

गुस्सेकी अुपज

प्रार्थना शुरू करनेके पहले गांधीजीने कहा, आज तो सिर्फ हमारे पुराने सभ्य मित्रने ही कुरानकी आयत पढ़ने पर अेतराज अुठाया है। अिसलिअे मैं पंजाबी हिन्दू शरणार्थियोंके अेक दर्दभरे खतकी चर्चा करूंगा। अुन्होंने पंजाबमें बहुत कुछ सहा है। कुरानकी आयत पढ़नेका अुन्होंने विरोध किया है। मैं नहीं जानता कि वे भाअी यहां मौजूद हैं या नहीं। वे यहां हों या न हों, लेकिन मैं अुस खतकी अुपेक्षा नहीं कर सकता। वह गहरे दर्दसे लिखा गया है। अुसमें काफी अच्छी दलीलें दी गअी हैं। लेकिन वह अज्ञानसे भरा हुआ है, जो गुस्सेकी अुपज है। अुसकी हर लाअिनमें गुस्सा भरा हुआ है। आजकल करीब-करीब मेरा सारा समय हिन्दू या सिक्ख शरणार्थियों या दिल्लीके दुःखी मुसलमानोंकी दर्दभरी कहानियां सुननेमें ही जाता है। मेरी आत्माको भी अुतना ही दुःख और अुतनी ही चोट पहुंचती है। लेकिन अगर मैं रोने लगूं और अुदास बन जाअूं, तो वह अहिंसाका सच्चा रूप नहीं होगा। अगर मैं अहिंसासे अितना कोमल बन जाअूं, तो दिन-रात रोता ही रहूं और मुझे अीश्वरकी अुपासना करने, खाने-पीने या सोनेका भी समय न मिले। लेकिन मैंने तो बचपनसे ही अहिंसक होनेके नाते दुःखोंको देख-सुनकर रोनेकी नहीं, बल्कि दिलको कठोर बना लेनेकी आदत डाल ली है, ताकि मैं दुःखोंका मुकाबला कर सकूं। क्या पुराने ऋषि-मुनियोंने हमें यह नहीं बताया है कि जो आदमी अहिंसाका पुजारी है, अुसका दिल फूलसे भी कोमल और पत्थरसे भी कठोर होना चाहिये। मैंने अिस अुपदेशके मुताबिक जीनेकी कोशिश की है। अिसलिअे जब अिस खतकी शिकायतों जैसी शिकायतें मेरे पास आती हैं, या जब मैं अपने मुलाकातियोंके मुंहसे गुस्से और रंजसे भरी कहानियां सुनता हूं, तो मैं अपने दिलको कड़ा बना लेता हूं। सिर्फ अिसी तरह मैं मौजूदा सवालोंका सामना कर सकता हूं। वह खत अुर्दू

लिपिमें लिखा हुआ है। अिसलिअे मैंने श्री ब्रजकृष्णजीसे कहा कि अुस खतकी खास-खास बातें मुझे लिख दें।

आधा सच बनाम झूठ

खतमें पहला अिलजाम मुझ पर अपना वचन तोड़नेका लगाया गया है। अुन्होंने लिखा है, 'क्या आपने यह नहीं कहा है कि आपकी प्रार्थना-सभामें अगर अेक भी आदमी कुरानकी आयत पढ़ने पर अेतराज अुठायेगा, तो आप अुसका मान रखेंगे और अुस शामको प्रार्थना नहीं करेंगे?' यह आधा सच है, और पूरे झूठसे ज्यादा खतरनाक है। जब मैंने पहले-पहल अेतराज अुठाने पर अपनी प्रार्थना बन्द की थी, तब मैंने यह जाहिर किया था कि मैं प्रार्थना अिस डरसे बन्द करता हूं कि सभाके अितनी बड़ी तादादवाले लोग विरोध करनेवाले पर गुस्सा होकर अुसके साथ मार-पीट तक कर सकते हैं। यह कअी महीने पहलेकी बात है। तबसे लोगोंने अपने पर काबू रखनेकी कला सीख ली है। और, जब लोगोंने मुझे अिस बातका वचन दिया कि विरोध करनेवालोंके खिलाफ न तो वे अपने मनमें गुस्सा रखेंगे और न किसी तरहका बैर, तो मैंने फिर आम प्रार्थना करनेकी बात मान ली। और जैसा कि मैं जानता हूं, अिसका नतीजा अच्छा ही हुआ है। विरोध करनेवालोंका बरताव बिलकुल सभ्यताका होता है और अपना विरोध दर्ज करानेके सिवा वे प्रार्थनामें किसी तरहकी रुकावट नहीं डालते। अिसलिअे मैं आशा करता हूं कि खत लिखनेवाले भाअी यह देखेंगे कि मैंने अपना वचन भंग नहीं किया है, और विरोध करने पर भी प्रार्थना चालू रखनेका नतीजा अभी तक बिलकुल अच्छा ही रहा है। मैं आप लोगोंको यकीन दिलाता हूं कि जहां तक मैं अपने बारेमें जानता हूं, मैंने जन-सेवकके नाते अपनी अितनी लम्बी जिन्दगीमें दिया हुआ वचन तोड़नेका कभी अपराध नहीं किया है।

खत लिखनेवाले भाअीने मुझ पर दूसरा यह अिलजाम लगाया है कि 'जब आप कुरानकी आयतें पढ़ते हैं और यह भी कहते हैं कि सब धर्म समान हैं, तब आप जपजी और बाअिबलमें से क्यों नहीं पढ़ते?' अिस बातसे भी लिखनेवाले भाअीका अज्ञान जाहिर होता है।

वे मेरे अुस बयानको नहीं जानते, जिसमें मैंने बताया था कि पूरी भजनावलि किस तरह तैयार हुअी। आश्रम-भजनावलिमें बाअिबल और ग्रन्थसाहबमें से भी काफी भजन लिये गये हैं।

खुशहाल निराश्रित

अुन भाअीकी तीसरी शिकायत यह है कि 'आपके बड़े-बड़े कांग्रेसी नेता पश्चिम पंजाब या पश्चिम पाकिस्तानके दूसरे किसी हिस्सेको छोड़कर यहां आये हैं। लेकिन यूनियनमें वे शरणार्थियोंकी तरह रहकर दूसरे शरणार्थियोंकी कठिनाअियों और मुसीबतोंमें साथ नहीं देते। पाकिस्तानमें अुनके पास जैसी हवेलियां थीं, अुनसे ज्यादा अच्छी हवेलियां अुन्होंने यहां ले ली हैं। और अुनमें वे मौजसे रहते हैं। ये कांग्रेसी नेता अुन शरणार्थियोंसे बिलकुल अलग रहते हैं, जिनके पास न तो रहनेके मकान हैं, न सर्दीसे बचनेके लिअे गरम कपड़े। गरम कपड़ोंकी बात तो दूर रही, बहुतोंके पास बदलनेके लिअे दूसरे कपड़े तक नहीं हैं। न अुन्हें अच्छा खाना मयस्सर होता है।' अगर यह शिकायत सच है, तो यह हालत शर्मनाक है। मैंने तो अपनी प्रार्थना-सभाओंमें साफ शब्दोंमें अुन धनी शरणार्थियोंकी निन्दा की है, जो गरीब शरणार्थियोंके साथ मुसीबतें अुठानेके बजाय अुनका साथ छोड़कर मौज मारते हैं। यह धर्म नहीं, अधर्म है। धनियोंको अपने गरीब भाअियोंके सुख-दुःखमें साथ देना चाहिये।

दिल्लीमें मेरा फर्ज

अिसके बाद अुन भाअीने मुझे यह ताना मारा है कि 'आप पाकिस्तान जानेका अिरादा रखते थे, लेकिन अभी तक गये नहीं। यहां दिल्लीमें आपका क्या काम है? आप दुःखी हिन्दुओं और सिक्खोंकी मदद करनेके लिअे पाकिस्तान जानेके बजाय अपने मुसलमान दोस्तोंकी मदद करना क्यों ज्यादा पसन्द करते हैं?' लेकिन शिकायत करनेवाले भाअी यह नहीं जानते कि दिल्लीके अपने फर्जको भुलाकर मैं पाकिस्तानके हिन्दुओं और सिक्खोंके दुःखोंको कम करनेकी आशासे पाकिस्तान नहीं जा सकता। मैं कबूल करता हूं कि मैं मुसलमानों और दूसरोंका दोस्त हूं, क्योंकि मैं हिन्दुओं और सिक्खोंका भी वैसा ही दोस्त हूं। अगर

मैं किसी आदमीकी सेवा करता हूं, तो अिसी भावनासे प्रेरित होकर करता हूं कि वह सिर्फ हिन्दुस्तानका या किसी अेक धर्मका ही नहीं, बल्कि सारी मनुष्य-जातिका अंग है। दिल्लीके हिन्दू और सिक्ख शरणार्थियों और दूसरोंको यहांके मुसलमानोंके दोस्त बनकर यह साबित कर दिखाना है कि दिल्लीमें मेरे रहनेकी कोअी जरूरत नहीं है। तब मैं अिस पूरे विश्वासके साथ पाकिस्तानकी तरफ दौड़ जाअूंगा कि मेरा वहांका दौरा बेकार नहीं जायगा।

दूसरे अिलजामोंका जवाब

शिकायत करनेवाले भाअीने कस्तूरबा-फण्डको भी नहीं छोड़ा। अुन्होंने पूछा है कि कस्तूरबा-फण्डका कैसे अिस्तेमाल किया जा रहा है और अुसे शरणार्थियोंको राहत पहुंचानेके काममें क्यों नहीं खर्च किया जा सकता? पहली बात तो यह है कि वह फण्ड अेक खास मकसदसे तब अिकट्ठा किया गया था जब मैं जेलमें था। यानी वह हिन्दुस्तानके गांवोंकी औरतों और बच्चोंकी सेवाके लिअे जमा किया गया था। अुसका अेक ट्रस्टी-मण्डल है। हमेशा सावधान रहनेवाले ठक्कर बापा अुसके सेक्रेटरी हैं। और अुसका पाअी-पाअीका हिसाब रखा जाता है, जिसे जनता देख सकती है। अिसलिअे लिखनेवाले भाअीके सुझावके मुताबिक वह फण्ड शरणार्थियोंकी सेवामें नहीं खर्च किया जा सकता। और अैसा करनेकी जरूरत भी नहीं है। शरणार्थियोंकी राहतके लिअे अुदारतासे पैसा दिया जा रहा है। और सब जानते हैं कि मेरी कम्बलोंकी अपीलका जनताने कितनी अुदारतासे स्वागत किया है। सरदार पटेलने भी अिस बारेमें अेक खास अपील निकाली है। लोगोंने अुदारतासे अुसका स्वागत किया और आज भी किया जा रहा है।

सूअरोंका कतल

खत लिखनेवाले भाअीकी आखिरी शिकायत है: 'जब पाकिस्तानमें सूअरोंके कतल पर रोक लगा दी गअी है, तब यूनियनमें गोवध क्यों नहीं बन्द किया जा सकता?' मुझे अिसकी जानकारी नहीं है कि पाकिस्तानमें सूअरके कतल पर कानूनी रोक लगाअी गअी है या नहीं। अगर शिकायत करनेवाले भाअीकी सूचना सच है तो मुझे दुःख है।

मैं जानता हूं कि अिस्लाममें सूअरका गोश्त खानेकी मनाही है। लेकिन अैसा होने पर भी मैं अिसे ठीक नहीं मानता कि गैर-मुस्लिमोंको भी सूअरका गोश्त खानेसे रोका जाय।

क्या पाकिस्तान मजहबी राज है?

क्या कायदे आजमने यह नहीं कहा है कि पाकिस्तान मजहबी राज नहीं है और अुसमें धर्मको कानूनका रूप नहीं दिया जायगा? लेकिन बदकिस्मतीसे यह बिलकुल सच है कि अिस दावेको हमेशा अमलमें सच साबित नहीं किया जाता। क्या हिन्दुस्तानी संघ मजहबी राज बनेगा और क्या हिन्दू धर्मके अुसूल गैर-हिन्दुओं पर लादे जायंगे? मुझे यह आशा नहीं है। अैसा हुआ तो हिन्दुस्तानी संघ आशा और अुजले भविष्यका देश नहीं रह जायगा। तब वह अैसा देश नहीं रह जायगा जिसकी तरफ सारी अेशियाअी और अफ्रीकन जातियां ही नहीं, बल्कि सारी दुनिया आशाभरी नजरसे देखती है। दुनिया यूनियन या पाकिस्तानके रूपमें हिन्दुस्तानसे ओछेपन और धार्मिक पागलपनकी अुम्मीद नहीं करती। वह हिन्दुस्तानसे बड़प्पन, भलाअी और अुदारताकी आशा करती है, जिससे सारी दुनिया सबक ले सके और आजके फैले हुअे अंधेरेमें प्रकाश पा सके।

मवेशियोंके साथ बरताव

मैं गायकी भक्ति और पूजामें किसीसे पीछे नहीं हूं, लेकिन वह भक्ति और श्रद्धा कानूनके जरिये किसी पर लादी नहीं जा सकती। वह मुसलमानों और दूसरे सारे गैर-हिन्दुओंके साथ दोस्ती बढ़ाने और सही बरताव करनेसे पैदा हो सकती है। गुजराती और मारवाड़ी लोग गायकी रक्षा करनेमें सबसे आगे माने जाते हैं। लेकिन वे हिन्दू धर्मके अुसूलोंको अितने भूल गये हैं कि दूसरों पर तो वे खुशीसे पाबन्दियां लगायेंगे और खुद गाय और अुसकी सन्तानके साथ बहुत बुरा बरताव करेंगे। आज दुनियामें हिन्दुस्तानके मवेशी ही सबसे ज्यादा अुपेक्षित क्यों हैं? जैसा कि माना जाता है, वे दुनियामें सबसे कम दूध देनेके कारण देश पर बोझ क्यों बन गये हैं? बोझ ढोनेवाले जानवरोंके नाते बैलोंके साथ अितना बुरा बरताव क्यों किया जाता है?

हिन्दुस्तानके पिंजरापोल अैसे नहीं हैं जिन पर गर्व किया जाय। अुनमें बहुत पैसा लगाया जाता है, लेकिन वहां पशुओंका वैज्ञानिक और बुद्धिमानीभरा पालन-पोषण शायद ही किया जाता हो। ये पिंजरापोल हिन्दुस्तानके जानवरोंको नया जन्म कभी नहीं दे सकते। वे मवेशियोंके साथ हमदर्दी और दयाका बरताव करके ही अैसा कर सकते हैं। मेरा यह दावा है कि मुसलमानोंके साथ दोस्ती बढ़ा सकनेके कारण मैंने कानूनकी मदद लिये बिना दूसरे किसी हिन्दूके बजाय ज्यादा गायोंको कसाअीके छुरेसे बचाया है।

५५

५–११–'४७

हरिजनोंकी कामके लायक बननेकी योग्यता

आज मुझे आपसे कुरान शरीफके विरोधके बारेमें कुछ नहीं कहना है। अेक भाअीका अेतराज तो है ही, लेकिन वे हमारे दोस्त बन गये हैं। वे हमेशा सभ्यतासे विरोध करते हैं। आजका भजन किंग्सवेके हरिजन-निवासके अेक हरिजन बालकने गाया है। अुसकी आवाज कितनी मीठी और सुरीली है! मेरे साथ आप लोगोंको भी अिस बातकी खुशी होनी चाहिये कि अगर अेक हरिजनको बराबरीका मौका दिया जाय, तो वह किसी सवर्ण हिन्दू या दूसरे आदमीसे किसी तरह पीछे नहीं रहता। बेशक, मैंने कुछ बातोंमें तो, जैसे संगीत या दस्तकारीमें, औसत हरिजनको ज्यादा योग्य और होशियार पाया है। मैं यह नहीं कहना चाहता कि हरिजनोंमें कोअी बुराअियां नहीं होतीं, लेकिन वे तो हर वर्गके लोगोंमें पाअी जाती हैं। फिर भी, मैं यह तो कहना चाहूंगा कि छुआछूतकी कड़ी पाबन्दियोंके बावजूद अगर हरिजनोंको दूसरोंकी तरह अुन्नतिका मौका दिया जाय, तो वे औरों जैसे ही आगे बढ़ सकते हैं। दूसरी खुशीकी बात यह है कि पण्ढरपुरका पुराना और मशहूर मंदिर ठीक अुन्हीं शर्तों पर हरिजनोंके लिअे खोल दिया गया है, जैसा कि दूसरे हिन्दुओंके लिअे। अिसका खास श्रेय श्री साने गुरुजीको है, जिन्होंने अुसे हरिजनोंके लिअे हमेशाके वास्ते खुलवानेके मकसदसे

आमरण अुपवास शुरू किया था। मैं मन्दिरके ट्रस्टियों और पण्ढरपुरकी व आसपासकी जनताको अिस सही कदमके लिअे बधाअी देता हूं। मुझे आशा है कि छुआछूतकी आखिरी निशानी भी जल्दी ही गये जमानेकी चीज बन जायगी। आज हिन्दुस्तानके दोनों हिस्सोंमें जो साम्प्रदायिक जहर फैला हुआ है, अुसे मारनेमें यह कदम बहुत मदद करेगा।

शाकाहार कैसे फैलाया जाय?

अिसके बाद गांधीजीने डाकसे आनेवाले कअी सवालोंके जवाब दिये। अुन्होंने कहा, अेक मुसलमान दोस्तने यह शिकायत की है कि यूनियनके जिस हिस्सेमें वे रहते हैं, वहांके शाकाहारी हिन्दू अपने बीच रहनेवाले मुसलमानों पर यह जोर डालते हैं कि वे मछली और गोश्त भी न खायं। अैसी गैर-रवादारी और अनुदारताको मैं पसन्द नहीं करता। धार्मिक विश्वाससे अन्न और शाक-भाजी खानेवाले लोगोंकी तादाद हिन्दुस्तानमें बहुत कम बताअी जाती है। हिन्दुस्तानमें हिन्दुओंकी बहुत बड़ी तादाद अैसी है जो मौका मिलने पर मछली और परिन्दों या जानवरोंका गोश्त खानेमें नहीं हिचकिचाती। शाकाहारी हिन्दुओंको मुसलमानों पर अपना धार्मिक विश्वास लादनेका क्या हक है? अपने मांसाहारी हिन्दू दोस्तों पर तो वे अपना विश्वास लादनेकी हिम्मत नहीं करेंगे। यह सब मुझे हंसीकी बात मालूम होती है। शाकाहारको फैलानेका सही रास्ता यह है कि अैसे लोग मांस-मछली खानेवालोंको शाकाहारकी खूबियां समझायें और अपने जीवनमें अुन पर अमल करके दिखायें। दूसरोंको अपनी रायका बनानेका और कोअी सुनहला रास्ता नहीं है।

अपने घरोंमें जमे रहिये

अेक हिन्दू टीकाकार कहते हैं—'आप और आप जैसे दूसरे लोग मुसलमानोंको यह अुपदेश देते नहीं थकते कि अुनकी जिदसे लाजमी तौर पर पैदा होनेवाली मुसीबतोंके बावजूद वे अपने घर न छोड़ें, भले अुन्हें सलामतीसे भी अैसा करनेका मौका क्यों न मिले! अगर मुसलमान आपके कहे मुताबिक अपने मोहल्लोंमें जमे रहें, तो वे काट डाले जानेके डरसे रोजी कमानेके लिअे मोहल्लेसे बाहर नहीं निकल सकेंगे। अैसी हालतमें वे खायें क्या? यह भी अंदेशा है कि बहुत ज्यादा तादादवाले

हिन्दू मुसलमानोंकी कड़ी मेहनतसे बनाअी हुअी चीजोंका बायकाट करें और अुन्हें भूखों मरना पड़े। बचे हुअे गरीब मुसलमानोंसे, जिन्होंने अपनी आंखोंसे अपने कअी भाअियोंको कटते देखा है और दूसरोंको पाकिस्तान जाते देखा है, अूपरकी असुविधाओंके बावजूद अपने घरोंमें ठहरनेकी आशा रखना ज्यादती है।' मैं कबूल करता हूं कि अिस टीकामें बहुत सचाअी है। लेकिन मैं अुन्हें दूसरी कोअी सलाह नहीं दे सकता। मेरा विचार है कि अपना घर-बार छोड़नेसे मुसलमानोंको ज्यादा तकलीफ हो सकती है। अिसलिअे मेरा यह सच्चा विश्वास है कि अगर बचे हुअे मुसलमान मुसीबतें सहते हुअे भी अीमानदारी और बहादुरीसे अपने घरोंमें जमे रहेंगे, तो वे जरूर अपने हिन्दू पड़ोसियोंके कड़े दिलोंको पिघला सकेंगे। हिन्दुस्तानके दोनों हिस्सोंमें दूसरोंको भी मुसीबतोंसे जरूर छुटकारा मिलेगा। क्योंकि अगर मुसलमान बड़ी तादादमें पूरी अीमानदारीके साथ अहिंसासे पैदा होनेवाली बेमिसाल बहादुरी दिखायें, तो जरूर अुसका असर सारे हिन्दुस्तान पर पड़ेगा।

अहिंसामें पक्का विश्वास

अेक दूसरे खतमें मुझे अिसलिअे फटकारा गया है कि मैंने मि० चर्चिल, हिटलर, मुसोलिनी और जापानियोंको अैसे वक्त अपना अहिंसक तरीका अपनानेकी सलाह दी, जब अुनके सामने जीवन-मरणकी समस्या खड़ी थी। खत लिखनेवाले भाअीने आगे कहा है — 'अुन लोगोंको तो आपने अहिंसाकी सीख देनेकी हिम्मत की, लेकिन जब कांग्रेस सरकारमें आपके दोस्त अहिंसाको छोड़ते और काश्मीरको हथियारबन्द फौजकी मदद भेजते हैं, तब आपकी अहिंसा कहां चली जाती है? अुन्हें भी आप अहिंसाका अुपदेश क्यों नहीं देते?' अपने खतके अन्तमें अुन भाअीने मुझसे अिस बातका निश्चित जवाब मांगा है कि काश्मीरी लोग हमलावरोंका अहिंसासे कैसे सामना कर सकते हैं। अिन भाअीने अपने खतमें जो अज्ञान बताया है अुस पर मुझे अफसोस होता है। आप लोगोंको याद होगा कि मैंने बार-बार यह बात कही है कि अिस मामलेमें यूनियन कैबिनेटके अपने दोस्तों पर मेरा कोअी असर नहीं है। मैं खुद तो अहिंसाके अपने विचारों पर हमेशाकी तरह आज भी डटा हुआ

हूं, लेकिन मैं कैबिनेटके अपने बड़ेसे बड़े दोस्तों पर भी अपने ये विचार लाद नहीं सकता। मैं अुनसे यह आशा नहीं कर सकता कि वे अपने विश्वासोंके खिलाफ काम करें। जब मैं यह कबूल करता हूं कि अपने दोस्तों पर मेरा पहले जैसा काबू नहीं रहा, तो हरअेकको सन्तोष हो जाना चाहिये। फिर भी खत लिखनेवाले भाअीका सवाल बड़ा मौजूं है। मेरा अपना जवाब तो बिलकुल सादा है।

योग्य आदमीकी तारीफ करनी ही चाहिये

मेरी अहिंसाका तकाजा है कि मुझे योग्य आदमीकी तारीफ करनी ही चाहिये, फिर भले वह हिंसामें विश्वास करनेवाला ही क्यों न हो। मैंने श्री सुभाष बोसकी हिंसाको कभी पसन्द नहीं किया, फिर भी मैं अुनकी देशभक्तिकी, सूझ-बूझकी और बहादुरीकी तारीफ किये बिना नहीं रहा। अिसी तरह, हालांकि मैं अिस बातको पसन्द नहीं करता कि यूनियन सरकार काश्मीरियोंकी मदद करनेमें हथियारोंका अिस्तेमाल करे और हालांकि मैं शेख अब्दुल्लाके हथियारोंका सहारा लेनेकी बातको ठीक नहीं मान सकता, फिर भी दोनोंकी सूझ-बूझ और तारीफके लायक कामकी तारीफ किये बिना नहीं रह सकता। खासकर अगर मदद करनेवाली टुकड़ियों और काश्मीरकी रक्षासेनाका अेक-अेक आदमी बहादुरीसे मर मिटे, तो मैं अुनकी तारीफ ही करूंगा। मैं जानता हूं कि अगर वे अैसा कर सकें तो शायद हिन्दुस्तानकी आजकी शकलको बदल देंगे। लेकिन अगर काश्मीरका बचाव अिरादे और अमलमें बिलकुल अहिंसक हो, तो मैं 'शायद' शब्दका अिस्तेमाल नहीं करूंगा। क्योंकि मुझे विश्वास होगा कि काश्मीरके अहिंसक रक्षक हिन्दुस्तानकी शकलको यहां तक बदल देंगे कि पाकिस्तान कैबिनेटको नहीं तो कमसे कम यूनियन कैबिनेटको तो वे अपनी रायकी बना ही लेंगे।

मैं तो यह कहूंगा कि अगर काश्मीरके मुट्ठीभर लोग मासूम बच्चों और औरतोंकी रक्षाके लिअे हथियार लेकर हमलावरोंसे लड़ते हैं और लड़ते-लड़ते मर जाते हैं, तो अुनकी हथियारबन्द लड़ाअी भी अहिंसक लड़ाअी बन जाती है। मेरा अहिंसक तरीका अपनाया जाय, तो काश्मीरके रक्षकोंको हथियारबन्द सेनाकी मदद न भेजी जाय।

यूनियनसे अहिंसक मदद बिना किसी संकोचके भेजी जा सकती है। लेकिन अुन रक्षकोंको अैसी मदद मिले या न मिले, वे हमलावरोंकी या बहुत बड़ी तादादवाली व्यवस्थित फौजकी ताकतका भी सामना करेंगे। और अगर रक्षा करनेवाले लोग हमला करनेवालोंके खिलाफ अपने दिलोंमें कोअी बैर या गुस्सा न रखें, किसी तरहके हथियारोंका अुपयोग — यहां तक कि घूसोंका अुपयोग भी — न करें और बेगुनाहोंकी रक्षा करते-करते मर जायं, तो अुनकी अिस बहादुरीकी मिसाल आज तकके अितिहासमें कहीं नहीं मिलेगी। तब काश्मीर अैसी पवित्र जगह बन जायगा, जिसकी खुशबू सारे हिन्दुस्तानमें ही नहीं बल्कि सारी दुनियामें फैलेगी। अहिंसक बचावके बारेमें चर्चा करनेके बाद मुझे यह कबूल करना पड़ता है कि मेरे शब्दोंमें वह ताकत नहीं है, जो गीताके दूसरे अध्यायकी आखिरी लाअिनोंमें बताये गये पूर्ण आत्म-संयमसे आती है। अिसके लिअे जिस तपस्याकी जरूरत है अुसकी मुझमें कमी है। मैं तो भगवानसे प्रार्थना ही कर सकता हूं। आप सब भी मेरे साथ भगवानसे प्रार्थना कीजिये कि अगर वह, चाहे तो मेरे शब्दोंमें अैसी ताकत भर दे जिसका असर सब पर पड़ सके।

५६

६–११–'४७

तोड़ी-मरोड़ी हुअी बातें

प्रार्थनाके बाद गांधीजीने अेक दोस्त द्वारा भेजी हुअी अखबारोंकी दो कतरनोंका जिक्र करते हुअे कहा : मैं लेखकका नाम जानता हूं, लेकिन मैं न तो अुनका नाम बताना चाहता और न अुन लेखोंका ब्योरा ही देना चाहता हूं। मैं सिर्फ अितना ही कहना चाहता हूं कि वे लेख हिन्दू धर्मकी सेवा करनेके खयालसे लिखे गये हैं। लेकिन अुनमें जान-बूझकर झूठी बातें कही गअी हैं। जब नअी बातें नहीं कही जातीं, तो हकीकतोंको तोड़-मरोड़ कर पेश किया जाता है। लेकिन मैं यह कहनेकी हिम्मत करता हूं कि अैसा करनेसे कोअी मकसद पूरा नहीं होता — धर्मका तो बिलकुल नहीं। जब अिलजामोंकी बुनियाद सचाअी

पर नहीं बल्कि झूठ पर होती है, तब जिन पर अिलजाम लगाया जाता है अुन्हें कोअी चोट नहीं पहुंचती। अिसलिअे मैं जनताको चेतावनी देता हूं कि वह अैसे अखबारोंका समर्थन न करे, भले अुसके लेखक कितने ही मशहूर क्यों न हों।

कण्ट्रोल हटा दिये जायं

खुराक-मंत्रीने गैर-सरकारी लोगोंकी जो कमेटी बनाअी थी, अुसने अपनी रिपोर्ट अुनके सामने पेश कर दी है। अुस कमेटीकी सिफारिशों पर कोअी फैसला करनेमें डॉ० राजेन्द्रप्रसादको मदद देनेके लिअे सूबोंके जो मंत्री या अुनके प्रतिनिधि दिल्ली आये थे अुनसे मैं मिला था। जब मैंने अिस मीटिंगके बारेमें सुना, तो मैंने डॉ० राजेन्द्रप्रसादसे कहा कि वे मुझे अुन लोगोंके सामने अपनी बात रखनेका मौका दें, ताकि मैं अुनके शकोंको दूर कर सकूं। क्योंकि मुझे अिसका पूरा भरोसा है कि अनाजका कण्ट्रोल हटानेकी मेरी राय बिलकुल ठीक है। डॉ० राजेन्द्र-प्रसादने तुरंत मेरा प्रस्ताव मान लिया और मुझे मंत्रियों या अुनके प्रतिनिधियोंके सामने अपने विचार रखनेका मौका मिला। मुझे अपने पुराने दोस्तोंसे मिलकर बड़ी खुशी हुअी। मैं यह कहता रहा हूं कि जहां तक साम्प्रदायिक झगड़ोंके बारेमें मेरी रायका सम्बन्ध है, आज अुसे कोअी नहीं मानता। लेकिन यह कह सकनेमें मुझे खुशी होती है कि खुराकके सवाल पर मेरी रायके बारेमें अैसी बात नहीं है। जब बंगालके गवर्नर मि० केसीसे मेरी कअी मुलाकातें हुअी थीं, तभीसे मेरी यह राय रही है कि हिन्दुस्तानमें अनाज या कपड़े पर कण्ट्रोल रखनेकी बिलकुल जरूरत नहीं है। अुस समय यह नहीं मालूम था कि मुझे लोगोंका समर्थन प्राप्त है या नहीं। लेकिन हालकी चर्चाओंमें यह जानकर अचरज हुआ कि मुझे जनताके प्रसिद्ध और अप्रसिद्ध मेम्बरोंका बहुत बड़ा समर्थन प्राप्त है। अनाजकी समस्याके बारेमें मेरे पास जो बहुतसे खत आते हैं, अुनमें मुझे अेक भी खत अैसा याद नहीं आता जिसके लेखकने मेरी रायसे अलग राय जाहिर की हो। मैं श्री घनश्यामदास बिड़ला और लाला श्रीराम जैसे बड़े बड़े लोगोंकी राय नहीं जानता, न मैं यही जानता हूं कि अिस बारेमें मुझे समाजवादी

पार्टीका समर्थन मिलेगा या नहीं। हां, जब डॉ० राममनोहर लोहिया मुझसे मिले, तो अुन्होंने अनाजका कण्ट्रोल हटा देनेकी मेरी रायका पूरा पूरा समर्थन किया। अैसी सलाह देनेमें मुझे कोअी हिचकिचाहट नहीं होती कि आज जब देशको अनाजकी तंगीका सामना करना पड़ रहा है, तब डॉ० राजेन्द्रप्रसाद अपने सरकारी नौकरोंके बताये हुअे रास्तेसे न चलकर अपनी गैर-सरकारी समितिके अेक या ज्यादा मेम्बरोंकी सलाहसे काम करें।

खादी बनाम मिलका कपड़ा

अब मैं कपड़ेके कण्ट्रोलकी चर्चा करूंगा। हालांकि अनाजके कण्ट्रोलको हटानेके बनिस्बत कपड़ेके कण्ट्रोलको हटानके बारेमें मेरा ज्यादा पक्का विश्वास है, फिर भी मुझे डर है कि कपड़ेके कण्ट्रोलके बारेमें मुझे अुतना समर्थन प्राप्त नहीं है जितना कि अनाजके कण्ट्रोलके बारेमें। कांग्रेसने मेरी अिस रायका खुशीसे समर्थन किया था कि खादी देशी या विदेशी मिलके कपड़ेकी पूरी जगह ले सकती है। अुसने स्व० जमनालालजीके मातहत अेक खादी बोर्ड कायम किया था, जिसे मेरे यरवदा जेलसे रिहा होनेके बाद अखिल भारत चरखा-संघका विशाल रूप दे दिया गया। हिन्दुस्तानमें ४० करोड़ लोग रहते हैं। अगर पाकिस्तानका हिस्सा अुससे अलग कर दिया जाय, तो भी अुसमें ३० करोड़से अूपर लोग बचेंगे। अुनकी जरूरतकी सारी कपास देशमें पैदा होती है। अुनकी कपासको बुनने लायक सूतमें बदलनेके लिअे देशमें काफी कातनेवाले मौजूद हैं। और अुनके हाथ-कते सूतको बुननेके लिअे हिन्दुस्तानमें जरूरतसे ज्यादा जुलाहे भी हैं। बहुत बड़ी पूंजी लगाये बिना भी हम देशमें अपनी जरूरतके चरखे, करघे और दूसरा जरूरी सामान आसानीसे बना सकते हैं। अिसलिअे जरूरत सिर्फ अिस बातकी है कि हम अपने आपमें पक्का विश्वास रखें और खादीके सिवा दूसरा कोअी कपड़ा अिस्तेमाल न करनेका पक्का अिरादा कर लें। आप जानते हैं कि देशमें महीनसे महीन खादी तैयार की जा सकती है और मिलोंसे भी ज्यादा अच्छे डिजाअिन बनाये जा सकते हैं। अब चूंकि हिन्दुस्तान विदेशी जुअेसे आजाद हो गया है अिसलिअे खादीका अैसा विरोध नहीं हो सकता, जैसा कि विदेशी शासकोंके नुमाअिन्दे किया

करते थे। अिसलिअे मुझे यह देखकर सबसे ज्यादा ताज्जुब होता है कि जब हम अपनी मरजीका काम करनेके लिअे पूरी तरह आजाद हैं, तब न तो कोअी खादीके बारेमें चर्चा करते, न खादीकी संभावनाओंमें श्रद्धा रखते। और हम हिन्दुस्तानको कपड़ा पुरानेके लिअे मिलके कपड़ेके सिवा दूसरी बात ही नहीं सोच सकते। अिसमें मुझे रत्तीभर शक नहीं कि खादीका अर्थशास्त्र ही हिन्दुस्तानका सच्चा और फायदेमन्द अर्थशास्त्र हो सकता है।

५७

७–११–'४७

टेहर गांवका दौरा

गांधीजी टेहर गांवके सताये हुअे मुसलमानोंसे मिलने गये थे। वहां अुन्हें अुम्मीदसे ज्यादा समय तक रुकना पड़ा। अिसलिअे वे लौटने पर सीधे प्रार्थना-सभामें चले गये। प्रार्थनाके बाद गांधीजीने अपने दौरेका जिक्र करते हुअे कहा, मुझे दुःख होता है कि टेहर और अुसके आसपासके मुसलमानोंको बिला जरूरत मुसीबतें झेलनी पड़ रही हैं। अुनमें से बहुतसे जमीनोंके मालिक हैं, लेकिन सताये जानेके डरसे वे अपनी जमीनें जोत नहीं पाते। अुन्होंने अपने मवेशी, हल और दूसरा सामान बेच डाला है। फौज अुनकी रक्षा कर रही है। दो हजारसे अूपरकी तादादमें जो दुःखी लोग मेरे आसपास अिकट्ठे हुअे थे, अुन्होंने अपने अगुआके मारफत मुझसे कहा कि हम पाकिस्तान जाना चाहते हैं, क्योंकि यहां जीना असम्भव हो गया है। हमारे बहुतसे दोस्त और रिश्तेदार पाकिस्तान जा भी चुके हैं। अिसलिअे, अगर सरकार हमें जल्दीसे जल्दी लाहौर भेज दे तो बड़ी दया होगी। हमें फौजके लोगोंके खिलाफ कोअी शिकायत नहीं है। लेकिन आजका समय मैं टेहरकी सभाका पूरा बयान करनेमें नहीं दूंगा। मैंने अुन लोगोंसे कहा कि मेरे हाथमें कोअी सत्ता नहीं है, लेकिन मैं आपका सन्देशा खुशीसे प्रधानमंत्री और अुप-प्रधानमंत्री तक, जो गृहमंत्री भी हैं, पहुंचा दूंगा।

मुझसे कहा गया है कि शरणार्थी लोग दिल्लीमें अेक समस्या बन गये हैं। मुझे बताया गया है कि चूंकि पाकिस्तानमें शरणार्थियोंके साथ जुल्म किये गये हैं, असलिअे वे यह मानते हैं कि अुन्हें कुछ खास हक हासिल हैं। जब वे दुकान पर कोअी सामान खरीदने जाते हैं, तो यह आशा करते हैं कि दुकानदार कभी अुन्हें जरूरतकी चीजें मुफ्त दे दिया करें और कभी काफी कम दामोंमें बेचा करें। कभी कभी तो अेक अेक आदमी सैकड़ों रुपयोंका सौदा खरीद लेता है। कुछ शरणार्थी तांगेवालोंसे यह अुम्मीद करते हैं कि वे अुनसे बिलकुल भाड़ा न लें या कम भाड़ा लें। अगर यह रिपोर्ट सच है तो यह कहना मेरा फर्ज है कि शरणार्थी लोग वह सबक नहीं सीख रहे हैं, जो मुसीबतें दुखियोंको आम तौर पर सिखाती हैं। अैसा करके वे अपने आपको और देशको नुकसान पहुंचाते हैं। और काफी पेचीदा बने हुअे सवालको और भी पेचीदा बना रहे हैं। अगर अुनका अैसा बरताव जारी रहा, तो वे दिल्लीके दुकानदारोंकी हमदर्दी जरूर खो देंगे।

शरणार्थियोंको सलाह

साथ ही, मैं यह नहीं समझ पाता कि शरणार्थी लोग, जिनके बारेमें यह कहा जाता है कि वे पाकिस्तानमें अपना सब कुछ खोकर यहां आये हैं, सैकड़ों रुपयोंका सामान कैसे खरीद सकते हैं। मैं यह भी चाहूंगा कि कोअी शरणार्थी बिरले और जरूरी मौकोंको छोड़कर घूमनेके लिअे भगवानके दिये हुअे पांवोंके सिवा दूसरी किसी चीजका अुपयोग न करें। असके अलावा, मुझे यह बताया गया है कि दिल्लीमें जबसे लाखों शरणार्थी आये हैं, तबसे तेज शराबोंसे होनेवाली आमदनी बहुत ज्यादा बढ़ गअी है। दरअसल अुन्हें यह समझना चाहिये कि जब केन्द्र और सूबोंकी सरकारें कांग्रेसकी मांगोंको पूरा करेंगी, तो हिन्दुस्तानी संघमें न तो तेज शराबें मिलेंगी और न अफीम, गांजे जैसी दूसरी नशीली चीजें देखनेको मिलेंगी। यही हाल पाकिस्तानका भी हो सकता है, क्योंकि हमारे मुसलमान दोस्तोंको पूरी शराबबन्दीका अैलान करनेके लिअे कांग्रेसके ठहरावकी जरूरत नहीं पड़ेगी। क्या

शरणार्थी लोग, जिन्होंने बड़ी बड़ी मुसीबतें सही हैं, शराब और दूसरी नशीली चीजोंके अिस्तेमालसे या अैश-आराममें डूबनेसे अपने आपको रोक नहीं सकते? मुझे आशा है कि शरणार्थी भाअी-बहन मेरी अुस सलाहको मानेंगे, जो मैंने अपने पिछले भाषणोंमें अुन्हें दी है। वह सलाह यह है कि शरणार्थी जहां कहीं जायं, वहांके लोगोंमें दूधमें शक्करकी तरह घुल-मिल जायं और अुन पर बोझ न बननेका पक्का निश्चय कर लें। धनी और गरीब शरणार्थी अेक ही अहाते या कैम्पमें साथ साथ रहें और पूरे सहयोगसे काम करें, ताकि वे आदर्श और स्वावलम्बी नागरिक बन सकें।

५८

८-११-'४७

आज हमेशाके विरोध करनेवाले सज्जनके सिवा दूसरे तीन भाअियोंने कुरानकी आयत पढ़नेका विरोध किया। अिसलिअे प्रार्थना शुरू करनेसे पहले गांधीजीने सभाके लोगोंसे पूछा: 'क्या आप लोग अिस पहली शर्तको पूरा करेंगे कि आप अपने मनमें विरोध करनेवालोंके खिलाफ कोअी गुस्सा या बैर नहीं रखेंगे और प्रार्थना-सभाके खतम होने तक शान्ति और खामोशीके साथ अेकाग्र मनसे बैठेंगे?' लोगोंने तुरंत अेक आवाजसे कहा कि हम अुस शर्तको पूरा करेंगे। विरोध करनेवाले पूरी प्रार्थनामें चुप रहे। प्रार्थना बिना किसी रुकावटके हुअी। अिस पर गांधीजीने अन्तमें सबको बधाअी दी।

सिक्ख धर्मग्रन्थोंके हिस्से भी पढ़े जायं

गांधीजीने बादमें कहा कि मुझे अेक सिक्ख दोस्तका खत मिला है। अुन्होंने लिखा है कि वे हमेशा प्रार्थना-सभामें आते हैं और अुन्हें पसन्द करते हैं। वे प्रार्थनाके पीछे रहनेवाली रवादारीकी भावनाकी तारीफ करते हैं। खास तौर पर अुन्होंने मेरी ग्रन्थसाहब, सुखमणि, जपजी वगैराके बारेमें कही गअी बातोंकी तारीफ की है। अुन्होंने लिखा है — 'अगर आप भजनावलिमें अिकट्ठे किये गये सिक्ख धर्मग्रन्थोंके

हिस्सोंमें से कुछ चुन लें और अपनी प्रार्थना-सभामें रोज पढ़ें, तो अिसका सिक्खों पर बड़ा असर पड़ेगा। मुझे लगता है कि मैं यह बात सारी सिक्ख जातिकी तरफसे कह सकता हूं। वे चुने हुअे हिस्से मैं आपके सामने पढ़कर सुना सकता हूं।' खत लिखनेवाले भाअीकी यह बात मुझे मंजूर है। लेकिन अिस बात पर मैं कोअी फैसला तभी करूंगा, जब मैं खुद अुन भाअीके मुंहसे कुछ भजन सुन लूंगा। अिसके लिअे अुन्हें श्री ब्रजकृष्णजीसे समय ले लेना चाहिये।

रुअीकी गांठोंके लिअे अपील

मैंने अेक बार यह बात कही थी कि शरणार्थियोंको रुअी, केलिको (छपा हुआ कपड़ा) और सुअियां मिलनी चाहिये, ताकि वे खुद अपने अिस्तेमालके लिअे रजाअियां बना सकें। अिससे लाखों रुपये बच सकते हैं और शरणार्थियोंको आसानीसे ओढ़नेके कपड़े मिल सकते हैं। मेरी अिस अपीलके जवाबमें बम्बअीके रुअीके व्यापारियोंने लिखा है कि वे ये चीजें देनेके लिअे तैयार हैं। अिस तरीकेसे शरणार्थी खुद अपनी नजरमें अूंचे अुठेंगे और वे सहकारका पहला सबक सीखेंगे। लेकिन दिल्लीमें ही कपड़ेकी मिलोंकी कमी नहीं है। शहरमें कअी मिलें चलती हैं। फिर भी मैं बम्बअीकी भेंटका स्वागत करता हूं, क्योंकि मैं मरजीसे दान देनेवालों पर गैर-जरूरी बोझ नहीं डालना चाहता। दान देनेवाले जितने ज्यादा होंगे अुतना ही शरणार्थियों और देशको फायदा होगा। अिसलिअे मुझे आशा है कि बम्बअीके रुअीके व्यापारी जितनी भी गांठें भेज सकें, जल्दीसे जल्दी भेजेंगे। धनी लोगोंका अैसा सहयोग सरकारके बोझको कम करेगा। जब हम आजाद हो गये हैं तब तो हर शख्स अपनी अिच्छासे देशकी सरकारके काममें भागीदार बन सकता है, बशर्ते वह आजाद देशके नागरिककी पूरी पूरी जिम्मेदारियोंको समझकर अपना फर्ज अदा करे।

खादीकी पैदावार

मुझे अिसमें कोअी शक नहीं कि जब रुअीकी गांठें आ जायंगी, तो मैं मिल-मालिकोंको रजाअियोंके लिअे काफी छींट देनेके लिअे राजी कर सकूंगा। रुअीकी गांठोंकी बात परसे मुझे कपड़ेका कण्ट्रोल याद आ

गया। मेरी रायमें हिन्दुस्तानके सारे लोगोंके लिअे हाथसे काफी खादी तैयार करना सम्भव है और आसान भी है। अिसकी अेक शर्त यही है कि देशमें काफी रुअी मिल जाय। मैं नहीं जानता कि हिन्दुस्तानमें कभी रुअीका अकाल पड़ा हो। हमारे यहां रुअीकी तंगी हो ही नहीं सकती, क्योंकि हम हमेशा देशकी जरूरतसे ज्यादा रुअी पैदा करते हैं। देशके बाहर हजारों-लाखों गांठें भेजी जाती हैं, फिर भी हिन्दुस्तानकी मिलोंके लिअे कभी रुअीकी कमी नहीं होती। मैं पहले ही अिस सचाअीकी तरफ आप लोगोंका ध्यान खींच चुका हूं कि हिन्दुस्तानमें हाथसे धुनने, कातने और बुननेके सारे जरूरी औजार मिल सकते हैं। साथ ही, काम करनेवाले भी बड़ी भारी तादादमें मौजूद हैं। अिसलिअे, मैं तो यही कह सकता हूं कि लोगोंके आलसके सिवा दूसरी कोअी अैसी बात नहीं है, जो अुन्हें यह सोचने पर मजबूर करती हो कि देशमें कपड़ेकी तंगी है। आज देशमें कोअी भी कपड़ेका कण्ट्रोल नहीं चाहता, न मिलें, न मिल-मजदूर और न खरीदार जनता। कण्ट्रोल आलसी लोगोंकी फौजको बढ़ाकर देशको बरबाद कर रहे हैं। अैसे लोग कोअी काम न होनेसे हमेशा दंगे-फसादकी जड़ बने रहते हैं।

स्वावलम्बन और सहयोग

अिस सिलसिलेमें शरणार्थियोंके सवाल पर लौटते हुअे गांधीजीने कहा, अगर शरणार्थियोंने अपने आपको फायदेमन्द कामोंमें लगानेका अिरादा कर लिया है, तो पहले वे अपने लिअे रजाअियां तैयार करेंगे और बादमें सब औरत और मर्द अपना अेक अेक पल कपाससे बिनौले निकालने, रुअी धुनने, कातने, बुनने वगैरामें खर्च करेंगे। लाखों शरणार्थियों द्वारा अिस सहकारी काममें लगाअी गअी ताकत सारे देशमें बिजली-सी पैदा कर देगी। वे लोगोंको अपने पीछे चलनेकी और हर फालतू वक्तको ज्यादा अनाज पैदा करने और अपने ही घरोंमें खादी बनानेमें खर्च करनेकी प्रेरणा देंगे। यह याद रहे कि अगर गांठें बनानेके बजाय कपास सीधा खेतोंसे ही पड़ोसके कातनेवालोंके घर पहुंचे, तो अेक काम कम हो जायगा, रुअी बिगड़ेगी नहीं, धुननेका काम आसान होगा और गांवोंमें बिनौले भी बच रहेंगे।

अन्तमें गांधीजीने कहा, लेडी माअुण्टबैटन मुझसे मिलने आअी थीं। वह दयाकी देवी बन गअी हैं। वह हमेशा दोनों अुपनिवेशोंका दौरा किया करती हैं, अलग अलग छावनियोंमें शरणार्थियोंसे मिलती हैं, बीमारों और दु:खियोंको देखती हैं और अिस तरह जितना भी ढाढ़स अुन्हें बंधा सकती हैं बंधानेकी कोशिश करती हैं। जब वे कुरुक्षेत्र-छावनी देखने गअीं तो अुनसे लोगोंने पूछा कि गांधीजी कब आयेंगे। लेडी माअुण्टबैटनके सामने अितने लोगोंने मुझे देखनेकी अिच्छा जाहिर की कि अुन्हें पूरी अुम्मीद हो गअी कि मैं कुरुक्षेत्र-छावनीका मुआअिना करने जरूर जाअूंगा। मैंने अुन्हें भरोसा दिलाया कि आपका अैसी अुम्मीद रखना बिलकुल ठीक है। सच पूछा जाय तो मैंने पानीपत जानेका बन्दोबस्त कर लिया है, जहांके हिन्दू और मुसलमान दोनों मुझसे मिलनेके लिअे बड़े अुत्सुक हैं। अुसी दौरेमें मैंने कुरुक्षेत्रके दौरेको भी शामिल करनेकी बात सोची थी। लेकिन मुझे पता चला है कि पानीपतके दौरेमें कुरुक्षेत्र-छावनीको शामिल नहीं किया जा सकता। अिसलिअे अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीकी अगली मीटिंगके खतम होने तक कुरुक्षेत्रका दौरा मुलतवी रखना जरूरी हो गया है। फिर भी मुझे यह सुझाया गया है कि कुरुक्षेत्र जैसे भारी कैम्पमें लाअुड-स्पीकरका बन्दोबस्त करना कठिन काम है। लेकिन कैम्पके लोगोंसे रेडियो पर बोलनेमें कोअी कठिनाअी नहीं होगी, बशर्ते जरूरी सम्बन्ध जोड़नेवाली मशीन कैम्पमें लगा दी जाय। अैसा बन्दोबस्त हो जाने पर मैं मंगल या बुधको कुरुक्षेत्र-छावनीके लोगोंको अपनी बात सुना सकूंगा और बादमें अुनसे मिलने भी जा सकूंगा। अिसी बीच अुम्मीद है कि मैं अपना पानीपतका दौरा खतम कर लूंगा।

५९

९–११–'४७

मुझे यह कहते हुअे अफसोस होता है कि चूंकि मुझे कल पानीपत जाना है, अिसलिअे आज मुझे जल्दी ही मौन लेना पड़ा। तभी मैं वहां पहुंचने पर पानीपतके हिन्दुओं और मुसलमानोंसे अपनी बात कह सकूंगा। मैं कल प्रार्थनाके समय दिल्ली वापस आ जानेकी आशा रखता हूं, जब कि मैं भाषण दे सकूंगा। अखबारोंमें यह खबर गलत छपी है कि कल मैं कुरुक्षेत्र जा रहा हूं। मैंने निश्चित रूपसे यह कहा था कि मैं कुरुक्षेत्र-छावनीके मुआअिनेके लिअे जानेका अिरादा रखता हूं, लेकिन अे० आअी० सी० सी० की नजदीक आ रही मीटिंगके खतम होनेसे पहले नहीं जाअूंगा। मेरा खयाल है कि शायद बुधवारके दिन किसी तय किये हुअे वक्त पर, जो बादमें जाहिर किया जायगा, मैं रेडियो पर कुरुक्षेत्रवालोंसे बोलूंगा।

दीवाली न मनाअी जाय

कुछ ही दिनोंमें दीवाली आ पहुंचेगी। अेक बहन, जो खुद शरणार्थी हैं, लिखती हैं:

> "हमें दीवालीका त्यौहार मनाना चाहिये या नहीं, यह सवाल हममें से ज्यादातर लोगोंको परेशान कर रहा है। मेरे हिन्दी शब्द कितने ही टूटे-फूटे क्यों न हों, फिर भी मैं अिस बारेमें अपने विचार आपके सामने रखना चाहती हूं। मैं गुजरानवालासे आअी हुअी शरणार्थी हूं। वहां मैं अपना सब कुछ खो चुकी हूं। फिर भी हमारे दिल अिस खुशीसे भरे हुअे हैं कि आखिरकार हमने आजादी हासिल कर ली। आजाद हिन्दुस्तानकी यह पहली दीवाली होगी। अिसलिअे, यह जरूरी है कि हम सारे दुःख-दर्द भूल जायं और यह कामना करें कि सारे हिन्दुस्तानमें सजावट और रोशनी की जाय। मैं जानती हूं कि हमारे दुःखोंसे आपके दिलको गहरी चोट लगी है और आप

चाहेंगे कि सारा हिन्दुस्तान अिस मौके पर खुशियां न मनावे। आपकी अिस हमदर्दीके लिअे हम आपके अहसानमन्द हैं। यह सच है कि आपका दिल रंज और गमसे भरा हुआ है, फिर भी मैं चाहती हूं कि आप सब शरणार्थियों और हिन्दुस्तानके दूसरे सारे लोगोंको अिस त्यौहार पर खुशी मनानेके लिअे कहें और धनी लोगोंसे अपील करें कि वे गरीबोंको मदद दें। भगवान हम सबको अैसी समझ और बुद्धि दे कि हम आजादीके बाद आनेवाले सारे त्यौहारों पर खुशियां मना सकें!"

हालांकि मैं अिन बहनकी और अिनके जैसे दूसरे लोगोंकी तारीफ करता हूं, फिर भी मैं यह कहे बिना नहीं रह सकता कि वह और अुनके जैसे सोचनेवाले लोग गलत रास्ते पर हैं। अिसे सब जानते हैं कि जो परिवार बहुत दुःखी होता है, वह भरसक त्यौहारोंकी खुशियोंसे अलग रहता है। यह अेकताके अुसूलको बहुत छोटे पैमाने पर माननेका अेक अुदाहरण है। अिस सीमाको तोड़कर बाहर निकलिये और सारा हिन्दुस्तान अेक परिवार बन जाता है। अगर सारी सीमायें खतम हो जायं, तो समूची दुनिया अेक परिवार बन जाय, जैसी कि वह सचमुच है। अिन बन्धनों और सीमाओंको तोड़कर बाहर न निकलनेका अर्थ होगा दया, ममता, प्रेम और सहानुभूति वगैराकी अुम्दा भावनाओंसे अुदासीन रहना। ये भावनायें ही आदमीको आदमी बनाती हैं। न तो हमें दूसरोंके दुःख-दर्दकी अुपेक्षा करके अपने स्वार्थमें ही मस्त रहना चाहिये और न गलत तौर पर भावुक बनकर हकीकतोंकी अुपेक्षा करनी चाहिये। दीवाली पर खुशियां न मनानेकी मेरी सलाह बहुतसी ठोस दलीलोंकी बुनियाद पर खड़ी है। शरणार्थियोंके खाने-पीने, पहनने-ओढ़ने, रहने और काम-धन्धेका सवाल हमारे सामने है, जिसका असर लाखों हिन्दू, सिक्ख और मुसलमान शरणार्थियों पर पड़ रहा है। देशमें खुराक और कपड़ेकी तंगी भी है, हालांकि वह बनावटी है। अिनसे भी गहरा कारण है बहुतसे अैसे लोगोंकी बेअीमानी जो जनताकी राय पर असर डाल सकते हैं, दुःखी लोगोंकी अपनी मुसीबतोंसे सबक न लेनेकी हठ और अितने बढ़े हुअे पैमाने पर आदमीके साथ आदमीकी बेरहमी — भाअी भाअीका

चल रहा कतल। अिस दुःख और मुसीबतमें मैं खुशीका कोअी कारण नहीं देख सकता। अगर हम मजबूती और समझदारीसे दीवालीकी खुशियोंमें भाग लेनेसे अिनकार करेंगे, तो हमें अपने दिलको टटोलने और अपने आपको पवित्र बनानेकी प्रेरणा मिलेगी। हम कोअी अैसा काम न करें जिससे अितनी कड़ी मेहनत और अितनी मुसीबतोंके बाद मिली हुअी आजादीका वरदान हम गंवा बैठें।

विदेशी बस्तियोंकी आजादी

अब मुझे अिस हफ्तेमें फ्रांसीसी हिन्दुस्तानसे आनेवाले कुछ दोस्तोंकी मुलाकातका जिक्र करना चाहिये। अुन्होंने यह शिकायत की कि चन्द्रनगरके सत्याग्रहके नामसे पुकारे जानेवाले आन्दोलनके बारेमें मैंने जो कुछ कहा था, अुसका नाजायज फायदा अुठाकर फ्रांसीसी अधिकारियोंने फ्रांसीसी हिन्दुस्तानकी जनताकी आजादीकी भावनाओंको कुचलनेकी कोशिश की, जो फ्रांसीसी सभ्यताके फायदेमन्द असरको कायम रखते हुअे हिन्दुस्तानी संघके मातहत पूरा पूरा स्वराज चाहती है। अुन्होंने मुझसे यह भी कहा कि ब्रिटिश हुकूमतकी तरह फ्रांसीसी हिन्दुस्तानमें भी अैसे लोग हैं, जिनकी तुलना पांचवीं कतारवालोंसे की जा सकती है। वे अपने स्वार्थके लिअे फ्रांसीसी अधिकारियोंका साथ देते हैं, जो बदलेमें फ्रांसीसी हिन्दुस्तानके लोगोंकी कुदरती भावनाओंको दबाना चाहते हैं। अगर फ्रांसीसी हिन्दुस्तानके मुलाकातियोंका यह बयान सच है, तो मुझे सचमुच बड़ा दुःख है। सो जो भी हो, मेरी राय अिस बारेमें साफ और पक्की है। ब्रिटिश हुकूमतसे आजाद होनेवाले अपने करोड़ों देशवासियोंके सामने छोटी छोटी विदेशी बस्तियोंके लोगोंके लिअे गुलामीमें रहना सम्भव नहीं है। मुझे यह जानकर दुःख होता है कि चन्द्रनगरके प्रति मैंने जो दोस्तीका सलूक किया, अुसका कोअी तोड़-मरोड़कर यह अर्थ लगा सकता है कि मैं हिन्दुस्तानकी विदेशी बस्तियोंके लोगोंके घटिया दरजेका कभी समर्थन कर सकता हूं। अिसलिअे मुझे अुम्मीद है कि चन्द्रनगरके बारेमें मुझे जो सूचना दी गअी है अुसकी कोअी सच्ची बुनियाद नहीं है, और महान फ्रांसीसी राष्ट्र भारतके या दूसरी जगहके काले या भूरे लोगोंको कभी नहीं दबायेगा।

६०

१०–११–'४७

भगवानके सेवक बनिये

आज शामकी प्रार्थनामें गाये गये भजनका जिक्र करते हुअे गांधीजीने कहा कि अगर मीराबाअीकी तरह हम सिर्फ भगवानके ही सेवक बन जायं, तो हमारी सारी तकलीफोंका खात्मा हो जाय। अिसके बाद जो कुछ मैं कहनेवाला हूं अुसे सुनने पर आप अिस संकेतको समझेंगे। आपने अखबारोंमें जूनागढ़के बारेमें सारी बातें पढ़ी होंगी। राजकोटसे मेरे पास आये हुअे दो तारोंसे मुझे सन्तोष हो गया कि अखबारोंमें छपी हुअी खबर बिलकुल ठीक है। जूनागढ़के प्रधानमंत्री भूतो साहब और वहांके नवाब साहब कराचीमें हैं। अुप-प्रधानमंत्री मेजर हारवे जोन्स जूनागढ़में हैं। जूनागढ़के हिन्दुस्तानी संघमें शामिल होनेके काममें अिन सबका हाथ है। अिस परसे आप लोगोंको यह नतीजा निकालनेका अधिकार है कि अिस काममें कायदे आजम जिन्नाकी भी सम्मति है। अगर यह ठीक है तो आप अिस नतीजे पर पहुंच सकते हैं कि काश्मीर और हैदराबादकी मुश्किलें भी खतम हो जायंगी। और अगर मैं आगे बढ़ूं तो कहूंगा कि अब सारी बातें शान्तिकी तरफ झुकेंगी, दोनों अुपनिवेश दोस्त बन जायंगे, और सारे काम मिल-जुलकर करेंगे। मैं कायदे आजमके बारेमें गवर्नर जनरलकी हैसियतसे नहीं सोच रहा हूं। गवर्नर जनरलके नाते कायदे आजमको पाकिस्तानके कामोंमें दखल देनेका कोअी कानूनी हक नहीं है। अिस नाते अुनकी वही स्थिति है जो लॉर्ड माअुण्टबैटनकी है, जो सिर्फ अेक वैधानिक गवर्नर जनरल हैं। वे अुस व्यक्तिकी शादीमें, जो अुनके लिअे अपने लड़केसे बढ़कर है और जिसकी अिंग्लैण्डकी भावी महारानीसे शादी हो रही है, अपनी कैबिनेटकी अिजाजत लेकर ही वहां जा सके हैं। और २४ नवम्बर तक यहां वापस आ जायंगे। अिसलिअे जिन्ना साहबके बारेमें मेरा खयाल है कि वे मौजूदा मुस्लिम लीगके बनानेवाले हैं और अुनकी जानकारी और अिजाजतके बगैर पाकिस्तानके बारेमें कुछ नहीं किया जा सकता।

अिसलिअे मैं सोचता हूं कि अगर जूनागढ़के हिन्दुस्तानी संघमें शामिल होनेके पीछे जिन्ना साहबका हाथ है, तो यह अेक अच्छा शकुन है।

पानीपतका मुआअिना

आप लोगोंको मैं पानीपतके अपने मुआअिनेके बारेमें कुछ कहना चाहता हूं। अिस मुआअिनेमें मौलाना अबुल कलाम आजाद मेरे साथ थे। राजकुमारी भी मेरे साथ जानेवाली थीं, मगर वे गवर्नमेण्ट हाअुसमें थीं और मैं अपनी घड़ीके मुताबिक साढ़े दस बजेके बाद नहीं ठहर सकता था। मुझे खुशी है कि मैं पानीपत गया था। वहां मैंने अस्पतालमें मुसलमान मरीजोंको देखा। अुनमें से कुछको बहुत गहरे घाव लगे हैं; मगर अुन पर जहां तक मुमकिन है पूरा ध्यान दिया जाता है; क्योंकि राजकुमारीने चार डॉक्टर, नर्सें और तबीबी सहायक वहां भेजे हैं। अिसके बाद हम मुसलमानों, स्थानीय हिन्दुओं और शरणार्थियोंके नुमाअिन्दोंसे मिले। वहां शरणार्थियोंकी तादाद बीस हजारसे अूपर बताअी जाती है। हमसे कहा गया कि वे रोजाना ज्यादा ज्यादा तादादमें आते जा रहे हैं, जिससे वहांके डिप्टी कमिश्नर और पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्टको भय मालूम होता है। मुझे आपको यह बतलानेमें खुशी होती है कि अिन दोनों अफसरोंकी हिन्दू और मुसलमान दोनों बहुत तारीफ करते हैं, और शरणार्थियोंका तो कुछ कहना ही नहीं। वे तो अुनसे सन्तुष्ट हैं ही।

म्युनिसिपल भवनके पास जमा हुअे शरणार्थियोंसे भी हम लोग मिल सके। पाकिस्तानमें और पानीपतके अव्यवस्थित जीवनमें शरणार्थियोंको भयानक मुसीबतें अुठानी पड़ीं और अुठानी पड़ रही हैं। अुनमें से कुछको रेलवे स्टेशनके प्लेटफार्म पर रहना पड़ता है और बहुतोंको आसमानके नीचे बिलकुल खुलेमें रहना पड़ रहा है, फिर भी अुनके मनमें और चेहरों पर जरा भी गुस्सा न देखकर मुझे बड़ी खुशी हुअी। हमारे वहां जानेसे वे लोग बड़े खुश हुअे। पानीपतके डिप्टी कमिश्नर या दूसरे लोगोंको पहलेसे सूचना किये बिना अितने शरणार्थियोंको पानीपतमें अिकट्ठे कर देना मुझे अधिकारियोंकी बेरहमी मालूम हुअी। पानीपतके अफसरोंको शरणार्थियोंकी सच्ची तादाद तब मालूम हुअी

जब ट्रेनें स्टेशनके प्लेटफार्म पर आकर रुकीं। यह सबसे बड़ी बदकिस्मतीकी बात है। पानीपतके शरणार्थियोंमें औरतें, बच्चे और बूढ़े भी हैं। मुझे यह बताया गया कि शरणार्थियोंमें अैसी औरतें भी हैं, जिन्हें स्टेशनके प्लेटफार्म पर बच्चे पैदा हुअे।

डॉ० गोपीचन्द

यह सब पूरबी पंजाबमें हो रहा है, जिसके प्रधानमंत्री डॉ० गोपीचन्द हैं। डॉ० गोपीचन्द मेरे साथी कार्यकर्ता हैं। मैं अुन्हें बहुत मानता हूं। मैं बरसोंसे अुन्हें अेक योग्य संयोजकके नाते जानता हूं, जिनका पंजाबियों पर बड़ा प्रभाव है। अुन्होंने हरिजन-सेवक-संघ, अखिल भारत चरखा-संघ और अखिल भारत ग्रामोद्योग-संघके लिअे काफी काम किया है। मुझे यह नहीं सोचना चाहिये कि पूरबी पंजाबका काम अुनकी ताकतके बाहर है। लेकिन अगर पानीपत अुनकी कार्य-कुशलताका नमूना हो, तो यह अुनकी सरकारके लिअे बड़ी बदनामीकी बात है। पहलेसे बिना सूचना दिये अितने शरणार्थी पानीपतमें क्यों अुतारे गये? अुन्हें ठहरानेके लिअे वहां नाकाफी बन्दोबस्त क्यों है? अफसरोंको पहलेसे ही यह सूचना क्यों नहीं दी गअी कि कौन और कितने शरणार्थी पानीपत भेजे जा रहे हैं? अुसके साथ ही कल मुझे यह भी सूचना मिली है कि गुड़गांव जिलेमें तीन लाख अैसे मुसलमान हैं, जिन्होंने डरकर अपना घर-बार छोड़ दिया है। वे आम सड़कके दोनों तरफ खुलेमें अिस आशासे पड़े हैं कि अुन्हें अपनी औरतों, बच्चों और मवेशियोंके साथ पंजाबकी कड़ी सरदीमें तीन सौ मीलका रास्ता तय करना है। मैं अिस बातमें विश्वास नहीं करता। मेरा खयाल है कि मुझे दोस्तोंने जो बात सुनाअी है अुसमें कुछ गलती है। अभी भी मैं आशा करता हूं कि यह बात गलत है या बढ़ा-चढ़ाकर कही गअी है। लेकिन पानीपतमें मैंने जो कुछ देखा अुससे मेरा यह अविश्वास डिग गया है। फिर भी मुझे आशा है कि डॉ० गोपीचन्द और अुनकी कैबिनेट समय रहते चेत जायगी और तब तक चैन नहीं लेगी जब तक सारे शरणार्थियोंकी अच्छी देखभालका पूरा अिन्तजाम नहीं हो जाता। यह बन्दोबस्त दूरन्देशी और हद दरजेकी सावधानीसे ही किया जा सकता है।

११–११–'४७

जूनागढ़

आजकी प्रार्थना-सभामें भाषण करते हुअे गांधीजीने कहा कि कल मैंने आपको यह खबर सुनाअी थी कि जूनागढ़के प्रधानमंत्री और अुप-प्रधानमंत्रीकी बिनती पर वहांकी आरजी सरकारने जूनागढ़ रियासतमें प्रवेश किया है। यह खबर सुनाते हुअे मुझे अचरज भी हुआ और खुशी भी हुअी, क्योंकि जूनागढ़के लोगोंकी और अुनके तरफसे लड़ी जानेवाली लड़ाअीके अितने सुखद दिखाअी देनेवाले अन्तकी मैंने आशा नहीं की थी। मैंने यह डर भी जाहिर किया था कि अगर जूनागढ़के अधिकारियोंकी बिनतीके पीछे कायदे आजम जिन्नाकी मंजूरी न हुअी, तो अभीसे खुशी मनाना ठीक न होगा। अिसलिअे आपको यह जानकर दुःख और अचरज हुअे बिना न रहेगा कि पाकिस्तानके अधिकारियोंने जूनागढ़की जनताकी तरफसे आरजी सरकारके जूनागढ़ पर अधिकार करनेका विरोध किया है और यह मांग की है कि "हिन्दुस्तानी फौजें रियासतकी सीमासे हटा ली जायं, जूनागढ़का राजकाज वहांकी अधिकारी सरकारको सौंप दिया जाय और हिन्दुस्तानी संघकी जनता द्वारा रियासत पर किये गये हमले और हिंसाको रोका जाय।" अुनका यह भी कहना है कि जूनागढ़के नवाब या वहांके दीवानको हिन्दुस्तानी संघके साथ किसी तरहका अस्थायी या स्थायी समझौता करनेका कानूनी हक नहीं है। पाकिस्तानकी रायमें हिन्द सरकारने यह कार्रवाअी करके "पाकिस्तानकी सीमाको साफ साफ लांघा है और अिस तरह अन्तर्राष्ट्रीय कानून भंग किया है।"

यूनियनमें प्रवेश

कल अखबारोंमें जो बयान निकले हैं अुनको देखते हुअे अिस मामलेमें न तो मुझे अन्तर्राष्ट्रीय कानूनका भंग मालूम होता और न यूनियन सरकारकी रियासत पर कब्जा करनेकी कोअी बात दिखाअी देती। जहां तक मैं समझ सकता हूं, जूनागढ़की जनताकी तरफसे वहांकी आरजी हुकूमतने जो आन्दोलन किया, अुसमें मुझे कोअी गैर-कानूनी

चीज नहीं दिखाओी देती। यह जरूर है कि काठियावाड़के राजाओंकी बिनती पर सारे काठियावाड़की सलामतीके लिअे यूनियन सरकारने अपनी फौजोंकी मदद भेजी। अिसलिअे मुझे अिस सारी कार्रवाअीमें कोअी गैर-कानूनीपन नहीं दिखाओी देता। अिसके खिलाफ जूनागढ़के दीवानने खुले तौर पर अपनी राय बदलकर जो कुछ किया वह गैर-कानूनी था। अिस सारे मामलेको मैं अिस नजरसे देखता हूं —— जूनागढ़के नवाब साहबको अपनी प्रजाकी मंजूरीके बिना, जिसमें मुझे बताया गया है कि ८५ फी सदी हिन्दू हैं, पाकिस्तानमें शामिल होनेका कोअी हक नहीं था। गिरनारका पवित्र पहाड़ और अुसके सारे मन्दिर जूनागढ़का अेक हिस्सा है। अुस पर हिन्दुओंने बहुत पैसा खर्च किया है और सारे हिन्दुस्तानसे हजारों यात्री गिरनारकी यात्राके लिअे वहां जाते हैं। आजाद हिन्दुस्तानमें सारे देश पर जनताका अधिकार है। अुसका जरासा भी हिस्सा खानगी तौर पर राजाओंका नहीं है। जनताके ट्रस्टी बनकर ही वे अपना दावा कायम रख सकते हैं और अिसीलिअे अुन्हें अपने हरअेक कामके लिअे जनताके समर्थनका सबूत पेश करना होगा। यह सच है कि अभी राजा-नवाबोंने यह समझा नहीं है कि वे प्रजाके ट्रस्टी और प्रतिनिधि हैं, और यह भी सच है कि कुछ रियासतोंकी जाग्रत प्रजाको छोड़कर बाकीकी रियासती प्रजाने अभी तक यह नहीं समझा है कि अपने राजकी सच्ची मालिक वही है। लेकिन अिससे मेरे द्वारा बताये गये अुसूलकी कीमत कम नहीं होती।

अिसलिअे अगर दो अुपनिवेशोंमें से किसी अेकमें शामिल होनेका किसीको कानूनी हक है, तो वह किसी खास रियासतकी प्रजाको ही है। और अगर आरजी सरकार किसी भी हालतमें जूनागढ़की रैयतकी नुमाअिन्दगी नहीं करती, तो वह अन्यायसे रियासत पर कब्जा करनेवालोंकी टोली मात्र है। और अुसे दोनों अुपनिवेशों द्वारा निकाल दिया जाना चाहिये। अगर कोअी राजा अपनी निजी हैसियतसे किसी अुपनिवेशमें शामिल होता है, तो वह अुपनिवेश दुनियाके सामने अिस चीजको न्यायोचित साबित करनेके लिअे खड़ा नहीं हो सकता। अिस अर्थमें मेरा मत है कि जब तक यह साबित न हो जाय कि जूनागढ़की प्रजाने

नवाबके पाकिस्तानमें शामिल होनेके फ़ैसले पर अपनी स्वीकृतिकी मोहर लगा दी है, तब तक नवाब साहबका अुस अुपनिवेशमें शामिल होना शुरूसे ही बेबुनियाद है। जूनागढ़ आखिर किस अुपनिवेशमें शामिल हो, अिस मामलेमें झगड़ा खड़ा होने पर अुसे सिर्फ सारी प्रजाकी रायसे ही सुलझाया जा सकता है। यह काम ठीक तरहसे किया जाय और अुसमें कहीं भी हिंसाका या हिंसाके दिखावेका अुपयोग न किया जाय। पाकिस्तानकी सरकारने, और अब जूनागढ़के प्रधानमंत्रीने भी, जो रुख अख्तियार किया है, अुससे अेक अजीब हालत पैदा हो गअी है। पाकिस्तान और संघ सरकारमें से कौन सही और कौन गलत रास्ते पर है, अिसका फैसला कौन करेगा? तलवारके जोरसे कोअी फैसला करनेकी बात सोची भी नहीं जा सकती। अेकमात्र सम्मानपूर्ण तरीका तो पंचोंके जरिये फैसला करनेका है। देशमें बहुतसे गैर-तरफदार व्यक्ति मिल सकते हैं, और अगर सम्बन्धित पार्टिया हिन्दुस्तानियोंको पंच मुकर्रर करनेकी बात पर राजी न हो सकें, तो कमसे कम मुझे तो दुनियाके किसी भी हिस्सेके किसी गैर-तरफदार आदमीके पंच चुने जाने पर कोअी अेतराज नहीं होगा।

काश्मीर और हैदराबाद

जो कुछ मैंने जूनागढ़के बारेमें कहा है, वही काश्मीर और हैदराबाद पर भी अुसी रूपमें लागू होता है। न तो काश्मीरके महाराजा साहब और न हैदराबादके निजामको अपनी प्रजाकी सम्मतिके बगैर किसी भी अुपनिवेशमें शामिल होनेका अधिकार है। जहां तक मैं जानता हूं, यह बात काश्मीरके मामलेमें साफ कर दी गअी थी। अगर अकेले महाराजा संघमें शामिल होना चाहते, तो मैं अुनके अैसे कामका कभी समर्थन नहीं कर सकता था। संघ सरकार काश्मीरको थोड़े समयके लिअे संघमें शामिल करने पर सिर्फ अिसलिअे राजी हुअी कि महाराजा और काश्मीर व जम्मूकी जनताकी नुमाअिन्दगी करनेवाले शेख अब्दुल्ला दोनों यह बात चाहते थे। शेख अब्दुल्ला अिसलिअे सामने आये कि वे काश्मीर और जम्मूके सिर्फ मुसलमानोंके ही नहीं, बल्कि सारी जनताके नुमाअिन्दा होनेका दावा करते हैं।

काश्मीरका विभाजन?

मैंने यह कानाफूंसी सुनी है कि काश्मीरको दो हिस्सोंमें बांटा जा सकता है। अिनमें से जम्मू हिन्दुओंके हिस्से आयेगा और काश्मीर मुसलमानोंके हिस्से। मैं अैसी बंटी हुअी वफादारी और हिन्दुस्तानकी रियासतोंके कअी हिस्सोंमें बंटनेकी कल्पना नहीं कर सकता। अिसलिअे मुझे अुम्मीद है कि सारा हिन्दुस्तान समझदारीसे काम लेगा और कमसे कम अुन लाखों हिन्दुस्तानियोंके लिअे, जो लाचार शरणार्थी बननेके लिअे बाध्य हुअे हैं, तुरन्त ही अिस गन्दी हालतको टाला जायगा।

६२

१२–११–'४७

दीवालीका अुत्सव

आज दीवालीका दिन है, अिसलिअे मैं आप सबको बधाअी देता हूं। हमारे हिन्दू सालका यह बहुत बड़ा दिन है। विक्रम संवतके अनुसार नया साल गुरुवारसे शुरू होगा। आपको यह समझना चाहिये कि दीवालीका दिन हमेशा रोशनी करके क्यों मनाया जाता है। राम और रावणके बीचकी बड़ी भारी लड़ाअीमें राम भलाअीकी ताकतोंके प्रतीक थे और रावण बुराअीकी ताकतोंका। रामने रावण पर विजय पाअी और अिस विजयसे हिन्दुस्तानमें रामराज कायम हुआ।

सच्ची रोशनी

लेकिन अफसोस है कि आज हिन्दुस्तानमें रामराज नहीं है! अिसलिअे हम दीवाली कैसे मना सकते हैं? वही आदमी अिस विजयकी खुशी मना सकता है जिसके दिलमें राम है। क्योंकि भगवान ही हमारी आत्माको रोशनी दे सकता है, और वही रोशनी सच्ची रोशनी है। आज जो भजन गाया गया अुसमें कविने भगवानको देखनेकी अिच्छा पर जोर दिया है। लोगोंकी भीड़ दिखावटी रोशनी देखने जाती है। लेकिन आज हमें जिस रोशनीकी जरूरत है, वह तो प्रेमकी रोशनी है। हमारे दिलोंमें प्रेमकी रोशनी पैदा होनी चाहिये। तभी सब लोग

बधाअियां पाने लायक बन सकते हैं। आज हजारों-लाखों लोग भयानक दुःख भोग रहे हैं। क्या आप लोगोंमें से हरअेक अपने दिल पर हाथ रखकर यह कह सकता है कि हर दुःखी आदमी या औरत — फिर वह हिन्दू, सिक्ख या मुसलमान कोअी भी हो — मेरा सगा भाअी या सगी बहन है? यही आपकी कसौटी है। राम और रावण भलाअी और बुराअीकी ताकतोंके बीच हमेशा चलनेवाली लड़ाअीके प्रतीक हैं। सच्ची रोशनी भीतरसे पैदा होती है।

जख्मी काश्मीर

अिसके बाद गांधीजीने लोगोंको बताया कि पण्डित जवाहरलाल नेहरू जख्मी काश्मीरको देखकर कैसे दुःखी मनसे अभी अभी लौटे हैं। वे कलकी और आज तीसरे पहरकी वर्किंग कमेटीकी बैठकोंमें शामिल नहीं हो सके। वे मेरे लिअे बारामूलासे कुछ फूल लाये हैं। कुदरतकी यह भेंट मुझे हमेशा सुन्दर मालूम होती है। लेकिन आज लूटपाट और खूनने अुस सुहावनी धरतीकी सारी सुन्दरता बिगाड़ दी है। जवाहरलालजी जम्मू भी गये थे। वहांकी हालत भी बहुत अच्छी नहीं है।

सरदार पटेलको श्री शामळदास गांधी और श्री ढेबरभाअीकी बिनती पर जूनागढ़ जाना पड़ा। वे सरदारकी रहनुमाअी चाहते थे। जिन्ना साहब और भूतो साहब दोनों नाराज हैं, क्योंकि अुन्हें लगता है कि हिन्द सरकारने अुन्हें धोखा दिया है और वह जूनागढ़को यूनियनमें शामिल होनेके लिअे दबा रही है।

नफरत और शकको निकाल दीजिये

सारे देशमें शान्ति और सद्भावना कायम करनेके लिअे हरअेकका यह फर्ज है कि वह अपने दिलसे नफरत और शकको निकाल दे। अगर आप अपनेमें भगवानकी हस्ती महसूस नहीं करेंगे और अपने सारे छोटे-छोटे आपसी झगड़ोंको नहीं भूलेंगे, तो काश्मीर या जूनागढ़की विजय बेकार साबित होगी। जब तक आप डरके मारे यहांसे भागे हुअे सारे मुसलमानोंको वापस हिन्दुस्तान नहीं लाते, तब तक सच्ची दीवाली नहीं मनाअी जा सकती। अगर पाकिस्तानने वहांसे भागे हुअे

हिन्दुओं और सिक्खोंके साथ अैसा ही नहीं किया, तो वह भी जिन्दा नहीं रह सकेगा।

अिसके बाद गांधीजीने अपने ब्रॉडकास्ट-भवन जानेका जिक्र किया, जहांसे अुन्होंने कुरुक्षेत्रके शरणार्थियोंको रेडियो पर सन्देश दिया था।

कांग्रेस वर्किंग कमेटीकी बैठकोंके बारेमें गांधीजीने कहा कि कल मैं अिनके बारेमें जो सम्भव होगा कहूंगा। मुझे अुम्मीद है कि अगले सालमें, जो गुरुवारसे शुरू होनेवाला है, आप और हिन्दुस्तान सुखी रहेंगे और भगवान आपके दिलोंको प्रकाशित करेगा, जिससे आप आपसमें अेक-दूसरेकी और हिन्दुस्तानकी ही नहीं, बल्कि अुसके द्वारा सारी दुनियाकी सेवा कर सकें।

६३

१३–११–'४७

विक्रम संवत

प्रार्थनाके बाद बोलते हुअे गांधीजीने नये वर्षके दिनका, जिसे अुन्होंने दीवालीका दिन कहा था, जिक्र किया।

अुन्होंने अिस आम रिवाजकी तरफ श्रोताओंका ध्यान खींचा कि नये सालके दिन लोग पहलेसे अच्छे काम करनेके लिअे पवित्र संकल्प करते हैं, ताकि वे दूसरी दीवाली मनानेका हक पा सकें। अिस अुत्सवके मनानेका यह मतलब होगा कि अिसमें हिस्सा लेनेवालोंने सफलताके साथ अपने संकल्पों पर अमल किया है।

बुरी ताकतोंको जीतिये

मुझे अुम्मीद है कि आप लोग आज अेक बहुत बड़ा निश्चय करेंगे। वह यह है कि पाकिस्तान या हिन्दुस्तानी संघमें दूसरे लोग चाहे जो करें या न करें, लेकिन आप लोग तो मुसलमानोंके अच्छे दोस्त होनेका अपना संकल्प पूरा करेंगे। अिसका मतलब यह है कि सालभर आप अपने भीतर रहनेवाली बुरी ताकतोंको जीतेंगे और अच्छाअीके देवता रामका राज अपने दिलों पर कायम करेंगे।

मैं आप लोगोंका ध्यान अिस सचाअीकी तरफ खींचना चाहूंगा कि हालांकि हर साल दीवाली पर जबरदस्त रोशनी की जाती है, मगर कल बरायेनाम रोशनी थी। यह अिस अन्धविश्वासके कारण किया गया था कि अगर बिलकुल रोशनी नहीं की गअी, तो यह अुनके लिअे पूरे साल अेक बुरा शकुन रहेगा। मैं अिसको अन्धविश्वास अिसलिअे कहता हूं कि जब तक बाहरी रोशनी भीतरी रोशनीकी प्रकट निशानी नहीं है, तब तक वह चाहे जितनी चमकदार क्यों न हो, अुससे कोअी अच्छा मकसद पूरा नहीं हो सकता।

कांग्रेस अुसूल पर डटी रहेगी

अिसके बाद गांधीजीको कल दिये गये अपने अिस वादेकी याद आ गअी कि वे कांग्रेस वर्किंग कमेटीकी तीन बैठकोंमें हुअी चर्चाओंके बारेमें कुछ कहेंगे। अिस विषय पर बोलते हुअे गांधीजीने कहा कि हालांकि वर्किंग कमेटीने आगामी अे० आअी० सी० सी० की बैठकमें पेश करनेके लिअे कोअी प्रस्ताव तो पास नहीं किया है, फिर भी आपको यह बतलाते हुअे मुझे खुशी होती है कि वर्किंग कमेटीके मेम्बर और अुसमें आमंत्रित किये गये खास लोग अिस मामलेमें अेकराय थे कि जो कांग्रेस जन्मसे अभी तकके अपने साठ सालसे अूपरके जीवनमें पूरी तरह साम्प्रदायिक मेल-मिलापके लिअे काम करती रही है और भारी विकट परिस्थितियोंमें भी पूरे मेल-मिलापका जिसका रेकार्ड कायम रहा है, वह अपने अिस सिद्धान्तको नहीं छोड़ेगी। अिस मामलेमें अुनकी राय बिलकुल साफ थी कि चाहे कांग्रेस किसी समय अल्पसंख्यामें ही क्यों न रह जाय, फिर भी वह मौजूदा पागलपनके सामने झुकनेके बजाय खुशीसे अुस अग्नि-परीक्षाका सामना करेगी।

धर्ममें दबावकी गुंजाअिश नहीं

कांग्रेसके लिअे अैसी आजादीका कोअी महत्त्व नहीं जिसमें जाति या धर्मके भेदको भूलकर सबके साथ बराबरीका बरताव न किया जाय। दूसरे शब्दोंमें, कांग्रेस और कांग्रेसकी नुमाअिन्दगी करनेवाली किसी भी सरकारको पूरी तरह लोकशाही और जनप्रिय संस्था बने रहना चाहिये और हर आदमीको बिना किसी सरकारी दस्तन्दाजीके वह धर्म पालनेकी

आजादी देनी चाहिये, जो अुसे सबसे अच्छा लगता हो। अेक ही राजमें अेक ही झण्डेके नीचे पूरी वफादारीसे रहनेवाले लोगोंमें बहुत ज्यादा समानता होती है। आदमी आदमीके बीच अितनी समानता होती है कि धर्मके नाम पर अुनके बीच लड़ाअी होते देखकर ताज्जुब होता है। जो धर्म या सिद्धान्त दूसरोंको अेक ही तरहका आचरण करनेके लिअे दबाता है वह केवल नामका धर्म है; क्योंकि सच्चे धर्ममें दबावके लिअे कोअी जगह नहीं होती। जो काम दबावसे किया जाता है वह ज्यादा दिनों तक नहीं टिकता। वह किसी न किसी दिन जरूर मिट जायगा। आपको अिस बातका गर्व होना चाहिये —— फिर भले आप कांग्रेसके चवन्नी-मेम्बर हों या न हों —— कि आपके बीच अेक अैसी संस्था है, जिसके मुकाबलेमें देशकी कोअी संस्था नहीं ठहर सकती, जो मजहबी हुकूमत बननेसे नफरत करती है, और जिसने हमेशा अिस अुसूलमें विश्वास किया है कि अुसकी कल्पनाका राज लोकशाहीको माननेवाला और मजहबी हुकूमतसे दूर रहनेवाला होना चाहिये और अुस राजको बनानेवाले अलग अलग अंगोंमें पूरा मेल और समन्वय होना चाहिये। कांग्रेस अिस अुसूलमें सिर्फ विश्वास ही नहीं करती, अुस पर हमेशा अमल भी करती है। जब मैं अिस बात पर विचार करता हूं कि यूनियनमें मुसलमानोंकी कितनी बुरी हालत है, किस तरह बहुतसी जगहोंमें अुन्हें मामूली जीवन बिताना भी मुश्किल हो गया है, और किस तरह वे यूनियनसे लगातार पाकिस्तान भाग रहे हैं, तो मुझे ताज्जुब होता है कि अैसी हालत पैदा करनेवाले लोग क्या कभी कांग्रेसके लिअे अिज्जतकी चीज हो सकते हैं? अिसलिअे मुझे अुम्मीद है कि आजसे शुरू होनेवाले सालमें हिन्दू और सिक्ख अैसा बरताव करेंगे कि यूनियनका हर मुसलमान, फिर वह लड़का हो या लड़की, यह समझने लगे कि वह बड़ेसे बड़े हिन्दू या सिक्खकी तरह ही सुरक्षित और आजाद है।

कांग्रेस महासमितिकी बैठक

कांग्रेस महासमितिकी बैठक अगले शनिवारको होगी। मुझे आशा है कि अुसके मेम्बर अैसे ठहराव पास करेंगे, जो कांग्रेसकी सबसे अच्छी परम्पराओंके लायक होंगे और देशके गरीब-अमीर, राजा और किसान

सारे लोगोंका हित करनेवाले होंगे। सिर्फ तभी कांग्रेस हिन्दुस्तानके नाम और गौरवको कायम रख सकेगी, जिनके लिअे वह जिम्मेदार रही है। वह नाम और वह गौरव हिन्दुस्तानको दुनियाके सारे शोषित राष्ट्रोंके हकों और अिज्जतका रक्षक बनायेगा।

६४

१४-११-'४७

रामनाम सबसे बड़ा है

आज शामके भजनको ही गांधीजीने अपनी चर्चाका विषय बनाते हुअे कहा, जब मैं आगाखान महलमें, जिसे मुझे, देवी सरोजिनी नायडू, मीराबहन और महादेवभाअीको बन्द रखनेके लिअे कैदखानेका रूप दे दिया गया था, अुपवास कर रहा था, तब अिस भजनने मुझ पर अपना अधिकार कर लिया था। यहां मैं अुपवासके कारणोंमें नहीं जाना चाहता।

अुसके बारेमें मैं सिर्फ अितना ही कहना चाहता हूं कि अुन अिक्कीस दिनों तक मैं जो टिका रहा, अुसकी वजह वह पानी नहीं था जो मैं पीता था, न वह सन्तरेका रस ही था जो कुछ दिनों तक मैंने लिया था। जो मेरी असाधारण डॉक्टरी देखरेख हो रही थी, वह भी अुसका कारण नहीं थी। मगर मैंने अपने भगवानको, जिसे मैं राम कहता हूं, अपने दिलमें बसा रखा था; अुसी वजहसे मैं टिका रहा। मैं अिस भजनकी लकीरों पर अितना मोहित हो गया था कि मैंने संम्बन्धित लोगोंसे कहा कि वे तारके जरिये भजनके ठीक ठीक शब्द भेजें, जिन्हें मैं अुस वक्त भूल गया था। मुझे अुस वक्त जवाबी तारसे जब वह पूरा भजन मिला तो बड़ी खुशी हुअी। भजनका भाव यह है कि रामनाम ही सब कुछ है और अुसके सामने दूसरे देवताओंका कोअी महत्त्व नहीं है। अपने जीवनकी यह अुपदेशभरी कहानी मैं आप लोगोंको अिसलिअे सुनाना चाहता हूं कि अगले दिन यानी शनिवारको नअी दिल्लीमें अे० आअी० सी० सी० का जो महत्त्वपूर्ण अधिवेशन होनेवाला है, अुसमें अुसके मेम्बर अपने दिलोंमें भगवानको रखकर सारे विचार और सारी चर्चाअें करें। वह अुन्हें करना ही होगा, क्योंकि वे कांग्रेसियोंके नुमाअिन्दे हैं। और अिसलिअे

अगर अुनके मुखिया कांग्रेसी अपने दिलोंमें भगवानके बजाय शैतानको रखते हैं, तो वे कांग्रेसके प्रति वफादार नहीं हैं।

शरणार्थियोंका लौटना

अे० आअी० सी० सी० के सामने रखे जानेवाले प्रस्तावों पर वर्किंग कमेटीने पूरे तीन घण्टों तक चर्चा की। चर्चामें यह सवाल अुठा कि किस तरह अैसा वातावरण पैदा किया जाय, जिससे सारे हिन्दू और सिक्ख शरणार्थी अिज्जत और हिफाजतके साथ पश्चिम पंजाबमें अपने अपने घरोंको लौटाये जा सकें। वे अिस नतीजे पर पहुंचे कि बुराअी पाकिस्तानसे ही शुरू हुअी। मगर अुन्होंने यह भी महसूस किया कि जब बड़े पैमाने पर अुस बुराअीकी नकल की गअी और हिन्दुओं और सिक्खोंने पूर्व पंजाब और अुसके नजदीकके यूनियनके हिस्सोंमें भयंकर बदले लिये, तो बुराअीकी शुरुआत करनेका वह सवाल फीका पड़ गया। अगर अे० आअी० सी० सी० विश्वासके साथ यह कह सकती कि जहां तक यूनियनका सम्बन्ध है, पागलपनके दिन बीत गये और यूनियनके अेक सिरेसे दूसरे सिरे तक सब लोग समझदार बन गये हैं, तो वह पूरे विश्वासके साथ यह भी कह सकती थी कि पाकिस्तान डोमिनियनको हिन्दू और सिक्ख शरणार्थियोंको अिज्जत और पूरी हिफाजतके साथ अपने यहां वापस बुलानेके लिअे लाचार होना पड़ेगा। यह हालत सिर्फ तभी पैदा की जा सकती है, जब आप लोग और दूसरे हिन्दू और सिक्ख रावण या शैतानके बदले राम यानी भगवानको अपने दिलोंमें बसा लें। क्योंकि जब आप शैतानको अपने दिलोंसे हटा देंगे और आजके पागलपनको छोड़ देंगे, तब हरअेक मुसलमान बच्चा भी यहां अुतनी ही आजादीसे घूम-फिर सकेगा, जितनी आजादीसे अेक हिन्दू या सिक्खका बच्चा घूमता है। अिसमें मुझे कोअी शक नहीं कि तब जो मुसलमान शरणार्थी लाचार होकर अपने घर छोड़ गये हैं वे खुशीसे लौटेंगे और तब हरअेक हिन्दू और सिक्ख शरणार्थीके हिफाजत और अिज्जतके साथ पाकिस्तानमें अपने घर लौटनेका रास्ता साफ हो जायगा।

क्या मेरे शब्द आप लोगोंके दिलोंमें गूंज सकेंगे और अे० आअी० सी० सी० समझदारी और अिन्साफभरा फैसला कर सकेगी?

१५-११-'४७

राष्ट्रका पिता?

अपना भाषण शुरू करते हुअे गांधीजीने कहा, मैं मानता हूं कि आप लोग स्वभावत: यह अुम्मीद करेंगे कि दोपहरको अे० आअी० सी० सी० की बैठकमें मैंने जो कुछ कहा है वह आप लोगोंको बतलाअूं। मगर मेरी अुसे दोहरानेकी अिच्छा नहीं होती। दरअसल मैंने वहां पर वही बात कही थी जो मैं आप लोगोंको अितने दिनोंसे कहता आ रहा हूं। अगर मुझे पूरी अीमानदारीसे राष्ट्रका पिता कहा जाता है, तो वह सिर्फ अिसी अर्थमें सच है कि सन् १९१५ में मेरे दक्षिण अफ्रीकासे लौटनेके बाद कांग्रेसका जो स्वरूप बना अुसके बनानेमें मेरा बड़ा हाथ था। अिसका मतलब यह है कि देश पर मेरा बड़ा असर था। मगर आज मैं अैसे असरका दावा नहीं कर सकता। अिससे मुझे चिन्ता नहीं है -- कमसे कम वह होनी नहीं चाहिये। सबको सिर्फ अपना फर्ज अदा करना चाहिये और नतीजेको भगवानके हाथमें छोड़ देना चाहिये। भगवानकी मर्जीके बगैर कुछ भी नहीं होता। हमारा फर्ज सिर्फ कोशिश करना है। अिसलिअे मैं तो अे० आअी० सी० सी० की बैठकमें अिस फर्जको ध्यानमें रखकर गया था कि अगर बैठककी कार्रवाअी शुरू होनेसे पहले मेम्बरोंसे कुछ कहनेकी मुझे अिजाजत मिल गअी, तो मैं अुनके सामने वह बात रख दूंगा जिसे मैं सच मानता हूं।

कण्ट्रोल नुकसानदेह हैं

आप लोगोंसे मैं कण्ट्रोलके बारेमें कुछ कहना चाहता हूं। क्योंकि मैं अे० आअी० सी० सी० की बैठकमें मौजूदा अहमियत रखनेवाले दूसरे मामलों पर ज्यादा देर तक बोला, अिसलिअे कण्ट्रोलके बारेमें सिर्फ अिशारा भर कर सका।

मैं महसूस करता हूं कि कण्ट्रोल रखना गुनाह है। कण्ट्रोलका तरीका लड़ाअीके दिनोंमें अच्छा रहा होगा। अेक फौजी देशके लिअे वह आज भी अच्छा हो सकता है। मगर हिन्दुस्तानके लिअे वह नुकसानदेह है। मुझे विश्वास है कि देशमें अनाज या कपड़ेकी कोअी

कमी नहीं है। अिस साल बरसातने हमें धोखा नहीं दिया है। हमारे देशमें काफी कपास है और चरखे और करघे पर काम करनेवाले काफी लोग हैं। अिसके अलावा, देशमें मिलें भी हैं। अिसलिअे मुझे लगता है कि अनाज और कपड़ेके कण्ट्रोल दोनों बुरे हैं। हमारे यहां दूसरे कण्ट्रोल भी हैं, जैसे पेट्रोल, शक्कर वगैराके। अिन चीजों पर कण्ट्रोल रखनेका मैं कोअी अुचित कारण नहीं देखता। अिससे लोग आलसी और पराधीन बनते हैं। आलस और पराधीनता देशके लिअे हमेशा बुरी चीजें हैं। अिन कण्ट्रोलोंके बारेमें मेरे पास रोज शिकायतें आती हैं। मुझे अुम्मीद है कि देशके नुमाअिन्दे समझदारीभरा फैसला करेंगे और सरकारको घूसखोरी, पाखण्ड और काले बाजारको बढ़ावा देनेवाले कण्ट्रोलोंको हटानेकी सलाह देंगे।

६६

१६–११–’४७

भगवानको पाना

अपने भाषणमें गांधीजीने कहा कि आज शामको गाये गये भजनमें कहा गया है कि अिन्सानका बड़ेसे बड़ा अुद्योग भगवानको पानेकी कोशिश करना है। वह मन्दिरों, मूर्तियों, या अिन्सानके हाथों बनाअी हुअी पूजाकी जगहोंमें नहीं मिल सकता, और न अुसे व्रतों और अुपवासके जरिये ही पाया जा सकता है। अीश्वर सिर्फ प्यारके जरिये मिल सकता है, और वह प्यार लौकिक नहीं, अलौकिक होना चाहिये। मीराबाअी, जो हर चीजमें भगवानको देखती थीं, अैसे प्यारका जीवन बिताती थीं। अुनके लिअे भगवान ही सब कुछ था।

रामपुर स्टेट — तब और अब

भजनके भावको रोजानाकी जिन्दगी पर लागू करते हुअे गांधीजी रामपुर स्टेटकी चर्चा करने लगे। अुन्होंने कहा कि अिस स्टेटके शासक मुसलमान हैं, मगर अिसका यह मतलब नहीं है कि वह अेक मुस्लिम स्टेट है। कअी साल पहले मरहूम अलीभाअी मुझे वहां ले गये थे और

मैं वहां अुनके घरमें ठहरा था। मुझे अुस समयके नवाब साहबसे भी मिलनेका मौका मिला था, क्योंकि वे अुस जमानेके मशहूर राष्ट्रीय मुसलमान मरहूम हकीम साहब अजमलखान और मरहूम डॉक्टर अन्सारीके दोस्त थे। तब वहां हिन्दू और मुसलमान आजसे ज्यादा शान्ति और मेलजोलसे रहते थे। मगर पिछले अितवारको जो हिन्दू दोस्त वहांसे मुझे मिलनेके लिअे आये थे, अुन्होंने दूसरी ही कहानी सुनाअी। अुन्होंने कहा कि वह स्टेट हिन्दुस्तानी संघमें तो शामिल हो गअी है, लेकिन मुस्लिम लीगका छल-कपटभरा असर वहां है। अगर वही अेक रुकावट होती, तो अुस पर आसानीसे काबू पाया जा सकता था। मगर वहां हिन्दू महासभा भी है, जिसे राष्ट्रीय स्वयंसेवक-संघके आदमियोंसे मदद मिलती है, जिनकी अिच्छा यह है कि सारे मुसलमानोंको हिन्दुस्तानी संघसे निकाल दिया जाय।

सत्याग्रह सबसे बड़ा हथियार

सवाल यह है कि जो कांग्रेसजन अपने कांग्रेसके मकसदके प्रति वफादार हैं, वे अपनी हालत कैसे अच्छी बनावें? क्या वे सफलताकी आशासे सत्याग्रह कर सकते हैं? यह जानकर अुन लोगोंको खुशी हुअी कि कांग्रेस महासमिति कांग्रेसके मकसद पर मजबूतीसे जमी हुअी है और अैसे हिन्दुस्तानके बननेसे अिनकार करती है, जिसमें सिर्फ हिन्दू ही मालिकोंकी तरह रह सकें। कांग्रेसके अुसूल और मकसद अितने अुदार हैं कि अुसमें देशकी सारी जातियां शामिल हो जाती हैं। अुसमें ओछी साम्प्रदायिकताके लिअे कोअी जगह नहीं है। वह सियासी संस्थाओंमें सबसे पुरानी है। लोगोंकी सेवा ही अुसका अेकमात्र आदर्श है। अे० आअी० सी० सी० में जो कुछ हो रहा है, अुससे रामपुरके कांग्रेसियोंको अपनी लड़ाअीके लिअे बल मिला है। फिर भी, अिसके बारेमें वे मेरी राय चाहते थे। मैंने कहा कि मैं आपके वहांकी हालत नहीं जानता, अिसलिअे कोअी नियम तो नहीं बना सकता। न मुझे अुन सब बातोंका अध्ययन करनेका समय है। लेकिन अितना तो मैं विश्वासके साथ कह सकता हूं कि सत्याग्रह दुनियामें सबसे बड़ी ताकत है, जिसके सामने आपका बताया हुआ विरोधी संगठन लम्बे समय तक टिक नहीं सकता।

सत्याग्रहका अर्थ

आजकल हथियारबन्द या दूसरी तरहके किसी भी विरोधको सत्याग्रहका नाम देना अेक फैशन-सा हो गया है। अिससे समाजको नुकसान होता है। अिसलिअे अगर आप लोग सत्याग्रहके पूरे अर्थको समझ लें और यह जान लें कि सत्य और प्रेमके रूपमें जीता-जागता भगवान सत्याग्रहीके साथ रहता है, तो आपको यह माननेमें कोअी संकोच नहीं होगा कि सत्याग्रह पर कोअी विजय नहीं पा सकता। हिन्दू महासभा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक-संघके बारेमें मुझे जो कहना पड़ा है अुसका मुझे दुःख है। अिस बारेमें मुझे अपनी गलती जानकर खुशी होगी। मैं राष्ट्रीय स्वयंसेवक-संघके मुखियासे मिला हूं। मैं अिस संघकी अेक बैठकमें भी शामिल हुआ था। तबसे मुझे अुसकी बैठकमें जानेके लिअे डांटा जाता रहा है और मेरे पास राष्ट्रीय स्वयंसेवक-संघके बारेमें शिकायतोंके क़अी खत आये हैं।

अफ्रीकाके बारेमें हिन्दू-मुस्लिम अेक हैं

अिसके बाद गांधीजीने कहा, जो भी हम सब अपने देशमें साम्प्रदायिक झगड़ेकी आगको बुझानेमें लगे हैं, तो भी हमें हिन्दुस्तानके बाहर रहनेवाले अपने भाअियोंको नहीं भूलना चाहिये। आप जानते हैं कि संयुक्त राष्ट्रसंघके सामने हमारा हिन्दुस्तानी प्रतिनिधि-मण्डल दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंके अधिकारोंके लिअे कितनी बहादुरी और अेकतासे लड़ रहा है। आप सब श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डितको जानते हैं। वे हिन्दुस्तानी प्रतिनिधि-मण्डलकी मुखिया अिसलिअे नहीं हैं कि पण्डित जवाहरलालकी बहन हैं, बल्कि अिसलिअे हैं कि वे अिसके लायक हैं और अपना काम होशियारीसे करती हैं। अुनके साथ बड़े अच्छे अच्छे लोग हैं और वे सब अेक रायसे वहां बोलते हैं। मुझे सबसे बड़ी खुशी जफरुल्ला साहब और अिस्पहानी साहबके भाषणोंसे हुअी जो आजके अखबारोंमें छपे हैं। अुन्होंने संयुक्त राष्ट्रसंघके लोगोंके सामने साफ साफ शब्दोंमें यह कह दिया कि दक्षिण अफ्रीकामें हिन्दुस्तानियोंके साथ वही बरताव नहीं किया जाता जो गोरोंके साथ किया जाता है। वहां अुनकी बेअिज्जती की जाती है और अुनके साथ अछूतोंकी तरह बरताव

करके अुनका बहिष्कार किया जाता है। यह सच है कि दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानी कंगाल और भूखे नहीं हैं। लेकिन आदमी सिर्फ रोटीसे तो नहीं जी सकता। मानव अधिकारोंके सामने पैसा तो कोअी चीज नहीं है। और ये हक दक्षिण अफ्रीकाकी सरकार हिन्दुस्तानियोंको नहीं देती। हिन्दुस्तानके हिन्दू और मुसलमान विदेशोंमें रहनेवाले हिन्दुस्तानियोंके सवालों पर दो-राय नहीं हैं। अिससे साबित होता है कि दो राष्ट्रोंका अुसूल गलत है। अिससे मैंने जो सबक सीखा है, और आप लोगोंको मेरे कहनेसे जो सबक सीखना चाहिये, वह यह है कि दुनियामें प्रेम सबसे अूंची चीज है। अगर हिन्दुस्तानके बाहर हिन्दू और मुसलमान अेक आवाजसे बोल सकते हैं, तो यहां भी वे जरूर अैसा कर सकते हैं, शर्त यह है कि अुनके दिलोंमें प्रेम हो। गलती अिन्सानसे होती ही है। लेकिन अपनी गलतियोंको सुधारना भी अिन्सानके स्वभावमें है। माफ करना और भूल जाना हमेशा सम्भव है। अगर आज हम अैसा कर सके और बाहरकी तरह हिन्दुस्तानमें भी अेक आवाजसे बोल सके, तो हम आजकी मुसीबतोंसे पार हो जायेंगे। जहां तक दक्षिण अफ्रीकाका सम्बन्ध है, मुझे आशा है कि वहांकी सरकार और वहांके गोरे अुस बातसे फायदा अुठायेंगे, जो अिस मामलेमें मशहूर हिन्दू और मुसलमान अेकरायसे साफ साफ कह रहे हैं।

६७

१७–११–'४७

हिन्दुस्तान और दक्षिण अफ्रीका

कल मैं रामपुर और अपने अुन देशभाअियोंके बारेमें बोला था जो दक्षिण अफ्रीकामें हैं। मुझे लगता है कि आज मुझे दूसरे विषय पर ज्यादा खुलकर कहना चाहिये। मैं दक्षिण अफ्रीकामें १८९३ से १९१४ तक करीब बीस बरस रहा हूं। अुस लम्बे अरसेमें, जब कि मेरा जीवन बन रहा था, शायद अेक ही साल मैं बाहर रहा होअूंगा। अुस दरमियान मैं सिर्फ हिन्दुस्तानियोंके ही नहीं, बल्कि अुन गोरे लोगोंके गहरे सम्बन्धमें भी आया, जो हिन्दुस्तान जैसे अुस बड़े देशमें आकर बस गये हैं। तबसे

आज तक अगर दक्षिण अफ्रीका आगे बढ़ा है, तो हिन्दुस्तानने दिन दूनी और रात चौगुनी तरक्की की है। जो कल तक असम्भव मालूम होता था वह आज बन गया है। यहां अुसके कारणोंमें जानेकी आवश्यकता नहीं। आज हकीकत यह है कि हिन्दुस्तान ब्रिटिश कामन-वेल्थ (राष्ट्र-समूह) में आ गया है, यानी अुसका दरजा बिलकुल वही है जो दक्षिण अफ्रीकाका है। क्या अेक अुपनिवेशके लोगोंको दूसरे अुपनिवेशमें गुलाम माना जाना चाहिये? अेक अेशियायी राष्ट्र आज ब्रिटिश राष्ट्र-समूहमें पहली दफा सब सदस्योंकी मरजीसे शामिल होता है।

राष्ट्र-समूहमें हिन्दुस्तान

अब देखिये कि आरेंजियाके शासक डॉ० अेस० पी० बर्नार्डने हिन्दुस्तानके ब्रिटिश राष्ट्र-समूहमें शामिल होनेके पांच दिन बाद डर्बनकी नेटाल अिण्डियन कांग्रेसको क्या सन्देश भेजा था। अुन्होंने लिखा था:

> "क्योंकि आप नये अुपनिवेशोंकी नअी आजादीका दिन मना रहे हैं, जो आपके विचारसे हिन्दुस्तानके अितिहासमें बड़ा दिन है, अिसलिअे मैं आशा करता हूं कि दक्षिण अफ्रीकाके सब हिन्दुस्तानी अपने-आप नये अुपनिवेशोंमें चले जायंगे और वहां जाकर अुस सन्देशका प्रचार करेंगे जो अुन्हें दक्षिण अफ्रीकामें सिखाया गया है; यानी वहां जाकर वे लोगोंको शान्ति और व्यवस्थासे रहना और अुन मजहबी झगड़ोंसे बचना सिखावेंगे, जिनकी वजहसे आज हिन्दुस्तानमें हजारों लोग मारे जा रहे हैं।"

रंगद्वेष

यह बात ध्यान देने लायक है। डॉ० बर्नार्डकी अिस बातसे साफ मालूम होता है कि अुन्हें अिसमें शक है कि हिन्दुस्तानके ब्रिटिश राष्ट्र-समूहमें शामिल होनेका दिन बड़ा दिन था। और फिर वे नेटाल कांग्रेसको यह बिनमांगी सलाह देते हैं कि "दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंको हिन्दुस्तान चले जाना चाहिये और वहां अुस सन्देशका प्रचार करना चाहिये जो अुन्हें दक्षिण अफ्रीकामें सिखाया गया था, यानी शान्ति और व्यवस्थासे रहना और मजहबी दंगोंसे बचना।" मुझे बड़ा डर है कि दक्षिण अफ्रीकाका औसत गोरा आदमी हिन्दुस्तानके बारेमें अिसी तरह सोचता

है। अिसीलिअे वहां हमारे देशवासिओंके रास्तेमें तरह तरहके अड़ंगे लगाये जाते हैं। अुनका दोष यही है कि वे अेशियाके हैं और अुनका रंग काला है। मैं दक्षिण अफ्रीकाके सबसे आला यूरोपियन लोगोंसे यह प्रार्थना करता हूं कि वे अेशियाके खिलाफ और काले रंगके खिलाफ अपनी अिस द्वेषभरी भावना पर फिर विचार करें और अुसे सुधारें। अुनके बीच अफ्रीकाके हबशियोंकी बहुत बड़ी आबादी पड़ी है। कुछ बातोंमें हबशियोंके साथ अेशियावालोंसे भी बदतर बरताव किया जाता है। मैं वहां जाकर बस जानेवाले यूरोपियनोंसे जोर देकर यह कहूंगा कि वे जमानेको पहचानें। या तो अुनका यह रंगद्वेष बिलकुल गलत है, या फिर अंग्रेजों और ब्रिटिश कामन-वेल्थके दूसरे मेम्बरोंने अेशियायी देशोंको कामन-वेल्थके मेम्बर बनाकर अैसी गलती की है जो माफ नहीं की जा सकती। बर्माको आजादी मिलने ही वाली है। और लंका भी जल्दी ही राष्ट्र-समूहका मेम्बर बन जायगा। लेकिन अिसका मतलब क्या है? मुझे सिखाया गया है कि राष्ट्र-समूहका मेम्बर होना आजादीसे बढ़कर नहीं तो कमसे कम अुसके बराबर तो है ही। अिन आजाद हुकूमतोंके जिम्मेदार मर्द और औरतोंको अिस बात पर अच्छी तरह विचार करना होगा कि आजादी लेनेके बाद वे क्या करेंगे? आज बहुतसी आजाद हुकूमतें बनानेका आन्दोलन चल रहा है। यह अपने आपमें अुचित और अच्छी चीज है। लेकिन क्या अिसका अन्त यह होगा कि अेक लड़ाअी और होगी, जो शायद पिछली दो लड़ाअियोंसे ज्यादा भयानक होगी? या अिसका नतीजा, जैसा कि होना चाहिये, यह होगा कि मनुष्य-जातिका प्रेम और भाअीचारा बढ़ेगा?

अिन्सान जैसा सोचता है वैसा ही बनता है

"अिन्सान जैसा सोचता है वैसा ही बन जाता है।" सयाने आदमियोंका तजरबा अिस सचाअीका सबूत देता है। अिस तरह दुनिया वैसी ही बनती है जैसे कि अुसके सयाने आदमी सोचते हैं। अेक फालतू विचार कोअी विचार ही नहीं होता। अगर हम कहें कि दुनिया मूर्ख जनताकी चालके मुताबिक बनेगी तो बड़ी भूल होगी। वह कभी सोच नहीं सकती — वह तो भेड़की तरह पीछे पीछे चलती है। आजादीका

मतलब होना चाहिये जनताका राज। जनताके राजका मतलब यह है कि हर आदमीको बुद्धि पानेका मौका मिले। बुद्धि और हकीकतोंकी जानकारी ये दो अलग अलग चीजें हैं। दक्षिण अफ्रीकामें जैसे काबिल सिपाही हैं — जो अुतने ही काबिल किसान भी हैं — वैसे ही बहुतसे बुद्धिमान मर्द और औरतें भी हैं। अगर वे लोग अपनी शक्ति घटानेवाले वातावरणसे अूंचे न अुठे और अगर अुन्होंने अिस दुःखदायी समस्या पर कि गोरे लोग सबसे अूंचे हैं, अपने देशको ठीक रास्ता नहीं दिखलाया, तो दुनियाके लिअे यह बड़े दुःखकी बात होगी। क्या यह खेल खेलते खेलते लोग अब थक नहीं गये हैं?

जनताकी आवाज

मैं आपको थोड़ी देर और रोकूंगा, ताकि कण्ट्रोलके सवाल पर आपसे कुछ कहूं। अिस सवाल पर आजकल खूब बहस हो रही है। क्या अुन पण्डितोंके शोरमें, जो कण्ट्रोलके बारेमें सब कुछ जाननेका दावा करते हैं, जनताकी आवाज डूब जायगी? हमारे मंत्री, जो कि जनतामें से चुने गये हैं और जनताके हैं, अच्छी तरह जानते हैं कि अिन दफ्तरी माहिरोंने सिविल नाफरमानीके वक्त अुन्हें कितना बड़ा नुकसान पहुंचाया है। कितना अच्छा हो अगर वे आज अिन माहिरोंकी बात सुननेके बजाय जनताकी आवाजको सुनें। अुन दिनों अिन माहिरोंने पूरी कड़ाअीसे हुकूमत की थी। क्या आज भी अुन्हें अैसा ही करना चाहिये? क्या लोगोंको गलतियां करने और अुनसे सबक लेनेका कोअी मौका नहीं दिया जायगा? क्या मंत्री यह नहीं जानते कि अुन अुदाहरणोंमें से, जिन्हें मैं नीचे दे रहा हूं, अगर किसी अेकमें कण्ट्रोल हटानेसे जनताको नुकसान पहुंचे, तो वे अितनी ताकत रखते हैं कि अुस पर फिरसे कण्ट्रोल लगा सकते हैं?

कण्ट्रोलोंकी जो फेहरिस्त मेरे सामने है अुससे मेरे जैसा सादा आदमी तो हैरान हो जाता है। अुनमें से कुछमें अच्छाअी हो सकती है। मैं तो सिर्फ अितना ही कहता हूं कि अगर कण्ट्रोलोंकी साअिन्स नामकी कोअी चीज है, तो अुसे ठण्डे दिलसे जांचना होगा। अुसके बाद लोगोंको अिस बातकी तालीम देनी होगी कि आम कण्ट्रोलका क्या

मतलब है और खास खास चीजोंके कण्ट्रोलका क्या अर्थ है। जो फेहरिस्त मुझे मिली है अुसकी सचाअीकी जांच किये बगैर, अुसमें से कुछ नमूने निकालकर नीचे देता हूं: अेक्सचेंज पर, रुपया लगाने पर, केपिटल अिन्श्योरेन्स पर, बैंकोंकी शाखायें खोलने पर, अिन्श्योरेन्समें पैसा लगाने पर, मुल्कके बाहर जाने और अन्दर आनेवाली हर किस्मकी चीजों पर, अनाज पर, चीनी पर, गुड़, गन्ना और शर्बत पर, वनस्पति पर, कपड़े पर जिसमें गरम कपड़ा भी शामिल है, पावर अल्कोहॉल पर, पेट्रोल और मिट्टीके तेल पर, कागज पर, सीमेण्ट पर, फौलाद पर, भोडर पर, मेंगनीज पर, कोयले पर, ढुलाअी पर, मशीनरी लगाने और फैक्टरी खोलने पर, कुछ सूबोंमें मोटरें बेचने पर और चायकी खेती पर।

६८

१८-११-'४७

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीके प्रस्ताव

आज शामको प्रार्थना-सभाके सामने बोलते हुअे गांधीजीने अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी द्वारा पास किये गये प्रस्तावोंका जिक्र किया। अुन्होंने कहा कि अुनमें से ज्यादातर प्रस्ताव अैसे हैं, जिनमें जनतासे और साथ ही केन्द्रीय और प्रान्तीय सरकारोंसे भी कुछ फर्ज अदा करनेकी आशा की गअी है।

हिन्दू-मुस्लिमोंके आपसी सम्बन्ध

अिस तरह मुख्य प्रस्तावमें हर गैर-मुस्लिम नागरिकसे आशा की गअी है कि वह हर मुसलमान नागरिकसे अुचित बरताव करे, जिससे वह हिन्दुस्तानके किसी भी हिस्सेमें अपनी जान और मालकी पूरी सलामती अनुभव कर सके। अुसमें यह भी आशा जाहिर की गअी है कि सरकार और जनता अैसा काम करेगी जिससे सारे मुसलमान शरणार्थी, जो लाचार होकर अपने घर छोड़ गये हैं, लौट आवें और अपने अपने धन्धे फिर शुरू कर दें। अिसकी सच्ची परीक्षा यह है कि शरणार्थियोंके जो जत्थे पाकिस्तानकी तरफ पैदल बढ़ रहे हैं, वे वातावरणमें अैसा

फर्क अनुभव करने लगें कि पाकिस्तान जानेके बजाय अपने घरोंकी तरफ लौट पड़ें। मुझे यह कहते हुअे खुशी होती है कि जो जत्था गुड़गांव जिलेसे रवाना हुआ था, अुसके कुछ आदमी अपने घरोंको लौट रहे हैं। अगर जनता सही बरताव करे, तो मुझे पूरी अुम्मीद है कि पूरा जत्था अपने घर लौट आयेगा।

पानीपतके मुसलमानोंका मामला

गांधीजीने कहा, मुझे खबर मिली है कि पानीपतके मुसलमानोंका मामला कुछ कुछ गुड़गांवके जत्थेके ढंगका है। अगर रेलगाड़ीका बन्दोबस्त हो सके, तो वहांके मुसलमान लाचार होकर पाकिस्तान चले जायं। पिछली बार जब मैं पानीपत गया था, तब मुझसे कहा गया था कि वहांका अेक फिरका दूसरेके लिअे मददगार है, अिसलिअे पानीपतका कोअी भी हिन्दू नहीं चाहता कि मुसलमान अपने घर छोड़ें। वहांके मुसलमान कुशल कारीगर हैं और हिन्दू लोग व्यापारी हैं, जो ज्यादातर अपने मालके लिअे मुसलमान पड़ोसियों पर निर्भर रहते हैं। मगर बहुतसे शरणार्थियोंके आनेसे अुनकी अेकसी और शान्त जिन्दगीमें गड़बड़ी पैदा हो गअी है। मुझे हिन्दुओंके रुखमें होनेवाला परिवर्तन, जो मेरे पानीपतके दौरेके बाद वहांके शरणार्थियों द्वारा मुस्लिम घरों पर कब्जा करनेके रूपमें दिखाअी देता है, और वहांके मुसलमानोंकी हिजरतकी बात समझमें नहीं आती। यह सब अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीके अुस प्रस्तावके शब्दों और अर्थसे अुलटा है जिसका मैंने जिक्र किया है। मुझे लगता है कि मैं पानीपत जाकर रहूं और वहांकी बदली हुअी हालतकी खुद जांच करूं।

कण्ट्रोल हटने पर लोगोंसे अपेक्षा

अिसी तरह गांधीजीने कअी तरहके कण्ट्रोलोंके बारेमें अे० आअी० सी० सी० में पास किये गये ठहरावकी चर्चा की। अुन्होंने कहा, जब तक देशमें अनाजकी तंगीकी भावना बनी रहेगी, तब तक हिन्दुस्तानके हर अमीर और गरीब नागरिकसे यह अपेक्षा रखी जायगी कि वह जरूरतसे ज्यादा अनाज काममें न ले। जब कण्ट्रोल हटा दिया जायगा तब स्वभावतः यह आशा की जायगी कि अनाज पैदा करनेवाले अपनी

मरजीसे अनाज जमा करना छोड़ देंगे और जनताको ठीक दामों पर अपने पासका अनाज और दालें देंगे। अनाज बेचनेवालोंसे यह अपेक्षा रखी जायगी कि वे अेकसा और अुचित मुनाफा लेकर सस्तेसे सस्ते दामोंमें अनाज बेचनेका ज्यादा खयाल रखेंगे। और सरकारसे यह अुम्मीद रखी जायगी कि वह अनाजके कण्ट्रोलको धीरे धीरे ढीला करेगी और अन्तमें जल्दीसे जल्दी अुसे हटा देगी।

यही बात, लेकिन ज्यादा जोरसे, कपड़ेके कण्ट्रोल पर भी लागू होती है। लेकिन अिस बारेमें मुझे जो बात कही गअी है, वह सबसे ज्यादा बेचैन करनेवाली है। यानी, मुझे यह बताया गया है कि अे० आअी० सी० सी० के मेम्बर, जिन्होंने अिन ठहरावोंके लिअे वोट दिये हैं, खुद ही अपने फर्जके प्रति वफादार नहीं हैं। मुझे आशा है कि यह सूचना बिलकुल बेबुनियाद है। अगर मेरी यह आशा सच हो तो अिसमें कोअी शक नहीं कि जनताके अितने प्रतिनिधि लोगोंके बरतावमें जरूर अैसा अच्छा फेरफार कर सकेंगे, जिससे १५ अगस्त और अुसके कुछ दिन बाद तक दुनियामें हिन्दुस्तानकी जो साख और अिज्जत थी वह फिरसे कायम हो जाय।

६९

१९–११–’४७

शर्मनाक दृश्य

आज शामको प्रार्थना-सभामें भाषण करते हुअे गांधीजीने कहा, कल शामको मैंने हिन्दु-मुस्लिम सम्बन्धोंके बारेमें पास किये गये अे० आअी० सी० सी० के खास ठहरावका जिक्र किया था। लेकिन आज ही मुझे मिसाल देकर आपसे यह कहना पड़ता है कि दिल्लीमें अुस ठहरावको कैसे बेकार बनाया जा रहा है। मुझे अिस बातकी कल्पना भी नहीं थी कि जिस शामको मैं जनताके बरतावके बारेमें अपना शक जाहिर कर रहा था, अुसी शामको पुरानी दिल्लीके केन्द्रमें अुसे सच साबित करके दिखाया जायगा। कल रात मुझसे कहा गया कि चांदनी चौककी अेक मुसलमानकी दुकानके सामने हिन्दुओं और सिक्खोंकी बहुत

बड़ी भीड़ अिकट्ठी हुअी थी। वह दुकान थी तो मुसलमानकी, लेकिन अुसका मालिक अुसे छोड़कर चला गया था। वह अिस शर्त पर अेक शरणार्थीको दी गअी थी कि मालिकके लौट आने पर अुसे दुकान छोड़ देनी होगी। खुशीकी बात है कि दुकानका मालिक लौट आया। वह हमेशाके लिअे अपना धन्धा नहीं छोड़ना चाहता था। जिस अफसरके हाथमें यह काम था वह दुकानमें रहनेवाले शरणार्थीके पास गया और अुसे असल मालिकके लिअे दुकान खाली कर देनेको कहा। पहले तो वह शरणार्थी भाअी कुछ हिचकिचाया, लेकिन बादमें अुसने कहा कि आप जब शामको दुकानका कब्जा लेनेके लिअे आयेंगे तो मैं जरूर खाली कर दूंगा। अफसर जब शामको दुकान पर लौटा, तो अुसे पता चला कि वहां रहनेवाले आदमीने दुकानका कब्जा अुसके मालिकको सौंपनेके बजाय अपने साथियों और दोस्तोंको अिस बातकी सूचना कर दी, जो कहा जाता है कि वहां धमकी देनेके लिअे अिकट्ठे हो गये थे। चांदनी चौकके थोड़ेसे पुलिसवाले अुस भीड़को काबूमें न रख सके। अिसलिअे अुन्होंने ज्यादा मदद बुलाअी। पुलिस या फौजके सिपाही आये और अुन्होंने हवामें गोली चलाअी। डरी हुअी भीड़ बिखर तो गअी, लेकिन साथ ही अेक राहगीरको छुरेसे घायल भी करती गअी। तकदीरसे वह घाव जानलेवा साबित नहीं हुआ। लेकिन फसादी लोगोंके प्रदर्शनका अजीब नतीजा हुआ। वह दुकान खाली नहीं की गअी। मैं नहीं जानता कि आखिरमें अुस अफसरके आदेशको ठुकरा दिया गया या अिस वक्त तक वह दुकान खाली कर दी गअी है। फिर भी, मुझे आशा है कि हिन्दुस्तानको जो बहुमूल्य आजादी मिली है अुसमें अगर सरकारी सत्ताको सच्ची सत्ता बना रहना है, तो वह अपराधीको अपराधकी सजा दिये बिना न रहेगी। वर्ना सरकारकी सत्ता सत्ता ही न रह जायगी। मुझसे कहा गया है कि हिन्दुओं और सिक्खोंकी वह भीड़ दो हजारसे कमकी न रही होगी।

यह खबर जिस रूपमें मुझे मिली है अुसे कुछ कम करके ही मैंने सुनाया है। अगर फिर भी अुसमें सुधारकी कोअी गुंजाअिश हुअी और वह मेरे ध्यानमें लाअी गअी, तो मैं खुशीसे आपको बता दूंगा।

सिक्खोंके दोष

यही सब कुछ नहीं है। दिल्लीके दूसरे हिस्सेमें मुसलमानोंको अपने घरोंसे जबरन निकालनेकी कोशिश की जा रही है, जिससे वहां हिन्दू और सिक्ख शरणार्थियोंको जगह दी जा सके। अिसका तरीका यह है कि सिक्ख लोग अपनी तलवारें म्यानसे निकालकर घुमाते हैं और मुसलमानोंको अपने घर न छोड़ने पर भयानक बदला लेनेकी धमकी देते हैं। मुझसे यह भी कहा गया है कि सिक्ख शराब पीते हैं, जिसके नतीजोंका आसानीसे अन्दाजा लगाया जा सकता है। वे नंगी तलवारें लेकर नाचते हैं जिससे रास्ता चलनेवाले लोग डर जाते हैं। मुझसे यह भी कहा गया है कि चांदनी चौकमें और अुसके आसपास यह रिवाज है कि मुसलमान भी कबाब या गोश्तकी बनी दूसरी खानेकी चीजें नहीं बेचते, लेकिन सिक्ख और शायद दूसरे शरणार्थी ये चीजें वहां आजादीसे बेचते हैं। अिससे अुस मोहल्लेके हिन्दुओंको बड़ा दुःख होता है। यह बुराअी यहां तक बढ़ गअी है कि लोगोंको चांदनी चौकमें खड़ी भीड़में से निकलना मुश्किल मालूम होता है। अुन्हें डर लगता है कि कहीं अुनके साथ बुरा बरताव न किया जाय। मैं अपने शरणार्थी दोस्तोंसे अपील करता हूं कि वे अपने लिअे और अपने देशके लिअे अिस तरहकी बातें न करें।

किरपाण

गांधीजीने आगे कहा, किरपाणोंके बारेमें थोड़े समयके लिअे यह कानून बना दिया गया है कि सिक्ख अेक खास नापसे बड़ी किरपाण नहीं रख सकते। अिस पाबन्दीके दरमियान बहुतसे सिक्ख दोस्त मेरे पास आते हैं और मुझसे कहते हैं कि मैं अपना असर डालकर अेक खास नापसे बड़ी किरपाण रखने पर लगाअी हुअी पाबन्दी हटानेकी कोशिश करूं। अुन्होंने कुछ साल पहले दिया हुआ प्रिवी कौंसिलका वह फैसला मुझे सुनाया, जिसमें कहा गया है कि कोअी सिक्ख किसी भी नापकी किरपाण अपने साथ रख सकता है। मैंने वह फैसला पढ़ा नहीं है। मैं समझता हूं कि जजोंने किरपाणका अर्थ किसी भी नापकी 'तलवार' लगाया है। अुस समयकी पंजाब सरकारने प्रिवी कौंसिलके

फैसले पर अमल करनेके लिअे यह अैलान किया कि हर आदमी तलवार रख सकता है। अिसलिअे पंजाबमें कोअी भी आदमी किसी भी नापकी तलवार रख सकता है।

मुझे पंजाब सरकार या सिक्खोंकी अिस बातसे कोअी हमदर्दी नहीं है। कुछ सिक्ख दोस्तोंने मेरे सामने ग्रन्थसाहबके अैसे हिस्से पेश किये हैं, जो मेरी अिस रायका समर्थन करते हैं कि किरपाण बेगुनाहों पर हमला करने या किसी भी तरह अिस्तेमाल करनेका हथियार नहीं है। सिर्फ ग्रन्थसाहबके आदेशोंको माननेवाला सिक्ख ही बिरले मौकों पर बेगुनाह औरतों, मासूम बच्चों, बूढ़े और दूसरे असहाय लोगोंकी रक्षाके लिअे किरपाणका अुपयोग कर सकता है। अिसी कारणसे अेक सिक्ख सवा लाख विरोधियोंके बराबर माना जाता है। अिसलिअे जो सिक्ख नशा करता है, जुआ खेलता है और दूसरी बुराअियोंका शिकार है, अुसे पवित्रता और संयमके धार्मिक प्रतीक अुस किरपाणको रखनेका कोअी हक नहीं है, जो सिर्फ बताये हुअे ढंग और मौकों पर ही काममें लाअी जा सकती है।

मेरी रायमें किरपाणके मनमाने अुपयोगको सही साबित करनेके लिअे प्रिवी कौंसिलके गये-गुजरे फैसलोंकी मदद चाहना बेकार और नुकसानदेह भी है। हम हालमें ही गुलामीके बन्धनसे छूटे हैं। आजादीकी हालतमें सारी अच्छी पाबन्दियोंको तोड़ना बिलकुल अनुचित है, क्योंकि अुनके बिना समाज आगे नहीं बढ़ सकता। अिसलिअे मैं अपने सिक्ख दोस्तोंसे कहूंगा कि वे किसी भी अैसे काममें, जिसके सही और मुनासिब होनेमें शक हो, किरपाणका अुपयोग करके महान सिक्ख पन्थके नाम पर धब्बा न लगावें। जिस पन्थको अैसे कअी शहीदोंने, जिनकी बहादुरी पर सारी दुनियाको गर्व है, बनाया अुसे वे मिटा न दें।

फौज और पुलिस

मैं अेक दूसरी बातकी तरफ आपका ध्यान खींचना चाहता हूं। मुझे अेक छावनीकी कहानी सुनाअी गअी जिसमें फौज पर असभ्य बरतावका अिलजाम लगाया गया है। छावनीका सारा जीवन भीतरी और बाहरी शुद्धता व सफाअीका नमूना होना चाहिये। अिसकी रक्षाके लिअे फौज

और पुलिस दोनोंको अेक-दूसरेसे बढ़कर कोशिश करनी चाहिये। अिसलिअे मुझे आशा है कि जो सूचना मुझे दी गअी है, वह कानून और व्यवस्थाके अिन रक्षकों पर आम तौर पर लागू नहीं की जा सकती —— वह अेक अपवाद ही है। फौज और पुलिसको सचमुच सबसे पहले आजादीकी चमक और अुत्साह महसूस करना चाहिये। अुनके बारेमें लोगोंको यह कहनेका मौका न मिले कि अूपरसे लादे हुअे भयानक संयम और पाबन्दियोंमें ही अुनसे अच्छा बरताव कराया जा सकता है। अुन्हें अपने सही बरतावसे यह साबित कर देना है कि वे भी दूसरोंकी तरह हिन्दुस्तानके योग्य और आदर्श नागरिक बन सकते हैं। अगर ये कानूनके रक्षक ही कानूनको ठुकरायेंगे, तब तो राज चलाना भी असम्भव हो सकता है। और अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीके ठहरावोंको ठीक तरहसे अमलमें लाना सबसे ज्यादा मुश्किल हो जायगा।

शेरवानीकी कुरबानी

तसवीरका धुंधला पहलू बतानेके बाद अब मैं आप लोगोंको अुसका चमकीला पहलू भी खुशीसे बताअूंगा। मुझे आदर्श बहादुरीकी अेक आंखों देखी कहानीका जो वर्णन मिला है वह मैं आपको सुनाता हूं:

“मीर मकबूल शेरवानी बारामूलामें नेशनल कान्फरेन्सका अेक नौजवान बहादुर नेता था। अुसने अभी तीसवें बरसमें प्रवेश ही किया था।

“यह जानकर कि वह नेशनल कान्फरेन्सका बड़ा नेता है, हमलावरोंने अुसे निशात टॉकीज़के पास दो खम्भोंसे बांध दिया। पहले अुन्होंने अुसे पीटा और बादमें कहा कि वह नेशनल कान्फरेन्स और अुसके नेता शेरे-काश्मीर शेख अब्दुल्लाको छोड़ दे। अुन्होंने शेरवानीसे कहा कि वह आजाद काश्मीरकी आरजी हुकूमतकी, जिसका हेडक्वार्टर पालन्द्रीमें है, वफादारीकी सौगन्ध ले।

“शेरवानीने मजबूतीसे नेशनल कान्फरेन्सको छोड़नेसे अिनकार कर दिया और हमलावरोंसे साफ कह दिया कि शेरे-काश्मीर अब राजके प्रधानमंत्री हैं। हिन्दुस्तानी संघकी फौज काश्मीरमें आ पहुंची है और वह थोड़े ही दिनोंमें हमलावरोंको काश्मीरसे निकाल बाहर करेगी।

"यह सुनकर हमलावर गुस्सा हुअे और डर गये। और अुन्होंने १४ गोलियोंसे अुसका शरीर छलनी बना डाला। अुन्होंने अुसकी नाक काट ली और अुसके चेहरेको बिगाड़ दिया; और अुसके शरीर पर अेक अिश्तहार लगा दिया जिस पर लिखा था: 'यह गद्दार है। अिसका नाम शेरवानी है। सारे गद्दारोंका यही हाल किया जायगा।'

"मगर अिस बेरहमीभरे खून और आतंकके बाद ४८ घण्टोंके भीतर ही शेरवानीकी भविष्य-वाणी सच साबित हुअी। हमलावर घबड़ाकर बारा-मूलासे भागे और हिन्दुस्तानी फौजने जोरोंसे अुनका पीछा किया।"

गांधीजीने कहा कि यह अैसी शहादत है जिस पर कोअी भी अभिमान कर सकता है; फिर वह हिन्दू, सिक्ख, मुसलमान या दूसरा कोअी भी क्यों न हो।

फख्र और दोस्ती

अन्तमें गांधीजीने कहा कि अेक दोस्तने मुझे फख्रकी अेक अैसी मिसाल सुनाअी है, जिसका तेज दुःखदायी परिस्थितियोंमें भी कम नहीं होता और दोस्तीका अैसा अुदाहरण बताया है, जो कड़ेसे कड़े वक्तमें भी खरी अुतरती है। यह नारायणसिंह नामके अेक पुराने अफसरकी कहानी है। अुन्होंने पश्चिम पंजाबमें अपनी बहुत बड़ी मिल्कियत खो दी है। अब वे दिल्लीमें हैं। अुनके पास कुछ भी नहीं बचा है। अिसलिअे या तो अुन्हें अब भीख मांगने पर लाचार होना पड़े या मौतका शिकार होना पड़े। वे अपने अेक पुराने दोस्तसे मिले जिसे वे अपने साथ दुःखी नहीं होने देना चाहते थे, क्योंकि अपने पर आये हुअे दुर्भाग्यकी अुन्हें बिलकुल परवाह नहीं थी। वे सिक्ख अफसर अपने दोस्त और साथी अफसर अलीशाहसे मिलकर बेहद खुश हुअे। अलीशाह भी अपना सब कुछ खो बैठे हैं। वे फिरकेवाराना पागलपनकी वजहसे नहीं, बल्कि किसी और वजहसे बद-किस्मतीके शिकार हुअे हैं। वे भी नारायणसिंहकी तरह ही बहादुर हैं, और दोनोंको अेक-दूसरेकी दोस्तीका अभिमान है। वे दोनों अपनी पच्चीस सालकी जुदाअीके बाद जब मिले, तो अितने खुश हुअे कि अपने दुर्भाग्यको भूल गये।

७०

२०-११-'४७

अब असहयोगकी जरूरत नहीं

आज शामकी प्रार्थना-सभामें भाषण देते हुअे गांधीजीने कहा कि मुझे अेक ही शख्सकी तरफसे दो चिटें मिली हैं, जिनमें से अेकमें कहा गया है कि अुन्होंने अपनी नौकरी छोड़ दी है और वे मेरे मातहत काम करना चाहते हैं। दूसरी चिटमें अुन्होंने प्रार्थनामें अेक भजन गानेकी अपनी अिच्छा जाहिर की है। अुनकी पहली अिच्छाके बारेमें मुझे कहना पड़ता है कि अुन्होंने अपनी नौकरी छोड़कर गलती की है। यह सच है कि अंग्रेजी हुकूमतके दिनोंमें मैंने लोगोंको सरकारसे असहयोग करनेकी सलाह दी थी, मगर अब अैसी बात नहीं है। अगर कोअी आदमी चाहे तो वह अपनी रोजी कमानेके लिअे कहीं पर नौकरी करते हुअे भी अपने देशकी सेवा कर सकता है। हर रोजी कमानेवाला शख्स, अगर वह अीमानदारीसे और किसी भी किस्मकी हिंसा किये बगैर अैसा करता है, तो वह देश-सेवा ही करता है। लेखकको यह भी महसूस करना चाहिये कि मेरे पास अुनके लिअे कुछ काम नहीं है। अगर वे कुछ सेवा करना चाहते हैं, तो अुन्हें अुस गोशालामें अपनी सेवायें देनी चाहिये, जिसका मैं अभी जिक्र करूंगा।

प्रार्थनामें भजन गानेके बारेमें तो यह है कि हर किसीको अुसमें गाने नहीं दिया जा सकता। सिर्फ वे ही लोग पहलेसे अिजाजत लेकर गा सकते हैं जो भगवानके सेवक कहे जाते हैं।

ओखला-छावनीका मुआअिना

अिसके बाद गांधीजीने सुचेतादेवी और अुनके साथी कार्यकर्ताओंके साथ किये गये ओखला-छावनीके अपने मुआअिनेका जिक्र किया। अुन्होंने कहा कि अुस छावनीकी तारीफके लायक सफाअीको देखकर मुझे खुशी हुअी। वहां पर जगह जगह यात्रियोंके लिअे धर्मशालायें बनी हैं, जो मेलोंके वक्त वहां आते हैं। वे मेले अेक निश्चित समयके बाद वहां भरते रहते हैं। ये धर्मशालायें अब शरणार्थियोंके काममें लाअी जाती

हैं। वहां पानीकी कुछ दिक्कत है जिसे अधिकारी लोग दूर करनेकी कोशिश कर रहे हैं। अिसमें मुझे कोओी शक नहीं कि आज वहां जितने शरणार्थी हैं अुनसे कहीं ज्यादा शरणार्थियोंको —— अगर पानी पुरानेकी गारण्टी दी जा सके —— अुस जगहमें आसरा दिया जा सकता है।

अफसरोंके बारेमें

गांधीजीने कहा, जब मैं शरणार्थियोंके बारेमें बोल रहा हूं, तब कुछ अैसे दोषोंके बारेमें अुनका ध्यान खींचना चाहूंगा जो मुझे बताये गये हैं। मुझसे यह कहा गया है कि शरणार्थियोंमें आपसमें ही काला बाजार चल रहा है। जिन अफसरोंके जिम्मे शरणार्थियोंकी देखभालका काम है, वे भी दोषी बताये जाते हैं। मुझसे कहा गया है कि जिन अफसरोंके हाथमें छावनियोंका अिन्तजाम है, अुन्हें घूंस दिये बिना वहां जगह पाना मुमकिन नहीं है। दूसरी तरहसे भी अुनका बरताव दोषसे परे नहीं माना जाता। यह ठीक है कि सभी अफसर दोषी नहीं हो सकते, लेकिन अेक पापी सारी नावको डुबो देता है।

शरणार्थियोंकी बददियानती

अिसके बाद मुझसे कहा गया है कि शरणार्थी लोग छोटी-मोटी चोरियां भी करते हैं। मैं अुनसे पूरी अीमानदारी और खरे बरतावकी आशा रखता हूं। मुझे यह रिपोर्ट दी गअी है कि शरणार्थियोंको जाड़ेसे बचनेके लिअे जो रजाअियां दी जाती हैं, अुनमें से कुछ अुधेड़ डाली जाती हैं, अुनकी रुअी फेंक दी जाती है और छींटके कमीज वगैरा बना लिये जाते हैं। मुझे अिसी तरहकी दूसरी बहुतसी बातें बताअी गअी हैं। लेकिन मैं शरणार्थियोंके सारे बुरे कामोंका वर्णन करके आपका वक्त नहीं बरबाद करना चाहता। मैं आज शामके विषय पर जल्दी ही आना चाहता हूं।

हिन्दुस्तानके मवेशी

दिल्लीकी किशनगंज नामकी बस्तीमें अेक गोशालाका सालाना जलसा हो रहा है। कल आचार्य कृपालानी अुस जलसेके सभापति बननेवाले हैं और मुझ पर यह जोर डाला गया कि मैं कमसे कम दस

मिनटके लिअे तो भी जलसेमें आअूं। मुझे लगा कि मुझे किसी जलसे या अुत्सवमें सिर्फ शोभाके लिअे नहीं जाना चाहिये। दस मिनटमें न तो वहां मैं कुछ कर सकता हूं और न देख सकता हूं। और, मैं साम्प्रदायिक सवालोंमें ही अितना अुलझा रहता हूं कि मुझे दूसरी बातोंकी तरफ ध्यान देनेका समय ही नहीं मिलता। अिसलिअे मैंने अपनी मजबूरी जाहिर की। जलसेका अिन्तजाम करनेवाले लोगोंने मेरी लाचारीको महसूस करके मुझे माफ कर दिया और कहा कि अगर आप गोसेवाके बारेमें —— खासकर गोशालाओंके बारेमें —— अपनी बात प्रार्थना-सभामें कह देंगे तो हमें सन्तोष हो जायगा। मैंने अुनकी यह बात खुशीसे मान ली। मैं साफ शब्दोंमें यह कह चुका हूं कि हिन्दुस्तानके पशुधनको संभालने व बढ़ानेका काम और गायों और अुनकी सन्तानके साथ अुचित बरताव करनेका काम सियासी आजादी लेनेके कामसे कहीं ज्यादा कठिन है। मैं अिस मामलेमें श्रद्धा और लगनसे काम करनेका दावा करता हूं। मेरा यह भी दावा है कि मुझे अिस बातका सच्चा ज्ञान है कि गाय कैसे बचाअी जा सकती है। लेकिन मैं यह कबूल करता हूं कि अभी तक मैं आम लोगों पर किसी तरह अैसा असर नहीं डाल सका, जिससे वे अिस सवाल पर अुचित ध्यान दे सकें। जो लोग गोशालाओंका अिन्तजाम करते हैं, वे अुनके लिअे पैसा लगाना या फण्ड जमा करना तो जानते हैं। लेकिन हिन्दुस्तानके पशुधनका साअिन्सी ढंगसे पालन-पोषण करनेका अुन्हें बिलकुल ज्ञान नहीं होता। वे यह नहीं जानते कि गायको कैसे पाला जाय कि वह ज्यादा दूध दे। अुन्हें यह भी नहीं मालूम कि गायके दिये हुअे बछड़ोंका कैसे विकास किया जाय, या अुनकी नसल कैसे सुधारी जाय।

गोशालाओंका अिन्तजाम

अिसलिअे हिन्दुस्तानभरमें गोशालायें अैसी संस्थायें होनेके बजाय, जहां कोअी शख्स हिन्दुस्तानके ढोरोंको ठीक तरहसे पालनेकी कला सीख सके, जो आदर्श डेरियां हों और जहांसे लोग अच्छा दूध, अच्छी गाय और अच्छी नसलके सांड़ और मजबूत बैल खरीद सकें —— सिर्फ अैसी जगहें हैं, जहां ढोरोंको बुरी तरह रखा जाता है। अिसका नतीजा यह हुआ है कि हिन्दुस्तान दुनियामें अैसा खास देश होनेके बजाय, जहां बड़े अच्छे

ढोर हों और जहां सस्तेसे सस्ते दामों पर जितना चाहो अुतना शुद्ध दूध मिल सके, आज अिस मामलेमें शायद दुनियाके सारे देशोंमें नीचे है। गोशालावाले अितना भी नहीं जानते कि गोबर और गोमूत्रका अच्छेसे अच्छा क्या अुपयोग किया जाय; न वे यही जानते कि मरे हुअे जानवरका कैसे अुपयोग किया जाय। नतीजा यह हुआ है कि अपने अज्ञानकी वजहसे अुन्होंने करोड़ों रुपये गवां दिये हैं। किसी माहिरने कहा है कि हमारा पशुधन देशके लिअे बोझ है और वह सिर्फ नष्ट कर देनेके ही काबिल है। मैं अिससे सहमत नहीं हूं। मगर यदि आम अज्ञान अिसी तरह कुछ दिनों तक और बना रहा, तो मुझे यह जानकर ताज्जुब नहीं होगा कि पशु देशके लिअे बोझ बन गये हैं। अिसलिअे मुझे अुम्मीद है कि अिस गोशालाके प्रबन्ध करनेवाले अिसे हर दृष्टिकोणसे अेक आदर्श संस्था बनानेकी पूरी पूरी कोशिश करेंगे।

७१

२१–११–'४७

हिन्दुस्तानकी डेरियां

आज शामकी प्रार्थनाके बाद देशमें गोरक्षा और गोपालनके सवालका जिक्र करते हुअे गांधीजीने कहा कि जब मैं आप लोगोंके सामने अपना भाषण दे रहा हूं, तब शायद जिस गोशालाके बारेमें मैंने कल शामको आपसे कुछ कहा था अुसका सालाना जलसा अभी हो रहा है। मैं अेक बात कहना चाहूंगा। कल शामके अपने भाषणमें मैंने फौजियोंके लिअे हिन्दुस्तानमें चलाअी जानेवाली विभिन्न डेरियोंका जिक्र नहीं किया था। डॉ० राजेन्द्रप्रसादने मुझे बतलाया है कि वे डेरियां अभी भी चल रही हैं। बरसों पहले मैं बंगलोरकी सेण्ट्रल डेरी देखने गया था। तब कर्नल स्मिथकी देखरेखमें वह चल रही थी। मैंने वहां कुछ सुन्दर ढोर देखे थे। अुनमें अेक अिनाम पाअी हुअी गाय थी। वे लोग मानते थे कि अेशियाभरमें वह सबसे अच्छी गाय है। वह ७५ पौंड दूध हर रोज देती थी या अेक ही बारमें अितना दूध देती थी, यह मुझे ठीक याद नहीं है। वह गाय बिना किसी रोक-टोकके चाहे जहां

घूम-फिर सकती थी। अुसके लिअे जहां-तहां चारा रखा रहता था, जिसे वह चाहे तब खा सकती थी। यह अिस तसवीरका अच्छा पहलू है।

बछड़ोंका वध

दूसरा पहलू मैंने नहीं देखा। मगर मुझे प्रामाणिक तौर पर कहा गया है कि बहुतसे नर बछड़ोंको मार डाला जाता है, क्योंकि अुन सबको बोझ ढोने लायक बैल नहीं बनाया जा सकता। ये डेरियां बहुत ज्यादा नहीं तो सैकड़ों अेकड़ जमीन घेरे हुअे हैं। ये सब खास तौर पर यूरोपियन सिपाहियोंके लिअे हैं। अिनमें कअी करोड़ रुपया लगा है। अब चूंकि ब्रिटिश सिपाही हिन्दुस्तानमें नहीं हैं, अिसलिअे मैं अिनकी और ज्यादा जरूरत नहीं समझता। मुझे पूरा विश्वास है कि अगर हिन्दुस्तानी सिपाहीको यह मालूम हो कि ये खर्चीली डेरियां अुसके लिअे चलाअी जा रही हैं तो अुसे शर्म मालूम होगी। मुझे यह भी विश्वास है कि हिन्दुस्तानी सिपाही अैसे किसी खास बरतावका दावा नहीं करेगा, जिसका मामूली नागरिक भी अुतना ही हकदार न हो।

सतीशबाबूका ग्रंथ

गाय और भैंसके बारेमें सबसे ज्यादा प्रामाणिक और शायद पूर्ण साहित्य खादी प्रतिष्ठानके श्री सतीशचन्द्र दासगुप्त द्वारा लिखे हुअे अेक बड़े भारी ग्रंथमें पाया जा सकता है। जहां-तहांके साहित्यके अवतरणोंसे अिस ग्रंथको नहीं भरा गया है, बल्कि अुसे निजी अनुभवके आधार पर जब वे अेक बार जेलमें थे तब लिखा गया है। बंगाली और हिन्दुस्तानीमें अुसका अनुवाद हो चुका है। पुस्तकको ध्यानसे पढ़नेवाले लोग अिसे हिन्दुस्तानके पशुधनको अच्छा बनाने व दूधकी पैदावारको बढ़ानेके काममें बहुत अुपयोगी पायेंगे। अिस किताबमें गाय और भैंसकी तुलना भी की गअी है।

'हिन्दू' और 'हिन्दुत्व'

अिसके बाद गांधीजीने अेक सवालका जिक्र किया, जो अुनके पास श्रोताओंमें से किसीने भेजा था। सवाल यह था — हिन्दू क्या है? अिस शब्दकी अुत्पत्ति कैसे हुअी? क्या हिन्दुत्व नामकी कोअी चीज है?

असका जवाब देते हुअे गांधीजीने कहा कि ये सब अस वक्तके लिअे योग्य सवाल हैं। मैं अितिहासका कोअी बड़ा जानकार नहीं हूं। मैं विद्वान होनेका दावा भी नहीं करता। मगर हिन्दुत्व पर लिखी हुअी किसी प्रामाणिक किताबमें मैंने पढ़ा है कि हिन्दू शब्द वेदोंमें नहीं है। जब सिकन्दर महानने हिन्दुस्तान पर चढ़ाअी की, तब सिन्धु नदीके पूर्वके देशमें रहनेवाले लोग, जिसे अंग्रेजीदां हिन्दुस्तानी 'अिण्डस' कहते हैं, हिन्दूके नामसे पुकारे गये। सिन्धुका 'स' ग्रीक भाषामें 'ह' हो गया। अिस देशके रहनेवालोंका धर्म हिन्दू धर्म कहलाया; और जैसा कि आप लोग जानते हैं, यह सबसे ज्यादा सहिष्णु (रवादार) धर्म है। अिसने अुन अीसाअियोंको आसरा दिया जो विधर्मियोंसे सताये जाकर भागे थे। अिसके सिवा, अिसने अुन यहूदियोंको, जो बेनअिजराअिल कहे जाते हैं, और पारसियोंको भी आसरा दिया। मैं अिस हिन्दू धर्मका सदस्य होनेमें अभिमान महसूस करता हूं, जिसमें सभी धर्म शामिल हैं और जो बड़ा सहनशील हैं। आर्य विद्वान वैदिक धर्मको मानते थे और हिन्दुस्तान पहले आर्यावर्त कहा जाता था। वह फिरसे आर्यावर्त कहलाये अैसी मेरी कोअी अिच्छा नहीं है। मेरी कल्पनाका हिन्दू धर्म मेरे लिअे अपने आपमें पूर्ण है। बेशक, अुसमें वेद शामिल हैं, मगर अुसमें और भी बहुत कुछ शामिल है। यह कहनेमें मुझे कोअी नामुनासिब बात नहीं मालूम होती कि हिन्दू धर्मकी महत्ताको किसी भी तरह कम किये बगैर मैं मुसलमान, अीसाअी, पारसी और यहूदी धर्ममें जो महत्ता है अुसके प्रति हिन्दू धर्मके बराबर ही श्रद्धा जाहिर कर सकता हूं। अैसा हिन्दू धर्म तब तक जिन्दा रहेगा, जब तक आकाशमें सूरज चमकता है। अिस बातको तुलसीदासने अेक दोहेमें रख दिया है:

दया धरमको मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छांड़िये, जब लगि घटमें प्राण।।

आम छावनियां

आगे बोलते हुअे गांधीजीने कहा कि मेरे ओखला-छावनीके मुआअिनेके वक्त जो बहन मेरे साथ थीं, वे अिस खयालसे घबड़ा गअीं कि शरणार्थियोंकी कुछ छावनियोंमें बुरा आचरण होनेकी मैंने जो

बात कही थी, अुसका सम्बन्ध कहीं ओखला-छावनीसे तो नहीं है। ओखला-छावनीको मैंने बहुत जल्दीमें देखा है, अिसलिअे अुसके बारेमें अैसी कोअी बात कहना मेरे लिअे नामुमकिन है। अपने भाषणमें मैंने आम छावनियोंमें होनेवाले बुरे आचरणका ही जिक्र किया है।

अधर्मका काम

गांधीजीने कहा, मैं अिस बातका जिक्र किये बिना नहीं रह सकता कि मुझे जो सूचना मिली है, अुसके मुताबिक दिल्लीकी करीब १३७ मसजिदें हालके दंगोंमें बरबाद-सी कर दी गअी हैं। अुनमें से कुछको मन्दिरोंमें बदल डाला गया है। अैसी अेक मसजिद कनॉट प्लेसके पास है, जिसकी तरफ किसीका भी ध्यान गये बिना नहीं रह सकता। आज अुस पर तिरंगा झण्डा फहरा रहा है। अुसे मन्दिरका रूप देकर अुसमें अेक मूर्ति रख दी गअी है। मसजिदोंको अिस तरह बिगाड़ना हिन्दू और सिक्ख धर्म पर कालिख पोतना है। मेरी रायमें यह बिलकुल अधर्म है। जिस कलंकका मैंने जिक्र किया है अुसे यह कहकर कम नहीं किया जा सकता कि पाकिस्तानमें मुसलमानोंने भी हिन्दू मन्दिरोंको बिगाड़ा या अुन्हें मसजिदोंका रूप दे दिया है। मेरी रायमें अैसा कोअी भी काम हिन्दू धर्म, सिक्ख धर्म या अिस्लामको बरबाद करनेवाला है।

गांधीजीने अिस बारेमें अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीका हालका ठहराव लोगोंको सुनाया।

रोमन कैथोलिकों पर जुल्म

आज हमेशासे ज्यादा समयके लिअे प्रार्थना-सभामें ठहरनेका खतरा अुठाकर भी मैं अन्तमें अेक बात कह देना अपना फर्ज समझता हूं। मुझसे यह कहा गया है कि गुड़गांवके पास रोमन कैथोलिकोंको सताया जाता है। जिस गांवमें यह हुआ है अुसका नाम है कन्हाअी। वह दिल्लीसे करीब २५ मील पर है। अेक हिन्दुस्तानी रोमन कैथोलिक पादरी और अेक गांवके अीसाअी प्रचारक मुझसे मिलने आये थे। अुन्होंने मुझे वह खत दिखाया जिसमें कन्हाअी गांवके रोमन कैथोलिकोंने हिन्दुओं द्वारा अपने सताये जानेकी कहानी बयान की थी। ताज्जुब यह है कि

वह खत अुर्दूमें लिखा था। मैं समझता हूं कि अुस हिस्सेके रहनेवाले हिन्दू, सिक्ख या दूसरे लोग केवल हिन्दुस्तानी ही बोल सकते और अुर्दू लिपिमें ही लिख सकते हैं। सूचना देनेवाले लोगोंने मुझे बताया कि वहांके रोमन कैथोलिकोंको यह धमकी दी गअी है कि अगर वे गांव छोड़कर चले नहीं जायंगे, तो अुन्हें नुकसान अुठाना पड़ेगा। मुझे आशा है कि यह धमकी झूठी है और वहांके अीसाअी भाअी-बहनोंको बिना किसी रुकावटके अपना धर्म पालने और काम करने दिया जायगा। अब हमें सियासी गुलामीसे आजादी मिल गअी है। अिसलिअे आज भी अुन्हें धर्म और कामकी वही आजादी भोगनेका हक है, जो वे ब्रिटिश हुकूमतके दिनोंमें भोगते थे। मिली हुअी आजादी पर यूनियनमें सिर्फ हिन्दुओंका और पाकिस्तानमें सिर्फ मुसलमानोंका ही हक नहीं है। मैं अपने अेक भाषणमें आप लोगोंसे कह चुका हूं कि जब यूनियनमें हिन्दुओं और सिक्खोंका मुसलमानोंके खिलाफ भड़का हुआ गुस्सा कम हो जायगा, तो सम्भव है वह दूसरों पर अुतरे। लेकिन जब मैंने यह बात कही थी, तब मुझे आशा नहीं थी कि मेरी भविष्य-वाणी अितनी जल्दी सच साबित होने लगेगी। अभी तक मुसलमानोंके खिलाफ बढ़ा हुआ गुस्सा पूरी तरह शान्त नहीं हुआ है। जहां तक मैं जानता हूं ये अीसाअी बिलकुल निर्दोष हैं। मुझे कहा गया कि अुनका गुनाह यही है कि वे अीसाअी हैं। अिससे भी ज्यादा बड़ा गुनाह यह है कि वे गाय और सूअरका गोश्त खाते हैं। मैंने मिलने आये हुअे पादरीसे अुत्सुकतासे पूछा कि अिस बातमें कोअी सचाअी है? तब अुन्होंने कहा कि अिन रोमन कैथोलिकोंने अपनी मरजीसे बहुत पहले ही गाय और सूअरका मांस खाना छोड़ दिया है। अगर अिस तरहका नादानीभरा द्वेष चालू रहा, तो आजाद हिन्दुस्तानका भविष्य धुंधला ही समझिये। वे पादरी जब रेवाड़ीमें थे तब अभी अभी अुनकी खुदकी सायकिल अुनसे छीन ली गअी और वे मौतसे बाल-बाल बचे। क्या यह दुःख सारे गैर-हिन्दुओं और गैर-सिक्खोंको मिटाकर ही मिटेगा?

२२-११-'४७

सोनीपतके ओसाओी

गुड़गांवके नजदीक अेक गांवमें ओसाअियोंके साथ होनेवाले बुरे बरतावका फिरसे जिक्र करते हुअे गांधीजीने अपने आज शामके भाषणमें कहा कि मुझे खबर मिली है कि कुछ-कुछ अैसा ही बरताव सोनीपतके ओसाअियोंके साथ हुआ है। मुझसे कहा गया है कि पहले तो वहां ओसाअियोंसे प्रार्थना की गअी कि वे शरणार्थियोंको अपने मकानोंका अुपयोग करने दें। ओसाअियोंने खुशीसे अिसकी अिजाजत दे दी और अिसके लिअे अुन्हें धन्यवाद भी दिया गया। मगर यह धन्यवाद अभिशापमें बदल गया; क्योंकि अुनके दूसरे मकान भी जबरदस्ती शरणार्थियोंके काममें ले लिये गये और अुनसे कह दिया गया कि अगर वे सोनीपतमें अपनी जिन्दगीको बहुत दुःखी नहीं देखना चाहते तो वहांसे चले जायं। अगर यह बात अैसी ही हो जैसी कि वह कही गअी है, तो साफ जान पड़ता है कि यह बीमारी बढ़ रही है और कोओी नहीं बता सकता कि यह हिन्दुस्तानको कहां ले जानेवाली है।

जैसेको तैसा?

जब मैं कुछ दोस्तोंसे चर्चा कर रहा था, तब मुझसे कहा गया कि जब तक पाकिस्तानमें होनेवाली अिसी किस्मकी बुराअियां कम नहीं होतीं, तब तक हिन्दुस्तानी संघमें ज्यादा सुधारकी अुम्मीद नहीं की जा सकती। अिस बातके समर्थनमें मेरे सामने लाहौरके बारेमें जो कुछ अखबारोंमें छपा है अुसका अुदाहरण रखा गया। मैं खुद अखबारोंकी खबरोंको सोलह आने सच नहीं मानता और अखबार पढ़नेवालोंको भी मैं चेतावनी दूंगा कि वे अुनमें छपी कहानियोंका अपने अूपर आसानीसे असर न पड़ने दें। अच्छेसे अच्छे अखबार भी खबरोंको बढ़ा-चढ़ाकर कहने और अुन्हें रंगनेसे बरी नहीं हैं। मगर मान लीजिये कि जो कुछ आपने अखबारोंमें पढ़ा वह सब सच है, तो भी अेक बुरे नमूनेकी कभी नकल नहीं की जानी चाहिये।

सही बरतावकी अपील

अेक अैसे समकोण चौखटकी कल्पना कीजिये जिसमें स्लेट नहीं लगी है। अगर अुस चौखटको जरा भी बेढंगे तरीकेसे पकड़ा जाय, तो अुसके समकोण न्यूनकोण और अधिककोणमें बदल जायंगे और अगर चौखटको अेक कोने पर फिरसे ठीक ढंगसे पकड़ा जाय, तो दूसरे तीन कोने अपने-आप समकोण बन जायेंगे। अिसी तरह अगर हिन्दुस्तानी संघकी सरकार और लोग सही बरताव करें, तो मुझे अिसमें जरा भी शक नहीं कि पाकिस्तान भी अैसा ही करने लगेगा और सारा हिन्दुस्तान फिरसे समझदार बन जायगा। अीसाअियोंके साथ किये गये बुरे बरतावको, जहां तक मैं जानता हूं अुन्होंने कोअी अपराध नहीं किया है, अिस बातका संकेत समझा जाय कि अिस पागलपनको और ज्यादा बढ़ने देना ठीक नहीं है। और अगर हिन्दुस्तानको दुनियाके सामने अपना अच्छा लेखा-जोखा रखना है, तो अेकदम और तेजीके साथ अिस पागलपनका मुकाबला किया जाय।

शरणार्थियोंके बीच सहयोग

अिसके बाद शरणार्थियोंकी समस्या पर बोलते हुअे गांधीजीने कहा कि अुनमें डॉक्टर, वकील, विद्यार्थी, शिक्षक, नर्सें वगैरा हैं। अगर अुन्होंने गरीब शरणार्थियोंसे अपने आपको अलग कर लिया, तो वे अपने अूपर पड़े हुअे अेकसे दुर्भाग्यसे कोअी सबक नहीं ले पायेंगे। मेरी राय है कि सब व्यवसायी और गैर-व्यवसायी, धनवान और गरीब शरणार्थी अेक साथ रहें और जिस तरह लाहौरके धनवान लोगोंने लाहौरको आदर्श शहर बनाया — और जिसे हिन्दुओं और सिक्खोंको लाचार होकर खाली करना पड़ा — अुसी तरह वे भी आदर्श शहर बसायें। ये शहर दिल्ली जैसी घनी आबादीवाले शहरोंका बोझ हलका करेंगे और अिनमें रहनेवाले लोगोंकी तन्दुरुस्ती बढ़ेगी और अुनकी तरक्की होगी। अगर कुरुक्षेत्रकी बड़ी छावनीमें रहनेवाले दो लाखसे अूपर शरणार्थी बाहरी और भीतरी सफाअीके मामलेमें आदर्श बन गये, अगर व्यवसायी और धनवान शरणार्थी गरीब शरणार्थियोंके साथ बराबरीके आधार पर रहे, अगर अुन्होंने तम्बुओंकी अिस बस्तीमें अच्छी सड़कें बनाकर सन्तोषकी जिन्दगी

बिताअी, अगर वे सफाअीसे लगाकर सारे काम खुद करते रहे और दिन-भर किसी न किसी अुपयोगी काममें लगे रहे, तो वे सरकारी बजट पर बोझ नहीं रह जायंगे। और अुनकी सादगी और सहयोगको देखकर शहरोंमें रहनेवाले लोग सिर्फ अुनकी तारीफ करके ही नहीं रह जायंगे, बल्कि अुन्हें अपने जीवन पर शर्म मालूम होगी और वे शरणार्थियोंकी सारी अच्छी बातोंकी नकल करेंगे। तब मौजूदा कड़वाहट और आपसी जलन अेक मिनटमें गायब हो जायगी। तब शरणार्थी लोग, चाहे वे कितनी ही बड़ी तादादमें क्यों न हों, केन्द्रीय और स्थानीय सरकारोंके लिअे चिन्ताके विषय नहीं रह जायंगे। लाखों शरणार्थियों द्वारा बिताअी गअी अैसी आदर्श जिन्दगीकी दुःखी दुनिया तारीफ करेगी।

सरकारकी दुविधा

अन्तमें मैं कण्ट्रोलको हटानेके बारेमें, खासकर अनाज और कपड़ेका कण्ट्रोल हटानेके बारेमें चर्चा करूंगा। सरकार कण्ट्रोल हटानेमें हिच-किचाती है, क्योंकि अुसका खयाल है कि देशमें अनाज और कपड़ेकी सच्ची तंगी है। अिसलिअे अगर कण्ट्रोल हटा दिया गया, तो अिन चीजोंके दाम बहुत बढ़ जायंगे। अिससे गरीबोंको बड़ा नुकसान होगा। गरीब जनताके बारेमें सरकारका यह खयाल है कि वह कण्ट्रोलोंके जरिये ही भुखमरीसे बच सकती है और तन ढंकनेको कपड़ा पा सकती है। सरकारको व्यापारियों, अनाज पैदा करनेवालों और दलालों पर शक है। अुसे डर है कि ये लोग कण्ट्रोलोंके हटनेका बाजकी तरह रास्ता देख रहे हैं, ताकि गरीबोंको अपना शिकार बनाकर बेअीमानीसे कमाये हुअे पैसेसे अपनी जेबें भर सकें। सरकारके सामने दो बुराअियोंमें से किसी अेकको चुननेका सवाल है। और अुसका खयाल है कि मौजूदा कण्ट्रोलोंको हटानेके बजाय अुन्हें बनाये रखना कम बुरा है।

व्यापारियोंसे अपील

अिसलिअे मैं व्यापारियों, दलालों और अनाज पैदा करनेवालोंसे अपील करता हूं कि वे अपने प्रति किये जानेवाले अिस शकको मिटा दें और सरकारको यह यकीन दिला दें कि अनाज और कपड़ेका कण्ट्रोल हटनेसे कीमतें अूंची नहीं चढ़ेंगी। कण्ट्रोल हटनेसे काला बाजार और

बेअीमानी जड़से भले ही न अुखाड़ी जा सके, लेकिन अिससे गरीबोंको आजसे ज्यादा सुख और आराम मिलेगा।

७३

२३–११–'४७

प्रार्थनामें शान्ति

प्रार्थनाके बाद अपने भाषणमें गांधीजीने लोगोंसे कहा, आपको हमेशा प्रार्थनामें खामोशी रखनी चाहिये। हालांकि आप सब आम तौर पर शान्तिसे प्रार्थना करते हैं, लेकिन आज बड़ी तादादमें अिकट्ठी होनेवाली बहनोंकी बुड़बुड़ाहटसे वह शान्ति टूट गअी।

गांधीजीने जब अिस बुड़बुड़ाहटकी तरफ लोगोंका ध्यान खींचा तो सभामें पूरी शान्ति कायम हो गअी।

समयसे बाहर

मैं कभी कभी समयसे ज्यादा बोलनेके लिअे रेडियोवालोंसे माफी मांगता हूं। मेरे लिअे नियम तो यह है कि मुझे बीस मिनटसे ज्यादा नहीं बोलना चाहिये, और सम्भव हो तो पन्द्रह मिनटमें ही अपना भाषण खतम कर देना चाहिये। मैं हमेशा अिस नियमका पालन नहीं कर सकता, क्योंकि मेरा पहला मकसद सामने बैठे हुअे लोगोंके दिलों पर असर डालना है। रेडियोका नम्बर तो बादमें आता है। मैं नहीं जानता कि अैसा कोअी अिन्तजाम हुआ है या नहीं जिसमें रेडियो पर लम्बे भाषण दिये जा सकें। मैं कभी बिना मतलबके या सिर्फ अपनी आवाज सुननेके लिअे नहीं बोलता।

हिंसा ठीक नहीं

मेरे पास सभाके अेक भाअीने अेक लिखा हुआ सवाल भेजा है। अुन्होंने पूछा है — जिस आदमीका हक खतरेमें हो, वह क्या हिंसासे अुसे नहीं बचा सकता? मेरा जवाब यह है कि हिंसा दरअसल न तो किसी आदमीको बचाती है और न अुसके हकको। हरअेक हक जब

अेक अच्छी तरह अदा किये हुअे फर्जसे निकलता है, तभी अुस पर कोअी हमला नहीं कर सकता। अिस तरह अपनी मजदूरी या वेतन पानेका हक मुझे तभी मिलेगा, जब मैं हाथमें लिये हुअे कामको पूरा कर दूंगा। अगर मैं अपना काम पूरा किये बिना वेतन या मजदूरी लेता हूं तो वह चोरी होगी। जिन फर्जों पर मेरे हक निर्भर रहते हैं और जिनसे वे निकलते हैं, अुनको पूरा किये बिना मैं हमेशा अपने हकों पर ही जोर नहीं दे सकता।

हरिजनों पर जुल्म

अखबारोंमें यह खबर छपी है कि रोहतक और दूसरी जगहके जाट हरिजनोंकी आजादी पर हमला करते हैं। यह कोअी नअी बात नहीं है। ब्रिटिश हुकूमतमें भी हरिजनोंकी आजादीमें दस्तन्दाजी की जाती थी। फिर भी, आज नयापन यह है कि हमारी नअी मिली हुअी आजादीमें हरिजनों पर किया जानेवाला जुल्म घटनेके बजाय ज्यादा बढ़ गया है। क्या हिन्दुस्तानका हर आदमी यह आजादी नहीं भोग सकता, फिर अुसका समाजी दरजा कैसा भी क्यों न हो? कल तक हरिजन जैसा गुलाम और दबा हुआ था, वैसा ही क्या वह आज भी रहेगा? मेरी रायमें अेक बुराअी दूसरी बुराअीको जन्म देती है। पाकिस्तानमें हमारे हिन्दू और सिक्ख भाअियोंके साथ कितना ही बुरा बरताव किया गया हो, लेकिन जब हमने बदलेकी भावनासे यूनियनके हमारे मुसलमान भाअियोंके साथ बुरा बरताव किया, तो अुसने हमारे औसाअियोंके साथके बुरे बरतावको जन्म दिया। हरिजनोंके साथका हमारा बरताव भी यही बात कहता है। हरिजनोंके साथ, जिन्हें गलतीसे अछूत कहा जाता है और जिनके साथ वैसा ही बरताव भी किया जाता है, बाकीके हिन्दू जो अन्याय करते हैं, अुसे खतम करनेके लिअे ही हरिजन-सेवक-संघ कायम किया गया है। अगर पिछली १५ अगस्तको हमारे देशमें जो फेर-बदल हुआ, अुसके पूरे महत्त्वको हमने समझा होता, तो हिन्दुस्तानके छोटेसे छोटे आदमीने आजादीकी चमक और अुत्साहको महसूस किया होता। तब हम अुन भयानक घटनाओंसे बच जाते, जिन्हें हम लाचार बनकर देखते रहे हैं। आज तो अैसा मालूम होता है

कि हर आदमी अपनी ही तरक्कीके लिअे काम करता है, हिन्दुस्तानकी तरक्कीके लिअे कोअी नहीं।

७४

२४–११–'४७

रचनात्मक कामकी जरूरत

जब मैं प्रार्थनाके मैदानमें आता हूं तब आप लोग मेहरबानी करके मुझे और मुझे सहारा देनेवाली लड़कियोंको आपके बीचसे गुजरनेके लिअे काफी जगह दे देते हैं। मेरी आपसे यह प्रार्थना है कि लौटते समय भी आप अिसी अनुशासनका पालन करके मुझे शान्तिसे चले जाने दें। जाते समय लोग पांव छूनेके लिअे मेरे अिर्द-गिर्द बड़ी भीड़ कर देते हैं। यह अच्छा नहीं लगता। आपकी मोहब्बतको मैं समझता हूं और अुसकी कदर करता हूं। मगर मैं चाहता हूं कि आपकी यह मोहब्बत बाहरी अुभारकी जगह किसी रचनात्मक कामका रूप ले। अिस बारेमें मैं बहुत बार कह चुका और लिख चुका हूं। आज सबसे पहला और सबसे बड़ा रचनात्मक काम है दोनों जातियोंका मेलजोल और भाअीचारा। पहले भी दोनोंमें झगड़ा होता था, लेकिन अुसमें किसीको बरबाद करनेकी बात नहीं होती थी। आज तो अुसने सबसे जहरीला रूप ले लिया है। अेक तरफ हिन्दू और सिक्ख और दूसरी तरफ मुसलमान अेक-दूसरेके दुश्मन बन गये हैं। अिसका शर्मनाक नतीजा हम देख ही चुके हैं।

प्रार्थनामें आनेवालोंके दिल वैरभावसे खाली हों अितना ही काफी नहीं है। अुन्हें दोनों जातियोंमें फिरसे मेलजोल कायम करनेमें सक्रिय भाग लेना चाहिये, जो खिलाफतके दिनोंमें हमारे गर्वकी चीज था। क्या अुन दिनों हिन्दू-मुसलमानोंकी मिलीजुली सभाओंमें मैं शामिल नहीं हुआ था? अुस अेकताको देखकर मेरा दिल आनन्दसे अुछलने लगता था। क्या वे दिन फिर कभी नहीं लौटेंगे?

सबसे ताजा झगड़ा

कल हिन्दुस्तानकी राजधानीमें जो दुःखदायी घटना हुअी अुस पर जरा विचार कीजिये। कहा जाता है कि कुछ हिन्दू और सिक्ख निरा-

श्रितोंने अेक खाली मुस्लिम घर पर कानूनके खिलाफ कब्जा करनेकी कोशिश की। अुस परसे झगड़ा हुआ। कुछ लोग घायल हुअे, लेकिन तकदीरसे कोअी मरा नहीं। यह घटना बुरी थी। लेकिन अुसे खूब बढ़ा-चढ़ाकर बताया गया। पहली खबर यह थी कि अिस झगड़ेमें चार सिक्ख मारे गये। नतीजा वही हुआ जो अैसी बातोंमें होता है। बदलेकी भावना भड़की और कअी लोग छुरेसे घायल किये गये। मालूम होता है कि अब अेक नया तरीका काममें लिया जाता है। अब सिक्ख लोग किरपाणोंकी जगह तलवारें रखने लगे हैं। वे नंगी तलवारें हाथमें लेकर हिन्दुओंके साथ या अकेले मुसलमानोंके घरों पर जाते हैं और अुन्हें मकान खाली करनेके लिअे धमकाते हैं। अगर यह खबर सच हो तो यूनियनकी राजधानीमें अैसी चीज बड़ी भयानक और शर्मनाक है। अगर सच नहीं है तो अुसकी तरफ और ज्यादा ध्यान देनेकी जरूरत नहीं। अगर वह सच हो तो अुसकी तरफ सिर्फ सरकारको ही नहीं, बल्कि जनताको भी फौरन ध्यान देना चाहिये। क्योंकि सत्ताधारियोंके पीछे अगर जनता नहीं होगी, तो वे कुछ न कर सकेंगे।

मैं निश्चित रूपसे यह नहीं जानता कि अैसी हालतमें मेरा क्या धर्म है। अितनी बात तो साफ है कि हालत दिनोंदिन ज्यादा बिगड़ रही है। जल्दी ही कार्तिककी पूनम आ रही है। मेरे पास तरह तरहकी अफवाहें आती रहती हैं। मैं आशा करता हूं कि दशहरे और बकर-अीदके समयकी अफवाहोंकी तरह ये अफवाहें भी झूठ साबित होंगी।

अिन अफवाहोंसे अेक पाठ तो सीखा जा सकता है। आज हमारे पास शान्तिकी कोअी पूंजी जमा नहीं है। हमें रोजकी कमाअी रोज करनी है। यह हालत किसी राज या राष्ट्रके लिअे अच्छी नहीं कही जा सकती। राष्ट्रके हर सेवकको गहराअीसे यह सोचना है कि अुसे राष्ट्रको खा जानेवाले अिस जहरको मिटानेके लिअे क्या करना है।

किरपाण और अुसका अर्थ

यहां पर लायलपुरके सरदार सन्तसिंहके लम्बे खत पर विचार करना अच्छा होगा। वे पहले केन्द्रीय असेम्बलीके सदस्य रह चुके हैं,

और अुन्होंने सिक्खोंका जबरदस्त बचाव किया है। अुन्होंने पिछले बुधवारके मेरे भाषणका जो अर्थ किया है, वह भाषणके शब्दोंमें से नहीं निकलता। मेरा मतलब तो अैसा कभी था ही नहीं। शायद सरदार साहब यह जानते होंगे कि जबसे मैं १९१५ में दक्षिण अफ्रीकासे लौटा हूं, तबसे सिक्ख दोस्तोंके साथ मेरा गहरा सम्बन्ध रहा है। अेक जमाना था जब हिन्दुओं और मुसलमानोंकी तरह सिक्ख भी मेरे शब्दोंको वेदवाक्य मानते थे। लेकिन अब समयके साथ लोगोंके ढंग भी बदल गये हैं। मगर मैं जानता हूं कि मैं खुद तो नहीं बदला हूं। सरदार साहब शायद नहीं जानते कि सिक्ख आज किधर जा रहे हैं। मैं सिक्खोंका पक्का दोस्त हूं। मुझे अपना कोअी स्वार्थ नहीं साधना है। अिसलिअे मैं अच्छी तरह देख सकता हूं कि वे किधर जा रहे हैं। मैं अुनका सच्चा दोस्त हूं, अिसलिअे अुनसे साफ साफ शब्दोंमें दिल खोलकर बात कर सकता हूं। मैं हिम्मतके साथ यह कह सकता हूं कि कअी मौकों पर सिक्ख लोग मेरी सलाह मानकर कठिनाअियोंसे पार हुअे हैं। अिसलिअे मुझे यह याद दिलानेकी जरूरत नही कि मुझे सिक्खों या दूसरी जातिके लोगोंके बारेमें सोच-समझकर बोलना चाहिये। सरदार सन्तसिह और दूसरे सारे सिक्ख, जो सिक्खोंका भला चाहते हैं और आजके बहावमें बह नहीं गये हैं, अिस बहादुर और महान जातिको पागलपन, शराबखोरी और अुससे पैदा होनेवाली बुराअियोंसे बचावें। सिक्ख लोग जिन तलवारोंका काफी प्रदर्शन और बुरा अिस्तेमाल कर चुके हैं, अुन्हें अब वे वापस म्यानमें रख लें। अगर प्रिवी कौंसिलके फैसलेमें किरपाणका अर्थ किसी भी नापकी तलवारसे किया गया है तो भी वे अुससे मूर्ख न बनें। जब किरपाण किसी अुसूलको न माननेवाले शराबीके हाथमें जाती है या जब अुसका मनमाना अुपयोग किया जाता है, तब अुसकी पवित्रता खतम हो जाती है। अेक पवित्र चीजको पवित्र और न्यायके मौकों पर ही काममें लेना चाहिये। बेशक, किरपाण शक्तिकी प्रतीक है। लेकिन वह धारण करनेवालेको सिर्फ तभी शोभा देती है, जब वह अपने आप पर अनोखा क़ाबू रखे और जबरदस्त विरोधी ताकतोंके खिलाफ ही अुसका अुपयोग करे।

अगर मैं यह कहूं कि मैंने सिक्खोंका अितिहास काफी पढ़ा है और ग्रन्थसाहबके वचनोंका मीठा अमृत पिया है, तो सरदार साहब मुझे माफ करेंगे। सिक्खोंने जो कुछ किया बताया जाता है, अुसकी जांच ग्रन्थसाहबके अुसूलोंसे की जाय, तो अुसका बचाव नहीं किया जा सकता। वह अपने आपको बरबाद करनेका रास्ता है। किसी भी हालतमें सिक्खोंकी बहादुरी और अीमानदारीका अिस तरह नाश नहीं होना चाहिये। वह सारे हिन्दुस्तानके लिअे दौलत बन सकती है। आज तो सिक्खोंकी वह बहादुरी भयकी चीज बन गअी है। अैसा अुसे नहीं होना चाहिये।

यह बात बिलकुल वाहियात है कि सिक्ख अिस्लामके पहले नम्बरके दुश्मन हैं। क्या मेरे बारेमें भी यही नहीं कहा गया है? क्या यह सम्मान मुझे सिक्खोंके साथ बंटाना होगा? मैंने अिस सम्मानकी कभी अिच्छा नहीं की। मेरा सारा जीवन अिस अिलजामको गलत साबित करनेवाला है। क्या सिक्खों पर यह अिलजाम लगाया जा सकता है? वे अुन सिक्खोंसे पाठ सीखें जो आज शेरे-काश्मीरको मदद दे रहे हैं। अुनके नामसे आज जो बुरे काम किये जाते हैं, अुनके लिअे वे पश्चात्ताप करें।

बुरा सुझाव

मैं अिस बुरे और भयानक सुझावके बारेमें जानता हूं कि अगर हिन्दू लोग सिक्खोंका साथ छोड़ दें, तो अुन्हें पाकिस्तानमें कोअी खतरा नहीं रहेगा। सिक्खोंको पाकिस्तानमें कभी बरदाश्त नहीं किया जायगा। मैं तो भाअी-भाअीको मारनेवाले अैसे सौदेमें कभी हिस्सेदार नहीं बन सकता। जब तक हरअेक सिक्ख और हिन्दू अिज्जत और सुरक्षाके साथ पश्चिम पंजाबको नहीं लौटता और हर भागा हुआ मुसलमान यूनियनमें वापस नहीं आता, तब तक अिस अभागे देशमें शान्ति और अमन कायम नहीं हो सकता। जो लोग किसी कारणसे लौटना न चाहें अुनकी बात अलग है। अगर हमें शान्तिसे अेक-दूसरेको मदद देनेवाले पड़ोसियोंकी तरह रहना है, तो आम लोगोंकी अदला-बदलीके पापको धोना होगा।

पाकिस्तानके बुरे काम

यहां पाकिस्तानके बुरे कामोंको दोहरानेकी जरूरत नहीं। अुससे दुःखी हिन्दुओं या सिक्खोंको कोअी फायदा नहीं होगा। पाकिस्तानको अपने पापोंका बोझ अुठाना होगा जो बड़े भयानक हैं। हरअेकके लिअे मेरी यह राय जानना काफी होना चाहिये (अगर अुस रायकी कोअी कीमत है) कि मुस्लिम लीगने १५ अगस्तसे बहुत पहले शरारत शुरू की थी। मैं यह भी नहीं कह सकता कि १५ अगस्तको अुसने कोअी नअी जिन्दगी शुरू कर दी और वह शरारतको भूल गअी है। लेकिन मेरी यह राय आपकी कोअी मदद नहीं कर सकती। महत्त्वकी बात तो यह है कि यूनियनमें हमने भी पाकिस्तानके पापोंकी नकल की और अुसके साथ हम भी पापी बन गये। तराजूके पलड़े करीब-करीब बराबर हो गये। क्या अब भी हमारी यह बेहोशी दूर होगी और हम अपने पापोंका प्रायश्चित्त करके बदलेंगे, या फिर हमें गिरना ही होगा?

७५

२५–११–'४७

शरणार्थी या दुःखी?

कल मुझे अेक भाअीने कहा, हमें शरणार्थी क्यों कहते हैं? हमें 'पाकिस्तान-सफरर' कहिये। यूनियन हमारा देश नहीं है क्या? फिर हम शरणार्थी क्यों कहलायें? अेक तरहसे अुनकी यह बात ठीक है। बच्चोंको तकलीफ होती है तो वे मांकी गोदमें आकर छिप जाते हैं। यूनियन सबका मुल्क है। सारे हिन्दुस्तानके रहनेवाले भाअी-भाअी हैं। सो वे लोग हकसे यूनियनमें आते हैं। अंग्रेजीमें 'रेफ्युजी' शब्द अिस्तेमाल हुआ। अुसका तरजुमा 'अखबारवालोंने शरणार्थी किया। 'सफरर' भी अंग्रेजी शब्द है। तो मैं अुन्हें दुःखी कहूंगा। वैसे तो हम सब दुःखी हैं। पर सच्चे दुःखी आज वे हैं, जो लाखोंकी तादादमें अपने घरबारसे अुखड़ चुके हैं। आज मैं अुन दुःखियोंकी बात कहना चाहता हूं।

मुसलमानोंके घरों पर कब्जा न किया जाय

मेरे पास आज दिनमें लाहौरका अेक कुटुम्ब आया। वहां अुनका घर, व्यापार, धन-दौलत सब छूट गया है। मुझे वे लोग कहने लगे, घर दिलवा दो। मैंने कहा, मैं हुकूमत नहीं हूं। घर देना-दिलवाना मेरे हाथमें नहीं है। अगर होता तो भी मैं नहीं दिलवाता। दिल्लीमें खाली घर हैं कहां? लोगोंके अपने घर भी हुकूमत खाली करवा लेती है। बाहरसे अितने अेलची आते हैं अुनके लिअे घर चाहिये। हुकूमत चाहे तो यह घर, जिसमें मैं रहता हूं, खाली करवा सकती है। मगर हुकूमत वहां तक नहीं जाती। अुन्होंने कहा कि अुनके घरके १७ आदमी भी मारे गये थे। मैंने कहा कि सारा हिन्दुस्तान अगर हमारा कुटुम्ब है, तो जहां हजारों–लाखों मरे वहां १७ की क्या गिनती है? मगर ज्ञानकी बातोंको जाने दूं। मेरी आपको सलाह है कि आप कैम्पमें जावें और वहां काम करें। अुन्होंने कहा, वे भिखारी नहीं हैं; भिक्षाका अन्न नहीं खाना चाहते। मैंने कहा, मैं तो किसीको भिक्षान्न देना नहीं चाहता। कैम्पमें आपको काम करना है। दिनभर तो आकाशके नीचे रह सकते हैं और रातको छतके नीचे कुछ गरम कपड़े ओढ़कर काम चल सकता है। अुन्होंने कहा, हमारे बच्चे हैं। लेकिन बच्चे तो सबके हैं। कितनी ही माताओंने तो खुलेमें बच्चोंको जन्म दिया। अिसलिअे मेरी तो सलाह है कि आप कैम्पमें जावें, वहां मेहनत करें और खायें। अुन्होंने कहा, मुसलमानोंके खाली घर अुन्हें क्यों न मिलें? मुझे यह सुनकर चोट लगी। बेचारे थोड़ेसे मुसलमान रह गये हैं। अुन्हें हलाल करना जंगलीपन है। हरअेकको हाकिम बननेका अधिकार नहीं। चोर और लुटेरे भी अपना सरदार चुनते हैं और अुसका हुक्म मानते हैं। हरअेक हाकिम बनेगा तो हुकूमत क्या करेगी? बेचारे मुसलमानोंको आज डर लगा रहता है कि दिन है तो रात होगी या नहीं। अुनके मकानोंकी तरफ नजर रखना बुरी बात है। अिसके बदले आप मुझे कह सकते हैं कि तू अिस महलमें क्यों पड़ा है? यह हमें खाली कर दे। तू तो जहां जायगा वहीं तुझे मकान, फल, दूध वगैरा सब कुछ मिल जायगा। वह ज्यादा अच्छा होगा।

अुचित मांग

अुसके बाद कुछ सिक्ख आये। वे हजाराके थे। अुन्होंने कहा, हम तो खेती करनेवाले हैं, खेती करना जानते हैं और अुसके लिअे साधन मांगते हैं। मुझे दर्द हुआ। मैंने पूछा, आप पूर्व पंजाबमें क्यों नहीं जाते? अुन्होंने कहा कि पूर्व पंजाबवाले पश्चिम पंजाबवालोंको ही लेना चाहते हैं। पूर्व पंजाबमें अितनी जमीन नहीं कि सरहदी सूबेसे आनेवालोंको भी मिल सके। अिसलिअे सरहदी सूबेवालोंको मध्यवर्ती सरकारके पास जानेको कहा है। सरकार अुन्हें जमीन दे तो बैल और हल भी देने चाहिये।

हुकूमतको मेरी यह सलाह है कि जो लोग अिधर-अुधर पड़े हैं, अुन सबको अिकट्ठे करके कैम्पमें रखे, ताकि वे मेहनत करके अपने पेट भर सकें। वे तगड़े लोग हैं। मगर अुनका तगड़ापन किसीको डरानेके लिअे नहीं है। वे अपना जीवन अच्छी तरह बसर करना चाहते हैं। मेरी समझमें अुनकी मांग पूरी होनी चाहिये।

लौटनेकी शर्त

अेक भाअीने मुझसे पूछा, आप कहते हैं कि हमें वापस अपने घर जाना है। तो हम पश्चिम पंजाब कब जा सकते हैं? मुझे यह सवाल मीठा लगा। जानेको तो आज जा सकते हैं, मगर शर्त यह है कि यहां हम भले बन जायं। आज तो हवा अैसी बिगड़ी है कि जीना भी अच्छा नहीं लगता। अगर दिल्ली मेरी आवाज सुने, तो कल सब अपने अपने घर चले जायं। हम यह सिद्ध कर दें कि हम करोड़ों मुसलमानोंको न मारना चाहते हैं, न भगाना चाहते। तब हमारे दुःखी हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख भाअी सब अपने अपने घर लौट सकेंगे। हम पाकिस्तानवालोंसे वहां लौटनेवाले हिन्दू और सिक्खोंकी रक्षा करवा सकेंगे तभी मुझे शांति होगी।

७६

२६-११-'४७

बेबुनियाद अिलजाम

अेक भाअीने मुझे खत लिखा है। अुसमें बम्बअीके अेक अखबारकी कतरन भेजी है। अुस कतरनमें लिखा है, गांधी तो कांग्रेसका ही बाजा बजाता है। लोग वह सुनना भी नहीं चाहते। अिस तरहसे कांग्रेस रेडियो वगैराका अपने ही प्रचारके लिअे अिस्तेमाल करेगी, तो आखिरमें यहां हिटलरशाही कायम हो जायगी। मैं कांग्रेसका बाजा बजाता हूं, यह बात सर्वथा गलत है। मैं तो किसीका बाजा बजाता ही नहीं, या फिर सारे जगतका बजाता हूं। अुस कतरनमें यह भी कहा गया है कि अहिंसाकी बात तो यों ही ले आते हैं। हेतु तो यही है कि हुकूमतको अपना ही गान करना है। मैं यह कहता हूं कि जो हुकूमत अपना गान करती है वह चल नहीं सकती। और मैं तो धर्मकी ही सेवा करना चाहता हूं। धर्मसे सम्बन्ध रखनेवाली बातें ही आप लोगोंको सुनाता हूं। हो सकता है कि कुछ लोग मेरी बातें सुनना पसन्द न करते हों। मगर दूसरे लोग मुझे लिखते हैं कि मेरी बातोंसे अुनका कितना हौसला बढ़ता है। जिन्हें मेरी बातें नापसन्द हों, अुन्हें कोअी सुननेके लिअे मजबूर नहीं करता। और, अगर आपका मन कहीं और है, तो यहां बैठकर भी आप मेरी बात बिना सुने जा सकते हैं। आप लोग मुझे छोड़ देंगे तो मैं यहां प्रार्थना भी नहीं कराअूंगा और भाषण भी नहीं होगा। मैं खास तौरसे रेडियो पर बोलने तो जानेवाला नहीं। मुझे वह पसंद नहीं है। यहां पर भी मुझे क्या कहना है, यह मैं सोचकर नहीं आता।

भगाअी हुअी औरतें

हमारी काफी औरतें पाकिस्तानमें पड़ी हैं। लोग अुन्हें बिगाड़ते हैं। वे बेचारी अैसी बनी हैं कि अुसके लिअे शरमिन्दा होती हैं। मेरी समझमें अुन्हें शरमिन्दा होनेका कोअी कारण नहीं। किसी औरतको मुसलमान जबरदस्ती पकड़ लें और समाज अुसको निकम्मी मानने लगे

और भाओी, मां, बाप, पति, सब छोड़ दें तो यह घोर निर्दयता है। मैं मानता हूं कि जिस औरतमें सीताका तेज रहे, अुसे कोओी छू नहीं सकता। मगर आज सीता कहांसे लावें? और सब औरतें तो सीता बन नहीं सकतीं। जिसे जबरदस्ती पकड़ा गया, जिस पर अत्याचार हुआ, अुससे हम घृणा करें क्या? वह थोड़े ही व्यभिचारिणी है? मेरी लड़की या बीवीको भी पकड़ा जा सकता है, अुस पर बलात्कार हो सकता है। लेकिन मैं कभी अुससे घृणा नहीं करूंगा। अैसी कओी औरतें मेरे पास नोआखालीमें आ गओी थीं। मुसलमान औरतें भी आओी थीं। हम सब बदमाश बन गये हैं। मैंने अुन्हें दिलासा दिया। शरमिन्दा तो बलात्कार करनेवालेको होना है। अुन बेचारी बहनोंको नहीं।

फसल काटनेमें मदद देनेवाले

अेक भाओी कहते हैं कि मान लीजिये कि कण्ट्रोल मिट जाय, देहातोंमें लोग अपने लिअे अनाज पैदा करने लगें, गांवके लोग फसल वगैरा काटनेके लिअे अेक-दूसरेकी अपने-आप मदद करें तो अनाज सस्ता होगा। लेकिन अगर किसानको दाम देकर मजदूर लगाने पड़ेंगे तो दाम बढ़ेगा। पहले तो यह रिवाज था ही। अेक किसान दूसरे किसानोंको निमन्त्रण देता था। फसल काटनेका और साफ करके घरमें ले जानेका काम हाथोंहाथ खतम हो जाता था। आज हम वह रिवाज भूल गये हैं, मगर अुसे वापस लाना चाहिये। अेक हाथसे कुछ काम नहीं हो सकता।

किसान-राज

फिर वे भाओी यह भी कहते हैं कि मन्त्रियोंमें से कमसे कम अेक तो किसान होना ही चाहिये। हमारे दुर्भाग्यसे आज हमारा अेक भी मन्त्री किसान नहीं है। सरदार जन्मसे तो किसान हैं, खेतीके बारेमें कुछ समझ रखते हैं, मगर अुनका पेशा बैरिस्टरीका था। जवाहरलालजी विद्वान हैं, बड़े लेखक हैं; मगर वे खेतीके बारेमें क्या समझें? हमारे देशमें ८० फीसदीसे ज्यादा जनता किसान है। सच्चे प्रजातन्त्रमें हमारे यहां राज किसानोंका होना चाहिये। अुन्हें बैरिस्टर बननेकी जरूरत नहीं। अच्छे किसान बनना, अुपज बढ़ाना, जमीनको कैसे ताजी रखना,

यह सब जानना अुनका काम है। अैसे योग्य किसान होंगे तो मैं जवाहरलालजीसे कहूंगा कि आप अिनके मन्त्री बन जाअिये। हमारा किसान-मन्त्री महलमें नहीं रहेगा। वह तो मिट्टीके घरमें रहेगा। दिनभर खेतोंमें काम करेगा। तभी योग्य किसानोंका राज हो सकता है।

७७

२७-११-'४७

कोअी बात नामुमकिन नहीं

आज मैं गवर्नर जनरल साहबके पास चला गया था। वहां लियाकतअली साहब भी मिले। दोनोंसे काफी बातें हुअीं। अुनकी तबीयत भी अच्छी नहीं थी। लियाकतअली साहब, पाकिस्तानके अर्थमन्त्री, सरदार पटेल, जवाहरलालजी सबने मिलकर बातें की थीं। अुन लोगोंने कुछ तय किया है। सब लोग अच्छी तरहसे काम करें, तो शायद हम अिस भीड़ और परेशानीमें से निकल सकेंगे।

शेरे-काश्मीर

शेरे-काश्मीर शेख अब्दुल्ला भी मेरे पास आज आ गये थे। अुन्होंने सबसे आला दरजेका काम यह किया है कि काश्मीरमें जो मुट्ठीभर सिक्ख और हिन्दू पड़े हैं, अुन्हें वे अपने साथ रखकर काम करते हैं। अुन लोगोंको जो चीज अच्छी न लगे सो वे नहीं करते। वे काश्मीरके प्रधानमन्त्री हैं। वहां पर दो प्रधानमन्त्री हैं, या क्या है, मैं नहीं जानता। मैंने अुन्हें मजाकमें पूछा भी कि आप क्या हैं? वे कहने लगे कि मैं खुद नहीं जानता। वे जम्मू भी चले गये थे। वहां पर शर्मनाक काम हुआ है। मगर शेख साहबने अुस पर भी अपना दिमाग नहीं खोया। यही अेक तरीका है जिससे हिन्दू, सिक्ख और मुसलमान साथ रह सके और अेक-दूसरेका अेतबार कर सके। अुनके सामने कअी कठिनाअियां हैं। काश्मीर पहाड़ी मुल्क है। सर्दियोंमें वहां बर्फ पड़ती है। आना-जाना आरामसे नहीं हो सकता। वहांका रास्ता वैसे भी कठिन है। पाकिस्तानकी तरफसे तो कअी अच्छे अच्छे रास्ते

हैं, पर अुधर तो लड़ाअी चल रही है — पाकिस्तानके साथ कहो या 'रेडर्स' के साथ कहो। सीधा रास्ता यूनियनके साथ अेक ही है। वह पूर्व पंजाबमें पड़ता है। काश्मीरी लोग अुद्यमी हैं। वहांसे हिन्दुस्तानमें फल आते हैं, अूनी कपड़े आते हैं। मगर आज तो हम अैसे बिगड़े हैं कि पूर्व पंजाबमें कोअी मुसलमान सुरक्षित नहीं। काश्मीरके मुसलमान कैसे अुस रास्तेसे आयें? कैसे तिजारत हो? किसीने शेख साहबसे कहा, आपके मुसलमान भी पूर्व पंजाबमें से नहीं जा सकते। हमने काफी खराबी कर ली है। अब हम अुसे भूल जायं। क्या हम हमेशा बुरे रहेंगे? हुकूमतको यह देखना है कि किस तरह रास्ता साफ हो सकता है, ताकि काश्मीरके फल, शाल-दुशाले वगैरा हिन्दुस्तानमें आ सकें। काश्मीर यूनियनमें शामिल तो हुआ है, पर रास्ता साफ न हो तो कहां तक रहेगा?

सच है तो भयानक है

डॉन, पाकिस्तान टाअिम्स वगैरा पाकिस्तानके बड़े बड़े अखबार हैं। कभी कभी मैं अुन पर नजर डाल लेता हूं। हम यह कहें कि अुन अखबारोंमें झूठी खबरें आती हैं, तो वे हमारे अखबारोंके बारेमें भी यही चीज कह सकते हैं। जब सरदार काठियावाड़ गये थे तो मुझे अच्छा लगा था। सरदारकी सभाओंमें हिन्दू-मुसलमानोंने मिलकर कहा था कि जूनागढ़ यूनियनसे बाहर नहीं रह सकता। सरदारने कहा था कि काठियावाड़में अेक मुसलमान बच्चा भी सुरक्षित रहेगा। मगर पाकिस्तानके अखबार काठियावाड़के बारेमें अच्छी खबरें नहीं देते। आज तार भी आया है कि काठियावाड़में बहुत जगह मुसलमान आरामसे नहीं रह सकते। वहां काफी तगड़े मुसलमान पड़े हैं। बलवाखोर भी हैं। तो क्या हम सब मुसलमानोंको काट डालें या भगा दें? मेरे लिअे बड़ी विकट परिस्थिति पैदा हो गअी है। मैं काठियावाड़का हूं। वहांके सब लोगोंको जानता हूं। शामळदास गांधी मेरा ही लड़का है। जूनागढ़की आरजी हुकूमतका सरदार बनकर बैठ गया है। क्या अुसकी हाजरीमें काठियावाड़में अैसी चीजें हो सकती हैं? हिन्दू भी अितना तो कहते हैं कि कुछ लूट और आग लगानेका काम हुआ है; मगर खून

नहीं हुआ, औरतें नहीं अुड़ायी गअीं। मुझे लोग कहते हैं: तेरा लड़का वहां है, और वहां पर अैसे काम होते हैं? मेरा लड़का है तो सही, पर अुसका जिम्मेदार मैं कैसे बनूं? अगर वहांके हिन्दू अैसे पाजी बन गये हैं, तो हमने आजादी ली तो सही, और जूनागढ़ लिया तो सही, पर सब खोनेके लिअे। सरदार पटेल होम मिनिस्टर हैं, काठियावाड़के सरदार हैं। अुन्होंने कहा है, अगर मुसलमान यूनियनके वफादार रहेंगे, तो अुन्हें कोअी छू भी नहीं सकता। तब काठियावाड़के मुसलमान कैसे सताये जा सकते हैं? काठियावाड़के लोग अैसे दीवाने बने हैं क्या? धर्म गया, कर्म गया, मुल्कको बरबाद किया! मैंने जो सुना अुस परसे मेरे विचार आपके सामने रख दिये। तहकीकात करनेके लिअे ठहरना मुझे ठीक न लगा। लियाकतअली साहबको मैंने पूछा कि काठियावाड़के बारेमें आप कुछ जानते हैं क्या? डॉन वगैरामें जो लिखा है वह सही है क्या? अुन्होंने कहा, लूटना, आग लगाना, कतल करना और लड़कियां अुड़ाना, चारों चीजें काठियावाड़में हुअी तो हैं, लेकिन किस पैमाने पर हुअी हैं यह मैं नहीं जानता। मेरे दिल पर अिस बातकी कितनी चोट लगती है? अिस चारों तरफ भड़कती ज्वालामें क्या मैं साबित रह सकूंगा?

७८

२८-११-'४७

गुरु नानकका जन्मदिन

आज गुरुपर्व है। मुझे किसीने निमंत्रण भेजा था। सुबह बाबा बिचित्तरसिंह आ गये और कहने लगे कि आपको सभामें आना ही पड़ेगा। मैंने कहा, मैंने सिक्ख भाअियोंको कड़वा घूंट पिलाया है। वे मुझ पर नाराज हैं। अैसी हालतमें मेरे आनेसे क्या फायदा होगा? मगर अुन्होंने कहा — नहीं, दुःखी होकर आये हजारों सिक्ख स्त्री-पुरुष आपकी बात सुनना चाहते हैं। मेरे पाससे वे वापस गये और जब दुबारा आये, तब शेख अब्दुल्ला अुनके साथ थे। मैंने कहा, शेख अब्दुल्ला सभामें कैसे आ सकते हैं? सिक्ख और मुसलमान तो आज

अेक-दूसरेको बरदाश्त ही नहीं कर सकते। मगर बाबा साहब बोले: नहीं, शेख साहबने काश्मीरमें बहुत बड़ा काम कर लिया है। काश्मीरके हिन्दू, सिक्ख और मुसलमानोंको अेक साथ जीना या मरना है। अुन्हें तो सभामें आना ही है। अिस पर हम दोनों सभामें गये। हजारों सिक्ख भाअी-बहनोंने शान्तिसे हमारी बातें सुनीं। मैंने तो थोड़ा ही कहा, मगर शेख साहबने काफी सुनाया। मैंने सभाके लोगोंसे कहा कि आज सिक्खोंका नया दिन है। अुनका धर्म है कि आजसे वे नया जीवन शुरू करें। गुरु नानकने अेकता सिखाअी है। गुरु गोविन्दसिंहके कअी मुसलमान शिष्य थे। वे अुनकी रक्षा करते थे। तो आज हम निश्चय करें कि मुसलमानोंने कुछ भी किया हो, लेकिन हम तो शरीफ बने रहेंगे। आज मुझे यह देखकर दर्द हुआ कि चांदनी चौकमें अेक भी मुसलमान दिखाअी नहीं देता था। यह हमारे लिअे शर्मकी बात है।

व्यापारमें साम्प्रदायिकता नहीं चाहिये

मुझे मुस्लिम चेम्बर ऑफ कॉमर्सका कलकत्तेसे तार मिला है। अुसमें लिखा है कि जब यह सरकार सबकी है, तो फिर मुस्लिम चेम्बर ऑफ कॉमर्सको अेक संस्थाके रूपमें वह क्यों न माने? सरकारने कहा है कि भविष्यमें किसी कौमी संस्थाको वह नहीं मानेगी। हमारे यहां मारवाड़ी व्यापारी मण्डल है। यूरोपियन व्यापारी मण्डल है। यूरोपियन लोग तो यहां राजा थे। अुनके व्यापारी मण्डलकी वार्षिक सभामें वाअिसरॉय जाता था। मगर आज मैं अुनसे यह आशा रखता हूं कि वे कहें कि हमें अलग मण्डल नहीं चाहिये। आज वे यूरोपियनकी हैसियतसे प्रधानमंत्रीको, अुप-प्रधानमंत्रीको, या गवर्नर जनरलको नहीं बुला सकते। अुनकी हस्ती सारे हिन्दुस्तानकी हस्तीके साथ है। वे कहें कि जो हक सबके हैं वही हमारे भी हैं। हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, यूरोपियन, ओसाअी सबको हिन्दी बनकर यानी हिन्दुस्तानके वफादार होकर रहना है। अिसीमें आजाद हिन्दुस्तानकी शोभा है। यूरोपियन अच्छे ओसाअी होकर रहें। मुसलमान अच्छे मुसलमान बनकर रहें। हिन्दू-सिक्ख अच्छी तरहसे अपने धर्मका पालन करें। धर्मसे हम सब भले अलग अलग रहें, मगर हमारी राजनीति अेक होनी चाहिये और हमारा व्यापार भी अेक होना चाहिये।

सोमनाथ-मन्दिरका जीर्णोद्धार

अेक भाअी लिखते हैं कि सोमनाथके मन्दिरका जीर्णोद्धार होनेवाला है। अुसमें सरकारी पैसा नहीं लगाना चाहिये। मुझे बताया गया है कि शामळदास गांधीने आरजी हुकूमत बनाअी है और अिस कामके लिअे जनतासे अिकट्ठे किये हुअे पैसेमें से पचास हजार रुपये देना स्वीकार किया है। जाम साहब अेक लाख देनेवाले हैं। सरदार पटेलने कहा कि सरदार अैसा नहीं है कि जो चीज हिन्दुओंके लिअे ही है, अुसके लिअे सरकारी खजानेसे पैसा निकाले। हम सब हिन्दी हैं, मगर धर्म हमारी अपनी चीज है। सोमनाथके जीर्णोद्धारके लिअे हिन्दू जो पैसा खुशीसे देंगे, अुसीसे काम चलाया जायगा। पैसा नहीं मिलेगा तो वह काम पड़ा रहेगा। मैं यह सुनकर खुश हुआ।

बुराअीके लिअे पैसा न दिया जाय

हमारी बहुतसी सिक्ख और हिन्दू लड़कियोंको पाकिस्तानमें भगा कर ले गये हैं। अुन्हें वापस लानेकी कोशिश हो रही है। जिन्हें जबरन बिगाड़ा गया है, मेरी नजरमें न अुनका धर्म बिगड़ा है, न कर्म। धर्म-पलटा तो जबरन हो ही नहीं सकता। मुझसे कहा गया है कि अगर अेक अेक हजार रुपया अेक अेक लड़कीके लिअे दिया जाय, तो अुन्हें निकालना ज्यादा आसान होगा। मैं तो अैसा कभी नहीं कर सकता। अपनी लड़कीके लिअे मैं कभी अिस तरह पैसा नहीं दूंगा। पैसा मांगनेवालेसे मैं कहूंगा —तू भले मेरी लड़कीको मार डाल। अुसकी रक्षा भगवानको करनी है तो करेगा। मगर मैं तेरी दगाबाजीके लिअे तुझे पैसा नहीं दूंगा। लड़कियोंको लानेके लिअे किराये वगैराका जो खर्च हो वह तो हम करें, मगर गुण्डोंको कभी पैसे न दें। हमारे यहां भी कुछ मुसलमान लड़कियां रखी हुअी हैं। क्या हम यह कह सकते हैं कि अितने पैसे दो तब लड़कियां मिलेंगी? दोनों तरफकी सरकारोंका धर्म है कि लड़कियोंको ढूंढ़ निकालें और अुन्हें लौटा दें। जो हुकूमत अैसा नहीं करती अुसे डूब मरना चाहिये। जो गुण्डे पैसा मांगते हैं अुन्हें सरकारको सजा देनी चाहिये और अुनके पापके लिअे माफी मांगनी चाहिये। लड़कियोंको रखनेवाले अुन्हें लौटाकर सच्चे दिलसे तोबा करें तभी वे शुद्ध हो सकते हैं।

काठियावाड़ शान्त है

काठियावाड़के बारेमें जो कुछ मैंने सुना था वह आपको सुना दिया। आज सरदार आये थे। मैंने अुनसे कहा, आपने बातें तो बड़ी-बड़ी कीं। आपने कहा था कि काठियावाड़में किसी मुसलमान बच्चेको भी कोओी छू नहीं सकता। मगर वहां तो लूटना, आग लगाना, मारकाट, लड़कियां अुड़ाना वगैरा चलता है। अुन्होंने कहा, 'जहां तक मैं जानता हूं, और मैं सही जानता हूं, ये सब खबरें दुरुस्त नहीं हैं। काठियावाड़के हिन्दू बिगड़े थे। वे कहां नहीं बिगड़े? कुछ लूट वगैरा भी हुअी। मगर अुसे दबा दिया गया है। मेरे भाषणके बाद तो वहां कुछ भी नहीं हुआ। किसीका खून नहीं हुआ, किसीकी लड़की नहीं अुड़ाअी गअी। कांग्रेस-वालोंने अपनी जानको खतरेमें डालकर मुसलमानोंके जान-मालकी रक्षा की है। जब तक मैं हूं काठियावाड़में गुण्डागिरी नहीं चल सकती।' मुझे यह सुनकर खुशी हुअी।

७९

२९–११–'४७

दिल्लीमें शराबखोरी

मैंने कल आपसे कहा था कि कलका दिन सिक्खोंके लिअे बड़ा अवसर था। अगर कलसे अुन्होंने सचमुच नया जीवन शुरू कर दिया है और गुरु नानकके कहनेके अनुसार चलते हैं, तो जो बातें आज दिल्लीमें हो रही हैं वे होनी नहीं चाहियें। मैंने आज अखबारमें देखा और सुन भी चुका था कि दिल्लीमें शराबखोरी बहुत बढ़ रही है। अगर नया पन्ना शुरू हुआ है तो शराब तो पहलेसे भी कम खपनी चाहिये। शराब पीकर आदमी पागल बनता है, और अुसके पीछे पीछे अनेक बुराअियां आती हैं।

मस्जिदोंका नुकसान

कअी मस्जिदोंको यहां नुकसान पहुंचाया गया है। कअी मस्जिदोंके मन्दिर बनाये गये हैं। मिलिटरीकी चौकी रहे तब वहांसे लोग हट जाते

हैं। मिलिटरी जाती है तो फिर वापस आ जाते हैं। अगर लोगोंको सचमुच अमन चाहिये, तो अुन्हें अपने-आप मूर्तियां अुठा लेना है। अुन्हें कहना है कि मस्जिद तो मस्जिद ही रहे। अगर लोग भले बन जाते हैं, तो अितनी मिलिटरी और पुलिसकी जरूरत ही नहीं रहती।

भगाअी हुअी लड़कियां

हमारी बहुतसी लड़कियां पाकिस्तानवाले अुड़ा ले गये हैं। अुन्हें वापस लाना है, मगर पैसे देकर नहीं। दूसरी लड़कियोंको हमें अपनी मां-बहन समझना चाहिये। मगर मैंने सुना है कि पूर्व पंजाबमें मुसलमान लड़कियोंके बेहाल करते हैं। मैं आशा रखता हूं कि अिसमें कुछ अतिशयोक्ति होगी। अिन्सान अितना गिर कैसे सकता है? अगर कलसे सिक्खोंने नया पन्ना खोला है, तो अिस किस्मकी चीजें बन्द होनी चाहिये। यहां हम बुराअी नहीं करते तो अिससे क्या हुआ? मेरा भाअी गुनाह करे तो मैं गुनहगार हूं अैसा मैं महसूस करता हूं। समुद्रके बिन्दु अलग नहीं किये जा सकते। वे साथ रहते हैं तो बड़े बड़े जहाज अपनी छाती पर अुठा लेते हैं; अलग रहते हैं तो सूख जाते ह।

कण्ट्रोल

अब कण्ट्रोलकी बात लूं। चीनी परसे कण्ट्रोल अुठ गया है। मुझे अुम्मीद है कि कपड़े और खुराक परसे भी अुठ जायगा। तब हमारा धर्म क्या होगा? चीनीके बड़े बड़े कारखाने हैं। चीनी परसे कण्ट्रोल अुठनेका यह अर्थ नहीं होना चाहिये कि अिन कारखानोंके मालिक जितने पैसे लोगोंसे छीन सकते हैं छीन लें। हिन्दुस्तानके अधिकतर लोग गुड़ खाते हैं। गुड़ देहातोंमें बनता है। खानेमें स्वादिष्ट रहता है, मगर चायमें लोग गुड़ नहीं डालते। अगर चीनीके दाम खूब बढ़ जायं, तो आम लोग चीनी नहीं खा सकेंगे। चीनीके कारखाने चन्द लखपतियोंके हाथमें हैं। अुन्हें निश्चय करना चाहिये कि आजाद हिन्दुस्तानमें तो वे शुद्ध कौड़ी ही कमायेंगे। व्यापारमें जितनी सड़ांध है अुसे दूर करेंगे। मानो कि चीनीका दाम अेकदम बढ़ जाता है तो अुसका अर्थ यह होगा कि कल तक जो व्यापारी १०% नफा लेता था, वह आज ५०% लेने लगा

है। मेरी समझमें तो ५% से ज्यादा नफा लेना ही नहीं चाहिये। कण्ट्रोल अुठनेसे चीनीके दाम बढ़नेका डर सिद्ध न हो, तो दूसरे अंकुश अपने-आप निकल जायेंगे। गन्ना किसान बोता है। अुसे तो पूरा दाम मिलना ही चाहिये। अिस कारणसे चीनीके दाम बहुत ज्यादा नहीं बढ़ सकते। व्यापारी अपना हिसाब साफ रखे। वह साफ बता दे कि अितना किसानकी जेबमें गया। अुसकी जेबमें ५%से अधिक नहीं गया। चीनीके कारखानोंके मालिकोंके बाद छोटे व्यापारी रहते हैं। वे अगर बेहद दाम बढ़ा दें, तो भी जनता मर जाती है। तो अुन्हें भी सीधा आना है।

शौककी चीजों पर टैक्स लगाया जाय

अेक भाअी तीसरे दरजेका किराया बढ़ानेकी शिकायत करते हैं। वे लिखते हैं कि अगर हुकूमतको ज्यादा पैसेकी जरूरत हो, तो अैसी चीजों पर टैक्स बढ़ाना चाहिये जिनकी जीवन-निर्वाहके लिअे जरूरत नहीं; जैसे कि तम्बाकू वगैरा। आज हमारे हाथमें करोड़ों रुपये आ गये हैं। अिसलिअे हम करोड़ों खर्च कर डालें यह ठीक नहीं। हमें अेक अेक कौड़ी फूंक-फूंककर खर्च करनी चाहिये और देखना चाहिये कि यह पैसा हिन्दुस्तानकी झोंपड़ीमें जाता है या नहीं। सच्चे पंचायत-राजमें हम लोगोंसे जो लेते हैं, अुससे १० गुना अुन्हें वापस मिलना चाहिये। देहातोंकी सफाअी, सेहत, सड़कें बनाना वगैरा पर पैसा खर्च होना है। देहाती जब समझ लेंगे कि अुनका पैसा अुन्हीं पर खर्च हो रहा है, तो वे खुशीसे टैक्स देंगे।

होमगार्ड

मिलिटरी पर भी कमसे कम खर्च करना पड़ेगा। कलसे मिलिटरी पैसे पानेवाली नहीं, लोगोंकी अपनी बनेगी। जो मिलिटरी अपने-आप बनेगी, वह अपनी रक्षा करेगी, अपने पड़ोसी और अपने देहातकी रक्षा करेगी, और अिस तरह हिन्दुस्तानकी भी रक्षा करेगी। अंग्रेज चले गये हैं, अंग्रेजियत नहीं गअी। अुसे भी जाना है।

३०-११-'४७

आसन लाअिये

प्रार्थना-सभामें लड़कियां ठण्डे पत्थरों पर बैठती हैं। मैंने अुन्हें अखबार बिछाकर बैठनेको कहा। अिस बारेमें हम लोग लापरवाह रहते हैं। यह अच्छा नहीं। हमें नाजुक नहीं बनना चाहिये, मगर साथ ही बिना कारण ठण्डी जमीन पर बैठनेकी भी जरूरत नहीं है। हमारे देशका पुराना तरीका यह था कि लोग हर जगह आसन ले जाते थे। आज हम अुसे भूल गये हैं। मगर वह रिवाज अच्छा था। आसन अूनी हो, सनका हो, चाहे घासका, या अेक पुराना अखबार ही हो। अुसे सबको अपने साथ लेकर आना अच्छा है। डॉक्टर लोग कहते हैं कि जहां जमीन बहुत ठण्डी लगे वहां बैठना अच्छा नहीं। बहुत मोटे कपड़े पहने हों तो अलग बात है। हमारी बहनें जो मामली साड़ी-सलवार पहनती हैं वह काफी नहीं।

काठियावाड़से तार

मेरे पास आज काठियावाड़के बारेमें बहुतसे तार आये हैं। काठियावाड़में जो घटनाअें घटी कही जाती हैं, अुनके बारेमें मैंने आपको सुनाया था। पाकिस्तानके अखबारोंमें जो खबरें आती हैं, अुन्हें वहांके हजारों लोग पढ़ते हैं। अुनकी हम अवगणना नहीं कर सकते। अगर खबरें झूठी सिद्ध होती हैं, तो झूठ लिखनेवालोंके लिअे शर्मकी बात है। सरदारजीने कहा, अैसी बनी-बनाअी बातें लोगोंको सुनाना अच्छा नहीं। मगर मैं समझता हूं कि मैंने जो किया अच्छा ही किया। राजकोटसे अेक तार आया है, जिसमें लिखा है कि "आप परेशान हैं कि काठियावाड़में क्या हुआ।" मैं काठियावाड़में पैदा हुआ। १७ साल तक वहीं रहा। बाहर पढ़नेके लिअे नहीं गया — मेरे पिताने मुझे भेजा नहीं। अहमदाबादके आगे नहीं जा सका। काठियावाड़में मैं सबको पहचानता हूं। ये काठियावाड़ी भाअी लिखते हैं कि वहांके

हिन्दू बिगड़े तो सही, कुछ मुसलमानोंको रंज पहुंचाया, कुछ मकान ढाये-जलाये गये; मगर हमने अिस चीजको आगे नहीं बढ़ने दिया। जो मुख्य कांग्रेसवाले थे अुनमें ढेबरभाअी भी हैं। वे मेहनत न करते तो सब मुसलमानोंके मकान जला दिये जाते और अुन्हें मारा भी जाता। मगर कांग्रेसवालोंने बड़ा काम किया। अुन्होंने मुसलमानोंके खातिर अपनी जानको खतरेमें डाला। ढेबरभाअी पर हमला हुआ। वह वहांके बड़े वकील हैं। वह तो बच गये, मगर दूसरे लोगोंको चोट लगी। ठाकुर साहबने और पुलिसने भी अमन कायम करनेमें कांग्रेसका हाथ बंटाया। अिससे मुसलमान बच गये। हिन्दू महासभाने और राष्ट्रीय स्वयंसेवक-संघने मुसलमानोंको भगानेका निश्चय किया था। मगर वे अैसा कर नहीं पाये। वह दोस्त लिखते हैं: "यहां तो हम बेफिकर हैं। दूसरी जगह क्या हुआ, अुसका पता निकालकर आपको तार देंगे।"

कुछ मुसलमानोंका भी तार है। वे अहसानमन्द हैं कि कांग्रेसने अुनकी और अुनकी जायदादकी रक्षा की। बम्बअीसे कुछ मुसलमानोंका तार आया है। वे लिखते हैं कि काठियावाड़में बहुत कुछ हुआ है और हो रहा है। बम्बअीसे आनेवाले तारको कहां तक महत्त्व दिया जाय, मैं नहीं जानता। काठियावाड़वाले मुझे धोखा नहीं दे सकते।

भावनगरके महाराजाका भी अेक तार है। भावनगरमें मैं तीन-चार माह रह चुका हूं। कअी बार गया हूं। महाराजा मुझे अच्छी तरह पहचानते हैं। लिखते हैं कि आप बेफिकर रहिये। हम जाग्रत हैं। हिन्दू जनता जाग्रत है। हम मुसलमानोंको कोअी नुकसान नहीं होने देंगे।

जूनागढ़से मुसलमानोंका अेक तार है। वे कहते हैं कि आपको धोखा दिया जा रहा है। अेक कमीशन बैठाकर जांच कीजिये कि हम सताये जाते हैं या नहीं। लेकिन अैसी हर बातके लिअे कमीशन बन नहीं सकता। काठियावाड़के लिअे तो मैं खुद ही कमीशन जैसा हूं। काठियावाड़ मैं चाहूं वह कर सकता है। वहांवालोंको मैं धमका सकता हूं। वे मेरी सब बात मानें या न मानें, मगर सुनते जरूर हैं। बिहारी लोग भी मेरी बात सुनते हैं। वहांके लिअे भी मैं कमीशन-सा हूं। मुझे लगे कि कोअी बात ठीक नहीं हुअी, तो मैं अुन्हें साफ कह देता हूं।

हिन्दू धर्मको बचानेका तरीका यह नहीं है कि बुराअीका बदला बुराअीसे दो। अगर कुछ बुराअी होती है तो हुकूमतको बताओ। अुसे गुनहगारोंको सजा करने दो।

हिन्दू महासभा और आर० अेस० अेस० से अपील

हिन्दू महासभा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक-संघ दोनों हिन्दू संस्थाअें हैं। अुनमें काफी पढ़े-लिखे लोग भी हैं। मैं अुन्हें अदबसे कहूंगा कि किसीको सताकर धर्म नहीं बचाया जा सकता। अगर वे कुछ करते हैं तो अिलजाम सब हिन्दू और सिक्खों पर आता है। अिसी तरहसे पाकिस्तानमें जो बुराअी होती है, अुसकी जिम्मेदारी सब मुसलमानों पर पड़ती है। जो बेगुनाह हैं, जिन्होंने किसीको सताया नहीं, अुन्हें अपने भाअियोंके गुनाह पर पश्चात्ताप करना है।

मस्जिदोंमें मूर्तियां

सरदार पटेल ढाअी हुअी या जिन्हें किसी तरहका भी नुकसान पहुंचा है अैसी मस्जिदोंकी हिफाजत कर रहे हैं। कअी मस्जिदोंमें मूर्ति रखकर अुन्हें मंदिर बनाया गया है। मूर्ति पत्थरकी होती है, लोहेकी, सोने-चांदीकी या मिट्टीकी होती है। मगर जब तक अुसकी प्राण-प्रतिष्ठा नहीं होती, तब तक वह पूजाके लायक नहीं होती। पाक हाथोंसे मूर्तिकी प्रतिष्ठा होनी चाहिये और पाक हाथोंसे अुसकी पूजा होनी चाहिये। तब अुसमें प्राण आते हैं। कनॉट प्लेसके पास अेक मस्जिदमें हनुमानजी बिराजते हैं। वे पूजाके लायक नहीं। पूजाके लिअे अुनकी प्राण-प्रतिष्ठा होनी चाहिये। अुन्हें हकसे बैठना चाहिये। अैसे जहां-तहां मूर्ति रखना धर्मका अपमान करना है। अुससे मूर्ति भी बिगड़ती है और मस्जिद भी। मस्जिदोंकी रक्षाके लिअे पुलिसका पहरा क्यों होना चाहिये? सरदारको पुलिसका पहरा क्यों रखना पड़े? हम अुन्हें कह दें कि हम अपनी मूर्तियां खुद अुठा लेंगे, मस्जिदोंकी मरम्मत कर देंगे। सरकारको यह सब करना पड़े, यह हमारे लिअे शर्मकी बात है। हम हिन्दू मूर्तिपूजक होकर अपनी मूर्तियोंका अपमान करते हैं और अपना धर्म बिगाड़ते हैं। सिक्ख मूर्तिपूजक नहीं। वे गुरु ग्रन्थसाहबकी पूजा करते हैं। ग्रन्थसाहबको

किसी मस्जिदमें रखा हो अैसा मैंने सुना नहीं। अगर अैसा किया है तो ग्रन्थसाहबका अपमान किया है। गुरुग्रन्थ गुरुद्वारेमें ही रखे जा सकते हैं। मैं तो वहां खादी बिछाअूं। दूसरे लोग रेशम वगैरा बिछाते हैं। रेशम भी बिछाना हो तो हाथका ही बना रेशम बिछावें। फूल चढ़ावें। पूजा करनेवाला पाक आदमी हो तब सच्ची पूजा होती है।

अेक मुसलमान मेरे पास परेशान होकर आया। वह अेक आधा जला कुरान शरीफ अदबसे कपड़ेमें लपेटकर लाया। खोलकर मुझे दिखाया और चला गया। अुसकी आंखोंमें पानी था, पर मुंहसे वह कुछ बोला नहीं। जिसने कुरान शरीफका अपमान करनेकी कोशिश की अुसने अपने धर्मका अपमान किया। अुसके सामने मुसलमान मारपीट करके कहीं कुरान शरीफ रखना चाहें, तो वे कुरान शरीफका अपमान करेंगे।

सिक्ख अगर गुरु नानकके दिनसे सचमुच साफ हो गये, तो हिन्दू अपने-आप साफ हो जायेंगे। हम बिगड़ते ही न जायं; हिन्दू धर्मको धूलमें न मिलावें। अपने धर्मको और देशको हम आज मटियामेट कर रहे हैं। अीश्वर हमें अिससे बचा ले!

८१

१–१२–'४७

'अगर'का अिस्तेमाल क्यों करते हो?

कअी मित्र नाराज होते हैं कि मैं "अगर यह सही है तो" कहकर क्यों कोअी निवेदन करता हूं। मुझे पहले तय कर लेना चाहिये कि बात सही है या नहीं। मैं मानता हूं कि जब जब मैंने "अगर" अिस्तेमाल किया है, मैंने कुछ गंवाया नहीं है। जो काम अुस समय मेरे हाथमें था अुसे फायदा ही हुआ है। अिस वक्तकी चर्चा काठियावाड़के बारेमें है। मित्र लोग कहते हैं कि मैंने काठियावाड़के बारेमें मुसलमानों पर ज्यादतियोंके झूठे बयानको मशहूरी दी है। अधिकतर अिलजाम सरासर झूठे थे। जो थोड़ी-बहुत गड़बड़ हुअी भी अुसे फौरन काबूमें लाया गया। लेकिन मेरे "अगर" के साथ अुन अिलजामोंका जिक्र करनेसे सचाअीको कोअी नुकसान नहीं पहुंचा। काठियावाड़के सत्ताधीश

और कांग्रेस जिस हद तक सचाओी पर खड़े रहे हैं अुतना ही अुन्हें फायदा हुआ हैं। मगर मित्र लोग कहते हैं: अिसमें कोओी शक नहीं कि सचाओी आखिरमें जाहिर होकर रहती है, मगर अुससे पहले नुकसान तो हो ही जाता है। जिन्हें सच-झूठकी कुछ पड़ी नहीं, अैसे बेओीमान लोग "अगर" को छोड़ देते हैं और मेरे कथनको अपनी बात सिद्ध करनेके लिअे पेश करते हैं। अिस तरह झूठको फैलाया जाता है। मैं अिस तरहकी चालबाजीसे आगाह हूं। जब जब अिस तरहकी चालाकी खेलनेकी कोशिश की गओी है वह निष्फल हुओी है। और अैसा करनेवाले बेओीमान लोग जनतामें झूठे साबित हुअे हैं। मैं "अगर" कहकर जिन अिलजामोंका जिक्र करता हूं, अुनसे किसीको घबरानेकी जरूरत नहीं। शर्त सिर्फ यह है कि जिन पर अिलजाम लगाया जाता है, वे सचमुच अिलजामसे सर्वथा मुक्त हों।

अिससे अुलटी स्थितिका विचार कीजिये। काठियावाड़की ही मिसाल लीजिये। अगर पाकिस्तानके बड़े बड़े अखबारोंमें लिखे अिलजामोंकी तरफ मैं ध्यान न देता — खासकर जब पाकिस्तानके प्रधानमंत्रीने भी कहा कि अिलजाम मूलमें सही हैं — तो मुसलमान तो अुन अिलजामोंको वेदवाक्य ही माननेवाले थे। मगर अब भले मुसलमानोंके मनमें अुनकी सचाओीके बारेमें शक है।

सच्चे बनिये

मैं चाहता हूं कि अिस घटना परसे काठियावाड़के और दूसरे मित्र यह पाठ सीखें कि हम अपने घरमें तो किसी तरहकी गड़बड़ होने नहीं देंगे। टीकाका स्वागत करेंगे — चाहे वह कड़वी टीका ही क्यों न हो। अधिक सच्चे बनेंगे और जब कभी भूल देखनेमें आयेगी अुसे सुधारेंगे। हम यह सोचनेकी गलती न करें कि हम कभी भूल कर ही नहीं सकते। कड़वीसे कड़वी टीका करनेवालेके पास हमारे खिलाफ कोओी न कोओी सच्ची या काल्पनिक शिकायत रहती है। अगर हम अुसके साथ धीरज रखें, जब कभी मौका आवे अुसकी भूल अुसे बतावें और हमारी गलती हो तो अुसे सुधारें, तो हम टीका करनेवालेको भी सुधार सकते हैं। अैसा करनेसे हम कभी रास्ता नहीं भूलेंगे। अिसमें शक

नहीं कि समता तो रखनी ही होगी। समझदारी और शनाख्तकी हमेशा जरूरत रहती है। जान-बूझकर शरारतके ही खातिर जो बयान दिये जाते हैं, अुनकी तरफ ध्यान नहीं देना चाहिये। मैं मानता हूं कि लम्बे अभ्याससे मैं शनाख्त (विवेक) करना थोड़ा-बहुत सीख गया हूं।

आज हवा बिगड़ी हुअी है। अेक-दूसरे पर अिलजाम ही अिलजाम लगाये जाते हैं। अैसी हालतमें यह सोचना कि हम गलती कर ही नहीं सकते मूर्खता होगी। हम अैसा दावा कर सकें यह खुशकिस्मती आज कहां? अगर मेहनत करके हम झगड़ेको फैलनेसे रोक सकें और फिर अुसे जड़मूलसे अुखाड़ फेंकें तो बहुत है। अगर हम अपने दोष देखने और सुननेके लिअे अपनी आंखें और कान खुले रखें, तभी हम अैसा कर सकेंगे। कुदरतने हमें अैसा बनाया है कि हम अपनी पीठ नहीं देख सकते। अुसे तो दूसरे ही देख सकते हैं। अिसलिअे अक्लमन्दी यही है कि जो दूसरे देख सकते हैं, अुससे हम फायदा अुठावें।

सत्यकी खोज

कल प्रार्थनामें आते समय मुझे जूनागढ़से जो लम्बा तार मिला, अुसकी बात कल पूरी नहीं हो सकी। कल मैंने अुस पर सरसरी नजर ही डाली थी। आज अुसे ध्यानपूर्वक पढ़ गया हूं। तार भेजनेवाले कहते हैं कि जिन अिलजामोंका मैंने पहले दिन जिक्र किया था वे सब सच्चे हैं। अगर यह सही है तो काठियावाड़के लिअे बहुत बुरी बात है। अगर जो अिलजाम साथियोंने स्वीकार किये हैं और मैंने छापे हैं, अुनको बढ़ानेकी कोशिश की गअी है, तो तार भेजनेवालोंने पाकिस्तानको नुकसान पहुंचाया है। वे मुझे निमन्त्रण देते हैं कि मैं खुद काठियावाड़में जाअूं और अपने-आप सब चीजोंकी तहकीकात करूं। मैं समझता हूं, वे जानते हैं कि मैं आज अैसा नहीं कर सकता। वे अेक तहकीकाती कमीशन मांगते हैं। मगर अिससे पहले अुन्हें केस तैयार करना चाहिये। मैं मान लेता हूं कि अुनका हेतु जूनागढ़को या काठियावाड़को बदनाम करना नहीं है। वे सच निकालना चाहते हैं और अल्पमतके जान-माल व अिज्जतकी रक्षाका पूरा प्रबन्ध चाहते हैं। वे जानते हैं और हरअेक आदमी जानता है कि अखबारी प्रचार, खास करके जब वह पूरा पूरा सच

न हो, न तो जानकी रक्षा कर सकता है, न मालकी और न अिज्जतकी। तीनोंकी रक्षा आज हो सकती है। अुसके लिअे तार भेजनेवालोंको सचाअी पर कायम रहना चाहिये और हिन्दू मित्रोंके पास जाना चाहिये। वे जानते हैं कि हिन्दुओंमें अुनके मित्र हैं। वे यह भी जानते हैं कि अगरचे मैं काठियावाड़से बहुत दूर बैठा हूं, मगर यहांसे भी अुनका काम कर रहा हूं। मैंने जान-बूझकर यह बात छेड़ी है और अिस बारेमें मैं सब सच्ची खबरें अिकट्ठी कर रहा हूं। मैं सरदार पटेलसे मिला हूं। वे कहते हैं कि जहां तक अुनके हाथकी बात है, वे कोअी झगड़ा नहीं होने देंगे; और जहां कहीं कोअी मुस्लिम भाअी-बहनोंसे बदतमीजी करेगा, अुसे कड़ी सजा दी जायगी। काठियावाड़के कार्यकर्ता, जिनके मनमें कोअी पक्षपात नहीं, सचाअीको ढूंढ़नेकी और काठियावाड़के मुसलमानोंको जो तकलीफ पहुंची हो अुसको दूर करनेकी पूरी कोशिश कर रहे हैं। अुन्हें मुसलमान अुतने ही प्यारे हैं जितनी कि अपनी जान। क्या मुसलमान अुनकी मदद करेंगे?

८२

२–१२–'४७

पानीपतका दौरा

आज मैं पानीपत गया था। सोचा था कि ४ बजे तक वापस आ जाअूंगा, मगर काम अितना निकल आया कि आ नहीं सका। मैं क्यों पानीपत गया था? अुम्मीद थी, और अभी तक वह अुम्मीद टूटी नहीं है, कि अगर हम मुसलमानोंको वहां रख सके, तो हमारे लिअे, हिन्दुस्तानके लिअे और पाकिस्तानके लिअे अच्छा होगा। दुःखी शरणार्थी जब तक अपने अपने घरोंको नहीं लौटते, तब तक दुःखी ही रहनेवाले हैं। मुसलमानोंका भी वही हाल है।

दो मंत्री

अच्छा हुआ कि डॉ० गोपीचन्द और सरदार सुवर्णसिंह भी पानीपत आ गये। मुझे पता नहीं था कि वे आनेवाले हैं। मगर वे तो पूर्व पंजाबके हैं। हकसे वहां आ सकते हैं। देशबन्धु गुप्ताने कहला भेजा

था कि वे बीमार हैं; नहीं आ सकेंगे। मगर आखिरमें वे भी आ गये। पानीपतमें अुनका घर है।

मैंने मुसलमानोंसे अलगसे बातें कीं। दोनों मिनिस्टर हाजिर थे। मुसलमानोंने कहा — "जब आप पहली दफा आये थे तब फिजा अच्छी थी। सो हमने कहा था कि हम यहीं रहेंगे। मगर बादमें फिजा बिगड़ी। आज यहां हमारी जान, माल या अिज्जत सुरक्षित नहीं।" मैंने अुनसे कहा कि जिनके मनमें विश्वप्रेम भरा है, वे तो यही कहेंगे कि हम यहां पड़े हैं। घर रहा तो क्या और गया तो क्या? जान रही तो क्या और गअी तो क्या? मगर हम अपना मान नहीं जाने देंगे। जो लोग अपने मानके लिअे, अपनी अिज्जतके लिअे, जान और माल देनेके लिअे तैयार रहते हैं, अुनका मान कोअी हरण नहीं कर सकता। अिसके बाद दुःखी शरणार्थियोंसे भी मैंने बातें कीं। तीन बजे तक अुनसे बातें हुअीं। बादमें दुःखी लोगोंसे हम मिले। वहां तो वे शरणार्थी ही कहलाते हैं। करीब २० हजार लोग अिकट्ठे हुअे थे। सभामें मैंने कुछ सुनाया। बादमें डॉ० गोपीचन्द भी बोले। अुनके बाद जब सरदार सुवर्णसिंह खड़े हुअे, तो लोगोंने चीखना शुरू कर दिया। वे चिल्ला चिल्लाकर कहते थे — "मुसलमानोंको यहांसे हटा दो। मुसलमानोंको यहांसे जाना ही चाहिये।" अिस पर शरणार्थियोंके प्रतिनिधि अुन्हें शान्त करनेके लिअे अुतरे। अेक भाअीने पंजाबीमें अेक भजन गाया। सब लोग चुप हो गये। अुसके बाद अुन्होंने लोगोंको पंजाबीमें डांटा। फिर सरदार सुवर्णसिंह खड़े हुअे और पंजाबीमें बोले। लोगोंके चिल्लानेका हेतु सरदार साहबका अपमान करनेका नहीं था। वे यह कहना चाहते थे कि हमने आपका बहुत सुन लिया। अब आप हमारी बात सुनिये। सरदार साहबने पंजाबीमें कहा कि दो चीजें हम जरूर कर सकते हैं और करेंगे। हम वहशी नहीं हैं। पाकिस्तान अिस बारेमें कुछ करे या न करे, मगर हमारे यहां जो मुसलमान लड़कियां भगाअी गअी हैं, अुन्हें जहां भी हों वहांसे लाना होगा और वापस लौटाना ही होगा। अिसी तरह जिन्हें जबरदस्ती सिक्ख या हिन्दू बनाया गया है, अुन्हें बाकानून अैसा नहीं समझा जायगा। वे लोग मुसलमान होकर ही यहां रहेंगे। सरदार साहबने यह भी कहा कि

हम मस्जिदोंकी रक्षा करेंगे। हुकूमत जान-मालकी जितनी रक्षा कर सकती है करेगी। मगर सब लोग लूटमार करने लगें, तो हुकूमत क्या कर सकती है? क्या सबको गोलीसे अुड़ा दे? हमारी आजादी लूली है। हम लोगोंको समझावेंगे कि हमारी आबरू आपके हाथमें है। हुकूमत आपकी है, हमारी नहीं। आप लोगोंने हमें हुकूमतमें भेजा है। अिसलिअे आप सब हमारी मदद करें।

अिसमें काफी समय गया। हमारे लोग गुस्सा भी कर लेते हैं और बादमें ठण्डे भी पड़ जाते हैं। मैंने बहुतसी सभाओंमें अैसा देखा है। आजादीकी लड़ाअीके वक्त भी अैसा होता था।

शरणार्थियोंकी शिकायतें

बादमें अुन लोगोंके प्रतिनिधि आये। अुन्हें काफी शिकायत करनी थी। सो अुन्हें मेरे साथ मोटरमें लिया। मोटरमें मुझे आराम लेना था, लेकिन नहीं लिया। अुन्होंने सुनाया कि सबके सब दुःखी बड़े रंजमें हैं। कुछ डेरे वगैरा लगे हैं, मगर खुराक जैसी होनी चाहिये वैसी नहीं होती। पूर्व पंजाबके गवर्नर साहब आये थे। वे अिस बारेमें देखभाल कर रहे हैं। दुःखी लोगोंके लिअे जो कपड़े आते हैं, अुनमें से अच्छे कपड़े गायब हो जाते हैं। हमें फटे-पुराने मिलते हैं। जो चीज शरणार्थियोंके लिअे भेजी जाती है, वह अुन्हींको मिलनी चाहिये। कुछ दिन पहले दो आदमी मर गये थे। अुन्हें जलानेके लिअे दिनभर तलाश करने पर भी लकड़ी नहीं मिली। आखिर अुन्हें दफनाना पड़ा। फिर, कोअी भी चीज शरणार्थियोंमें बड़े माने जानेवालोंको मिल जाती है और गरीब बेचारे अैसेके अैसे ही रह जाते हैं।

मैंने अुन्हें कहा कि आप अपनी सब शिकायतें लिखकर दें। अगर किसी अिलजामकी सचाअीके बारेमें आपको शक हो, तो अुसके सामने 'अगर' लगा दीजिये। आखिर सब व्यवस्था करनेवाले लोग तो सेवा-भावी नहीं होते। अिससे बड़ी गड़बड़ी पैदा हो जाती है।

अेक छोटेसे लड़केने मेरे सामने आकर अपना स्वेटर निकाल दिया और बड़ी बड़ी आंखें निकालकर मुझसे कहने लगा — 'मेरे बापको मार डाला है। अुसे दिला दो।' मैं कैसे दिला दूं? अेक दिन तो सबको

जाना ही है न? मैं भी अुस लड़के जैसा छोटा रहता, तो मेरी भी वही हालत होती। शरणार्थियोंके प्रतिनिधिने कहा कि शरणार्थियोंमें कअी अच्छे लोग भी हैं। अुनके हाथमें सब अिन्तजाम दे दिया जाय। डी० सी० सिर्फ अूपरसे देखभाल करें। आज तो जो दूध बच्चोंके लिअे आता है अुसे दूसरे पी जाते हैं। कमेटी बनी हुअी है, मगर अुसमें सब सेवाभावी नहीं हैं। मैंने अुन्हें कहा कि आप लोग शान्ति रखें। रहनेके लिअे तम्बू वगैरा कुछ भी मिल जाय और खाने-कपड़ेकी व्यवस्था हो जाय तो काफी है। आज चौथी चीज कहीं भी मिल नहीं सकती।

यह सब मैंने आपको अिसलिअे सुनाया कि आप यह जानें कि हिन्दमें आज कैसे कैसे बेअीमानीके खेल चल रहे हैं। आज यहां हमारी हुकूमत है या नहीं? अगर हमारी हुकूमत है, तो वह जो कहे सो हमें करना चाहिये। जवाहरलालजीने किसी भाषणमें कहा है — ‘मुझे प्राअिम मिनिस्टर क्यों कहते हैं? मुझे तो पहले नम्बरका सेवक कहिये।’ अगर हिन्दुस्तानके सब हाकिम अैसे सेवक बन जायं तो अुसका नकशा ही पलट जाय। तब मौज-शौकका सवाल ही नहीं रहता। सारे सेवक हर समय लोगोंका ही खयाल करेंगे। तभी हमारे देशमें रामराज कायम हो सकता है और पूरी आजादी आ सकती है। आजकी आजादी तो मुझे चुभती है।

८३

३–१२–’४७

वादोंकी अहमियत

आज मेरे पास कुछ भाअी आ गये थे। वैसे तो कअी लोग आते रहते हैं, मगर कुछ खास कहनेका रहता है तब आपसे अुसका जिक्र करता हूं। अिन भाअियोंने कहा कि हमारे प्रधानोंने अेक वक्त जो कहा था, अुसका वे आज भंग कर रहे हैं। मैं नहीं जानता कि अुन्होंने अैसा क्या किया है? मैंने अुनसे कहा कि आपको जो बताना है सो मुझे बताअिये। मैं हुकूमत नहीं हूं, मगर जिन लोगोंके हाथमें हुकूमत है अुनसे कह सकता हूं। अैसे अिलजामोंकी जब सावधानीसे जांच की

जाती है, तो वे अकसर गैर-समझसे पैदा हुअे साबित होते हैं। लोगोंको अैसा क्यों लगता है कि मंत्रियोंने कही अेक बात थी और वे करते दूसरी बात हैं? मुझ पर भी यह बीती है। मैंने जान-बूझकर कभी किसीको धोखा नहीं दिया। मगर अिस जगतमें बहुतसी दुःखकी चीजें गैर-समझमें से निकलती हैं। मैंने अेक बात कही, मगर सुननेवाले पर अुसका असर दूसरा हुआ और गैर-समझ पैदा हुअी। हमें अेक वचन भी बेकार नहीं कहना चाहिये। दिलकी बात जबान पर आवे, जबानकी कर्ममें अुतरे, तभी हम अेकवचनी बन सकते हैं।

आज हमारे हाथमें राजकी बागडोर है, करोड़ों रुपये हमारे हाथमें आ गये हैं। हम बहुत सावधान बनें। नम्रता और विवेकसे काम लें, अुद्दंडतासे नहीं। किसीको अैसा कहनेका मौका न मिले कि जब हुकूमत लेनी थी तब तो अेक बात करते थे, अब दूसरी करते हैं। अपने वचनकी हमें कदर करनी चाहिये। चार बजे आनेका कहा और शाम तक पहुंचे ही नहीं। यह वचन-भंग हुआ। वचन पर कायम रहनेकी बात खास कर हुकूमतके लिअे ही नहीं बल्कि सबके लिअे है। जो हम कर नहीं सकते, अुसे कहें नहीं और किसी बातको बढ़ाकर न कहें।

सिंधके हरिजन

सिंधके अेक डॉक्टर भाअी लिखते हैं: "यहां हरिजन बेहाल हो रहे हैं। अगर यहां अकेले हरिजन ही रह जायं और दूसरे लोग चले जायं, तो हरिजनोंको या तो मरना है, या गुलामीकी जिन्दगी बसर करना और आखिरमें मुसलमान होना है। यहांकी हुकूमत बहुतसी बातें कहती है, मगर अुसके मातहत लोग अुन पर अमल नहीं करते।" यह बहुत बुरी बात है। मगर हिन्दुस्तानमें भी तो आज अैसा बन गया है। सरदार और जवाहरलालजी कहते हैं कि सब मुसलमानोंकी हिफाजत करना है, ताकि किसीको डरके मारे भागना न पड़े। मगर लोग नहीं मानते। कल ही मैंने आपको पानीपतकी बात सुनाअी। हमारे यहां जब अैसा चलता है, तो पाकिस्तानको मैं क्या कहूं? कहते हैं, हरिजन वहांसे आना चाहते हैं, मगर अुन्हें आने नहीं देते। जो लोग पाखाना वगैरा साफ नहीं करते थे, अुन्हें भी यह काम करना पड़ता है। आज

तो भंगी चाहे तो बैरिस्टर बन सकता है। हमें भंगी चाहिये अिसलिअे अुसे भंगीका काम करना ही पड़ेगा यह बुरी बात है। जगजीवनरामजीने कहा है कि हरिजनोंको पाकिस्तानसे आ जाना चाहिये। जो आना चाहते हैं अुन्हें पाकिस्तान सरकारको आने देना चाहिये; नहीं तो अुन्हें वहां आजादीकी जिन्दगी बसर करने देना चाहिये। वह अैसा कोअी काम न करे, जिससे हिन्दू और सिक्खोंके दिलों पर हमेशाकी चोट रह जाय। मजबूर करके किसीका धर्म-पलटा नहीं करवाना चाहिये और न किसीकी लड़कीको भगाना चाहिये। सरदार सुवर्णसिंहने कहा कि हम अैसी चीजोंको बरदाश्त नहीं करेंगे। जो लोग अैसा कहते हैं कि हमने अपने आप धर्म-पलटा किया है, वह भी आज मानने जैसा नहीं है।

फिर काठियावाड़के बारेमें

काठियावाड़से दो किस्मकी बातें आती हैं। अेक तरफसे कहते हैं कि यहां कुछ खास बनाव बना ही नहीं। जो कुछ हुआ अुसमें कांग्रेस-वालोंका कुछ भी हिस्सा नहीं था। वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक-संघ और हिन्दू महासभावालोंका काम था। आज आर० अेस० अेस० और हिन्दू महासभावालोंका तार आया है कि हमने तो कुछ किया ही नहीं। तो मैं किसकी बात मानूं? कुछ मुसलमानोंके तार आते हैं कि मुझे काठियावाड़के बारेमें पहले जो खबर मिली थी वह सच्ची थी। मैं तो कहूंगा कि अगर हिन्दुओंसे गफलत हो गअी है, तो वे कह दें कि हमसे ज्यादती हो गअी। अिसमें छिपाना क्या था? मुसलमानोंसे अगर अति-शयोक्ति हो गअी है और काठियावाड़में जबरदस्ती धर्म-पलटा करवाना, लड़कियां अुड़ाना वगैरा कुछ बना ही नहीं, तो मुसलमानोंको अितनी दुरुस्ती करनी चाहिये। अगर हिन्दू महासभाने और आर० अेस० अेस० ने सचमुच कुछ किया ही नहीं, तो अुन्हें मैं धन्यवाद दूंगा। आज तो मैं जानता ही नहीं कि सच बात क्या है। सच निकालनेकी कोशिश कर रहा हूं।

दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानी

दक्षिण अफ्रीकाके बारेमें विजयलक्ष्मी पण्डितने कहा है: "यू० अेन० ओ० में हमारी हार तो हुअी। जीतके लिअे जो दो-तिहाअी मत मिलने

चाहिये सो नहीं मिले। मगर काफी लोग हमारे साथ थे। बहुमत हमारी तरफ था। अगर सच हमारी तरफ है, तो हमारी जीत ही है। दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानी निराश न हों।"

मगर विजयलक्ष्मी पण्डित जो नहीं कह पाओीं, वह मैं आपको सुना दूं। अन्यायसे लड़नेका सुवर्ण-अुपाय मैंने दक्षिण अफ्रीकामें ही ढूंढ़ा था। मान लीजिये कि हम यू० अेन० ओ० में जीत जाते और जनरल स्मट्स दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंकी सारी मांगें मंजूर कर लेते। लेकिन वहां रहनेवाले गोरे नहीं मानते, तो हम क्या कर सकते थे? आजकल हमारे ही देशमें अैसी बातें हो रही हैं। पाकिस्तानसे हिन्दुओंको और हिन्दुस्तानसे मुसलमानोंको भगाया जा रहा है। बन्नूमें अभी भी बहुतसे हिन्दू और सिक्ख हैं। दूसरी जगहों पर भी थोड़े-बहुत पड़े हैं। वे वहां बाहर नहीं निकल सकते। निकलें तो मरना होगा; भीतर रहें तो खाना नहीं मिलता। मैंने यहांके मुसलमानोंसे कहा कि सच्ची हार आप खुद ही खा सकते हैं। दूसरा कोअी आपको नहीं खिला सकता। आप साफ कह दें कि हम तो यहीं रहेंगे। यहीं पैदा हुअे, यहीं बड़े हुअे, यहीं रहेंगे—और अिज्जतके साथ रहेंगे। यह चीज सब पर लागू होती है।

दक्षिण अफ्रीका हबशियोंका मुल्क है। वहां बाहरसे गये हुअे बोअर लोगोंको यहांसे गये हुअे हिन्दुस्तानियोंसे ज्यादा हक नहीं हैं। मगर यूरोपियनोंने हबशियोंको दबा दिया और दक्षिण अफ्रीकामें रहनेवाले हिन्दुस्तानियोंसे अुनके बुनियादी हक छुड़ा लिये। हिन्दुस्तानका मामला यू० अेन० ओ० के सामने रखना बिलकुल ठीक है। मगर यदि यू० अेन० ओ० दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंको अिन्साफ नहीं देता या नहीं दे सकता, तो क्या अुन्हें अपने हकोंके लिअे लड़ना नहीं चाहिये? मेरी रायमें अुन्हें लड़ना चाहिये, मगर हथियारोंके जोरसे नहीं। सच्चा और अेकमात्र हथियार सत्याग्रह या आत्मबलका है। आत्मा अमर है। शरीर नाशवान है।

अगर दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंमें हिम्मत और अपनी अिज्जतका खयाल है, तो वे आत्मबलके सहारे अपने बुनियादी हकोंके लिअे लड़ेंगे।

८४

४–१२–’४७

विदेशोंमें प्रचार क्यों?

काठियावाड़की बात मैंने कल भी की थी। आज मेरे पास शामळदास गांधीका तार आया है। कल श्री ढेबरभाअीका तार आया था। दोनों कहते हैं कि मेरे पास बहुत अतिशयोक्ति भरी खबरें आअी हैं। वहां औरतें अुड़ाअी ही नहीं गअीं। और जहां तक वे जानते हैं, अेक भी खून वहां नहीं हुआ। सरदार पटेलके जानेके बाद तो कुछ भी नहीं हुआ। अिसके पहले थोड़ी लूट-पाट और दंगा हुआ था। शामळदासको मेरे कहनेकी चोट लगी। लगनी ही चाहिये थी। वे खुद बम्बअीसे काठियावाड़ चले गये हैं। वहां और तह्कीकात करके मुझे ज्यादा खबर देंगे।

अिधर अमेरिका, अीरान और लन्दनसे मेरे पास तार आते रहे हैं, जिनमें लिखा था कि काठियावाड़में मुसलमानों पर बड़ा अत्याचार किया गया है। अिस तरहका प्रचार करना सच्चे लोगोंका काम नहीं। अिस बारेमें अीरानका हिन्दुस्तानके साथ क्या ताल्लुक?

शामळदास गांधी कहते हैं, ‘मेरे पास हिन्दू-मुसलमानका भेद नहीं।’ तो जो मुसलमान भाअी मुझे लिखते हैं अुनका मैं पूरा पूरा साथ देना चाहता हूं। मगर शर्त यह है कि वे सचाअीकी राह पर हों। वे अति-शयोक्तिभरी खबरें विदेशोंमें भेजें, सारी दुनियामें शोर मचावें, यह मुझे बुरा लगता है। हिन्दुस्तानमें से भी मेरे पास तार आते हैं। अुन्हें तो मैं बरदाश्त कर लेता हूं। लेकिन जब विदेशोंसे तार आते हैं, तो मुझे लगता है कि यह तो बहुत हुआ। अुससे मुझे चोट लगती है।

अच्छी खबर

होशंगाबादसे अेक मुसलमान भाअीका खत आया है। अुन्होंने लिखा है कि वहां गुरु नानकके जन्मदिन पर सिक्खोंने मुसलमानोंको बुलाया और अुनसे कहा कि आप हमारे भाअी हैं। आपसे हमारा कोअी

झगड़ा नहीं है। मुझे यह जानकर खुशी हुअी। होशंगाबाद वही जगह है, जहां स्टेशन पर अेक घटना हो गअी थी। होशंगाबादमें गुरु नानकके जन्मदिन पर सिक्खोंने जैसा किया वैसा सब जगह लोग करें, तो आज हम पर जो काला धब्बा लग गया है अुसे हम धो सकेंगे।

साम्प्रदायिक व्यापारी-मण्डल

व्यापारी-मण्डलवाली बात आगे चल रही है। मैंने अिशारा तो किया था कि मारवाड़ी और यूरोपियन व्यापारी-मण्डल रहें, तो मुसलमान चेम्बर क्यों न रहे? अेक मारवाड़ी भाअीने मुझे लिखा है कि हम हैं तो मारवाड़ी, मगर हमारे चेम्बरमें दूसरे भी आ सकते हैं। मैंने अुनसे पूछा है कि आपके चेम्बरमें गैर-मारवाड़ी कितने हैं और हिन्दू कितने हैं? अुनका खत अंग्रेजीमें है। मुझे यह बुरा लगता है। अुनकी रिपोर्ट भी अंग्रेजीमें है। क्या मैं अंग्रेजी ज्यादा जानता हूं? मेरा दावा है कि जितनी मैं अपनी जबान जानता हूं, अुतनी अंग्रेजी कभी नहीं जान सकता। मांका दूध पीनेके समयसे जो जबान सीखी, अुससे ज्यादा अंग्रेजी —— जिसे १२ बरसकी अुमरसे सीखना शुरू किया —— मुझे कैसे आ सकती है? अेक हिन्दुस्तानीके नाते जब कोअी मेरे बारेमें यह सोचता है कि मैं अपनी जबानसे अंग्रेजी ज्यादा जानता हूं, तो मुझे शरम मालूम होती है।

हम अपने आपको धोखा न दें, तो यूरोपियन चेम्बरवाले भी अैसा दावा कर सकते हैं कि हमारे चेम्बरमें सब लोग आ सकते हैं। मगर अिससे काम नहीं चलता। अगर सब कोअी आ सकते हैं, तो अलग अलग चेम्बर रखनेकी जरूरत क्या? यूरोपियनोंसे मेरा कहना है कि वे हिन्दुस्तानी बनकर रहें। अगर वे हिन्दुस्तानी बनकर रहें और हिन्दुस्तानके भलेके लिअे काम करें, तो हम अुनसे बहुत कुछ सीख सकते हैं। वे बड़े होशियार व्यापारी हैं। अुन्होंने अपना सारा व्यापार बन्दूकके जोरसे नहीं, बल्कि बुद्धिकी शक्तिसे बढ़ाया है।

बर्माके प्रधानमंत्री

बर्माके प्रधानमंत्री मुझसे मिलने आ गये थे। वे बड़े नम्र और सज्जन हैं। अुनसे मैंने कहा, आप हमारे यहां आये यह अच्छी बात है। हमारा मुल्क बड़ा है। हमारी सभ्यता प्राचीन है। मगर आज हम

जो कर रहे हैं, अुसमें आपके सीखने जैसा कुछ नहीं है। हमारे देशमें गुरु नानक हुअे। अुन्होंने सिखाया कि सब दोस्त बनकर रहें। सिक्ख मुसलमानोंको भी अपना दोस्त बनावें और हिन्दुओंको भी। हिन्दुओं और सिक्खोंमें तो फर्क ही क्या है? आज ही मास्टर तारासिंहका बयान निकला है। अुन्होंने कहा है, जैसे नाखूनसे मांस अलग नहीं किया जा सकता, वैसे ही हिन्दू और सिक्ख अलग नहीं किये जा सकते। गुरु नानक खुद कौन थे? हिन्दू ही थे न? गुरुग्रन्थसाहब वेद, पुराण वगैराके अुपदेशोंसे भरा पड़ा है। बातें तो कुरानमें भी वही हैं। हिन्दू धर्मके 'वेदके पेट' में सब धर्मोंका सार भरा हुआ है। वर्ना कहना पड़ेगा कि हिन्दू धर्म अेक है, सिक्ख धर्म दूसरा, जैन धर्म तीसरा और बौद्ध धर्म चौथा। नामसे सब धर्म अलग अलग हैं, मगर सबकी जड़ अेक है। हिन्दू धर्म अेक महासागर है। जैसे सागरमें सब नदियां मिल जाती हैं, वैसे हिन्दू धर्ममें सब धर्म समाविष्ट हो जाते हैं। लेकिन आज हिन्दुस्तान और हिन्दू अपनी विरासतको भूल गये मालूम होते हैं। मैं नहीं चाहता कि बर्मावाले हिन्दुस्तानसे भाअी-भाअीका गला काटना सीखें। आज हम अपनी सभ्यताको नीचे गिरा रहे हैं। लेकिन बर्मावालोंको हमारे अिस काले वर्तमानको भूल जाना चाहिये। अुन्हें यही याद रखना चाहिये कि हिन्दुस्तानकी ४० करोड़ प्रजाने बिना खून बहाये आजादी हासिल की है। हो सकता है कि अंग्रेज थके हुअे थे। मगर अुन्होंने कहा है कि 'हिन्दुस्तानियोंकी लड़ाअी अनोखी थी। अुन्होंने हमसे दुश्मनी नहीं की। बन्दूकका सामना बन्दूकसे नहीं किया। अुन्होंने हमें ताराज नहीं किया। अैसे लोगों पर क्या हम हमेशा मार्शल लॉ चलाते रहें? यह नहीं हो सकता।' सो वे हिन्दुस्तान छोड़कर चले गये। हो सकता है कि हमने कमजोरीके कारण हथियार नहीं अुठाया। अहिंसा कमजोरोंका हथियार नहीं है। वह बहादुरोंका हथियार है। बहादुरोंके हाथमें सुशोभित रह सकता है। तो आप हमारे जंगलीपनकी नकल न करें। हमारी खूबियोंका ही अनुकरण करें। आपका धर्म भी आपने हमसे लिया है। हिन्दुस्तान आजाद हुआ तो बर्मा और लंका भी आजाद हुअे। जो हिन्दुस्तान बिना तलवार अुठाये आजाद हुआ,

अुसमें अितनी ताकत होनी चाहिये कि बिना तलवारके वह अुसको कायम भी रख सके। यह मैं अिसके बावजूद कह रहा हूं कि हिन्दुस्तानके पास सामान्य फौज है, हवाअी फौज है, जलसेना बन रही है। और यह सब बढ़ाअी जा रही है। मुझे विश्वास है कि अगर हिन्दुस्तानने अपनी अहिंसक शक्ति नहीं बढ़ाअी, तो न तो अुसने अपने लिअे कुछ पाया और न दुनियाके लिअे। हिन्दुस्तानका फौजीकरण होगा, तो वह बरबाद होगा और दुनिया भी बरबाद होगी।

८५

५-१२-'४७

मुसलमानोंका लौटना

मुझे प्रार्थनामें आते समय जो लम्बे खत दिये जाते हैं, अुन्हें मैं अुसी समय पढ़कर जवाब नहीं दे सकता। जवाब देने जैसा हो तो वह दूसरे दिन ही दिया जा सकता है। अभी अेक भाअीने खत दिया। अुसे मैंने अूपर अूपरसे देखा है। वे लिखते हैं कि 'आपने लियाकत साहबके साथ बात की, अुस पर भाषण भी दे डाला, मगर काठिया-वाड़में तो कुछ हुआ ही नहीं।'

काठियावाड़में कुछ हुआ ही नहीं, यह बात गलत है। मगर पाकिस्तानके अखबारोंमें जो छपा, वे गलत और भयानक था। अुनमें अिलजाम यह था कि सरदारने वहांके लोगोंको भड़काया। मगर सरदारके वहां जानेके बाद कुछ हुआ ही नहीं। जिन मुसलमानोंने मुझे पहले तार दिया था, अुन्हींका आज तार आया है कि हमने जो तार भेजा था अुसमें अतिशयोक्ति थी और पाकिस्तानके अखबारोंमें जो छपा था वह गलत था। यहां सब मुसलमान दहशतमें रहते हैं, यह बात भी गलत थी।

मुसलमानोंने माना था कि पाकिस्तान बननेके बाद जो मनमें आवेगा करेंगे। मगर वह हो सकता है तो सिर्फ पाकिस्तानमें ही। हिन्दुस्तानके मुसलमान तो अेक तरहसे गिरे पड़े हैं। गिरे हुअेको लात

क्या मारना? हिन्दुस्तानमें मुसलमान समुद्रमें बड़े बूंदके समान हैं। अिसी तरह पाकिस्तानमें थोड़ेसे हिन्दू और सिक्ख हैं। अुन्हें वहांसे भगा दिया गया। वे हट गये, हालांकि वे हटना नहीं चाहते थे। आज भी अुन सिक्खोंका खत था कि हम तो वहीं जाना चाहते हैं। लायलपुरकी नहरके किनारे हजारों अेकड़ जमीनका बगीचा मैं छोड़कर आअूं, तो मेरे मनमें भी होगा कि अपनी जमीनका कब्जा लूं। सो हिन्दुओं और सिक्खोंको गुस्सा आया कि हम तो बेहाल पड़े हैं और यहां मुसलमान खुशहाल हैं। अुन्होंने मुसलमानोंको मारना और भगाना शुरू किया। मगर बुराअीकी नकल करना हैवानियत है। मैं फिर मुसलमान भाअियोंसे कहूंगा कि वे अपनी तकलीफको दुगुना, ड्योढ़ गुना करके न बतावें। दुनियामें ढिंढोरा पीटनेसे क्या फायदा? दुनिया क्या करनेवाली है? वह काठियावाड़के मुसलमानोंको बचा नहीं सकती। बहुत करे तो आखिरमें सजा दे। जिस डोमिनियनने दोष किया है, अुसकी आजादी छीन ले। मगर जो मर गये हैं वे वापस आनेवाले नहीं हैं। हम हमेशा बुराअीको घटावें और भलाअीको बढ़ावें तभी काम कर सकते हैं।

६ से १३ तारीख तक मैं मुलाकात देना नहीं चाहता हूं। अिससे कोअी यह न समझे कि मैं बीमार हूं या मुझे शौकके लिअे समय चाहिये। अिस हफ्तेमें तालीमी संघ, कस्तूरबा-ट्रस्ट, चरखा-संघ और ग्रामोद्योग-संघकी सभा है। मैं तो सेवाग्राम जा नहीं सकता सो सभा यहां होगी। अुन्हें वक्त तो देना ही चाहिये। यहांका काम भी करना ही है। मगर बहुतसे लोग मुझे देखनेके लिअे आते हैं। मैं जानवर जैसा बन गया हूं। सो अितने दिनोंके लिअे यह बन्द करना चाहता हूं।

कण्ट्रोल

आजकल बात चल रही है कि कपड़ेका और खुराकका अंकुश छूट जानेवाला है। सब कहते हैं, अच्छा है; जल्दी छूटे। मगर छूटने पर हमारा फर्ज क्या होगा? व्यापारियोंका फर्ज क्या होगा? अंकुश छूटने पर सब कुछ अुनके हाथमें रहेगा। तो क्या वे लोगोंको लूटना शुरू कर देंगे? अगर अंकुश छूटता है तो अुसमें मेरा भी हाथ है। मैंने अितना प्रचार किया है। मगर मैं अितना भी कहूं कि हुकूमतको

जो चीज नहीं जंचती, अुसे हुकूमत कर नहीं सकती। मैं नहीं चाहता कि वह अैसा करे। मैं तो तर्क कर लेता हूं कि आज अगर १० मन अन्न है, तो अंकुश अुठने पर २० मन हो जायगा। जिसे लोग दबाकर बैठ गये हैं, वह सब बाहर आ जायगा। आज किसानोंको पूरे दाम नहीं मिलते हैं, अिसलिअे वे अन्न नहीं निकालते। सरकार जबरदस्तीसे निकाल सकती है; निकाल रही है। व्यापारी लोग पुरानी हुकूमतमें मनमाने दाम लेते थे। लोगोंको लूटते थे। अब अुन्हें अेक कौड़ी भी अिस तरह लेना पाप समझना चाहिये। मुझे आशा है कि किसान अन्न बाहर निकालेंगे और व्यापारी शुद्ध कौड़ी कमायेंगे। तब सबको खाना-कपड़ा मिल जायगा। अगर कुछ कमी रहेगी, तो लोग अपने-आप कम हिस्सा लेंगे। मैं यह नहीं चाहता कि अंकुश अुठनेसे लोग भूखों मरने लगें। अगर लोग अपना फर्ज नहीं समझते, खुद अपने पर अंकुश नहीं लगाते, तो हमारी हुकूमतको हट जाना होगा। व्यापारी अगर अपना ही पेट भरें, दूसरोंको मरने दें, तब हमारी हुकूमत रहकर क्या करे? क्या वह नफाखोरोंको गोलीसे अुड़ा दे? अैसी ताकत हमारे पास है नहीं। हमारी ३०–४० सालकी तालीम अिससे अुलटी रही है। गोली चलाकर राज चल नहीं सकता। वह राज खोनेका रास्ता है। आशा तो यह है कि अंकुश अुठाने पर लोग साफ दिलसे हुकूमतकी सेवा करेंगे। हुकूमत सब कुछ खुद ही करना चाहे तो वह कर नहीं सकती। वह पंचायत-राज न होगा, रामराज नहीं होगा। लोग खुद अपने पर अंकुश रखें, ताकि हुकूमत और सिविल सर्विसवाले कहें कि अंकुश अुठाया तो अच्छा ही हुआ। आज तो सिविल सर्विसवाले कहते हैं कि गांधी क्या समझे? अंकुश अुठनेसे कीमतें अितनी बढ़ जायंगी कि लोगोंको भूखे और नंगे रहना होगा। मैं अैसा बेवकूफ नहीं। मैं सिविल सर्विसमें नहीं गया, हुकूमत मैंने नहीं चलाअी, मगर लाखों-करोड़ों लोगोंको पहचानता हूं। अुस परसे मैं कह सकता हूं कि क्या होना चाहिये। कण्ट्रोल अुठनेसे अगर कालाबाजार बन्द हो गया, तो सबका डर निकल जायगा।

कपड़ेका कण्ट्रोल निकालना और भी आसान है। अपने लिअे पूरी खुराक पैदा कर सकनेके बारेमें शक है। मगर किसीने यह नहीं कहा

कि हम अपने लिअे पूरे कपड़े नहीं बना सकते। हमारे पास हमारी जरूरतसे ज्यादा कपास होती है, मगर मिल तो आप सबके घरमें पड़ी है। अीश्वरने आपको दो हाथ दिये हैं। चरखा चलाअिये। लोग कातें और कपड़ा पहनें। कपासको बाहर बेचना हुकूमत रोक सकती है। मिलोंका कब्जा भी ले सकती है। मगर मिलोंका कपड़ा जिस हद तक कम पड़ता है, अुतना तो हम कात लें और बुन लें। जुलाहे तो बहुत पड़े हैं, मगर अुन्हें मिलका सूत बुननेका शौक हो गया है। आज लाचारीकी हालतमें तो हम हाथका सूत बुनें। पीछे भले सब मिलें जल जायं, तो भी यहां कपड़ेकी कमी नहीं होनी चाहिये। कपड़े पर अंकुश रखना अज्ञानकी सीमा है। मैं तो अनाजके अंकुशको भी मूर्खता मानता हूं। जैसे ही अंकुश अुठेगा, किसान कहेंगे कि हम तो लोगोंके लिअे बोते हैं। कोअी वजह नहीं कि जहां आज आधा सेर अनाज अुगता है, वहां कल पूरा अेक सेर न अुग सके। मगर अुपज बढ़ानेके तरीके हमें किसानोंको सिखाने हैं। अुसके साधन अुन्हें देने हैं। अगर हुकूमतकी सारी मशीन अुधर लग जाय, तो फिर न किसीको भूखे रहनेकी जरूरत है, न नंगे रहनेकी। हमारे यहां आज पूरा अन्न नहीं, पूरा दूध नहीं, पूरा कपड़ा नहीं! यह सब हमारे अज्ञानके कारण है।

८६

६–१२–'४७

सच्चे पड़ोसी बननेकी शर्त

आपने सुब्बालक्ष्मी बहनका भजन और धुन सुनी। अुनका स्वर बहुत मीठा है। प्रार्थना और रामधुनमें हरअेकको राममें खो जाना चाहिये।

मैंने आपसे कहा था कि मैं १५ मिनटसे ज्यादा नहीं बोलूंगा। मगर मुझे पता चला कि कल ही २५ मिनट हो गये थे। यह मेरे लिअे शरमकी बात है।

कलका अेक खत मेरे पास है। अुसमें अेक भाअीने लिखा है कि मैं तो भोलाभाला हूं। दुनिया मुझे धोखा देती है। मुझे वे भाअी सावधान करते हैं कि 'पाकिस्तानमें कितना जुल्म हुआ है। हमारे यहां

तो हिन्दुओं और सिक्खोंने सिर्फ बदला लिया है। हम कुछ भी न करें तो भी पाकिस्तानके लोग भले बननेवाले नहीं हैं। हमारे मकान गये, जायदाद गअी। वे सब थोड़े वापस आनेवाले हैं?' लेकिन मैं यह नहीं मानता। छोटे-बड़े सबको मकान जानेका समान दुःख होता है। करोड़पतिको अपना महल जितना प्यारा है, अुतनी ही गरीबको अपनी झोंपड़ी प्यारी है। मैं तो तब तक चैनसे नहीं बैठ सकता, जब तक अेक अेक हिन्दू और सिक्ख अिज्जत व सलामतीके साथ अपने घर नहीं पहुंच जाता। जो मर गये सो मर गये। जो मकान जल गये सो तो जल गये। कोअी हुकूमत अुन्हें वैसेके वैसे बनवाकर वापस नहीं दे सकती। जो कुछ बच रहा है, वही लौटा दिया जाय तो काफी है। लाहौरमें, लायलपुरमें और पाकिस्तानकी दूसरी जगहोंमें हिन्दुओं और सिक्खोंके मकानों और जमीनों पर मुसलमान कब्जा करके बैठ गये हैं। अुन्हें खाली करना ही होगा। अगर यूनियनमें हम शरीफ बन जायं, तो पाकिस्तानको भी शरीफ बनना ही होगा। वहांवाले अपनी नाक कटाकर बैठ जायं, तो क्या हम भी अपनी नाक कटा लें? अिन्सान गलतीका पुतला है और धर्मका भी पुतला है। अगर वह अपनी गलती सुधार ले, तो धर्मका पुतला रह जाता है।

काठियावाड़में जो नुकसान हुआ है, अुसके बारेमें वहांकी हुकूमतको या मध्यवर्ती हुकूमतको सुनाना ठीक है। मगर अमेरिकाको क्या सुनाना था? हिन्दुओं और सिक्खोंको कभी यह नहीं कहा गया था कि पाकिस्तान बन जाने पर तुम्हारा सब कुछ छीन लिया जायगा, जला दिया जायगा। तो पाकिस्तान और हिन्दुस्तानके बहुमतवाले अपने बुरे कामोंके लिअे पछतावें और अल्पमतवालोंसे माफी मांगें। अिससे दोनों अेक-दूसरेके दुश्मन बननेके बजाय अच्छे पड़ोसी बनेंगे। आज हमारा मुंह काला हो रहा है। हमने अपनी आज़ादी शराफतसे ली है। अिसलिअे हमें अुसे शराफतसे कायम भी रखना चाहिये। गुंडागिरीसे हम अुसे खो देंगे। हम यूनियनमें अैसा काम करें कि सारी दुनिया हमें शरीफ कहे। बादमें पाकिस्तानको भी शरीफ बनना ही होगा। मुझे लोग सुनाते हैं कि अे० आअी० सी० सी० में लोगोंको अपने अपने घर लौटानेके बारेमें जो

ठहराव पास किया गया, वह तो सिर्फ अेक ढोंग है। कोओी नहीं मानता कि हिन्दू और सिक्ख अिज्जत और आबरूके साथ अपने घरोंको वापस लौट सकते हैं। वहांसे वे गरीब होकर आये हैं, गरीब बनकर ही अुन्हें वापस नहीं लौटना है। वहांके लोगोंको अिन्हें यह कहकर बुलाना है, 'मेहरबानी करके आप लोग वापस आ जाअिये। हमारा दीवानापन अब मिट गया है। अब हम शराफतसे चलना चाहते हैं।' अैसा हो तो आज सब बात सुधर जाय। मैं यह मानता ही नहीं कि अे० आओी० सी० सी० का वह ठहराव निरा ढोंग है। हिन्दुओं और सिक्खोंको अपने घरों और जमीनों पर लौटना ही है। लायलपुरमें सिक्ख भाअियोंको फिर अपनी खेती चलाना है। यही मेरा सपना है। ओीश्वर मुझे अुठा ले तो बात अलग है। लेकिन अगर दिल्लीमें मैं अपना ख्वाब पूरा न कर सका, तो दूसरी जगहकी बात क्या? अगर मैं यहां सफल न हो सका, तो दूसरी जगह कैसे सफल होनेकी अुम्मीद करूं? यहां हम भले बनें, वहां पाकिस्तानवाले भले बनें। अपनी अपनी गलतियां मानें और सुधारें, तब तो हम पड़ोसीका धर्म पाल सकते हैं। हम पास पास पड़े हैं। हमारी सरहद मिलीजुली-सी है, फिर दुश्मनी कैसी?

८७

७–१२–'४७

भगाओी हुओी औरतें

आज मैं अेक नाजुक सवालके बारेमें बात करना चाहता हूं। कुछ बहनें यूनियनसे अेक कान्फरेन्समें शामिल होनेके लिअे लाहौर गओी थीं। अुसमें कुछ मुसलमान बहनें भी आओी थीं। कान्फरेन्समें अिस बातकी चर्चा हुओी कि जिन हिन्दू और सिक्ख औरतोंको पाकिस्तानमें मुसलमान अुड़ा ले गये हैं और जिन मुसलमान औरतोंको हिन्दुओं और सिक्खोंने अुड़ाया है, अुन्हें अपने-अपने घर कैसे लौटाया जाय? यह भारी सवाल कैसे हल हो? कहा जाता है कि पाकिस्तानमें २५ हजार हिन्दू और सिक्ख औरतें अुड़ाओी गओी हैं और पूर्व पंजाबमें १२ हजार मुसलमान औरतें अुड़ाओी गओी हैं। कुछ लोग कहते हैं कि यह तादाद अितनी

बड़ी नहीं है। भले तादाद अिससे कुछ कम हो, लेकिन मेरे लिअे तो अेक भी औरतका अुड़ाया जाना बहुत बुरा है। अैसी बातें क्यों होती हैं? किसी भी औरतको अिसलिअे अुड़ाना और बिगाड़ना कि वह हिन्दू, सिक्ख या मुसलमान है, अधर्मकी हद है। अिन औरतोंको अपने-अपने घर लौटानेके पेचीदा सवालको हल करनेके लिअे ही लाहौरमें यह कान्फरेन्स हुअी थी। राजा गजनफरअली और दूसरे लोग भी अुसमें हाजिर थे। श्रीमती रामेश्वरी नेहरू और मृदुला बहनने मुझे यह सुनाया कि कान्फरेन्समें यह तय किया गया कि अैसी औरतोंको लोगोंके घरोंसे बाहर निकाला जाय। अिसके लिअे कुछ बहनें पुलिस और फौजके साथ पाकिस्तान और पूर्व पंजाबमें जायं और बन्द की हुअी औरतोंको बाहर निकालनेका काम करें। मेरी रायमें अिस तरीकेसे काम पूरा नहीं हो सकेगा। फिर यह भी कहा जाता है कि कुछ अुड़ाअी हुअी औरतें अपने घरोंको लौटना नहीं चाहतीं। अुन्होंने अपना धर्म बदलकर मुसलमानोंसे शादियां कर ली हैं। लेकिन मैं अिस बातमें विश्वास नहीं करता। न तो अैसे धर्म-पलटेको सही माना जाय और न अैसे निकाहको कानूनी करार दिया जाय। औरतोंके साथ जो कुछ हुआ वह वहशियाना बरताव था। राजा गजनफरअलीने कान्फरेन्समें कहा कि दोनों अुपनिवेशोंमें काला काम हुआ है। किसने ज्यादा किया और किसने कम, किसने पहले किया और किसने बादमें, अिस सवालमें जानेकी जरूरत नहीं। जरूरत अिस बातकी है कि जिन औरतोंको जबरन अुड़ाया गया है, अुन्हें दूसरोंके घरोंसे निकालकर अुनके घरोंको लौटाया जाय।

मेरे विचारसे यह काम पुलिस और फौजकी मददसे नहीं हो सकेगा। यह काम हुकूमतोंका है। मेरा यह मतलब नहीं कि हुकूमतोंने यह काम कराया। पाकिस्तानमें मुसलमानोंने यह काम किया और यूनियनमें हिन्दुओं और सिक्खोंने। वे ही लोग अैसी औरतोंको लौटा दें। अुनके घरके लोगोंको अुन्हें अुदारतासे वापस रख लेना चाहिये। अुन बहनोंने खुद कोअी बुरा काम नहीं किया। मजबूर होकर वे बुरे लोगोंके हाथोंमें पड़ गअीं। अुनके बारेमें यह कहना कि वे समाजमें रहने लायक नहीं गलत बात है। बड़ीसे बड़ी निर्दयता है।

२५ या १२ हजार औरतोंको अेक तरफसे निकालना और दूसरी तरफ पहुंचाना पुलिस या फौजसे होनेका नहीं। अिसके लिअे जनमत तैयार करनेकी जरूरत है। अितनी औरतोंको कमसे कम अितने ही आदमियोंने अुड़ाया होगा। क्या वे सब गुण्डे थे? मैं मानता हूं कि दिमागका समतोल खोकर पागल बन जानेवाले शरीफ लोगोंने गुण्डोंका यह काम किया है। आज तो दोनों हुकूमतें पंगु हैं। अुन्होंने अितना अधिकार लोगों पर नहीं जमाया कि औरतोंको फौरन वापस लाया जा सके। अैसा न होता तो पूर्व पंजाबमें तो यह सब बननेवाला ही नहीं था। हमारी तीन महीनेकी आजादी कैसे अितनी मजबूत बने? पाकिस्तानने जहर फैलाया, अैसा कहकर मैं अपनी बहनोंको बचा नहीं सकता। दोनों तरफ हुकूमत अिस कामको हाथमें ले, अपनी सारी ताकत अिसमें लगा दे और मरने तकके लिअे तैयार रहे। तभी यह काम हो सकता है। दोनों तरफकी सरकारें दूसरे लोगों या संस्थाओंकी मदद ले सकती हैं। लेकिन यह काम अितना बड़ा है कि सरकारके सिवा दूसरा कोअी अिसे पूरा कर ही नहीं सकता।

८८

८–१२–'४७

मुस्लिम संस्थाकी चेतावनी

अेक मुस्लिम सोसायटी मुझे चेतावनी देती है कि मुझे हिन्दू या मुसलमानोंकी बातें मानकर दलीलमें नहीं अुतरना चाहिये। बेहतर यह होगा कि मैं पहले तहकीकात करूं और बादमें जो करना हो सो करूं। सोसायटी आगे चलकर सलाह देती है कि मुझे काठियावाड़ जाकर खुद सब कुछ देखना चाहिये। मैं कह चुका हूं कि आज मैं वह नहीं कर सकता। मुझे दिल्लीमें और दिल्लीके आसपास अपना धर्म-पालन करना चाहिये। सलाहकार यह भूल जाते हैं कि अपने मिठासके तरीकेसे मैं शिकायत करनेवालोंके पाससे जहां तक आवश्यक था, वहां तक अुनकी शिकायत वापस खिंचवा सका हूं। अिसमें से सीखनेका तो यह है कि जहां सचाअीके खातिर सचाअी निकालनेका प्रयत्न रहता है, वहां

परिणाम अच्छा ही आता है। अिस चीजको बहुत बार आजमाया जा चुका है। अैसी बातोंमें धीरजकी और लगकर काम करनेकी बहुत जरूरत रहती है।

सिंधके दुःखभरे पत्र

सिंधसे मेरे पास दुःखभरे पत्र आया ही करते हैं। सबसे आखिरका पत्र कराचीसे आया है। अुसमें लिखा है कि "खून तो नहीं हो रहे, पर हिन्दू अिज्जत-आबरूसे यहां रह नहीं सकते। यूनियनसे आये हुअे मुसलमान जब जी चाहे हिन्दुओंके घरोंमें आ घुसते हैं और आरामसे कहते हैं, हम यहां रहने आये हैं। अुनके हाथमें सत्ता नहीं है, पर हम अुन्हें 'ना' कहनेकी हिम्मत नहीं कर सकते। अैसे किस्से काफी संख्यामें देखनेमें आते हैं। चन्द महीने पहलेका कराची आज स्वप्न-सा हो गया है।" यह अेक लम्बे खतका सारांश है। मैं मानता हूं कि यह खत विश्वास करनेके लायक है। यह बताता है कि वहां अन्धाधुन्धी मची हुअी है। यह तो आदमीका लहू सुखा-सुखाकर मारनेकी बात हुअी। साथ ही अिसमें आत्माका भी हनन होता है। पाकिस्तानवालोंसे मेरा अनुरोध है कि वे अिस अन्धाधुन्धीको रोकें। यह अेक अैसी बीमारी है जिससे जितनी जल्दी छुटकारा पाया जाय अुतना ही अच्छा है।

फिर कण्ट्रोलके बारेमें

चीनी परसे अंकुश अुठ गया है। अन्न परसे, दालों परसे और कपड़े परसे जल्दी ही अुठ जायगा। अंकुश अुठानेका मूल हेतु यह नहीं है कि कीमतें अेकदम कम हों। आज तो असल हेतु यह है कि हमारा जीवन स्वाभाविक बने। अूपरसे लादा हुआ अंकुश हमेशा बुरा होता है। हमारे देशमें वह और भी बुरा है, क्योंकि हमारी करोड़ोंकी आबादी है और वह अेक विशाल देशमें फैली हुअी है, जो १९०० मील लम्बा और १५०० मील चौड़ा है। यहां देशके बंटवारेको सामने रखनेकी जरूरत नहीं। हम फौजी कौम नहीं हैं। हम अपनी खुराक खुद पैदा करते हैं, या यों कहिये कि कर सकते हैं; और हमारी जरूरतके लिअे काफी कपास पैदा करते हैं। जब अंकुश अुठ जायगा, लोग आजादी महसूस करेंगे। अुन्हें गलतियां करनेका अधिकार रहेगा। यह प्रगतिका

पुराना तरीका है: आगे बढ़ना, गलतियां करना और अुन्हें सुधारते जाना। किसी बच्चेको रुअीमें लपेटकर ही रखा जाय, तो या तो वह मर जायगा, या बढ़ेगा ही नहीं। अगर आप चाहते हैं कि वह तगड़ा आदमी बने, तो आपको अुसे सिखाना होगा कि वह सब किस्मके मौसमको बरदाश्त कर सके। अिसी तरह हुकूमत अगर हुकूमत कहलानेके लायक है, तो अुसे लोगोंको सिखाना है कि कमीका सामना कैसे किया जाय। अुसे लोगोंको बुरे मौसमका और जीवनकी दूसरी मुसीबतोंका अपनी संयुक्त कोशिशसे सामना करना सिखाना है। बिना अुनकी मेहनतके, जैसे-तैसे अुन्हें जिन्दा रहनेमें मदद नहीं करना है।

कण्ट्रोल हटानेका मतलब

अिस तरह देखा जाय तो अंकुश हटानेका अर्थ यह है कि हुकूमतके चन्द लोगोंकी जगह करोड़ोंको दूरन्देशी सीखना है। हुकूमतको जनताके प्रति नअी जिम्मेदारियां अुठानी होंगी, ताकि वह जनताके प्रति अपना फर्ज पूरा कर सके। गाड़ियों वगैराकी व्यवस्था सुधारनी होगी। अुपज बढ़ानेके तरीके लोगोंको बताने होंगे। अिसके लिअे खुराक-विभागको बड़े जमींदारोंके बजाय छोटे छोटे किसानोंकी तरफ ज्यादा ध्यान देना होगा। हुकूमतको अेक तरफसे तो सारी जनताका भरोसा करना है, और दूसरी तरफसे अुनके कामकाज पर नजर रखना है, और हमेशा छोटे-छोटे किसानोंकी भलाअीका ध्यान रखना है। आज तक अुनकी तरफ कोअी ध्यान नहीं दिया गया। मगर करोड़ोंकी जनतामें बहुमत अिन्हीं लोगोंका है। अपनी फसलका अुपयोग करनेवाला भी किसान खुद है। फसलका थोड़ासा हिस्सा वह बेचता है और अुसके जो दाम मिलते हैं, अुनसे जीवनकी दूसरी जरूरी चीजें खरीदता है। अंकुशका परिणाम यह आया है कि किसानको खुले बाजारसे कम दाम मिलते हैं। अिसलिअे अंकुश अुठनेसे किसानको जिस हद तक अधिक दाम मिलेंगे, अुस हद तक खुराककी कीमत बढ़ेगी। खरीदारको अिसमें शिकायत नहीं होनी चाहिये। हुकूमतको देखना है कि नअी व्यवस्थामें कीमत बढ़नेसे जो नफा होगा, वह सबका सब किसानकी जेबमें जावे। जनताके सामने रोज रोज या हफ्तेके हफ्ते यह चीज स्पष्ट करनी होगी। बड़े

बड़े मिल-मालिकों और बीचके सौदागरोंको हुकूमतके साथ सहकार करना होगा और हुकूमतके मातहत काम करना होगा। मैं समझता हूं कि यह काम आज हो रहा है। अिन चन्द लोगों और मण्डलोंमें पूरा मेल-जोल और सहकार होना चाहिये। आज तक अुन्होंने गरीबोंको चूसा है और अुनमें आपस आपसमें भी स्पर्धा चलती आअी है। यह सब दूर करना होगा, खास करके खुराक और कपड़ेके बारेमें। अिन चीजोंमें नफा कमाना किसीका हेतु नहीं होना चाहिये। अंकुश अुठनेसे अगर लोग नफा कमानेमें सफल हो सके, तो अंकुश अुठानेका हेतु निष्फल जायगा। हम आशा रखें कि पूंजीपति अिस मौके पर पूरा सहकार देंगे।

८९

९-१२-'४७

आज मैं चरखा-संघके ट्रस्टियोंकी सभामें गया था। वहां आध घंटे तक कस्तूरबा-संघकी बहनोंके साथ बातें कीं। मगर अुसके बारेमें समय रहा तो अंतमें आपको बताअूंगा।

वायु-परिवर्तन

अखबारोंमें यह छपा है कि सरदार पटेल और मैं पिलानी हवा खाने जा रहे हैं। लेकिन सरदारके पास आज हवा खानेका समय कहां है? रातको सोनेको मिलता है वही बस है। मेरा भी वही हाल है। लेकिन अितना बुरा नहीं। क्योंकि सरदार पटेलके हाथोंमें हुकूमत है। और फिर आज दिल्लीकी हवा सुन्दर है। दूसरी जगह हवा खाने कहां जाना था? आप जानते हैं कि मुझे तो दिल्लीमें करना है या मरना है। अखबारवाले अैसी हवाअी बातें क्यों करते होंगे? यह भी अफवाह चलती है कि क्योंकि हम दोनों पिलानी जा रहे हैं, अिसलिअे वहां बहुतसा आटा, दाल, चावल, चीनी वगैरा भेजनेकी व्यवस्था हो रही है। अिससे बाजारमें सनसनाटी-सी छा गअी है। दो आदमियोंके लिअे कितनी खुराककी जरूरत हो सकती है? अिस तरह गप हांकनेसे क्या फायदा हो सकता है? क्या वे यह बताना चाहते हैं कि हम खानेके

लिअे ही जिन्दा रहते हैं? या क्या हम अेक रिसाला लेकर बाहर जाते हैं? सरदार पटेल मिसकीन (गरीब) आदमी हैं। आपके सब मंत्री मिसकीन हैं, हालांकि वे आलीशान मकानोंमें रहते हैं। मगर मेरे जैसा मिसकीन आदमी भी तो अेक आलीशान मकानमें पड़ा है। दूसरा मकान ढूंढ़ने कहां जाअूं? अच्छा तो यह होगा कि हम सब मिट्टीके झोंपड़ोंमें रहें। मगर अुन्हें तैयार करना भी आज तो आसान काम नहीं है। तो अैसी गप अुड़ानेके पहले अखबारवालोंने सरदार साहबसे या मुझसे पूछ क्यों न लिया?

खूनसे बदतर

अेक सिंधी भाअी लिखते हैं कि जिन सिंधी डॉक्टरने कुछ दिन पहले सिंधके हरिजनोंकी तकलीफोंके बारेमें मुझे लिखा था, और जिसका जिक्र मैंने प्रार्थना-सभामें किया था, अुन्हें पकड़ लिया गया है। हरिजनोंके दूसरे बहुतसे सेवकोंको भी पकड़ लिया गया है। वहां खून नहीं होते, मगर यह सब खूनसे बदतर है। अिस तरह लोगोंको पकड़ना और परेशान करके मारना बहुत बुरा है। पाकिस्तानकी हुकूमतको मैं सावधान करना चाहता हूं कि अैसी ही बातें चलती रहीं, तो वहां कार्यकर्ता कब तक रह सकते हैं? मैं सुनता हूं कि जो लोग हरिजनोंको मदद दे सकते हैं, अुन्हें वहांके हाकिम अपने यहां रहने ही नहीं देना चाहते।

कस्तूरबा-ट्रस्टकी बहनोंसे

अब मैं कस्तूरबा-ट्रस्टकी बहनोंके साथ मेरी जो बातें हुअीं अुन्हें सुना दूं। कस्तूरबा-निधिका हेतु है सात लाख गांवोंकी स्त्रियों और बच्चोंकी सेवा। हजारों औरतें भगाअी गअी हैं। अेक तरफसे हिन्दू और सिक्ख औरतें और दूसरी तरफसे मुसलमान औरतें। किसने ज्यादा भगाअीं, यह सवाल छोड़ दिया जाय। कमसे कम बारह बारह हजार लड़कियां दोनों तरफके लोग ले गये हैं। कस्तूरबा-संघ अिस बारेमें क्या कर सकता है? संघको नामके लिअे कुछ नहीं करना है। अुसे जो कुछ करना है कामके ही लिअे करना है। संघकी करीब करीब सब सेविकायें शहरसे आअी हैं। संयोगसे कोअी कोअी बहनें देहातसे मिली

भी हैं तो अैसी जिनका शहरोंने स्पर्श किया है। आज तो अैसा सिलसिला बन गया है कि गांवोंसे कच्चा माल लाकर शहरोंमें बेचा जाता है और करोड़ों रुपये पैदा किये जाते हैं। देहातवालोंकी जेबमें बहुत थोड़ा पैसा जाता है। बाकी सब शहरके पैसेदार लोगोंकी जेबोंमें जाता है, मानो शहर गांवोंको चूसनेके लिअे ही बने हों! अिसे कैसे टाला जाय? जो बहनें सेविकाका काम करना चाहती हैं, अुन्हें गांवोंमें शहरोंकी हवा या सभ्यता लेकर नहीं जाना चाहिये। मोटर, रागरंग, खूबसूरत कपड़े, दांत साफ करनेके लिअे विदेशी या देशी टूथ-ब्रश और पेस्ट या मंजन, सुन्दर बूट वगैरा लेकर गांवोंमें जानेसे गांवोंकी सेवा नहीं हो सकती। हम अैसा करेंगे तो देहातोंको खा जायंगे। शहर देहातोंके मातहत रहें, देहातोंको समृद्ध और खुशहाल बनावें। गांवोंमें पैसा भेजनेके लिअे, वहांकी सभ्यताको बढ़ानेके लिअे शहरोंका अुपयोग होना चाहिये। अगर सेविका-ओंको गांवोंका शोषण रोकना है, तो अुन्हें देहाती ढांचेमें ढलकर काम करना होगा। अुसी तरहके सुधार करने होंगे। देहाती जीवनमें बड़ी सुन्दरता और कला भरी पड़ी है। कअी तरहके अुद्योग हैं। पश्चिमने हमारे देहातोंसे नमूने लिये हैं। शहरोंसे हम सिर्फ अच्छी और नीति-वर्धक चीजें ही देहातमें ले जायं, बाकी सब छोड़ दें। हम देहाती बनकर देहातमें जायं, तभी वहांकी स्त्रियों और बच्चोंको अूपर अुठानेमें मदद दे सकते हैं।

९०

१०-१२-'४७

चरखेका अर्थ

कल मैंने आप लोगोंको बताया था कि मैं चरखा-संघकी सभामें गया था। वहां बहनोंसे भी बातें की थीं। आज भी हरिजन-निवासमें तालीमी संघकी मीटिंगमें गया था। मगर अुसकी बात छोड़कर चरखा-संघकी बात आपसे कहना चाहता हूं। चरखा-संघ कपाससे शुरू करके तुनाअी, धुनाअी, कताअी, कपड़ा बुनाअी वगैरा सारी क्रियाअें सिखाता है। यह काम अैसा है कि सब अिसे कर सकते हैं। यह काम सब

करें तो करोड़ोंको धन्धा मिल जाता है और देहातोंमें मुफ्त कपड़ा बन जाता है। यहां मुफ्तका अर्थ है, अपनी मेहनतसे। अगर अपनी कपास भी पैदा कर ली जाय, तो करीब करीब कुछ खर्च ही नहीं रहता। अिससे दो फायदे होते हैं: कपड़ेके पैसे बचते हैं और अुद्यम होता है। यह अुद्यम भी कलामय अुद्यम होता है। मैंने कहा था कि अगर हम पागल न बन जाते, तो कपड़ेका घाटा हमारे देशमें हो ही नहीं सकता था। अेक भी मिल न रहे तो भी हम अपनी जरूरतका कपड़ा तैयार कर सकते हैं। चरखा-संघने चरखेके मारफत करोड़ों रुपये देहातमें बांट दिये हैं। मगर जो चरखेका असल काम था वह नहीं हो सका। चरख़ेको मैंने अहिंसाका प्रतीक कहा है। अगर सब देहात चरखामय हो जाते और चरखे द्वारा समृद्ध व खुशहाल बनते, तो देशमें जो कुछ आज चल रहा है वह चलनेवाला नहीं था।

मुझसे कहा गया है कि चरखेके जरिये अपना कपड़ा पैदा करके देहात कपड़ेका घाटा पूरा कर सकते हैं। करोड़ों रुपये भी बचा सकते हैं। मगर सिर्फ कपासके दाम देने पड़ें, तो भी खादी जापानके केलिकोसे महंगी पड़ती है। पर यह हिसाब सच्चा हिसाब नहीं है। मिलोंको सल्तनतकी मदद मिलती है। अुन्हें हर तरहका सुभीता दिया जाता है। आज सब जगह धनपतिकी चलती है, हलपतिकी नहीं। मुझे धनपतियोंसे द्वेष नहीं। अुनमें से अेकके घरमें ही मैं पड़ा हूं। मगर अुनका रवैया अलग है और मेरा अलग। मुझे मिलोंमें कोअी रस नहीं। मैंने सोचा था कि शायद अुनके मारफत चरखेका काम हो सके। मगर वह हुआ नहीं। मिलोंमें गरीबोंका काम नहीं होता, यह हमें नम्रतासे कबूल कर लेना चाहिये। सभी लोग कहते तो यही हैं कि वे गरीबोंकी सेवा करना चाहते हैं, देहातोंको अूपर अुठाना चाहते हैं। मगर मेरी दृष्टिमें आज अिसका अेकमात्र रास्ता चरखा है। समाजवादी भाअी गरीबोंको आगे लानेकी बात करते हैं। मेरी नजरमें सच्चा समाजवाद हलपतियोंको अूपर अुठानेमें है। समाजवादी क्रान्ति तो जब होगी तब होगी, मगर अितना तो आज कर सकते हैं कि वे देहातमें जाकर लोगोंको बतावें कि अपनी जरूरतकी खादी बनाओ और पहनो।

चरखा और साम्प्रदायिक मेल

जबसे मैं हिन्दुस्तानमें आया हूं, तबसे यही बात कर रहा हूं। मगर मैं हर गांवमें चरखेका गुंजन नहीं पैदा कर सका। अगर वह हो जाता तो कौमी झगड़ा हो ही नहीं सकता था। आज तो सब तरफसे यही सुनाअी देता है कि मुसलमानोंको यूनियनसे निकाल दो। बहुतसे मुसलमान दिल्ली छोड़कर चले गये हैं। जो थोड़े रह गये हैं, अुन्हें भगानेकी बात की जा रही है। क्या दिल्लीको हिन्दूमय कर देंगे? सब मुसलमानोंके चले जानेके बाद क्या मस्जिदोंमें हिन्दू जाकर रहेंगे? मैं मानता हूं कि हम अैसे पागल नहीं बनेंगे। अगर बने तो हिन्दुओंका नाश हो जायगा।

जिओ और जीने दो

अजमेरमें मुसलमानोंकी अेक बड़ी दरगाह है। वहां हिन्दू-मुसलमान दोनों नजर चढ़ाया करते थे। हिन्दू-मुसलमानोंमें कोअी झगड़ा न था। कभी होता भी था तो जल्दी मिट जाता था। सुनता हूं कि वहां पर खासा झगड़ा चल रहा है। काफी मुसलमानोंको डराकर भगा दिया गया है। जो रह गये अुनमें से कअी मार डाले गये। आसपासके देहातोंमें भी झगड़ेका जहर फैल रहा है। अगर यह सही है तो बहुत बुरी बात है। अीश्वर हमें सन्मति दे कि हम हिन्दू धर्मके नाश करनेवाले न बनें! अिस दुनियामें अगर हमें जिन्दा रहना है, तो हमें सबको जिन्दा रखना होगा। सब मुसलमानोंको भगा देने, मार डालने या गुलाम बनाकर रखनेका मतलब हिन्दू धर्मको बरबाद करना है। अिसी तरह पाकिस्तानमें सब हिन्दुओं और सिक्खोंको भगा देना, मार डालना या गुलाम बनाकर रखना अिस्लामका नाश करना है। कहते हैं कि "विनाश-काले विपरीत-बुद्धिः"। अीश्वर हम सबकी बुद्धिको विपरीत होनेसे बचावे!

९१

११-१२-'४७

कुरानकी आयत

प्रार्थना शुरू होनेसे पहले अेक भाअीने नम्रतासे कुरान शरीफकी नअी या पुरानी आयतका अर्थ बतानेको कहा। प्रार्थनाके बाद अुसका अुत्तर देते हुअे गांधीजीने कहा — कुरानकी आयतका नया अर्थ तो हो नहीं सकता। कुरान शरीफ तो मुहम्मद साहबके जमानेमें अुतरा था। जो हिस्सा प्रार्थनामें पढ़ा जाता है, वह बहुत दुर्लभ माना जाता है। वह तो अेक तरहसे मंत्र ही है। हम अुसका अर्थ जानें या न जानें, जब वह शुद्ध हृदयसे और शुद्ध अुच्चारसे पढ़ा जाता है तो कानोंको अच्छा लगता है। अुसका भावार्थ यह है कि शैतानसे बचनेके लिअे हम अल्लाहकी पनाह लेते हैं। अल्लाह रहीम है। वह अकबर है। शैतानसे हमें बचा सकता है। वह किसीका बेटा नहीं, न कोअी अुसका बेटा है। आखिरमें प्रार्थना करते हैं कि अल्लाह हमें अुसके हुक्म पर चलनेवालोंके रास्ते पर ले जाय, भूले-भटके और गुमराह लोगोंके रास्ते पर नहीं। आप मुझे पूछ सकते हैं कि तब मुसलमान क्यों अितने बिगड़े हुअे हैं? वे क्यों मिथ्याचरण करते हैं? अिस पर मैं सिर्फ अितना ही कहूंगा कि बाअिबलमें जो कुछ लिखा है, अुस पर ओसाअी कहां चलते हैं? पश्चिमके लोग तो अितने विद्वान हैं, फिर भी वे बाअिबलके अुपदेश पर नहीं चलते। हिन्दू कहां अुपनिषदों पर आचरण करते हैं? "अीशावास्यमिदं सर्वम्" अिस श्लोक पर हम विचार करें। सब कुछ अीश्वरको अर्पण करके हम भोग करें। किसीके धनकी अिच्छा तक न करें। अगर सारा संसार अिसके मुताबिक चले, सब नहीं तो कमसे कम हिन्दू और सिक्ख ही चलें, तो नकशा बदल जाय। मगर अैसा नहीं होता। व्यक्ति ही अिन बातों पर अमल करते हैं। अैसे व्यक्ति मुसलमानोंमें भी हैं। सब मुसलमान बुरे नहीं हैं और सब हिन्दू देवता नहीं हैं। हमारी प्रार्थनामें पहले बुद्धदेवका स्तवन होता है, फिर कुरानकी आयत और जन्दावस्ताका

मंत्र पढ़ा जाता है। अिसके बाद हम श्लोक सुनते हैं, फिर भजन सुनते हैं; तो भी हमारा दिल साफ क्यों नहीं होता?

मुस्लिम शान्ति-मिशनकी गारण्टी

आज मेरे पास कुछ मुसलमान भाअी आ गये थे। वे यू० पी० के थे और पश्चिम पंजाबका दौरा करके आये थे। अुन्होंने मुझे जो बातें सुनाअीं, अुन्हें लिखकर देनेके लिअे मैंने अुनसे कहा। अुन्होंने यह लिखकर दिया:

> "युक्तप्रान्तके शान्तिदलने दो मरतबा पश्चिम पंजाबका दौरा किया। पहली मरतबा वह अेक महीना और दूसरी मरतबा अेक हफ्ता घूमा। अब वहांकी हालत पहलेसे अच्छी है। पहलेके मुकाबले अवाम और हुकूमत दोनों अमनके लिअे कोशिश कर रहे हैं। चुनांचे पश्चिम पंजाबकी सरकार ख्वाहिशमन्द है कि जो गैर-मुस्लिम वहां अिस वक्त रहते हैं वे वहीं रहें और जो वहांसे चले गये हैं वे वापस आयें। सरकारने यह हिदायत जारी की है कि जो गैर-मुस्लिम पश्चिम पंजाब वापस आयेंगे, अुनको अुनकी मिल्कियत और जायदाद पर कब्जा दिया जायगा और जो गैर-मुस्लिम भाअी आयेंगे और रहेंगे, अुनकी पूरी हिफाजत की जायगी और अुनको कारोबारकी हर तरहसे सहूलियत दी जायगी। अगर बावजूद मिन्नत-समाजतके कोअी गैर-मुस्लिम वहां रहने या वापस जानेका ख्वाहिशमन्द न हो, तो अुसे अपनी जायदाद बदलने या फरोख्त करनेका पूरा हक है। बलवा-फसाद करनेवालोंको हुकूमत सख्त सजा दे रही है और आनेवालोंकी हिफाजतके लिअे हर तरहकी तदबीर और अैतिहात बरत रही है। शान्ति-दलने वहांके अवाम और सरकारको अिस बातके लिअे आमादा और तैयार कर लिया है कि पाकिस्तानकी हुकूमतका यह फर्ज है कि वह गैर-मुस्लिमकी अिज्जत-आबरूकी पूरी जिम्मेवारी ले। चुनांचे सरकार और अवाम दोनों अिसके लिअे तैयार हैं। युक्त-प्रान्तीय शान्तिदलके सदस्य गैर-मुस्लिम भाअियोंसे गुजारिश करते हैं कि जो भाअी पश्चिम पंजाबमें बसना चाहते हैं, हम अुनके साथ

चलकर अुनको वहां बसानेके लिअे तैयार हैं। हम अपनी जानसे ज्यादा अुनकी जिम्मेवारी लेते हैं और अुनको पूरा अितमीनान कराके हम वहांसे वापस आयेंगे।"

अगर यह बात सही है तो मैं अिसको बहुत अच्छी खबर मानता हूं। मैंने अुनसे कहा कि मैं यह चीज सबके सामने रख दूंगा। अगर बादमें यह बात सही न निकली तो बहुत बुरा होगा। मैंने अुनसे कहा कि मॉडल टाअुनमें हिन्दुओंके कितने बड़े बड़े मकान पड़े हैं? लाहौर और दूसरी जगहोंमें हिन्दुओंके कितने स्कूल, कॉलेज और गुरुद्वारे हैं? क्या वे सब हिन्दुओंको वापस मिल जायेंगे? अुन्होंने कहा कि सब लोग अिस चीज पर राजी नहीं हुअे हैं, मगर हुकूमत राजी हुअी है कि हिन्दुओंको कतल नहीं किया जायगा।

अगर यह सब सच है तो मेरी अुम्मीदसे ज्यादा काम हुआ है। मुझे आशा नहीं थी कि अितनी जल्दी यह सब हो सकेगा। मुझे अिसके बारेमें तहकीकात करनी चाहिये। अगर यह बात पक्की निकली, तो ही हिन्दुओंके वापस लौटनेका सवाल अुठेगा।

९२

१२-१२-'४७

शरणार्थियोंकी तकलीफें

अेक भाअी लिखते हैं: 'आपने कल प्रार्थनामें कहा था कि अब हिन्दू और सिक्ख पाकिस्तान वापस जाना शुरू कर सकते हैं। मैं तो आज ही जाना चाहता हूं। यहां तो शरणार्थियोंके लिअे कुछ होता नहीं। तकलीफ ही तकलीफ है।' यह सही है कि शरणार्थियोंको यहां तकलीफ है। मगर यह प्रश्न अितना बड़ा है कि पूरी कोशिश करते हुअे भी सरकार सबको सन्तोष नहीं दे सकती। आज मैं किसीको पाकिस्तान जानेकी सलाह नहीं दे सकता। मैंने तो यह कहा था कि मैं पहले तहकीकात करूंगा और मुस्लिम भाअियोंने मुझे जो बताया है वह सही होगा, तो जल्दसे जल्द जो लोग लौटना चाहते हैं अुनके लौटनेका अिन्तजाम किया जायगा।

दूसरा पहलू

काठियावाड़के मुसलमानोंने अपनी शिकायतें बहुत कुछ वापस खींच लीं, यह कअी लोगोंको चुभता है। मेरे पास अेक ब्रह्मदेशसे और दूसरा बम्बअीसे गुस्साभरा खत आया है। अुनमें नाम नहीं दिये गये हैं, लेकिन लिखनेवाले मुसलमान भाअी हैं। वे लिखते हैं कि काठियावाड़के बारेमें सब शिकायतें सच्ची थीं। लेकिन बिना नामके खतोंको मैं कितना वजन दे सकता हूं? काठियावाड़के बारेमें अगर वे मानते हैं कि वहां मुसलमानों पर कअी तरहके जुल्म हुअे ही हैं, तो वे अपना नाम, पता वगैरा मुझे दें। मैं काठियावाड़के लोगोंसे तहकीकात करनेके लिअे कह सकता हूं।

अजमेरसे कुछ हिन्दुओंका खत आया है। अुसमें लिखा है कि जैसी खबरें अजमेरके बारेमें छपी हैं, वैसा कुछ यहां पर हुआ नहीं। जो झगड़ा हुआ वह भी हिन्दुओंने शुरू नहीं किया, मुसलमानोंने शुरू किया था।

अेक और भाअी लिखते हैं कि 'आपने प्रार्थना-सभामें अिस बातका जिक्र किया था कि सरदार पटेल कहते हैं कि सोमनाथके मन्दिरके जीर्णोद्धारके लिअे सरकारी खजानेसे पैसा खर्च नहीं किया जायगा। लेकिन अैसा क्यों? सरकारी खजानेसे खर्च करनेमें हर्ज ही क्या है?' लेकिन मैं तो मानता हूं कि जब अेक जातिके लिअे अिस तरह सरकारी खजानेसे पैसा खर्च किया जाय, तो दूसरी जातियोंके लिअे भी किया जाना चाहिये। पर सरकारी खजाना अितना बोझ नहीं अुठा सकता। यह सब मैंने आपको अिसलिअे सुनाया कि आप यह जान लें कि अुलटा मत रखनेवाले लोग भी यहां हैं।

कलकत्तेका हुल्लड़

कलकत्तेके हुल्लड़की खबर आपने अखबारोंमें पढ़ी होगी। आज हवा अैसी बन गअी है कि लोग मानने लगे हैं कि हुल्लड़ मचाकर सब कुछ हासिल किया जा सकता है। अंग्रेज सरकारसे हमने ३० साल तक लड़ाअी लड़ी। मगर वह हुल्लड़बाजीकी लड़ाअी नहीं थी, ठंडी ताकतकी लड़ाअी थी। हमारी समझमें किसीने गलती भी की हो, तो अुसके सामने जबरदस्ती क्या करना था? अखबारोंमें आया है कि हुल्लड़ करनेवालोंमें विद्यार्थी लोग भी थे। अुनका तो यह तरीका नहीं हो सकता। किसीको

असेम्बलीमें जानेसे रोकना ठीक नहीं। असेम्बलीमें मेम्बर जो कानून लाते हैं वह अगर हमें पसन्द न हो, तो हमें अुसका विरोध बाकानून करना चाहिये। हुल्लड़से हम हुकूमत नहीं चला सकते। अंग्रेजोंके जमानेमें जब हमारे लोग हुल्लड़ करते थे, तो अुसके सामने मैं अुपवास करता था। आज तो हमारी ही हुकूमत है। अुसके रास्तेमें रोड़े अटकाना ठीक नहीं। अगर वह टीअर गैस छोड़ती है, तो हम शिकायत करते हैं। वह लाठी चलाती है तो शिकायत होती है। आजादीका अर्थ यह नहीं है कि हम तूफान करें, तो भी सजा नहीं हो सकती। बाकानून जो हो सकता है, किया ज़ाय। आप अखबारोंमें लिखिये, लोकमत तैयार कीजिये। यह तरीका निकम्मा है, अैसा कोअी सिद्ध नहीं कर सकता। आपने अभी अिसे आजमाया ही कहां है? हमारी आजादी अभी तीन महीनेकी तो बच्ची है। मैं आपसे नम्रतासे कहता हूं कि अगर पढ़े-लिखे लोग अैसी बातें करने लगे, तो हिन्दुस्तानका कारोबार रुक जायगा। लोगोंको खुराक देना, कपड़ा पहुंचाना, दूसरी सहूलियतें देना वगैरा कुछ भी काम नहीं हो सकेगा। क्या हम हिन्दुस्तानी सिर्फ मिटाना ही सीखे हैं, बनाना नहीं? अीश्वरकी कृपा है कि सबने हुल्लड़में हिस्सा नहीं लिया। अगर सब लेते तो भी जो वहशियाना चीज है, वह अच्छी नहीं बन जाती। लोग समझ लें कि हुकूमत हमारी है। अुससे कुछ मदद न मिले, तो भी अुन्हें हुल्लड़ नहीं करना चाहिये।

९३

१३-१२-'४७

चरखेका सन्देश

जब मैं हरिजन-निवास जाता था, तब वहांकी बातोंके बारेमें रोज थोड़ा थोड़ा आपको बताना चाहता था। पर मैं अैसा कर न सका। आज आपको फिरसे चरखेकी बात सुनाना चाहता हूं। वहां पर यह संवाद चला था — चरखेका क्या महत्त्व है? मैं क्यों अुस पर अितना जोर देता हूं?

जब मैंने पहले-पहल चरखेकी बात शुरू की थी, तब मुझे यह पता नहीं था कि पंजाबमें चरखेका काफी प्रचार था। लेकिन जब मैं वहां

गया, तो वहांकी बहनोंने मेरे सामने सूतके ढेर लगा दिये थे। बादमें पता चला कि गुजरात-काठियावाड़में भी अेकाध जगह चरखा चलता था। गायकवाड़की रियासतमें बीजापुर नामका अेक गांव है। वहां गंगाबहन भटकती हुअी जा पहुंची थीं। अुन्हें पता था कि मैं चरखेके पीछे दीवाना हूं। वहां परदेवाली चन्द राजपूत औरतें चरखा चलाती थीं। गंगा-बहनने अुन्हें पूनी देकर अुनसे सूत खरीदना शुरू किया। अुस समय बहुत कम दाम दिये जाते थें। बादमें तो हमने काफी प्रगति कर ली। अुस समय हमें अितनी कल्पना थी कि खादीके जरिये हम बहनोंका पेट भर सकेंगे। और अुनका पेट कहां बड़ा होता है? दो पैसेकी जगह तीन पैसे मिल गये कि वे खुश हो जाती थीं।

बादमें मैंने समझ लिया कि चरखेमें तो बड़ी ताकत भरी है। वह ताकत अहिंसाकी ताकत है। अेक तरफ तो हिंसाकी, मिलिटरीकी ताकत और दूसरी तरफ बहनोंके पवित्र हाथोंसे चरखा चलानेसे पैदा होनेवाली अहिंसाकी जबरदस्त ताकत। अिसलिअे मैंने चरखेको अहिंसाका प्रतीक कहा है। अगर सब लोग अिस चीजको समझते, तो चरखेको जला न देते।

अेक समय सारी दुनियामें चरखा चलता था। कपासका जितना कपड़ा बनता था, सब हाथका बनता था। हिन्दुस्तानमें ढाकाकी मलमल और शबनम सब जगह प्रसिद्ध हो गअी थीं। सबकी आंखें अुन पर लग गअी थीं। कपासमें से अितना खूबसूरत कपड़ा पैदा हो सकता है, अिस पर सबको ताज्जुब होता था। अुस रोचक अितिहासको मैं छोड़ देता हूं। मगर अुस वक्त चरखा गुलामीका प्रतीक था। बहनोंको मजबूर किया जाता था कि अितना सूत तो देना ही होगा और अपने मालिकोंसे वे यह नहीं कह सकती थीं कि अितने कम दाम पर हम सूत नहीं कातेंगी। तंगीमें पेट भर जाय अितना दाम भी तो अुन्हें नहीं मिलता था। औरतोंको लूटा जाता था। अुस करुण अितिहासको भी मैं छोड़ देता हूं। मगर जो चरखा गुलामीका प्रतीक था, वही आजादीका प्रतीक बना। हिंसाके जोरसे नहीं बल्कि अहिंसाके जोरसे। अलीभाअी चरखेकी कुकड़ीको अहिंसक बम कहा करते थे। अपने हाथोंसे

सूत कातना, कपड़ा बनाना, पैसा बचाना और चरखेमें से ताकत पैदा करना — यही चरखेका रहस्य है।

१९१७ में चरखा शुरू हुआ। १९१७ में मेरा पंजाबका दौरा हुआ। आजादी तो हमने ले ली, पर जो आंधी और तूफान आज देशमें चल रहा है अुसका क्या? हमने चरखा चलाया, पर अुसे अपनाया नहीं। बहनोंने मुझ पर मेहरबानी करके चरखा चलाया। मुझे वह मेहरबानी नहीं चाहिये। अगर वे समझ लेतीं कि अुसमें क्या ताकत भरी है, तो आज जो हालत है वह होनेवाली नहीं थी। अगर हमें अहिंसक शक्ति बढ़ाना है, तो फिरसे चरखेको अपनाना होगा और अुसका पूरा अर्थ समझना होगा। तब तो हम तिरंगे झंडेका गीत गा सकेंगे। आज हमारे तिरंगे झंडेमें चरखेका चक्र ही रह गया है। अुसमें दूसरा अर्थ भी भर दिया गया है। वह अच्छा है। मगर पहले जब तिरंगा झंडा बना था, तब अुसका अर्थ यही था कि हिन्दुस्तानकी सब जातियां मिल-जुलकर काम करें और चरखेके द्वारा अहिंसक शक्तिका संगठन करें। आज भी अुस चरखेमें अपार शक्ति भरी है। अंग्रेज चले गये हैं, मगर हमारा लश्करका खर्च बढ़ गया है। यह शर्मकी बात है। अितने साल अहिंसासे काम लिया, अब हमारी आंखे लश्कर पर लगी हैं। क्योंकि हम चरखेको भूल गये हैं, अिसीलिअे हम आपसमें लड़ते हैं। अगर सब भाअी-बहन दुबारा चरखेकी सच्ची ताकतको समझकर अुसे अपनावें तो बहुत काम बन जाय। जब मैं पंजाब गया था तब वहांके सिक्ख और मुसलमान भाअियोंने मुझसे कहा था — 'चरखा चलाना तो औरतोंका काम है। मर्दोंके हाथमें तो तलवार रहती है।' बादमें कुछ पुरुषोंने चरखा चलाया था, मगर अुसे अपनाया नहीं। आज अगर सब भाअी-बहन चरखेको जला दें, खादीको फेंक दें, तो मुझे अुसकी परवाह नहीं। लेकिन अगर अुसे रखना है तो समझ-बूझ कर रखें। अहिंसा बहादुरीकी पराकाष्ठा — आखिरी सीमा है। अगर हमें यह बहादुरी बताना हो, तो समझ-बूझसे, बुद्धिसे चरखेको अपनाना होगा। ४० करोड़की आबादीमें से छोटे बच्चोंको छोड़ दीजिये। फिर भी अगर ५–७ बरससे अूपरके बच्चे और बड़ी अुमरके सब तन्दुरुस्त लोग कातें, तो हिन्दुस्तानमें कपड़ेकी

कमी कभी नहीं हो सकती और करोड़ों रुपये बच जाते हैं। मगर वह सब भूल जाअिये। सबसे बड़ी चीज यह है कि करोड़ोंके अेक साथ काम करनेसे जो शक्ति पैदा होती है, अुसका सामना कोअी शस्त्रबल नहीं कर सकता। मैं यह सिद्ध न कर सकूं तो दोष मेरा है, अहिंसाका नहीं। मेरी तपश्चर्या अधूरी है, अहिंसाकी शक्तिमें कभी कमी नहीं आ सकती। अुस शक्तिका प्रदर्शन चरखे द्वारा हो सकता है, क्योंकि चरखा करोड़ोंके हाथोंमें रखा जा सकता है। और अुससे किसीको नुकसान नहीं हो सकता। करोड़ों आदमी मिल नहीं चला सकते, दूसरा कोअी धन्धा नहीं कर सकते। चरखेमें नीतिशास्त्र भरा है, अर्थशास्त्र भरा है और अहिंसा भरी है।

९४

१४-१२-'४७

अेक दोस्ताना काम

मुझे अेक खत मिला है। अुसमें अेक भाअी लिखते हैं कि 'अेक मुसलमान भाअीको मजबूर होकर पाकिस्तान जाना पड़ा है। वे अपनी मेहनतकी कमाअीका कुछ सोना-चांदी मेरे पास छोड़ गये हैं। क्या आप बता सकते हैं कि यह सोना-चांदी असली मालिकके पास कैसे भेजा आय?' अगर वे भाअी लिख भेजें, तो मैं हुकूमतसे कहूंगा कि वह मालिकके पास अुसकी मिल्कियत भेजनेका अिन्तजाम कर दे। मैंने अिसका जिक्र अिसलिअे किया है कि हम जान लें कि हममें अब भी अैसे शरीफ आदमी पड़े हैं। अिस भाअीके दिलमें खयाल भी नहीं आया कि चलो दोस्त तो गया, अुसका माल हड़प कर जायं। अुसे अमानतको लौटानेकी फिकर है। अगर हम सब भले बन जायं, तो सब अच्छा ही होनेवाला है।

नअी तालीम

मैंने आपसे वादा किया था कि हरिजन-निवासमें जब मैं जाता था तब वहां जो चर्चा होती थी, अुसके बारेमें आपको थोड़ासा बता दूंगा। आज मैं आपको नअी तालीमके बारेमें कुछ कहना चाहता हूं। नअी

तालीमको शुरू हुअे आठ साल हुअे हैं। अिस संस्थाका अुद्देश्य राष्ट्रको नये आधार पर शिक्षा देना है। अुसके लिअे यह कोअी लम्बा समय नहीं है। बुनियादी तालीमका आम तौर पर यह अर्थ किया जाता है कि दस्तकारीके जरिये शिक्षा देना। मगर यह कुछ अंश तक ही ठीक है। नअी तालीमकी जड़ अिससे गहरी जाती है। अुसका आधार है सत्य और अहिंसा। व्यक्तिगत जीवन और सामाजिक जीवन, दोनोंमें ये ही अुसके आधार हैं। विद्या वह जो मुक्ति दिलानेवाली हो — 'सा विद्या या विमुक्तये।' झूठ और हिंसा तो बन्धनकारक हैं। अुनका शिक्षामें कोअी स्थान नहीं हो सकता। कोअी धर्म यह नहीं सिखाता कि बच्चोंको असत्य और हिंसाकी शिक्षा दो। सच्ची शिक्षा हरअेकको सुलभ होनी चाहिये। वह चन्द लाख शहरियोंके लिअे ही नहीं, मगर करोड़ों देहातियोंके लिअे अुपयोगी होनी चाहिये। अैसी शिक्षा कोरी पोथियोंसे थोड़े मिल सकती है। अुसका फिरकेवाराना मजहबसे भी कोअी ताल्लुक नहीं हो सकता। वह तो धर्मके अुन विश्वव्यापी सिद्धान्तोंकी शिक्षा देती है, जिनमें से सब सम्प्रदायोंके धर्म निकले हैं। यह शिक्षा तो जीवनकी किताबमें से मिलती है। अुसके लिअे कुछ खर्च नहीं करना पड़ता और अुसे ताकतके जोरसे कोअी छीन नहीं सकता। आप पूछ सकते हैं कि बुनियादी तालीमका काम करनेवाले भाअी क्या अैसे सत्य और अहिंसामय बन चुके हैं? मैं निवेदन करूंगा कि मैं अैसा नहीं कह सकता। मैं यह थोड़े ही बता सकता हूं कि किसके दिलमें क्या है। हिन्दुस्तानी तालीमी संघके अध्यक्ष डॉ० जाकिर-हुसैन हैं। श्री आर्यनायकम् और आशादेवी अुसके मंत्री हैं। अुन्होंने यह कभी नहीं कहा कि वे सत्य और अहिंसामें विश्वास नहीं रखते। अगर अुनका सत्य और अहिंसामें विश्वास न हो, तो अुनका तालीमी संघसे हट जाना ही मुनासिब होगा। नअी तालीमके शिक्षक सत्य और अहिंसाको पूरी तरह माननेवाले हों, तभी वे सफलता पा सकेंगे। तब वे कठोरसे कठोर व्यक्तियोंको चुम्बकके मानिन्द खींच सकेंगे। अुनमें वे सब गुण होने चाहियें, जो स्थितप्रज्ञके बताये गये हैं और जो आप रोज प्रार्थनाके संस्कृत श्लोकोंमें सुनते हैं। तालीमी संघको कांग्रेसने जन्म दिया, मगर अभी वह कांग्रेस जैसा कहां बना है? कांग्रेसमें से मैं निकल गया,

सरदार भी निकल जायं, जवाहरलाल भी चले जायं, जितने वहां आज काम करते हैं वे सब मर जायं, तो भी कांग्रेस थोड़े ही मरनेवाली है! वह तो जिन्दा ही रहनेवाली है। मगर तालीमी संघके बारेमें आज अैसा नहीं कह सकते। अुसे अैसा बनना है। हर संस्थाको अैसा बनना चाहिये कि व्यक्ति निकल जायं तो भी अुसका काम बन्द न हो, बल्कि बराबर बढ़ता और फैलता जाय।

९५

१५–१२–'४७

शर्मनाक नाफरमानी

अखबारोंमें यह पढ़कर मुझे दुःख हुआ कि शरणार्थियोंने ६ म्युनिसिपल स्कूलोंके मकानों पर कब्जा कर लिया है और दिल्ली म्युनिसिपल कमेटीकी पूरी कोशिशोंके बावजूद भी अुन्हें खाली नहीं किया। कमेटी अिन मकानोंको खाली करवानेके लिअे पुलिसकी मदद लेने जा रही है।

यह रिपोर्ट विश्वासके लायक लगती है। यह किस्सा शर्मनाक अन्धाधुन्धीका अेक नमूना है। यूनियनकी राजधानीमें अैसी चीजें हरअेकके लिअे शर्मका कारण हैं। मैं आशा करता हूं कि कब्जा करनेंवाले अपनी बेवकूफीके लिअे पछतायेंगे और अपने-आप स्कूलोंके मकान खाली कर देंगे। अगर अैसा न हुआ तो आशा है कि अुनके दोस्त अुनको समझा सकेंगे और सरकारको अपनी धमकी पर अमल नहीं करना पड़ेगा। शरणार्थियोंके सामने यह आम शिकायत है कि अितना दुःख सहन करनेके बात भी वे समझदार, गंभीर और मेहनती कार्यकर्ता नहीं बने। हम सब आशा करते हैं कि आम तौर पर सब शरणार्थी और खास तौर पर स्कूलों पर कब्जा करनेवाले भाअी प्रायश्चित्त करके अिस शिकायतको गलत साबित कर देंगे।

अन्धाधुन्धी और रिश्वतखोरी

शनिवारको मैंने कलकत्तेकी दंगाखोरीका जिक्र किया था। वहां शरारत करनेवाले शरणार्थी नहीं थे। अुसकी भूमिका भी अलग थी। सब नेताओंका, चाहे वे किसी भी खयाल या पार्टीके हों, यह फर्ज है कि वे

हिन्दुस्तानकी अिज्जतकी दिलोजानसे रक्षा करें। अगर हिन्दुस्तानमें अन्धाधुन्धी और रिश्वतखोरीका राज चले, तो हिन्दुस्तानकी अिज्जत बच नहीं सकती। मैंने यहां रिश्वतखोरीका जिक्र अिसलिअे किया है कि अराजकता और रिश्वतखोरी दोनों अेक ही कुटुम्बकी हैं। कअी विश्वासपात्र जरियोंसे मुझे पता लगा है कि रिश्वतखोरी बढ़ रही है। तो क्या हिन्दुस्तानका हर आदमी अपना ही खयाल करेगा और हिन्दुस्तानकी भलाअी कोअी नहीं सोचेगा?

आश्वासन निरी चालाकी है

अेक भाअी लिखते हैं — "मैंने अभी आपकी कलकी प्रार्थनाका भाषण रेडियो पर सुना। अुसमें आपने कहा है कि यू० पी० के कुछ मुसलमान भाअियोंने, जो लाहौर जाकर आये हैं, आपको यह विश्वास दिलाया है कि गैर-मुस्लिम और खासकर हिन्दू वहां जाकर अपना कारोबार शुरू कर सकते हैं। पहली बात तो यह है कि हिन्दुओंको ही बुलाना और सिक्खोंको नहीं बुलाना यह चालाकी है; और सिक्खों और हिन्दुओंमें फूट डलवानेकी चाल है। अिस तरहका आश्वासन धोखेबाजी है, मजाक है। शायद आप जैसे लोग ही अैसे मुसलमानोंकी बातोंमें आ सकते हैं। मैं आपको ११ दिसम्बरके 'हिन्दुस्तान टाअिम्स' की अेक कतरन भेजता हूं। अुससे आपको पाकिस्तान सरकारकी सचाअी और साफदिलीका पता चल जायगा। यह पढ़कर भी क्या आप यह मानेंगे कि जो मुसलमान आपके पास आते हैं वे अीमानदार हैं? वे सिर्फ अितना ही बताना चाहते हैं कि पाकिस्तान सरकार अल्पमतवालोंके प्रति न्याय करती है और पाकिस्तानमें सब ठीक ठीक चल रहा है, अगरचे वाकयात अिससे अुलटे हैं। अगर वे मुसलमान आपके पास आवें, तो कृपा करके अुन्हें यह कतरन दिखाअियेगा। मैं विश्वास रखता हूं कि आप भूले नहीं होंगे कि २० नवम्बरको जो हिन्दू और सिक्ख अपनी कीमती चीजें बैंकोंसे निकलवाने लाहौर गये थे अुनका क्या हाल हुआ था। हिन्दुस्तानी मिलिटरी पर, जिसकी रक्षामें ये लोग गये थे, मुसलमानोंने हमला किया। पाकिस्तानी अफसरोंके सामने यह वाकया हुआ। मगर अुन्होंने दंगाखोरोंको रोकनेकी कोअी कोशिश नहीं की।"

कतरनमें यह लिखा है:

"लाहौरके 'सिविल और मिलिटरी गजट' अखबारमें हालमें ही अेक रिपोर्ट छपी थी कि गैर-मुस्लिम व्यापारी और दुकानदार, जो दंगोंके दिनोंमें भाग गये थे, धीरे धीरे महीनोंका बन्द पड़ा अपना कारोबार फिरसे चलानेकी आशासे वापस आ रहे हैं। मगर अुनकी दुकानें वगैरा वापस करनेसे पहले अुनसे अैसी नामुमकिन शर्तों पर दस्तखत कराये जाते हैं कि कअी निराश होकर वापस चले गये हैं। फिरसे बसानेवाला कमिश्नर अिन शर्तों पर दुकानें खोल देता है:

१. बिक्रीका पूरा हिसाब रखा जाय।

२. बिना अिजाजत मालिक कुछ भी माल या रुपया दूसरी जगह न ले जाय।

३. अपनी दुकानको चालू धन्धा रखनेका वचन दे।

४. बिक्रीसे जितनी कमाअी हो, वह रोजकी रोज बैंकमें जमा की जाय; बिना अिजाजत अुसमें से कुछ भी निकाला न जाय।

५. दुकानदार कायमी तौर पर लाहौरमें ही रहें।

"मुसलमानों पर अैसी कोअी शर्त नहीं है तो हिन्दुओं पर क्यों? हिन्दू कहते हैं कि अिन शर्तोंका वे पालन न कर सकेंगे, सो निराश होकर वापस चले जाते हैं।"

विश्वाससे विश्वास पैदा होता है

तो निराशाकी बात तो मैं पहले ही कर चुका हूं। यह खबर सही हो तो भी जरूरी नहीं कि अुन मुसलमान भाअियोंने मुझसे जो कहा वह सर्वथा रद हो जाता है। अुन्हें न सिर्फ अपना नाम रखना है, बल्कि यूनियनमें वे जिनके नुमाअिन्दा हैं अुनका और पाकिस्तानका भी, जिसने अुन्हें यह सब आश्वासन दिया, नाम रखना है। मैं यह भी कह दूं कि वे भाअी मुझसे मिलते रहते हैं। आज भी वे आये थे। मगर मेरा मौन था और मैं अपनी प्रार्थनाका भाषण लिख रहा था, अिसलिअे अुनसे मिल न सका। अुन्होंने मुझे संदेशा भेजा है कि वे निकम्मे नहीं बैठे हैं। अिस मिशनका काम कर रहे हैं। पत्र लिखनेवाले भाअीको मेरी सलाह है कि जरूरतसे ज्यादा शक न करें और बहुत ज्यादा नाजुक-बदन न बनें। विश्वास रखनेसे वे कुछ खोनेवाले नहीं हैं। अविश्वास आदमीको खा

जाता है। वे संभलकर चलें। मेरी तरफसे तो अितना ही कहना है कि मैंने जो कुछ किया है, अुसका मुझे अफसोस नहीं। मैंने तो सारी जिन्दगी खुली आंखोंसे विश्वास किया है। मैं अिन मुसलमान भाअियोंका भी तब तक विश्वास करूंगा, जब तक कि यह साबित नहीं हो जाता कि वे झूठे हैं। विश्वासमें से विश्वास निकलता है। अुससे दगाबाजीका सामना करनेकी ताकत मिलती है। अगर दोनों तरफके लोगोंको अपने घरोंको वापस जाना है, तो अुसका रास्ता वही है जो मैंने अख्तियार किया है और जिस पर मैं चल रहा हूं।

डर ठीक नहीं

पत्र लिखनेवाले भाअीकी यह शंका कि यह निमंत्रण हिन्दुओं और सिक्खोंमें फूट डलवानेकी चाल है ठीक नहीं है। मैंने मुसलमान भाअियोंसे कहा भी था कि अुनकी बातका अैसा खतरनाक अर्थ भी निकल सकता है। अुन्होंने जोरोंसे अिनकार किया कि अैसा कुछ मतलब अुसमें है ही नहीं। वापस जानेवालोंके लिअे रास्ता साफ करनेमें मैं कोअी बुराअी नहीं देखता। अिस बातसे अिनकार नहीं हो सकता कि पाकिस्तानमें सिक्खोंके सामने जहर ज्यादा है, मगर अिसमें भी शक नहीं कि हिन्दुओं और सिक्खोंको साथ साथ तैरना या डूबना है। अुनके मनमें कोअी बुरे अिरादे नहीं होने चाहिये। साजिशबाजोंके बीच अीमानदारीका भाअीचारा नहीं हो सकता।

अखंड हिन्दुस्तानका नागरिक

पूर्व पाकिस्तानसे अेक भाअी लिखते हैं: "हिन्दुस्तानके दो टुकड़े हो जानेके बाद भी आप अपने आपको अेक हिन्दुस्तानका बाशिन्दा कैसे कहते हैं? आज तो जो अेक हिस्सेका है, वह दूसरेका नहीं हो सकता।" कानूनके पण्डित कुछ भी कहें, वे मनुष्योंके मन पर राज नहीं कर सकते। अिस मित्रको भी यह कहनेसे कौन रोक सकता है कि वह सारी दुनियाका बाशिन्दा है। कानूनकी दृष्टिसे अैसा नहीं है, और हरअेक मुल्कके कानूनके मुताबिक कअी मुल्कोंमें अुसे कोअी घुसने भी नहीं देगा। जो आदमी मशीन नहीं बन गया है, जैसे कि हममें से कअी लोग नहीं बने हैं, अुसे कानूनन हमारी क्या हस्ती है अिसकी फिक्र क्या? जब तक नैतिक दृष्टिसे हम सही रास्ते पर हैं, हमें फिक्र करनेकी जरूरत नहीं। हम सबको जिस

चीजसे बचना है, वह तो यह है कि हम किसी मुल्कके प्रति या किसी मुल्कके लोगोंके प्रति बैरभाव न रखें। मिसालके तौर पर, मुसलमानोंके प्रति या पाकिस्तानके प्रति बैरभाव रखकर कोअी भी पाकिस्तानका और यूनियनका बाशिन्दा होनेका दावा नहीं कर सकता। अगर अैसा बैरभाव आम तौर पर फैल जाय, तो दोनोंमें लड़ाअी ही होनेवाली है। हरअेक मुल्क अैसे बाशिन्दोंको, जो अपने मुल्ककी तरफ दुश्मनी रखते हैं और दुश्मन मुल्ककी मदद करते हैं, दगाबाज और बेवफा करार देगा। वफादारीके हिस्से या टुकड़े नहीं किये जा सकते।

९६

१६–१२–'४७

अंकुश हटानेका नतीजा

कहा जाता है कि खाने-पहननेकी चीजों पर जो अंकुश रहा है वह जा रहा है। अुसका परिणाम मेरे सामने ब्रजकिशनजीने रख दिया है। मैंने सोचा कि आपके सामने भी वह रख दूं। पहले गुड़ रुपयेका अेक सेर आता था अब आठ आने सेर मिलने लगा है। यह बड़ी बात है। कोअी कारण नहीं है कि अिससे भी कम दाम नहीं होने चाहिये। जब मैं लड़का था तब तो अेक आनेका सेर भर गुड़ आता था। अिसी तरह जो शक्कर पहले ३४ रुपये मन थी, वह अब २४ रुपये मन हो गअी है। मूंग, अुड़द और अरहरकी दाल अेक रुपयेकी १४ छटांक मिलती थी, वह अब रुपयेकी डेढ़ सेर हो गअी है। अिसी तरह चना २४ रुपये मन था और अब १८ रुपये मन हो गया है। गेहूं काले बाजारमें ३४ रुपये मन था, वह अब २४ रुपये मन हो गया है। यह सब मुझे अच्छा लगता है। मुझे लोग कहते थे कि 'आप अर्थशास्त्र नहीं जानते; भावकी चढ़-अुतर नहीं समझते। आप तो महात्मा ठहरे! आप कहते हैं कि अंकुश अुठा दो। मगर अुसका नतीजा भोगना पड़ेगा गरीबोंको। गरीबोंको मरना पड़ेगा।' मगर आज तो अैसा लगता है कि गरीबोंको मरना नहीं तरना है। बाजरे और मक्की परसे भी अंकुश अुठना चाहिये। बहुतसे लोग वही खाते हैं। डॉ० राजेन्द्रप्रसादने कहा है कि धीरे धीरे सब

अंकुश अुठ जायंगे। अूपरके आंकड़ों परसे लगता है कि वे अुठने ही चाहिये। दियासलाअीके आज बड़े अूंचे दाम हैं। कण्ट्रोल अुठने पर वे जरूर गिरेंगे। आज तो दियासलाअीका बकस अेक आनेका अेक आता है। पहले अेक आनेके १२ मिलते थे। दाम अगर बढ़ने हैं तो वे मेहनत करनेवालोंके घर जायं। मगर अिस कारणसे दाम बहुत नहीं बढ़ते। बहुत दाम बढ़नेका कारण होता है तिजारत करनेका पाजीपन। हमने बहुत आपत्तियां सहन कीं। अब आजादी आ गअी। अब तो हम कहीं न कहीं शुद्ध काम करें! शुद्ध कौड़ी कमावें! दाम बढ़नेका डर अिसलिअे रहता है कि हम पाजी हैं, दगाबाज हैं, ताजिर (व्यापारी) लोग शुद्ध कौड़ी क़माना नहीं जानते। यह सब कहते मुझे शर्म आती है। अैसी हालतमें पंचायत-राज कैसे कायम हो सकता है? हम सबको सिविल सर्विसके सिपाही बनना है। हम लोगोंके लिअे ही जिन्दा रहें, तो हमारे लोगोंमें जो अेक तरहका पाजीपन और दगाबाजी आ गअी है वह निकल जायेगी। हम सीधे हो जायंगे। मेरे पास कुछ तार आये हैं कि बम्बअीकी तरफ अंकुश अुठनेसे कुछ गोलमाल चलता है। दूसरी तरफसे तार आते हैं कि जो हुआ वह शुभ काम है। यह होना ही चाहिये था।

तनखाहें और सिविल सर्विस

मेरे पास शिकायत आती है कि सिविल सर्विस पर अितना खर्च क्यों किया जाता है? लेकिन सिविल सर्विस अेकदम हटा नहीं सकते। हटा दें तो काम कैसे चले? कुछ लोग तो चले गये। अिसलिअे जो लोग रह गये हैं अुनसे ज्यादा काम लेना पड़ता है। सरदार पटेलने अुन्हें धन्यवाद भी दिया है। जो लोग धन्यवादके लायक हैं अुन्हें धन्यवाद मिले, तो मुझे कोअी शिकायत नहीं हो सकती। मगर सच्ची सिविल सर्विस तो हम लोग हैं। हम जितना विश्वास सिविल सर्विसके लोगों पर रखते हैं, अुतना अगर अपने आप पर रखें तो हम बहुत आगे बढ़ सकते हैं। अगर हम दगा करें तो जैसे सिविल सर्विसको सजा होती है वैसे ही हमें भी सजा हो। अमुक काम सौंपकर कहा जाय कि अितना काम आपको करना ही है। अिस तरह सारी प्रजाको हम जिम्मेदार समझते हैं। जिन्हें पार्लमेन्टरी सेक्रेटरी बनाते हैं, अुन्हें भी दरमाहा देना

पड़ता है और सिविल सर्विसवालोंको भी। जब कांग्रेसके हाथमें करोड़ोंका क़ारोबार नहीं था, तब तो हम किसीको दरमाहा नहीं देते थे। दरमाहा देना, मकान देना और पार्लमेन्टरी सेक्रेटरी बनाना, यह मुझे तो चुभता है। कांग्रेसका काम हमेशा सेवा करना रहा है। पहले हमें आजादी हासिल करनी थी। अब हिन्दुस्तानको अूंचा अुठाना है। यह देखना है कि हिन्दू, सिक्ख, मुसलमान, पारसी, अीसाअी सब लोग यहां शान्तिसे रहें। अिस कामके लिअे हम क्या पैसे दें? आज तक नहीं देते थे तो अब कैसे दें? १४ अगस्तके बाद हमने देशको कितना आगे बढ़ाया है? कितना पानी गिरा? कितनी अुपज बढ़ी? कितने अुद्योग बढ़े? अिसका हिसाब तो लीजिये। पैसे क्या कर सकते हैं? हिन्दका काम बढ़े, नाम बढ़े और दाम बढ़े तब तो बात है। तब देहाती भी महसूस करेंगे कि कुछ हो रहा है। अैसा न हो और हम खर्च बढ़ाते जायं यह कैसे हो सकता है? हर पेढ़ीको अपनी आमदनी और खर्चका हिसाब रखना पड़ता है। आमदनी खर्चसे ज्यादा हो तो अच्छा लगता है। लेकिन अिससे अुलटी बात हो तो चिन्ता होती है। हिन्दुस्तान अेक बड़ी पेढ़ी है। आज हमारे पास पैसे हैं अिसलिअे हम नाचते हैं। मगर हम संभलकर नहीं चलेंगे तो वे रहनेवाले नहीं हैं।

९७

१७–१२–’४७

जबरदस्तीसे कब्जा

अेक भाअी, जो सियालकोटमें रहते थे, लिखते हैं कि पहले तो पंजाब अेक था; सो अुनका मकान पूर्व पंजाबमें था और वे व्यापार पश्चिम पंजाबमें करते थे। पश्चिम पंजाबसे अुन्हें भागना पड़ा। पूर्व पंजाबमें आकर देखा कि अुनके मकानमें सरकारी अमलदार रहते हैं। अुन्होंने बहुत कोशिश की कि मकान खाली हो जाय। पर यह हो न सका। अुन्हें अपने घरमें सिर्फ दो कमरे रहनेको मिले। वे पूछते हैं — क्या हुकूमतको अुनका मकान खाली करवानेमें अुनकी मदद नहीं करनी चाहिये? क्या यह अच्छा होगा कि अिसके लिअे अुन्हें कोर्टमें

जाना पड़े? मैं मानता हूं कि हुकूमतको अुनका मकान खाली करवानेमें अुनकी मदद करनी चाहिये, ताकि अुन्हें कोर्टमें जानेकी जरूरत न पड़े। मकानमें रहनेवाले भाअी सरकारी अमलदार हैं, अिसलिअे अुनका मकान खाली करवाना सरकारके लिअे आसान होना चाहिये। यहां भी दुःखी लोग मकानोंका कब्जा ले बैठे हैं। ताला भी तोड़ लेते हैं। मकान-मालिक अपने मकानमें रहना चाहे, तब कोअी सरकारी अमलदार अुसमें कैसे रह सकते हैं? शरणार्थी मनमें आवे वैसा करने बैठ जाते हैं। और, अगर वह मकान मुसलमानका हुआ तब तो कहना ही क्या? लेकिन अैसा करके वे न अपना भला करते हैं, न हिन्दुस्तानका। चोरी, लूटमार वगैरा करके क्या कभी किसीका भला हो सकता है?

मीठी बातें

लोग मुझे रोज सुनाते हैं कि पाकिस्तानवाले मीठी बातें भले करें, मगर वहां कोअी हिन्दू या सिक्ख अिज्जत-आबरूके साथ नहीं रह सकता। अगर अैसा ही सिलसिला चलता रहा, तो पाकिस्तानमें कोअी हिन्दू-सिक्ख नहीं रह जायगा। आखिरमें मुसलमान आपस आपसमें लड़ेंगे। अिसी तरह हमारे यहांसे सब मुसलमान निकाले जायं तो वह भी बुरा है। हमने तो कभी कहा ही नहीं कि हिन्दुस्तान सिर्फ हिन्दुओंका ही है। आवाज अुठी थी कि मुसलमानोंके लिअे अलग जगह चाहिये। मगर अैसा किसीने नहीं कहा कि वहां मुसलमानोंके सिवा कोअी रह नहीं सकेगा। १५ अगस्त आअी। आवाज अुठी कि पाकिस्तानमें सबको रखना है। मुझे वह अच्छा लगा। पर अुस पर अमल न हो सका। दोनों तरफ खून-खच्चर वगैरा चलता रहे, तो आखिरमें दोनोंका संहार ही होना है।

लौटनेकी शर्तें

अेक दूसरे भाअी लिखते हैं कि "मुझे लाहौरसे भागना पड़ा। मगर जब आपने कहा कि सबको अपने घर लौटना ही है, तब मैं वापस पश्चिम पंजाबमें गया। वहां पर मेरी जमीन और मकान दूसरोंको मिल चुके थे। मैंने बहुत कोशिश की, मगर मुझे वे वापस नहीं मिल सके। अैसी हालतमें लोग कैसे वापस जा सकते हैं?" मैंने तो आज किसीको

कहा ही नहीं कि वापस जाना है। जब मौका आयेगा तब मुसलमान भाअी अुनके साथ जायेंगे, और जरूरत होगी तो मैं भी जाअूंगा। आज तो सब बात ही बात है। मगर हमेशा अैसा रहनेवाला नहीं। कहना अेक और करना दूसरा, यह कब तक चल सकता है? आज तो शरणार्थियोंको तैयारी ही रखना है। जब तक मैं यह न कहूं कि फलानी तारीखको जाना है, तब तक वे रवाना नहीं होंगे। मेरे मनमें नहीं था कि अितनी जल्दी वापस जानेकी बात भी निकल सकती है। निकली सो अच्छा लगता है। मगर फिजा बदलनेमें कुछ समय तो लगेगा ही। अभी तो तजवीज ही चल रही है। मेरी अुम्मीद है कि जब सब तैयारी हो जायेगी, तब पाकिस्तान-वाले गाड़ी भेजकर कह देंगे कि अितने हजार आदमी आवें।

पूर्व अफ्रीकाके हिन्दुस्तानी

अब पूर्व अफ्रीकाकी बात करूंगा। वहां नैरोबी नामका अेक शहर है। अुसे बनानेमें सिक्खोंने बड़ा हिस्सा लिया है। सिक्ख जैसे-तैसे लोग नहीं, बड़ी काबिल कौम है। वे मेहनत करनेवाले हैं। वहां खूब मेहनत करके अुन्होंने रेलें बनाअीं, मगर अब वहां जा नहीं सकते। मजदूरी कर सकते हैं, मगर वहां रह नहीं सकते। अिस बारेमें वहां कानून भी बना है। अभी वह पास नहीं हुआ। अुस कानूनमें हिन्दुस्तानियोंके हक बहुत कम कर दिये हैं। पंडित जवाहरलालजी तो फॉरेन मिनिस्टर और प्राअिम मिनिस्टर हैं। अुनको वहांके हिन्दुस्तानियोंने तार दिया है और अुस तारकी नकल मुझे भेजी है। वे लिखते हैं कि हिन्दुस्तानके आजाद होनेके बाद भी हिन्दुस्तानियोंके अैसे हाल हो सकते हैं? मोम्बासा ब्रिटिश लोगोंकी हुकूमतमें है। वहां हिन्दुस्तानियोंका यह हाल क्यों? पूर्व अफ्रीकामें हमारे काफी ताजिर (व्यापारी) पड़े हैं। हिन्दू और मुसलमान दोनों हर जगहसे वहां गये हैं। अुन लोगोंने पैसा भी काफी कमाया है। लेकिन हबशी लोगोंके साथ तिजारत करके कमाया है, लूटकर नहीं। अंग्रेजोंसे और यूरोपके-दूसरे लोगोंसे पहले हमारे लोग वहां गये थे। अुन्होंने वहां बड़े बड़े मकान बांधे, तिजारत बनाअी। वे सबके साथ मिल-जुल कर रहे। अुन्होंने हमेशा शुद्ध कौड़ी ही कमाअी, अैसा नहीं कहा जा सकता। मगर अुन्होंने किसी पर जबरदस्ती भी

नहीं की। वे लिखते हैं कि यह बिल रुकना चाहिये। मैं भी मानता हूं कि वह रुकना चाहिये। मगर अुसे रोकनेकी आज हमारी ताकत नहीं। आपसमें दुश्मनी करके हम आज अपनी शक्तिको क्षीण कर रहे हैं। हमारे पास अेक ही बल है। वह है हमारा नैतिक बल। अुसे खोकर हम कहां जावेंगे? राक्षसी बलके सामने दैवी बल ही टिक सकता है। मैं आशा रखता हूं कि पूर्व अफ्रीकाकी सरकार समझ जायेगी कि अुसे हिन्दुस्तानको दुश्मन नहीं बनाना चाहिये। जवाहरलालजीसे तो जो हो सकेगा वह सब करेंगे ही।

९८

१८-१२-'४७

भ्रमसे भरी दलील

आज मेरे पास अेक खत आया है। अुसीके बारेमें आपसे बात करना चाहता हूं। खत लिखनेवाले भाअी मुझसे पूछते हैं: "आपने तो कहा है कि हिन्दुस्तान सबका मित्र है। तब आप अंग्रेजों और मुसलमानोंमें फर्क कैसे करते हैं? अंग्रेजीका आप विरोध करते हैं और अुर्दूका पक्षपात। आपका प्रार्थना-सभामें यह कहना कि आपको दुःख होता है कि लोग अभी भी आपको अंग्रेजीमें लिखते हैं मुझे चुभता है। मुझे अिससे दुःख होता है। आपने कहा है कि क्या सर तेज-बहादुर सप्रू अुर्दू भूल सकते हैं? लेकिन मैं आपसे कहता हूं कि मद्रासकी तरफ करीब करीब सब लोग अंग्रेजी जानते हैं। क्या वे अंग्रेजी भूल सकते हैं?" दुःखका कारण आम तौर पर आदमीकी बेखबरी और अज्ञान होता है। अिन भाअीके प्रश्नोंसे मुझे आश्चर्य हुआ। मैंने कहा है कि हम सारी दुनियाके मित्र हैं और सारी दुनिया हमारी मित्र है। लेकिन अिसके साथ भाषाका क्या सम्बन्ध है? वे पूछते हैं कि अगर मुझे अुर्दूका अेतराज नहीं तो अंग्रेजीका क्यों? यह प्रश्न भारी अज्ञानका सूचक है। अुर्दूका मैं विरोध नहीं करता यह सही है। अुर्दू अंग्रेजीकी तरह परदेशी भाषा नहीं। वह तो यहीं बनी है और मुझे अिस बातका

फख्र है। अुर्दू मुगलोंके वक्त फौजकी भाषा थी। फौजमें जो हिन्दू-मुसलमान थे वे हिन्दुस्तानी थे। मुगल बादशाह बाहरसे आये थे, मगर हिन्दुस्तानके हो गये थे। हमें प्रान्तीय भाषाओंको मिटाना नहीं, अुन्हें भव्य बनाना है। मगर अुसके साथ साथ हमारी राष्ट्रभाषा क्या होगी यह भी सोचना है। हिन्दुस्तानमें १४ भाषाअें चलती हैं। अिनके सिवा, कअी दूसरी भाषाअें भी बोली जाती हैं, जो अितनी आगे नहीं बढ़ी हैं। अलग अलग प्रान्तोंको आपसमें व्यवहार करनेके लिअे कौनसी भाषाका आश्रय लेना होगा? मैं जब बैरिस्टर होकर आया था तब तो लड़का ही था। दो बरस हिन्दुस्तानमें रहकर दक्षिण अफ्रीका चला गया और वहां २० बरस रहा। जबसे मैं दक्षिण अफ्रीकासे हिन्दुस्तान लौटा, तभीसे कहता रहा हूं कि हमारी राष्ट्रभाषा वही हो सकती है, जिसे हिन्दू और मुसलमान बोलते हैं और अुर्दू और नागरी लिपिमें लिखते हैं। अंग्रेजी कभी हमारी राष्ट्रभाषा नहीं हो सकती। मैं अुर्दू लिपिका समर्थन करता हूं और अंग्रेजीका नहीं, अिसमें आश्चर्य क्या हो सकता है? तुलसीदासकी भाषाको आप मूल अुर्दू भाषा कह सकते हैं। बादमें अुसमें अरबी-फारसी शब्द भर दिये गये। तुलसीदासके हम सब भक्त हैं। तुलसीदासने जो लिखा, सो आपके लिअे लिखा, मेरे लिअे लिखा। अुन्होंने अरबी-फारसीके शब्द भी लिये। मगर वे शब्द आम तौर पर प्रचलित थे।

निरा अज्ञान

लाला लाजपतराय पंजाबके शेर थे। वे चले गये। मैं अुनका मित्र था। मैं अकसर अुनसे मजाक किया करता था कि तुम हिन्दी कब बोलोगे और देवनागरी कब लिखोगे? वे जवाब देते थे कि यह होनेवाला नहीं है। वे आर्यसमाजी थे। अुनके घरमें हमेशा हवन होता था। अुर्दूके वे बड़े विद्वान थे। शीघ्रतासे लिख सकते थे। घंटों तक अुर्दू और अंग्रेजीमें बोल सकते थे। पर हिन्दी नहीं जानते थे। अुनके साथ बात करते समय मुझे चुन चुनकर अरबी-फारसीके शब्द अिस्तेमाल करने पड़ते थे। अैसा नहीं है कि मुसलमान मेरे ज्यादा दोस्त हैं और हिन्दू कम। मेरे पास सब समान हैं। जो मेरे लड़के-लड़की माने जाते

हैं, वे अुतने ही मेरे प्यारे हैं जितने कि देशके दूसरे लड़के-लड़की। धर्म हमें यही सिखाता है। यह सीधी बात है। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलनका मैं दो बार सभापति बना था। वहां भी मैंने अंग्रेजीका विरोध किया था। लोगोंने तालियां बजाअी थीं। आज मैं जब अुर्दूका पक्ष लेता हूं, तो कम हिन्दू नहीं हो जाता। जो अुर्दूका द्वेष करते हैं और अंग्रेजीका पक्षपात करते हैं वे कम हिन्दू हैं। अंग्रेजोंके जमानेमें भी मैं वही बातें करता था। मैं न तो अंग्रेजोंका दुश्मन हूं और न अंग्रेजीका। मगर सब चीजें अपनी अपनी जगह पर अच्छी लगती हैं। अंग्रेजी दुनियाकी और व्यापारकी भाषा है, हमारी राष्ट्रभाषा नहीं। अंग्रेजी राज तो यहांसे गया, लेकिन अंग्रेजी भाषाका और अंग्रेजी सभ्यताका असर नहीं गया। यह बड़े दुःखकी बात है। पत्र लिखनेवाले भाअी मद्रासको जानते नहीं। यहांके बनिस्बत वहां ज्यादा लोग अंग्रेजी जानते हैं। मगर मैं बहुत दिनों पहले जब मद्रास गया था तब महात्मा नहीं बना था। तांगेवाला मेरी अंग्रेजी नहीं समझा, मगर मेरी टूटी-फूटी हिन्दुस्तानी समझकर वह मुझे नटेसनजीके घर पर ले गया था। दक्षिणमें मुख्यतः चार भाषाअें चलती हैं—तामिल, तेलगू, मलयालम और कन्नड़। मगर सब जगह टूटी-फूटी हिन्दुस्तानीसे काम चल जाता है। तो लोग मुझे राष्ट्रभाषामें लिखें, प्रान्तीय भाषामें लिखें। अंग्रेजीमें क्या लिखना? हिन्दुस्तानी अुर्दू और हिन्दीके संगमसे बनती है, जैसे कि गंगा-जमुनाके संगमसे त्रिवेणी बनती है। अुर्दूका अर्थ है अरबी और फ़ारसीसे भरी भाषा। हिन्दी संस्कृतसे भरी भाषा है। हिन्दुस्तानीमें सब प्रचलित शब्द होते हैं। व्याकरण तो अेक ही (हिन्दी) होगा। हिन्दुस्तानीमें अरबी, फारसी और संस्कृतके प्रचलित शब्द आयेंगे। अुसमें अंग्रेजीके शब्द भी आयेंगे, जैसे रेलगाड़ी, कोर्ट वगैरा। अुससे हमें नफरत नहीं। लेकिन हिन्दुस्तानी जाननेवाला अगर मुझे अंग्रेजीमें लिखे, तो अुसके खतको मैं फेंक दूंगा। मेरा लड़का मुझे अंग्रेजीमें लिखे, तो अुसके खतको फेंक दूंगा। मगर अंग्रेज तो अंग्रेजीमें लिखेंगे ही। अैसी सादी और सरल बातको हम क्यों नहीं समझ सकते? कारण यह है कि हम अपना धर्म-कर्म सब भूल गये हैं। जो विकृति पैदा हो गअी है, अुससे हमें अीश्वर बचावे।

अजमेरमें जो कुछ हुआ अुसे आप याद करें। यहां मुसलमानोंको मारकर हम हिन्दू धर्मकी रक्षा नहीं कर सकेंगे। मैं दो चार दिनका मेहमान हूं। बादमें आप लोग मेरी बातोंको याद करेंगे। अगर मुसलमान कहें कि पाकिस्तानमें मुसलमानोंके सिवा कोअी नहीं रहेगा, तो वे अिस्लामको दफना देंगे। अिसी तरह अगर बाअिबलको माननेवाले अीसाअी या कुरानको माननेवाले मुसलमान कहें कि हम ही अहले-किताब हैं तो यह बात गलत है। सब धर्म भलाअी सिखाते हैं, बुराअी और दुश्मनी नहीं।

९९

१९–१२–'४७

जसरा गांवका दौरा

आज मैं गुड़गांवकी तरफ गया था। वहां पर मेव लोग पड़े हैं। कुछ अलवरसे जबरन भगाये गये हैं, कुछ भरतपुरसे। अुनकी मस्जिदें वगैरा ढा दी गअी हैं। डॉ० गोपीचन्द भार्गव भी मेरे साथ गये थे। अुन लोगोंने अपनी कहानी सुनाअी। हिन्दू भी काफी थे। देखनेमें अैसा लगता था कि अिनमें कुछ वैमनस्य है ही नहीं। मगर वह है। मेव लड़ाके होते हैं, मगर अब डर गये हैं। कअी पाकिस्तान चले गये हैं। कअी अिस सोचमें हैं कि अुन्हें जाना चाहिये या रहना चाहिये। डॉ० गोपीचन्दने अुन्हें सुना दिया कि जो रहना चाहते हैं वे जरूर रह सकते हैं। जहां तक मैं समझता हूं और जिन्दा हूं, मुझसे तो यह बरदाश्त ही नहीं होनेवाला है कि लाखों लोग अपना घर छोड़कर बेघर बने रहें। लाखोंको दोनों तरफसे घर छोड़कर भागना पड़ा यह वहशियाना बात थी। किसने शुरू किया, किसने ज्यादा किया, अिसका खयाल छोड़ दें; नहीं तो दुश्मनी मिट ही नहीं सकती। मजबूरीसे किसीको भागना न पड़े, अितना ही आपको देखना है। जो डर गये हैं और जाना चाहते हैं वे भले जावें। वहां कअी बहनें भी थीं। किसीके पास तम्बू है, तो

किसीके पास नहीं। वे वापस तो तभी जा सकते हैं, जब अलवर और भरतपुरके लोग अुन्हें बुला लें। कअी लोग कहते हैं कि मेव लोग तो गुनाह करनेवाले हैं। अगर अैसा हो भी तो क्या गुनाह करनेवालोंको मार डालेंगे? सीधा रास्ता तो अुन्हें सुधारना और शराफत सिखाना है।

कीमतें और अंकुशका हटना

अेक भाअीका तार है कि आपने तो कहा था कि चीनीका भाव गिर गया है, मगर यहां तो बढ़ा है। अुसका जवाब यह है कि किसी जगह पर खास कारणसे भाव भले बढ़ा हो, मगर दूसरी जगहों पर कम हुआ है। दिल्लीमें शक्करका भाव कम हुआ है। शक्कर तो चीनीसे अच्छी होती है।

पेट्रोल पर अंकुश

अेक जगहसे दूसरी जगह माल ले जानेमें कठिनाअी होती है। डॉ० मथाअी कहते हैं कि अुनके पास माल ढोनेके डिब्बों और कोयलेकी कमी है। ये दिक्कतें दूर करनेकी कोशिश हो रही है। आश्चर्यकी बात है कि जब रेल नहीं थी, तब हमारा काम चलता था। मगर अब रेल है, मोटर है, हवाअी जहाज है, तो भी हमारे हाथ-पांव फूल जाते हैं। रेलके अलावा लोगोंको और सामानको अिधर-अुधर ले जानेका जरिया मोटर है। मगर मोटर तो पेट्रोलसे ही चल सकती है। और पेट्रोल पर अंकुश है। पेट्रोलका अंकुश अुठा दिया जाय, तो लारियोंवाले लारियां चला सकते हैं। नमकका कण्ट्रोल हटा, मगर नमकका भाव बढ़ा। आज नमक मिलना मुश्किल हो गया है। अैसा ही पेट्रोलके बारेमें हो सकता है। मगर मुझे तो अुसमें हर्ज नहीं है। पेट्रोल अैसी चीज नहीं जिसकी सबको जरूरत हो। और लारियां चलने लगें तो नमककी कमी पूरी हो सकती है। अेक पर कण्ट्रोल रखना और अेक पर नहीं, यह चल नहीं सकता। हमें अेक ही नीति रखनी चाहिये और देखना चाहिये कि लोग क्या करते हैं। काले बाजारमें तो पेट्रोल सबको मिलता ही है। कअी लोग अुसे कालाबाजार कहते भी नहीं, क्योंकि वह तो दिन-दहाड़े चलता है। पेट्रोलके पीछे खूब रिश्वतखोरी चलती है।

सैकड़ों रुपये अफसरोंको देने पड़ते ह। अेक बुराअीमें से अनेक बुराअियां निकलती हैं। पेट्रोल खानेकी चीज नहीं। हरअेकके अुपयोगकी चीज नहीं। हुकूमतको अपने कामके लिअे जितने पेट्रोलकी जरूरत है अुतना रख ले और बाकी पर अंकुश हटा दे। परिणाममें अगर बाजारमें पेट्रोल बिकना बन्द हो जाय, तो अुससे मुझे कोअी अफसोस न होगा। हिन्दुस्तानका कारोबार अुससे बन्द होनेवाला नहीं है। हिन्दुस्तान मर नहीं जायगा; जिन्दा ही रहेगा।

मिश्र खाद

हमारे यहां पूरी खुराक पैदा नहीं होती, क्योंकि हमारी जमीनको पूरा खाद नहीं मिलता। हम खाद बाहरसे लाते हैं। अुससे रुपया बरबाद होता है। जमीन भी बिगड़ती है। मीराबहनने यहां अेक कान्फरेन्स बुलाअी थी। वह किसान बन गअी है। अुसे गाय प्रिय है। जितने अुसे आदमी प्रिय हैं, अुतने ही जानवर भी प्रिय हैं। गायको वह मित्र जैसी समझती है। अपनी खुराक छोड़कर अुसे खुराक देगी, सब तरहकी सेवा करेगी। अुसने कान्फरेन्सकी बात निकाली। पीछे अुसमें सर दातारसिंह और राजेन्द्रबाबू वगैरा भी आये। अुन्होंने कुछ प्रस्ताव पास करके बताया है कि यह खाद कैसे बन सकता है। लोग जानवरोंके मलको कचरेके साथ मिलाकर जब खाद बनाते हैं, तब पता नहीं चलता कि वह खाद है। अुसे हाथमें ले लो तो बदबू नहीं आती। कचरेमें से करोड़ों रुपये बन सकते हैं। वे लोग पैसेके प्रलोभनसे नहीं आये थे, सेवाभावसे आये थे। दो-तीन दिन बैठे। राजेन्द्रबाबू प्रधान थे। अुनके प्रस्तावोंका निचोड़ यह था कि हम कचरेमें से करोड़ों रुपये कैसे बना सकते हैं और अेक मनकी जगह दो मन, चार मन धान कैसे पैदा कर सकते हैं। मीराबहन चली गअी है। वह हरिद्वारके पास बैठकर यही काम करेगी। मैंने सोचा कि अिस बारेमें आपको भी बता दूं।

१००

२०-१२-'४७

बुजदिली छोड़ दीजिये

यह दुःखकी बात है कि दिल्लीमें थोड़े पैमाने पर फिर गोलमाल शुरू हो गया है। अगर यहांके हिन्दू और सिक्ख या पाकिस्तानसे आये हुअे दुःखी लोग यह नहीं चाहते कि मुसलमान यहां रहें, तो अुन्हें साफ साफ यह कह देना चाहिये। हुकूमतको भी साफ साफ कह देना चाहिये कि वह मुसलमानोंकी रक्षा नहीं कर सकती। हमारे लिअे यह शरमकी बात होगी। अिसमें हिन्दू धर्म और सिक्ख धर्मका अस्त है। अुसी तरह अगर पाकिस्तानमें हिन्दुओं और सिक्खोंको आरामसे रहने न दिया जाय तो अुसमें अिस्लामका अस्त है। हिन्दू धर्म तो हिन्दुस्तानमें ही है। दिल्लीसे बहुतसे मुसलमान तो भगा दिये गये हैं। जो बाकी हैं अुन्हें तरह तरहसे परेशान किया जाता है। यह बुरी बात है। अगर हम बहादुर बनें, शरीफ बनें, तो मुसलमान या किसीका भी डर रखनेकी जरूरत नहीं। आपने अभी भजनमें सुना — मीरा भक्तको देखकर खुश होती थी और जगतको देखकर रोती थी। भक्तको देखकर अुसके मनमें भी भक्ति पैदा होती थी। अगर आप भले हैं तो दूसरोंको भले बनना ही होगा। मुसलमान अगर कहें कि हिन्दू बुरे हैं, अुन्हें मारो-काटो, तो यह गलत है। अिसी तरह हिन्दू अगर मुसलमानोंको बुरे समझकर मार-काट करें तो वह भी गलत है। बुरा अपनी बुराअीसे खुद मर जायगा। यहां पर मुसलमान हिन्दुओंसे डरें और पाकिस्तानमें हिन्दू मुसलमानोंसे डरें, यह असह्य होना चाहिये। हमने बातें तो बड़ी बड़ी की हैं और आज भी करते हैं कि हमारे यहां सब आरामसे रह सकते हैं। मगर अैसा होता नहीं। अगर हमारी हुकूमतको सच्ची बनना है, तो सरकारी अफसरों और पुलिस वगैरा सबको ठीक तरहसे चलना होगा। आज तो हुकूमतकी जो बागडोर हमारे हाथमें आ गअी है वह छूट रही है।

ग्रामोद्योग

मगर आज मैं आपसे ग्रामोद्योगके बारेमें बात करना चाहता हूं। जब मैं हरिजन-बस्ती जाता था तब वहां ग्रामोद्योग-संघकी भी सभा हुआी थी। अुस बारेमें मैं आपको कुछ कह नहीं सका। मैंने कआी बार कहा है कि चरखा मध्यबिन्दु है, सूर्य है और दूसरे ग्रामोद्योग अुसके अिर्द-गिर्द घूमनेवाले ग्रह हैं। अगर सूर्य नहीं चलता तो ग्रह नहीं चल सकते। आपके झंडेमें चक्र है। अुसे सुदर्शन चक्र कहो या अशोकका धर्मचक्र कहो, वह चरखेकी निशानी है। जैसे सूर्य न हो तो ग्रह नहीं रह सकते, अुसी तरह मैं मानता हूं कि अगर ग्रह न रहें तो सूर्यको भी कुछ न कुछ नुकसान होगा। मगर अिसे मैं वैज्ञानिक दृष्टिसे सिद्ध नहीं कर सकता।

ग्रामोद्योग-संघ चला तो कांग्रेसकी तरफसे, मगर वह है स्वावलम्बी। चक्कीका अुद्योग बन्द होनेसे आज अच्छा आटा नहीं मिलता। क्या सब जगहों पर आटा पीसनेकी मशीन जायगी? क्यों जाय? दिल्लीके आसपास बहुतसे देहात हैं। दिल्लीको अुनका आश्रय लेना है और अुनको आश्रय देना है। तब वह खूबसूरत चीज बन जाती है और दोनों अेक-दूसरेको समृद्ध बनाते हैं। सुनता हूं कि दिल्लीमें बहुतसे कारीगर मुसलमान थे। अुनके जानेसे लोगोंको बहुत कठिनाआी हो रही है। पानीपतमें बहुतसे मुसलमान कम्बल बनानेका काम करते थे। अुनके जानेसे वह अुद्योग भी अस्त-सा हो गया है। नये हिन्दू कारीगर वह धन्धा नये सिरेसे सीखें तबकी बात तब है। कआी धन्धे आम तौर पर हिन्दू करते थे, कआी मुसलमान। दोनों तरफसे कारीगरोंके चले जानेसे हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों आज डूब रहे हैं।

पूंजी और मेहनत

कल मैंने आपको खादकी बात सुनाआी थी। गोबर, कचरे, मनुष्यके मल वगैरामें से खूबसूरत और सुगन्धित खाद मिल सकता है। अुसे आप संदूकमें रख सकते हैं। जैसे धूलसे सन्दूक नहीं बिगड़ता, वैसे अिससे भी नहीं बिगड़ता। यह सुनहली चीज है। धूलमें से धान पैदा करनेकी बात है। दिल्लीमें से ही कितना कचरा अिकट्ठा होता

है? मगर दिल्ली तो अेक शहर है। हिन्दुस्तानके ७ लाख देहातोंमें पशु और अिन्सान मैला निकालते हैं। अपनी जगह पर वह सुनहली चीज है। खाद बनाना भी अेक ग्रामोद्योग है। चरखा ग्रामोद्योग है। वह तभी चल सकता है, जब करोड़ों अुसमें हिस्सा लें, मदद दें। तभी बड़ा नतीजा आ सकता है। यह पूंजी और श्रमका बुनियादी भेद है। हरिजन-सेवक-संघ, ग्रामोद्योग-संघ, गोसेवा-संघ, तालीमी संघ, चरखा-संघ सब गरीबोंकी सेवाके लिअे हैं। पंचायत-राज हिमालयसे नहीं अुतरनेवाला है। जनता अुसकी नींव है। नींव मजबूत हो तभी अुस पर बड़ा मकान बन सकता है। अिन पांचों संघोंका काम करके आपको यह नींव मजबूत करनी है। नहीं तो आज यादवी तो चल ही रही है। यादव आपस आपसमें लड़ मरे थे। यादव-स्थलीको रोकना है तो आपको रचनात्मक कार्यक्रम पर जोर देना चाहिये।

१०१

२२-१२-'४७

धार्मिक स्थलोंको बिगाड़ा न जाय

यहांसे आठ-दस मीलके फासले पर महरोलीमें कुतबुद्दीन बख्तियार काकी चिश्तीकी दरगाह है। वह पवित्रतामें अजमेरकी दरगाहसे दूसरे नम्बर पर मानी जाती है। अिन दरगाहों पर न सिर्फ मुसलमान जाते थे, बल्कि हजारों हिन्दू और दूसरे गैर-मुस्लिम भी वहां पूज्य भावसे जाया करते थे। पिछले सितम्बरमें यह दरगाह हिन्दुओंके गुस्सेका शिकार बनी। आसपासमें रहनेवाले मुसलमान अपने ८०० साल पुराने घरोंको छोड़ने पर मजबूर हुअे। अिस किस्सेका जिक्र करनेका कारण अितना ही है कि दरगाहके प्रति वफादारी और प्रेम रखते हुअे भी वहां कोअी मुसलमान नहीं है। हिन्दुओं, सिक्खों, वहांके सरकारी अफसरों और हमारी सरकारका यह फर्ज है कि वे जल्दीसे जल्दी पहलेकी तरह अुस दरगाहको खोलकर यह कलंकका टीका धो डालें। यह चीज दिल्लीमें और दिल्लीके अिर्द-गिर्दके मुसलमानोंकी सब धार्मिक जगहोंको लागू होती है। वक्त आ गया है कि दोनों तरफकी सरकार सख्तीके साथ

अपनी-अपनी अकसरियत (बहुमत) के सामने यह साफ कर दे कि अब धार्मिक स्थलोंका अपमान बरदाश्त नहीं किया जायगा, चाहे वह स्थल छोटा हो, चाहे बड़ा। अिन स्थलोंको जो नुकसान किया गया है, अुसकी मरम्मत होनी चाहिये।

यूनियनके मुसलमानोंका फर्ज

मुस्लिम लीगकी सभाने कराचीमें जो फैसला किया है, अुसे देखते हुअे मुसलमान मुझे पूछते हैं कि जो लोग लीगके मेम्बर हैं वे जो सभा लखनअूमें मौलाना आजाद बुला रहे हैं अुसमें जावें या न जावें? क्या मुस्लिम लीगके मेम्बरोंकी जो सभा मद्रासमें होनेवाली है अुसमें भी वे जावें? हर हालतमें यूनियनमें रहनेवाले मुस्लिम लीगके मेम्बरोंका क्या रवैया होना चाहिये? मेरे दिलमें कोअी शक नहीं कि अगर अुन्हें व्यक्तिगत या जाहिर निमंत्रण मिले, तो अुन्हें लखनअूकी मीटिंगमें जाना चाहिये; और मद्रासकी मीटिंगमें भी। दोनों जगह अुन्हें अपने विचार निर्भयतासे और खुली तरह जाहिर करने चाहिये। अगर अुन्होंने पिछले ३० सालमें हिन्दुस्तानकी अहिंसाकी लड़ाअीका अभ्यास किया है, तो अुन्हें अिस बातसे घबराहट नहीं होनी चाहिये कि यूनियनमें वे अकलियत (अल्पमत)में हैं, और पाकिस्तानकी अकसरियत (बहुमत) अुनकी कोअी मदद नहीं कर सकती। यह चीज समझनेके लिअे अुन्हें अहिंसामें विश्वास रखनेकी जरूरत नहीं कि अकलियतको, चाहे वह कितनी ही छोटी क्यों न हो, अपनी अिज्जत और अिन्सानको जो भी प्रिय और निकट लगता है अैसा सब कुछ बचानेके लिअे डर रखनेका कभी कोअी कारण नहीं रहा। अिन्सान अैसा बना है कि अगर वह अपने बनानेवालेको समझ ले और यह समझ ले कि मैं अुसी भगवानका प्रतिबिम्ब हूं, तो दुनियाकी कोअी ताकत अुसके स्वमानको छीन नहीं सकती। अुसके स्वमानका हनन अगर कोअी कर सकता है तो वह खुद ही कर सकता है। जिन दिनों मैं ट्रान्सवालकी जबरदस्त हुकूमतके साथ लड़ रहा था, मेरे अेक अंग्रेज मित्रने मुझे जोहानिसबर्गमें कहा — "मैं हमेशा अकलियतका साथ देना पसन्द करता हूं, क्योंकि अकलियत आम तौर पर गलती नहीं करती है। और करती भी है तो अुसे सुधारा जा सकता है। मगर अकसरि-

यतको सत्ताका मद होता है, अिसलिअे अुसे सुधारना कठिन होता है।" अगर अकसरियतसे हथियारोंकी अेकतरफा ताकतका मतलब हो, तो भी अिस दोस्तकी बात सही थी। हम अपने कड़वे अनुभव परसे जानते हैं कि मुट्ठीभर अंग्रेज कैसे यहां हथियारोंकी ताकतसे अकसरियत बने बैठे थे और सारे हिन्दुस्तानको दबाये हुअे थे। हिन्दुस्तानके पास हथियार नहीं थे, और रहते तो हिन्दुस्तानी अुनका अिस्तेमाल नहीं जानते थे। यह दुःखकी बात है कि हमारे मुल्कमें अंग्रेजोंकी हुकूमतसे हिन्दुओं और सिक्खोंने पाठ नहीं सीखा। यूनियनके मुसलमानोंको पश्चिम और पूर्वमें अपनी अकसरियतका झूठा घमण्ड था। आज वे अुस बोझसे मुक्त हो गये हैं। अगर वे अकलियतमें रहनेके गुणोंको समझेंगे, तो वे अपने तरीकेसे अिस्लामकी खूबियोंका प्रदर्शन कर सकेंगे। अुन्हें याद रखना चाहिये कि अिस्लामका अच्छेसे अच्छा जमाना हजरत मुहम्मदके मक्केके दिनोंमें था। कान्सटेनटेनकी शाहंशाहीके वक्तसे अीसाअी धर्मका अस्त होने लगा। मगर अिस दलीलको यहां मैं लम्बाना नहीं चाहता। मेरी सलाहका आधार मेरा पक्का अकीदा है। अिसलिअे अगर मेरे मुस्लिम मित्रोंके मनमें अिस चीज पर विश्वास नहीं है, तो बेहतर होगा कि वे मेरी सलाहको फेंक दें।

कांग्रेसके बन जाअिये

मेरी रायमें अुन्हें कांग्रेसमें आनेके लिअे तैयार रहना चाहिये। मगर जब तक कांग्रेसमें अुनको हार्दिक स्वागत न मिले और समानताका बरताव न मिले, तब तक वे कांग्रेसमें भर्ती होनेकी अर्जी न करें। सिद्धान्तके तौर पर तो कांग्रेसमें अकसरियत और अकलियतका सवाल अुठता ही नहीं। कांग्रेसका कोअी धर्म नहीं, अेकमात्र मानवताका धर्म है। अुसमें हरअेक स्त्री-पुरुष समान है। कांग्रेस धर्मके आधार पर खड़ी न की गअी अेक शुद्ध राजनीतिक संस्था है, जिसमें सिक्ख, हिन्दू, मुसलमान, अीसाअी, पारसी, यहूदी सब बराबर हैं। कांग्रेस हमेशा अपने कहने पर अमल नहीं कर सकी। अिससे कभी कभी मुसलमानोंको लगा है कि वह तो मुख्यतः सवर्ण हिन्दुओंकी ही संस्था है। जो भी हो, जब तक खींचतान जारी है, मुसलमान बाअिज्जत अलग खड़े रहें।

जब अुनकी सेवाओंकी कांग्रेसको जरूरत होगी वे कांग्रेसमें आ जावेंगे। अुस वक्त तक जिस तरह मैं कांग्रेसका हूं, वे कांग्रेसके रहें। कांग्रेसका चार आनेका मेम्बर न होते हुअे भी कांग्रेसमें मेरी हैसियत है, तो अिसका कारण यह है कि जबसे १९१५ में मैं दक्षिण अफ्रीकासे आया हूं, मैंने वफादारीसे कांग्रेसकी सेवा की है। हरअेक मुसलमान आजसे अैसा कर सकता है। तब वे देखेंगे कि अुनकी सेवाओंकी भी अुतनी ही कदर होती है जितनी कि मेरी सेवाओंकी।

आज हरअक मुसलमान लीगवाला और अिसलिअे कांग्रेसका दुश्मन समझा जाता है। बदकिस्मतीसे लीगका शिक्षण ही अैसा रहा है। आज तो दुश्मनीका तनिक भी कारण नहीं रहा। कौमवादके जहरसे मुक्त होनेके लिअे चार महीनेका अरसा बहुत छोटा अरसा है। अिस दुःखी देशका दुर्भाग्य देखिये कि हिन्दुओं और सिक्खोंने जहरको अमृत समझ लिया और लीगी मुसलमानोंके दुश्मन बने। अींटका जवाब पत्थरसे देकर अुन्होंने कलंकका टीका मोल लिया और मुसलमानोंके बराबर हो गये। मेरा मुसलमान अकलियतसे अनुरोध है कि वे अिस जहरीले वातावरणसे अूपर अुठें, अुनके बारेमें जो वहम भर गये हैं अुन्हें अपने आदर्श बरतावसे गलत सिद्ध करें और बता दें कि यूनियनमें अिज्जत-आबरूसे रहनेका अेक यही तरीका है कि वे मनमें किसी तरहकी चोरी न रखकर हिन्दुस्तानके शहरी बनें।

अिसमें से यह परिणाम निकलता है कि लीग राजनीतिक संस्थाके रूपमें नहीं रह सकती। अिसी तरह हिन्दू-महासभा, सिक्ख-सभा और पारसी-सभा भी नहीं रह सकतीं। धार्मिक संस्थाओंके रूपमें वे भले रहें। तब अुनका काम अन्दरूनी सुधार करना होगा, धर्मकी अच्छी चीजें ढूंढ़ना और अुन पर अमल करना होगा। तब वातावरणमें से जहर निकल जायगा और ये संस्थाअें अेक-दूसरीके साथ भलाअी करनेमें मुकाबला करेंगी। वे अेक-दूसरीके प्रति मित्रभाव रखेंगी और स्टेटकी मदद करेंगी। अुनकी राजनीतिक महत्त्वाकांक्षाअें तो कांग्रेसके ही द्वारा पूर्ण हो सकती हैं, चाहे वे कांग्रेसमें हों या न हों। जब कांग्रेस जो कांग्रेसमें हैं अुन्हींका विचार करेगी, तो अुसका क्षेत्र बहुत संकुचित हो

जायगा। कांग्रेसमें तो आज भी बहुत कम लोग हैं। लेकिन कांग्रेसकी आज कोअी बराबरी नहीं कर सकता, तो अुसका कारण यह है कि वह सारे हिन्दुस्तानकी नुमाअिन्दगीका प्रयत्न कर रही है। वह गरीबसे गरीब और दलितसे दलितकी सेवाको अपना ध्येय बनाये हुअे है।

१०२

२३–१२–'४७

प्रार्थनाका समय

अेक भाअी सूचना करते हैं कि अब तो सर्दी बढ़ गअी है। प्रार्थना ५।। बजेके बदले ५ बजे की जाय। सर्दी तो बढ़ी है, पर दिन भी २१ दिसम्बरसे अेक अेक मिनट बढ़ेगा। तो भी अगर आप चाहते हैं, तो प्रार्थना कलसे ५ बजे होगी।

बहावलपुरके गैर-मुस्लिम

आज मुझे तीन बातें कहनी हैं। बहावलपुरसे लोग आये हैं। वे परेशानीमें पड़े हैं। वे कहते हैं कि वहां जितने हिन्दू-सिक्ख हैं अुन्हें बुला लो, नहीं तो वे कट जायेंगे। दो आदमी आज मेरे पास आये थे। अुन्होंने कहा कि "अगर अुनके लिअे कुछ नहीं होगा, तो हम गवर्नर जनरलके मकानके सामने भूख-हड़ताल करेंगे।" अैसा करनेसे अगर बहावलपुरके हिन्दू-सिक्ख जिन्दा रह सकें तो अलग बात है। पर आज गवर्नर जनरलमें बल नहीं है। अुनकी पीठ पर आज ब्रिटिश सल्तनतका बल नहीं है। हमारे बलसे वे खड़े रहते हैं। आप आन्दोलन भले करें, लेकिन अैसे अुपवास करनेसे कोअी फायदा नहीं है। बहावलपुरके नवाब साहबसे मैं कहूंगा कि वहांके हिन्दू-सिक्ख जहां चाहें वहां अुन्हें भेज दिया जाय, नहीं तो अुनके धर्मका पतन है। नवाब साहबके होते हुअे वहां क्या क्या हो गया, अुसमें मैं नहीं जाना चाहता। बहावलपुर बना तो है सिक्खोंसे। वे लोग आलसी नहीं हैं। मगर बहावलपुरमें काफी लोग मारे गये, काफी काटे गये। और जो बाकी रहे हैं वे भी आरामसे नहीं हैं, तो वहां कैसे रह सकते हैं? नवाब साहबको अैलान करना

चाहिये कि जो वहां हैं अुनको भेजनेका प्रबन्ध जब तक नहीं होता, तब तक हम अुनकी पूरी रक्षा करेंगे। अुनका बाल भी बांका नहीं होगा। अुनके रोटी-कपड़ोंका अिन्तजाम भी कर देना चाहिये। जो हुआ सो हुआ। वह पागलपन था। लेकिन भविष्यको संभालें।

पाकिस्तानके शरणार्थी

स्टेट्समेनमें छपा है कि लाहौरमें जो दुःखी लोग शरणार्थियोंके कैम्पमें पड़े हैं, वे बहुत बुरी हालतमें हैं। गन्दगीकी वजहसे वहां कॉलरा (हैजा) और शीतला जैसे रोग फैले हुअे हैं। सर्दीमें वे आकाशके नीचे पड़े हैं। वे खुलेमें भले रहें, मगर अुनके पास पानीसे बचनेका, ओढ़नेका और खानेका सामान तो होना ही चाहिये। वह नहीं है तो अुन्हें मरना ही है। सियालकोटसे भंगी बुलाते हैं। मगर वहांके स्वास्थ्य-अफसर कहते हैं कि "मैं लाचार बन गया हूं। मैं पूरा काम अुनसे ले नहीं सकता।" पाकिस्तानमें से या यहांसे लोग जान बचानेको भागे हैं, तो जहां गये हैं वहां अुन्हें कुछ भी सुख तो हो। पाकिस्तानकी हुकूमतके अफसरोंको यह देखना है कि दुःखी लोगोंको यह कहना ही नहीं चाहिये कि हमें सफाअी करनेवाले दो, खाना पकानेवाले दो। अगर सभी कामोंके लिअे नौकर मिलेंगे तब वे क्या काम करेंगे? अुसमें अुनका पतन है। अुन्हें शरणार्थियोंको दृढ़तासे कहना चाहिये कि अपना काम आप करो। कैम्प साफ करनेका काम अुनका है। शरणार्थियोंको अुद्यम करना ही चाहिये। शराफ़तसे रहना चाहिये। पाकिस्तानके मुसलमान शरणार्थियोंके बारेमें अितनी चिन्ता प्रकट करनेके लिअे आप मुझे माफ करेंगे। मैं अुनमें और यूनियनके हिन्दू-सिक्ख शरणार्थियोंमें कोअी फर्क नहीं कर सकता।

नोआखालीकी खबर

मेरे पास प्यारेलालजी आ गये हैं। वे मेरे मंत्री हैं। मेरे कहनेसे नोआखालीमें रहते हैं और बड़ा काम कर रहे हैं। वहां जो लोग काम कर रहे हैं, वे अपनी जान पर खेल रहे हैं। वहां अुनके रहनेसे हिन्दुओंको बड़ा सहारा मिलता है, और मुसलमान भी समझ गये हैं कि ये भले लोग हैं और मेल करानेके लिअे आये हैं। अेक जगह मन्दिरको ढा दिया गया था। यह तो झगड़ेकी बात हुअी। अुसके बाद कहना

कि हिन्दू यहां रहें निकम्मी बात है। मुसलमान अिसे समझ गये और मन्दिर फिरसे बनाना तय हुआ। कौन बनावे यह सवाल अुठा। प्यारेलालजीने मुसलमानोंको बताया — गुनाह आपने किया है, कफ्फारा (प्रायश्चित्त) भी आपको करना है। अुन्होंने कबूल किया। मन्दिर अुन लोगोंने बनाया और कहा — आप अिसमें आरामसे पूजा कर सकते हैं। मन्दिरमें देवकी प्राण-प्रतिष्ठा भी हो गअी। अमलदारोंने अिस काममें बड़ा हिस्सा लिया। अगर सब जगह अैसा हो तो सारे हिन्दुस्तानकी शकल बदल जावे। रास्ता अेक ही है। हम सब अपने धर्म पर कायम रहें — अपने धर्मका पालन करें।

१०३

२४–१२–'४७

क्या वह अहिंसा थी?

मेरे पास हमेशा सिक्ख भाअी आते रहते हैं। मैं अखबारोंमें से थोड़ा पढ़ लेता हूं। मिलने आनेवाले लोग भी मुझे सुनाते रहते हैं। वे लोग कहते हैं कि मैं तो सिक्खोंका दुश्मन बन गया हूं। अुन्होंने अिसकी परवाह न की होती, अगर मेरी बात हिन्दुस्तानके बाहर कुछ-न-कुछ वजन न रखती। दुनिया मानती है कि हिन्दने अहिंसाके, शान्तिके जरिये आजादी ली है। अगर अैसा ही होता तो मुझे बहुत अच्छा लगता। मगर पंगु और नामर्दोंसे अहिंसा चल नहीं सकती। यह पंगुपन और गूंगापन शारीरिक नहीं। शरीरसे पंगु बननेवाले तो अीश्वरकी मददसे अहिंसा पर खड़े रह सकते हैं। अेक बच्चा भी अहिंसा पर खड़ा रह सकता है — जैसे प्रह्लाद। अैसा हुआ या नहीं, मैं नहीं जानता। पर कहानी बन गअी है कि प्रह्लादने अपने पिताको साफ कह दिया था कि मेरी कलमसे रामके सिवा कुछ निकलेगा ही नहीं। मेरे सामने १२ बरसका बच्चा प्रह्लाद आज भी खड़ा है। मगर जो आदमी आत्मासे लूला है, पंगु है, अंधा है, वह अहिंसाको समझ नहीं सकता। अहिंसाका पालन कर नहीं सकता। मैंने गलतीसे यह सोच लिया

था कि हिन्दुस्तानकी आजादीकी लड़ाअी अहिंसक लड़ाअी थी। लेकिन पिछली घटनाओंने मेरी आंखें खोल दी हैं कि हमारी अहिंसा असलमें कमजोरोंका मन्द विरोध था। अगर हिन्दुस्तानके लोग सचमुच बहादुरीसे अहिंसाका पालन करते, तो वे अितनी हिंसा कभी न करते।

गुस्सा ठीक नहीं

सिक्ख भाअियोंके गुस्से पर मुझे हंसी आती है। सिक्खों और हिन्दुओंमें मैं फर्क नहीं समझता। गुरु ग्रंथसाहब मैंने पढ़ा है। सिक्ख कहते हैं कि मैं गुरु गोविन्दसिंहके बारेमें क्या समझूं? अगर मैं अिस दिशामें अज्ञान होता, तो अुनके बारेमें मैंने जो लिखा है वह नहीं लिख सकता था। मैं किसीका दुश्मन नहीं हूं। अुन्हें समझना चाहिये कि जब मैं सिक्खोंकी शराबखोरी या जुआ खेलनेकी बात करता हूं, तो वह सारे सिक्खों पर लागू नहीं होती। हिन्दुओंमें भी अैसे बहुत लोग पड़े हैं। मगर जहां सिक्खोंकी तलवार नहीं चलनी चाहिये, वहां चलती है यह बुरी बात है। बुरा बरताव करनेवाला कोअी भी क्यों न हो, वह अीश्वरके सामने गुनाह करता है।

क्रिस्मसकी बधाअियां

आज २४ दिसम्बर है, कल २५। क्रिस्मस अीसाअियोंके लिअे वैसा ही त्यौहार है, जैसा हमारे लिअे दीवाली। न दीवाली नाचरंगके लिअे हो सकती है और न क्रिस्मस। जीसस क्राअिस्टके नामसे यह चीज बनी है। अिस मौके पर सारे अीसाअी भाअियोंको मैं बधाअी देता हूं और आशा करता हूं कि वे अपने जीवनमें जीसस क्राअिस्टके अुपदेशों पर अमल करेंगे। मैं नहीं चाहता कि कोअी हिन्दू, मुसलमान या सिक्ख यह चाहे कि हिन्दुस्तानके थोड़ेसे अीसाअी बरबाद हो जायं, या अपना धर्म बदल डालें। 'धर्म-पलटा' शब्द मेरी डिक्शनरीमें ही नहीं है। मैं चाहता हूं कि हर अीसाअी अच्छा अीसाअी बने। हर हिन्दू अच्छा हिन्दू बने। वह हिन्दू धर्मकी मर्यादा और संयमका पालन करे और अुसमें जो तपश्चर्या बताअी गअी है, अुसे अपने सामने रखकर जीवन व्यतीत करे। अुसी तरह मैं चाहता हूं कि अेक मुसलमान अच्छा मुसलमान बने और सिक्ख अच्छा सिक्ख बने। पाजी हिन्दू अगर मुसलमान बने,

तो वह अच्छा मुसलमान हो नहीं सकता। अगर मैं अच्छा हिन्दू बनता हूं और ओसाओको अच्छा ओसाओ बननेकी प्रेरणा देता हूं, तो मैं अपने धर्मका प्रचार करता हूं।

ओसाओ लोग जीससके धर्म पर कायम रहें। दुनियामें धर्मकी वृद्धि हो। मैंने अखबारोंमें देखा है कि चूंकि अब ओसाओ धर्म या दूसरे किसी धर्मको राजसे पैसेकी मदद नहीं मिलनेवाली है, बाहरसे भी बहुत पैसे नहीं आनेवाले हैं, अिसलिओ हिन्दुस्तानके ७५ फी सदी गिरजे बन्द हो जायंगे। हमारे यहांके ज्यादातर ओसाओ गरीब हैं। अुनके पास पैसे नहीं हैं। मगर पैसेसे धर्म नहीं चलता। ओसाअियोंको खुश होना चाहिये कि पैसेकी यह बला अुनसे दूर हुओ। हजरत अुमरके घर ओक बार बहुतसा अिनाम-अिकराम आ गया। वे बहुत गंभीर होकर अपनी बीवीसे कहने लगे कि यह बला आ गओ है। पता नहीं, अब मैं अपने धर्म पर कायम रह सकूंगा या नहीं। भगवान तो हमारे पास पड़ा है। अुसे हम पहचानें। सबसे बड़ा गिरजाघर है अूपर आकाश और नीचे धरतीमाता। खुलेमें क्या मैं भगवानका नाम नहीं ले सकता? भगवानकी पूजाके लिओ न सोना चाहिये, न चांदी। अपने धर्मका पालन हम खुद ही कर सकते हैं, और खुद ही अुसका हनन कर सकते हैं।

१०४

२५–१२–'४७

काश्मीरका सवाल

काश्मीरमें जो कुछ हो रहा है, अुसके बारेमें थोड़ा-बहुत मुझे और आपको मालूम है। ओक चीजकी तरफ मैं आपका ध्यान खींचना चाहता हूं। अखबारोंमें आ गया है कि यूनियन और पाकिस्तान काश्मीरके बारेमें फैसला करनेका किसीको निमंत्रण दें। यह पंच नियुक्त करनेकी बात हुओ। कहां तक अैसा चलेगा कि पाकिस्तान और यूनियन आपसमें फैसला कर ही नहीं सकते? कहां तक हम आपसमें लड़ते रहेंगे? काश्मीर और जम्मू ओक हैं। वहां मुसलमानोंकी अधिकता है। काश्मीरके दो टुकड़े करें तो यह टुकड़े करनेकी बात कहां जाकर रुकेगी? हिन्दुस्तानके

दो टुकड़े हुअे अितना बस है। बससे ज्यादा है। हिन्दुस्तानको अीश्वरने अेक बनाया, अुसके टुकड़े मनुष्य कैसे कर सकता था? पर वह हुआ। लीग और कांग्रेस अलग अलग कारणोंसे अुसमें राजी हुअीं। आज काश्मीरके टुकड़े करें, तो दूसरी रियासतोंके क्यों नहीं?

काश्मीरमें झगड़ा क्यों हुआ? कहा जाता था कि हमला करनेवाले डाकू हैं, लुटेरे हैं। वे बाहरसे आते हैं। 'रेडर्स' हैं। मगर जैसे जैसे वक्त बीतता है, वैसे वैसे पता चलता है कि अैसा नहीं है। अुर्दूके कुछ अखबार यहां आ जाते हैं। मैं थोड़ा-बहुत खुद पढ़ सकता हूं। कुछ मुझे आस-पासवाले सुना देते हैं। आज 'जमींदार' नामके अखबारमें से मुझे थोड़ा सुनाया गया। 'जमींदार'के अेडीटरको मैं पहचानता हूं। अुनकी जबान पर कभी लगाम नहीं रही। अब तो अुन्होंने खुल्लमखुल्ला निमंत्रण दिया है कि सब मुसलमान काश्मीर पर हमला करनेके लिअे भर्ती हों। डोगरोंको, सिक्खोंको, सबको अुन्होंने गालियां दी हैं। काश्मीरकी लड़ाअीको जिहाद कहा है। मगर जिहादमें तो मर्यादा होती है — संयम होता है। यहां तो कुछ भी नहीं है। जो कुछ चल रहा है वह होना नहीं चाहिये। क्या वे यह चाहते हैं कि हिन्दू, सिक्ख और मुसलमान हमेशा अलग ही रहें? मुसलमान अगर हिन्दुओं और सिक्खोंको मारें-काटें, फिर भी हमारा धर्म क्या है? वह मैं आपको रोज बतलाता हूं। हिन्दू और सिक्ख कभी बदला न लें।

सीधी बात यह है कि काश्मीर पर पाकिस्तानकी ही चढ़ाअी है। हिन्दुस्तानका लश्कर वहां गया हुआ है, मगर चढ़ाअी करनेको नहीं। वह महाराजा और शेख अब्दुल्लाके बुलाने पर वहां गया है। काश्मीरके सच्चे महाराजा शेख अब्दुल्ला हैं। हजारों मुसलमान अुन पर फिदा हैं।

जम्मूकी घटना

अपना गुनाह हरअेकको कबूल कर लेना चाहिये। जम्मूके सिक्खों और हिन्दुओंने या बाहरसे आये हुअे हिन्दुओं और सिक्खोंने वहां मुसलमानोंको काटा। काश्मीरके महाराजा अिंग्लैण्डके राजाकी तरह नहीं हैं। अुनकी रियासतमें जो भी बुरा-भला होता है, अुसकी जिम्मेदारी अुनके सिर पर है। वहां काफी मुसलमान कतल किये गये। काफी लड़कियां

अुड़ाअी गअीं। शेख अब्दुल्ला साहबने बचानेकी कोशिश की। जम्मूमें जाकर अुन्होंने बहस की, लोगोंको समझाया। काश्मीरके महाराजाने अगर गुनाह किया है, तो अुन्हें या जिस किसीने गुनाह किया है अुसे हटानेकी बात मैं समझता हूं। पर काश्मीरके मुसलमानोंने क्या गुनाह किया है कि अुन पर हमला होता है?

पाकिस्तानका अभिमान

पाकिस्तानकी हुकूमतसे मैं अदबसे कहना चाहता हूं कि आप कहते हैं कि अिस्लामकी सबसे बड़ी ताकत पाकिस्तान है। मगर आपको अुसका फख्र तभी हो सकता है, जब आपके यहां अेक-अेक हिन्दू-सिक्खको अिन्साफ मिले। पाकिस्तान और हिन्दुस्तानको आपसमें बैठकर फैसला करना चाहिये, लेकिन तीसरी ताकतके मारफत नहीं। दोनों तरफके प्रधान बैठकर बातें करें। महाराजा अपने-आप समझकर अलग बैठ जायं और लोगोंको फैसला करने दें। शेख अब्दुल्ला तो अुसमें होंगे ही। मगर महाराजा समझ लें और कह दें कि यह हुकूमत मेरी नहीं, काश्मीरके लोगोंकी है। यहांके लोग जो चाहें सो करें। काश्मीर काश्मीरके मुसलमानों, हिन्दुओं और सिक्खोंका है, मेरा नहीं। महाराजा और अुनके प्रधान अलग हो जाते हैं, तो शेख साहब और अुनकी आरजी हुकूमत रह जाती है। सब बैठकर आपस-आपसमें फैसला करें। अुसमें सबका भला है। यूनियन सरकारने काश्मीरकी मदद की, तो वहांकी प्रजाके खातिर महाराजाके खातिर नहीं। कांग्रेस प्रजाके विरुद्ध किसी राजका पक्ष नहीं ले सकती। राजाओंको प्रजाका ट्रस्टी बनकर रहना है। तभी वे रह सकते हैं।

गजनवीको फिरसे बुलाना

अेक अुर्दू मैगजीनमें आज मैंने अेक शेर देखा। वह मुझे चुभा। अुसमें कहा है —— 'आज तो सबकी जबान पर सोमनाथ है। जूनागढ़ वगैराका बदला लेनेके लिअे गजनीसे किसी नये गजनवीको आना होगा।' यह बहुत बुरा है। यूनियनके किसी मुसलमानकी कलमसे अैसी चीज नहीं निकलनी चाहिये। अेक तरफसे मित्रभाव और वफादारीकी बातें और दूसरी तरफसे यह? मैं तो यहां यूनियनके मुसलमानोंकी हिफाजतके लिअे जीवनकी बाजी लगाकर बैठा हूं। मैं तो यही करूंगा; क्योंकि

मुझे बुराअीका बदला भलाअीसे देना है। आप लोगोंको यह सुनाया, ताकि आप अैसी चीजोंसे बहक न जायें। गजनवीने जो किया था, बहुत बुरा किया था। अिस्लाममें जो बुराअियां हुअी हैं, अुन्हें मुसलमानोंको समझना और कबूल करना चाहिये। काश्मीर, पटियाला वगैराके हिन्दू-सिक्ख राजाओंको अुनके यहां जो बुराअी हुअी हो अुसे कबूल कर लेना चाहिये। अुसमें कोअी शरम नहीं। गुनाह कबूल करनेसे वह हलका होता है। यूनियनमें बैठकर मुसलमान अगर अपने लड़कोंको सिखावें कि गजनवीको आना है, तो अुसका मतलब यह हुआ कि हिन्दुस्तानको और हिन्दुओंको खा जाओ। अिसे कोअी बरदाश्त करनेवाला नहीं। दोनों आपसमें मिलकर चाहे कुछ भी कर लें। अगर यह शरारतभरा शेर अेक महत्त्वपूर्ण मैगजीनमें न छपा होता, तो मैं अुसका जिक्र भी न करता।

१०५

२६–१२–'४७

तिबिया कॉलेज

आज मैं आपको यहांके तिबिया कॉलेजके बारेमें अेक बात सुनाना चाहता हूं। अुस कॉलेजके जन्मदाता हकीम अजमलखां थे। आज कमनसीबीसे हम मुसलमानोंको दुश्मन मानकर बैठ गये हैं। मगर जब तिबिया कॉलेज बना था तब अैसा नहीं था। हिन्दू राजाओं और मुसलमान नवाबोंने और हिन्दू-मुस्लिम जनताने अुसके लिअे पैसा दिया था। हकीम साहब बड़े तबीब (डॉक्टर) थे। वे अिस कॉलेजको चलाते थे। अिसका अेक ट्रस्ट भी बना था। ट्रस्टमें हिन्दू और मुसलमान दोनों थे। डॉ० अन्सारी भी अुसके ट्रस्टियोंमें थे। आज कुछ हिन्दू सज्जन मेरे पास आये थे। अुन्होंने पूछा कि तिबिया कॉलेजका क्या होगा? अगर तिबिया कॉलेज बन्द हो तो, मैं समझता हूं कि हमारे लिअे बहुत दुःख और शरमकी बात होगी। आज तो वह बन्द पड़ा है। कॉलेज करोलबागमें है। हमने बहुतसे मुसलमानोंको अपने पाजीपनसे भगा दिया। मगर दिल्लीमें आज मुसलमान कहां रह सकते हैं और कहां नहीं रह सकते,

यह बड़ा प्रश्न है। दूसरोंको मिटानेकी चेष्टा करनेवालोंको खुद मिटना होगा। यह जीवनका कानून है। यह अपने आपको और अपने धर्मको मटानेकी बात है।

भगाअी हुअी औरतें

दूसरी बात जो मैं कहना चाहता हूं, वह पहले कह चुका हूं। मगर वह बार-बार कही जा सकती है। हजारों हिन्दू और सिक्ख लड़कियोंको मुसलमान भगा ले गये हैं। मुसलमान लड़कियोंको हिन्दुओं और सिक्खोंने भगाया है। वे सब कहां हैं? अुनका पता भी नहीं है। लाहौरमें सबने मिलकर यह फैसला किया था कि सारी भगाअी हुअी हिन्दू, सिक्ख और मुसलमान औरतोंको निकाला जाय। मेरे पास पटियाला और काश्मीरसे भगाअी हुअी मुसलमान लड़कियोंकी अेक लम्बी लिस्ट आअी है। अुनमें से कअी अच्छे और मशहूर घरोंकी लड़कियां हैं। अगर वे लड़कियां मिलें तो अुन्हें वापस लेनेमें कोअी कठिनाअी नहीं होगी। लेकिन हमारे हिन्दू लोग खोअी हुअी हिन्दू और सिक्ख लड़कियोंको आदरसे वापस लेंगे या नहीं, यह बड़ा प्रश्न है। अगर अुनके साथ किसीने निकाह भी कर लिया, अुन्होंने अिस्लाम भी कबूल कर लिया, तो भी मेरे विचारसे वे मुसलमान नहीं हुअीं। अुन्हें मैं आदरसे अपने पास रखूंगा, अुनकी जो सन्तान होगी अुसे भी आदरसे रखूंगा। वे दिलसे तो नहीं बिगड़ीं। अगर वे दुष्टोंके पंजेमें फंस गअीं, तो मेरे मनमें अुनके प्रति घृणा नहीं हो सकती, रहम ही हो सकता है। समाजको अुन्हें वापस ग्रहण करना ही चाहिये। अगर अुन्हें आदरसे वापस नहीं लेना हो, तो अुन्हें लोगोंके घरोंसे निकालनेकी चेष्टा ही क्यों की जाय? किसी लंपटने अुन पर जबरदस्ती की और अुन्हें हमल रह गया, तो क्या अुन्हें मैं ठुकरा दूं? नहीं, अुन्हें मैं अपनी गोदमें बिठाअूंगा।

अैसी जो लड़कियां हिन्दू थीं वे हिन्दू रहेंगी; और जो सिक्ख थीं वे सिक्ख रहेंगी। बच्चोंका धर्म मांका ही धर्म रहेगा। बड़े होकर वे स्वेच्छासे भले किसी धर्ममें चले जायं। सुनता हूं कि कअी लड़कियां आज कहती हैं कि हम वापस नहीं जाना चाहतीं। क्योंकि अुन्हें डर है कि अुनके मां-बाप या पति अुनकी तौहीन करेंगे। जिन लड़कियोंके

रिश्तेदार हैं, अुन्हें अैसी लड़कियोंको आदरपूर्वक वापस लेना चाहिये। जिनका कोअी नहीं है अुन्हें हम कोअी धन्धा सिखा दें, ताकि वे अपने पांवों पर खड़ी रह सकें। मेरे पास अैसी कोअी लड़की आ जायगी, तो अुसे मैं लाकर आपके सामने यहां बिठाअूंगा। जैसा अिन लड़कियोंका आदर है, वैसा ही अुसका भी होगा। वह मेरी गोदमें बैठेगी। अगर मैं बेरहम बन जाअूं, तो मैं हिन्दू नहीं रह जाअूंगा। गुंडा मुसलमान हो या हिन्दू, वह बुरा है। मुसलमान लड़कियोंको हमें वापस करना चाहिये और पंचके सामने अपने गुनाहका कफ्फारा (प्रायश्चित्त) करना चाहिये। यह लिस्ट देखकर मैं कांप अुठता हूं। जम्मूमें भी यही हुआ। मर्दों और बूढ़ी औरतोंको मार डाला और जवान लड़कियोंको अुठा ले गये। मैं नहीं जानता कि वे कहां हैं। अगर मेरी आवाज वहां तक पहुंच सकती हो, तो मेरा अुन लोगोंसे अनुरोध है कि अुन सब लड़कियोंको वे लौटा दें।

सौदा नहीं

कहते हैं कि काफी हिन्दू और सिक्ख लड़कियां किसी पीरके यहां पड़ी हैं। वे कहते हैं कि अुन्हें किसी तरहका नुकसान नहीं पहुंचाया जायगा। मगर हम अुन्हें तब तक वापस नहीं करेंगे, जब तक हमारी मुसलमान लड़कियां वापस नहीं आयेंगी। लेकिन अैसी चीजोंमें सौदा क्या? हमें दोनों तरफसे सब लड़कियां अपने-आप लौटा देनी चाहिये। यही आराम और शराफतसे रहनेका रास्ता है। नहीं तो हमारा मुल्क ४० करोड़ गुंडोंका मुल्क बन जायगा।

१०६

२७–१२–'४७

विचार, वाणी और कर्मका मेल

मुझे बड़ा हर्ष होता है कि आज मैं अिस देहातमें आ सका। यहां आपने पंचायत-घर बना लिया, यह भी खुशीकी बात है। मगर प्रार्थनामें मानपत्र और हार क्या देना था? प्रार्थना तो जीवनका नियम होना चाहिये और सुबह-शाम दोनों समय प्रार्थना करनी चाहिये। हम सोनेके समय भी अीश्वरको याद करें और कभी अपने स्वार्थका विचार न करें। प्रार्थनामें और क्या क्या भरा है, वह सब आज कहनेका समय नहीं है। प्रार्थनामें मानपत्र नहीं देना चाहिये, तो भी आपने दिया है तो आपका आभार मानता हूं। अुसमें अहिंसा और सत्यका अुल्लेख है। मगर अुन्हें आचारमें न रखा जाय, तो अुनका नाम लेनेसे हम घातक बनते हैं। जबसे मैं दक्षिण अफ्रीकासे आया हूं, हजारों देहातोंमें गया हूं। मैं समझता हूं कि लोग काफी बातें कहनेके खातिर ही कहते हैं, काम नहीं करते। किसीने मानपत्र बना दिया और किसीने तोतेकी तरह पढ़ दिया। कहना अेक और करना दूसरा, अैसा काफी होता है। आज तो अेक तरफ हिन्दू और सिक्ख और दूसरी तरफ मुसलमान अेक-दूसरेको मारने, काटने, भगानेमें लगे हैं। यहां मुसलमानोंकी आबादी ज्यादा नहीं होगी। थोड़े-बहुत जो कुछ पड़े हैं, वे क्या नुकसान करनेवाले हैं? अुन्हें सताना हो या डराना हो, तो आप अहिंसाका नाम छोड़ दें। हम आजाद हुअे हैं अुसका यह अर्थ नहीं कि मनमानी करें। अीश्वर मुझे झूठ बोलने या किसीको मारनेकी आजादी दे, क्या यह कोअी मांग सकता है? वह अीश्वरकी प्रार्थना नहीं, शैतानकी बन्दगी होगी।

पंचायतका फर्ज

आपने पंचायत-घर बनाया, अिसके लिअे मैं आपको मुबारकबाद देता हूं। लेकिन अगर आपने यहां पंचायतका काम न किया तो क्या फायदा? पुराने जमानेमें यूनानसे, चीनसे, दूर दूरके देशोंसे मशहूर यात्री

यहां आते थे। बड़ी बड़ी तकलीफें अुठाकर वे हमारे देशमें ज्ञान पानेके लिअे आते थे। अुन्होंने लिखा है कि हिन्दुस्तान अेक अैसा मुल्क है, जहां कोअी चोरी नहीं करता, कोअी ताला नहीं लगाता, सब लोग शराफतसे रहते हैं। यह बात करीब दो हजार वर्ष पुरानी है। अुस वक्त सिर्फ चार वर्ण थे। आज तो अितने हो गये कि क्या कहना! पंचायत-घर बनाकर आपने अपने पर बड़ी जिम्मेदारी ले ली है। अिस पंचायतको आप सुशोभित करें। यहां आपसमें झगड़ा तो होना ही नहीं चाहिये। अगर झगड़ा हो तो पंच अुसे निपटा दें। अेक साल बाद मैं आपसे पूछूंगा कि आपके यहांसे कोअी कोर्टमें गया था? अगर अैसा हुआ तो माना जायगा कि पंचायतने अपना काम नहीं किया। पंच परमेश्वरका काम करता है। आपकी कोर्ट अेक ही होनी चाहिये -- वह है आपकी पंचायत। अिसमें अेक कौड़ीका खर्च नहीं और काम शीघ्रतासे हो जाता है। अैसा होने पर न तो पुलिसकी जरूरत होगी और न मिलिटरीकी। और, न आप लोग रंधावा साहबको अैसे कामोंके लिअे तकलीफ देंगे।

मवेशीकी तरक्की

आपको देखना है कि मवेशीको पूरा खाना मिलता है या नहीं। गाय आज पूरा दूध नहीं देती, क्योंकि अुसे पूरा खाना नहीं मिलता। आज दरअसल हिन्दू गायको काटते हैं, मुसलमान या दूसरे कोअी अुसे नहीं काटते। हिन्दू गायको अच्छी तरह रखते नहीं और आहिस्ता-आहिस्ता अुसका कतल करते हैं। यह ज्यादा बुरा है। गायको हिन्दुस्तानमें जितना कष्ट अुठाना पड़ता है, अुतना दूसरे किसी देशमें नहीं। आज अेक गाय मुश्किलसे ३ सेर दूध दिनभरमें देती है। अेक सालके बाद अगर ६ सेर देने लगे, तो मैं समझूंगा कि आपने काम किया।

जमीनको अुपजाअू बनाअिये

अिसी तरह आज जितना अन्न पैदा होता है, अुससे दुगुना अगले साल पैदा करना चाहिये। सो कैसे यह मीराबहनने बताया है। यहां जो कान्फरेन्स हुअी थी, अुसमें यह बताया गया था कि मनुष्य और जानवरके मल और कचरेमें से सुनहरा खाद कैसे हो सकता है, और अुससे जमीनकी अुपज कैसे बढ़ सकती है।

तीसरा खयाल आपको यह रखना है कि क्या यहांके सब लोग स्वस्थ हैं? भीतर और बाहरसे स्वस्थ हैं? यहांके रास्तों पर धूल, गोबर, कचरा बिलकुल नहीं होना चाहिये। यह सब अैसा काम है जिसमें बहुत खर्च नहीं होगा। मैं आशा करता हूं कि सिनेमा-घर यहां होगा ही नहीं। सिनेमामें से हम काफी बुराअी सीख सकते हैं। कहते हैं कि सिनेमा तालीमका जरिया बन सकता है। अैसा जब होगा तब होगा, लेकिन आज तो अुससे बुराअी हो रही है। मैं आशा रखता हूं कि आपके यहां शराब, गांजा या दूसरी नशीली चीजें नहीं होंगी। आपका देहात अैसा नमूनेदार होना चाहिये कि अुसे देखनेके लिअे दिल्लीसे लोग आवें। लोग कहने लगें कि जहां अैसा सादा जीवन बसर होता है वहां हम भी जावें। मैं आशा करता हूं कि आप अपने यहांसे छुआछूतका भूत निकाल फेंकेंगे। यहां हिन्दू, सिक्ख, मुसलमान और अीसाअी वगैरा सगे भाअियोंकी तरह रहेंगे। यह सब आप कर लेंगे, तो आप सच्ची आजादीका सच्चा अर्थ अमलमें लाकर बता देंगे। सारा हिन्दुस्तान आपको देखने आयेगा। मेरी यह प्रार्थना है कि यह आशा सच साबित हो।

१०७

२८–१२–'४७

खुले मैदानमें सभाअें

आप जानते हैं कि मैं व्यापारियोंकी सभामें गया था। वे लोग मानते हैं कि कपड़े परसे अंकुश हट जाना चाहिये। मुझे तो अिसमें शक ही नहीं। सभा हार्डिंज लायब्रेरीमें हुअी थी। वहां बड़ा हजूम था। प्रार्थनामें तो लोग भड़क भी जाते हैं कि कुरान शरीफ पढ़ा जायगा और अुससे वे अस्पृश्य-से हो जायेंगे, मगर अिस सभामें तो अैसा कुछ था ही नहीं। सो बहुत लोग अिकट्ठे हो गये थे। सभा अेक छोटे कमरेमें थी। भीड़ बाहर खड़ी थी। मेरे जैसेके लिअे आकाशके छप्परके नीचे ही सभा रखना अच्छा है। लोग अगर बहुत शोर करें और सभा न करने दें तो मैं छोड़ दूंगा।

शान्तिसे सुनें तो मेरी बात सुनाअूंगा। मगर व्यापारी लोग बेचारे अैसा नहीं कर सकते थे। अुन्हें कुछ अपना काम भी करना था। मुझसे सीखें तो व्यापारी लोग भी अपना काम जाहिरमें करें। खुफिया क्या रखना? भले सब लोग हमारा काम देखें। हम अैसा करना सीखें, तो मकानोंकी झंझटमें से कुछ छूट जाते/हैं। हमारे लोगोंको खुलेमें रहनेकी आदत हो जाय, तो जो लाखों शरणार्थी आये हैं वे भी समझ जायेंगे। तंबू नहीं तो वे घास-फूसके झोंपड़ेमें रहेंगे।

कण्ट्रोलका हटना

मेरे पास अिस मतलबके काफी तार और खत रोजाना आते हैं कि अंकुश हटनेका चमत्कारिक असर हुआ है। कपड़ेका कण्ट्रोल नहीं हटा, फिर भी टुवाल वगैरा बहुत सस्ते दामोंमें बिकते हैं। कालेबाजार-वाले लोगोंने समझ लिया है कि कण्ट्रोल अुठा नहीं, तो भी गांधी लोगोंकी आवाज सुनाता है और कण्ट्रोल अुठानेकी बात करता है, अिसलिअे कण्ट्रोल अुठेगा ही। और पीछे कालेबाजारकी चीजें वहीं पड़ी रहेंगी। अिसलिअे वे सस्ते दामोंमें बेचने लगे हैं। सुनता हूं कि चीनीके ढेरके ढेर पड़े हैं। अेक रुपयेकी सेरभर चीनी मिलती है। सौदा होता है और रुपयेके १५ आने और १४ आने कर दिये जाते हैं। हर जगहसे मुझे तार मिल रहे हैं कि अंकुश अुठनेसे हमें आराम है। सच्ची दुआ तो करोड़ोंकी ही मिलनी चाहिये, क्योंकि मैं तो करोड़ोंकी आवाज अुठाता हूं। अिसलिअे वह चलती भी है। आज मैं कहता हूं कि मुसलमानोंको मत मारो। अुन्हें अपना दुश्मन मत मानो। पर मेरी चलती नहीं। अिसलिअे मैं समझता हूं कि वह करोड़ोंकी आवाज नहीं। अगर आप मेरी नहीं सुनते, तो बड़ी गलती करते हैं। आप जरा सोचें कि गांधीने अितनी बातें सही कहीं, तो क्या आज अिसमें भूल कर रहा है? नहीं, गांधी भूल नहीं करता। तुलसीदासने कहा है: दया धर्मका मूल है। वही मैं आपसे कहता हूं। तुलसीदास पागल नहीं थे। अुनका नाम सारे हिन्दुस्तानमें चलता है।

लकड़ी पर अंकुश क्यों? वह तो कोअी खानेकी चीज नहीं। जितनी लकड़ी चाहिये अुतनी ही लोग जलावेंगे। अंकुश अुठानेसे कुछ ज्यादा जलानेवाले नहीं। सबको आरामसे लकड़ी मिल जायेगी। अिसी तरह

मुझसे कहा गया है कि पेट्रोलका अंकुश हटे तो बहुत अच्छी बात होगी। मैं अिस चीजको मानता हूं। मेरी चले तो पेट्रोलका अंकुश हट जाना चाहिये। अुसमें गरीबोंको तो कोअी हानि है ही नहीं। अुलटे अंकुश रहनेसे गरीबोंको हानि है। रेलें हमारे पास अितनी हैं नहीं। नअी बनावें तो करोड़ोंका खर्च हो। जितनी रेलें हैं अुनको तो हम हजम करें। अिधर-अुधरसे माल ले जानेके लिअे सड़कका अिन्तजाम हो जाता है। पेट्रोल परसे अंकुश हटे तो बस, लारी वगैराके चलनेसे अन्न, कपड़ा, नमक अेक जगहसे दूसरी जगह आसानीसे ले जा सकते हैं। नमकका कर गया, मगर नमक महंगा हो गया है। कारण यह है कि जहां नमक बनता है, वहांसे अुसे लानेका आज साधन नहीं। लोगोंने यह सीखा नहीं कि जहां हो सके वहां नमक पैदा कर लें; नहीं तो समुद्रमें नमक बनानेकी क्या कठिनाअी है? नमकका दाम बढ़नेका दूसरा कारण यह है कि कअी लोगोंको नमक लानेका ठेका दे दिया गया है। वह गलती थी। ठेकेदार पैसे पैदा करते हैं, सो नमक महंगा हो गया है। अिस रिवाजमें तबदीली करनी होगी और सड़कके रास्ते सामान लानेकी सहूलियत पैदा करनी होगी। पेट्रोल परसे अंकुश अुठाना होगा।

१०८

२९-१२-’४७

हकीम साहबकी यादगार

कल हकीम अजमलखां साहबकी वार्षिक तिथि थी। वे हिन्दुस्तानके हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ओसाअी, पारसी, यहूदी सबके प्रिय थे। वे पक्के मुसलमान थे, मगर अिस खूबसूरत देशके रहनेवाले सब लोगोंकी समान सेवा करते थे। अुनकी मेहनतकी सबसे बढ़िया यादगार दिल्लीका मशहूर तिबिया कॉलेज और अस्पताल था। वहां पर हर श्रेणीके विद्यार्थी पढ़ते थे और वहां यूनानी, आयुर्वेदिक और पश्चिमी डॉक्टरी सब सिखाअी जाती थी। साम्प्रदायिकताके जहरके कारण यह संस्था भी, जिसमें किसी तरहकी साम्प्रदायिकताको स्थान न था, बन्द हो गअी है। मेरी समझमें

अिसका कारण अितना ही हो सकता है कि अिस कॉलेजको बनानेवाले हकीम साहब मुसलमान थे, फिर वे चाहे कितने ही महान और भले क्यों न रहे हों और भले ही अुन्होंने सबका मान सम्पादन क्यों न किया हो। काश, अुस स्वर्गवासी देशभक्तकी स्मृति, अगर वह हिन्दू-मुस्लिम-फसादको दफन नहीं कर सकती, तो कमसे कम अिस कॉलेजको तो नया जीवन दे सके!

खुलेमें सभाअें

कल मैंने जिक्र किया था कि हमारी सभाअें वगैरा खुलेमें, आकाशके मण्डपके नीचे हों। यह बहुत अिष्ट चीज है। अगर यह आम रिवाज हो जाय, तो अिस कामके लिअे विचारपूर्वक जगह वगैराका प्रबन्ध करना होगा। छोटे-बड़े शहरोंमें अिस कामके लिअे मैदान रखने होंगे। अपनी आदतें हमें बदलनी होंगी। शोरकी जगह शान्ति और बेतरतीबीकी जगह करीनेसे बैठना सीखना होगा। हमारी आदतें सुधरेंगी, तो हम तभी बोलेंगे जब हमें बोलना ही चाहिये। और, जब बोलेंगे तब हमारी आवाज अुतनी ही अूंची होगी, जितनी कि अुस मौकेके लिअे जरूरी होगी — अुससे ज्यादा कभी नहीं। हम अपने पड़ोसीके हकका मान रखेंगे, और व्यक्तिगत रूपसे या सामूहिक रूपसे कभी दूसरोंके रास्तेमें नहीं आयेंगे। दूसरोंके कामोंमें दखल नहीं देंगे। अैसा करनेके लिअे हमें कअी बार अपने आप पर बहुत संयम रखना पड़ेगा। अैसी सामाजिक व्यवस्थामें दिल्लीके सबसे ज्यादा कारोबारवाले हिस्सेमें आज जो शोर और गन्दगी देखनेमें आती है वह नहीं मिलेगी। चाहे कितने ही बड़े हजूम क्यों न हों, धक्कम-धक्का या फसाद नहीं होगा। हम अैसा न सोचें कि अिस लक्ष्यको तो हम पहुंच ही नहीं सकते। किसी न किसी तबकेको अिस सुधारके लिअे कोशिश करनी होगी। जरा विचार कीजिये कि अिस किस्मके जीवनमें कितना समय, कितनी शक्ति और कितना खर्च बच जायगा?

फिर काश्मीर

मैंने काश्मीर और वहांके महाराजा साहबके बारेमें जो कुछ कहा है, अुसके लिअे मुझे काफी डांट खानी पड़ी है। जिन्हें मेरा कहना चुभा

है, अुन्होंने मेरा निवेदन ध्यानपूर्वक पढ़ा है अैसा नहीं लगता। मैंने तो वह सलाह दी है, जो मेरी समझमें अेक मामूलीसे मामूली आदमी दे सकता है। कभी कभी अैसी सलाह देना फर्ज हो जाता है, और वही मैंने किया है। अैसा क्यों? अिसलिअे कि मेरी सलाह अगर मानी जाती, तो महाराजा साहब अूंचे अुठ जाते। अुनकी और अुनकी रियासतकी हालत आज अीर्षाके लायक नहीं। काश्मीर अेक हिन्दू राज है और अुसकी प्रजामें बहुत बड़ी अकसरियत मुसलमानोंकी है। हमलावर अपने हमलेको जिहाद कहते हैं। वे कहते हैं कि काश्मीरके मुसलमान हिन्दू राजके जुल्मके नीचे कुचले जा रहे हैं और वे अुनकी रक्षा करनेको आये हैं।

शेख अब्दुल्ला साहबको महाराजाने ठीक वक्त पर बुलाया है। शेख साहबके लिअे यह काम नया है। अगर महाराजा अुन्हें अिस लायक समझते हैं, तो अुन्हें हर तरहका प्रोत्साहन मिलना चाहिये। मुझे यह स्पष्ट है और बाहरके लोगोंके सामने भी स्पष्ट होना चाहिये कि अगर शेख साहब अकसरियत और अकलियत दोनोंको अपने साथ न रख सके, तो काश्मीरको सिर्फ फौजी ताकतसे हमलावरोंसे बचाया नहीं जा सकता। महाराजा साहब और शेख साहब दोनोंने हमलावरोंका सामना करनेके लिअे यूनियनसे फौजी मदद मांगी थी।

मेरे महाराजाको यह सलाह देनेमें कि वे अिंग्लैण्डके राजाकी तरह वैधानिक राजा रहें, और अपनी हुकूमत और डोगरा फौजको शेख साहब और अुनके संकटकालीन मंत्रि-मंडलके कहनेके मुताबिक चलावें, आश्चर्यकी बात क्या है? रियासतोंके यूनियनके साथ जुड़नेका शर्तनामा तो पहले जैसा ही है। वह राजाको अमुक हक देता है। मैंने अेक सामान्य व्यक्तिकी हैसियतसे महाराजाको यह सलाह देनेका साहस किया है कि वे अपने-आप अपने हकोंको छोड़ दें या कम कर दें और अेक हिन्दू राजाकी हैसियतसे वैधानिक कर्तव्यका पालन करें।

अगर मुझे जो खबरें मिली हैं, अुनमें कोअी गलती हो तो अुसे सुधारना चाहिये। अगर हिन्दू राजाके फर्जके बारेमें मेरे खयाल भूल भरे हों, तो मेरी सलाहको वजन देनेकी बात नहीं रहती। अगर शेख

साहब मंत्रि-मंडलके मुखियाकी हैसियतसे या अेक सच्चे मुसलमानकी हैसियतसे अपना फर्ज पूरा करनेमें गलती करते हों, तो अुन्हें अेक तरफ बैठ जाना चाहिये और बागडोर अपनेसे बेहतर आदमीके हाथमें सौंप देनी चाहिये।

आज काश्मीरकी भूमि पर हिन्दू धर्म और अिस्लामकी परीक्षा हो रही है। अगर दोनों सही तरीकेसे और अेक ही दिशामें काम करें, तो मुख्य कार्यकर्ताओंको यश मिलेगा और कोअी अुनका यश, नाम और अिज्जत छीन नहीं सकेगा। मेरी तो यही प्रार्थना है कि अिस अंधकार-मय देशमें काश्मीर रोशनी दिखानेवाला सितारा बने।

यह तो हुआ महाराजा साहब और शेख साहबके बारेमें। क्या पाकिस्तान सरकार और यूनियन सरकार साथ बैठकर तटस्थ हिन्दुस्तानियोंकी मददसे दोस्ताना तौर पर अपना फैसला नहीं कर लेंगी? क्या हिन्दुस्तानमें निष्पक्ष लोग रहे ही नहीं? मुझे यकीन है, हमारा अैसा दिवाला नहीं निकला है।

रुपयोंकी पहुंच

मुझे मथुरासे अेक बहनने पचास रुपयेका मनिआर्डर शरणार्थियोंके लिअे कम्बल खरीदनेके लिअे भेजा है। वे अपना नाम मुझे भी नहीं बताना चाहतीं और लिखती हैं कि प्रार्थना-सभामें मैं अपने भाषणमें अुन्हें पहुंच दे दूं। मैं आभारके साथ अुनके पचास रुपयेकी पहुंच देता हूं।

अचरजभरा विरोध

आश्चर्यकी बात है कि जिन रियासतोंके राजाओंने यूनियनमें जुड़ जानेका अिरादा जाहिर किया है, वहांकी प्रजाकी तरफसे मुझे शिकायतके तार मिल रहे हैं। अगर किसी राजा या जागीरदारको यह लगे कि वह अकेला रहकर अपने-आप अच्छी तरहसे अपना राज नहीं चला सकता, तो अुसे अलग रहने पर कौन मजबूर कर सकता है? जो लोग तारों पर अिस तरह रुपया बिगाड़ते हैं, अुन्हें मेरी सलाह है कि वे अैसा न करें। मुझे लगता है कि अैसे तार भेजनेवालोंके बारेमें कुछ दालमें काला है। वे गृहमन्त्रीके पास सलाह लेने आवें।

यूनियनके मुसलमानोंको सलाह

कअी मुसलमान, खास तौर पर डाक और तारके महकमेवाले, कहते हैं कि अुन्होंने प्रचारके खातिर यूनियनमें रहनेकी बात की थी। अब वे अपने विचार बदलना चाहते हैं। अैसे मुसलमान भी हैं जिन्हें नौकरीसे बरखास्त किया गया है। अुसका कारण तो मेरे खयालमें यही होगा कि अुन पर शक किया जाता है कि वे हिन्दुओंके विरोधी हैं। मेरी अुन लोगोंके प्रति पूरी सहानुभूति है। मगर मैं महसूस करता हूं कि सही तरीका यह है कि व्यक्तिगत किस्सोंमें यह शक कितना ही बेजा क्यों न हो, अुसको क्षम्य समझा जाय और गुस्सा न किया जाय। मैं तो अपना पुराना आजमाया हुआ नुसखा ही बता सकता हूं। सरकारी नौकरियोंमें बहुत थोड़े लोग जा सकते हैं। जिन्दगीका मकसद सरकारी नौकरी पाना कभी न होना चाहिये। जीवनके अिस क्षेत्रमें अीमानदारीकी जिन्दगी बसर करना ही अेकमात्र ध्येय हो सकता है। अगर आदमी हर तरहकी मेहनत-मजदूरी करनेको तैयार रहे, तो अीमानदारीसे रोटी कमानेका जरिया तो मिल ही जाता है। मेरी सलाह यह है कि आज जो साम्प्रदायिक जहर हम पर सवार है, वह जब तक दूर न हो तब तक मुक्ति नहीं। मैं समझता हूं, मुसलमानोंके लिअे अपना स्वाभिमान रखनेके लिअे यह जरूरी है कि वे सरकारी नौकरियोंमें हिस्सा पानेके पीछे न दौड़ें। सत्ता सच्ची सेवामें से मिलती है। सत्ता पाकर बहुत बार अिन्सान गिर जाता है। सत्ता पानेके लिअे झगड़ा शोभा नहीं देता। अुसके साथ ही साथ सरकारका यह फर्ज है कि जिन स्त्री-पुरुषोंके पास कोअी काम न हो, चाहे अुनकी संख्या कितनी ही क्यों न हो, अुनके लिअे वह रोजी कमानेका साधन पैदा करे। अगर अकलसे यह काम किया जाय, तो सरकार पर बोझ पड़नेके बदले अिससे सरकारको फायदा होगा। मैं अितना मान लेता हूं कि जिनके लिअे काम ढूंढ़ना है, वे शरीरसे स्वस्थ होंगे और कामचोर नहीं बल्कि खुशीसे काम करनेवाले होंगे।

१०९

३०-१२-'४७

आम जनताका निजाम

मैंने कलके भाषणमें कहा है कि हमारी सभ्यता कहां तक जानी चाहिये। हमें कब बोलना और कैसे चलना चाहिये कि करोड़ों आदमी साथ चलें तो भी पूरी शान्ति रहे। अैसी लश्करी तालीम हमें मिली नहीं। मैं यहांसे जानेके बाद घूमता हूं, तब लोग मुझे अिधर अुधरसे देखनेकी कोशिश करते हैं। वे अैसा न करें। प्रार्थनामें देख लिया वह बस हुआ। वहां जो लाभदायक बातें सुनीं, अुन पर वे मनन करें और अपने अपने घर चले जायें।

बहावलपुरके हिन्दू और सिक्ख

बहावलपुरके बारेमें अेक भाअी लिखते हैं कि मैं बहावलपुरके लिअे अेक बार कुछ और कहूं। वहांके नवाब साहबने तो कहा है कि अुनके नजदीक अुनकी सारी रैयत बराबर है। तो मैं क्या यह कहूं कि यह सच्चा नहीं है? अगर सचमुच अुनके लिअे सारी रैयत अेकसी है, तो अुन्हें चाहिये कि अगर वे हिन्दू-सिक्खोंकी संभाल नहीं कर सकते, तो अुन्हें अपनी गाड़ीमें बिठाकर यहां भेज दें और आरामसे आने दें। जब तक अुनको वहांसे लानेका प्रबन्ध नहीं होता, तब तक अुनकी खानेकी, कपड़ेकी और ओढ़नेकी व्यवस्था अुन्हें अच्छी तरह कर देनी चाहिये। मुझे अुम्मीद है कि वे अैसा करेंगे।

सिंधमें गैर-मुस्लिम

मैं तो कायदे आजमसे कहना चाहता हूं कि सिंधमें हिन्दुओंका रहना दुश्वार हो गया है। वहां हरिजन परेशान हैं। अुनको भी वहांसे आ जाने देना चाहिये। सिंध जैसा पहले था वैसा आज नहीं है। अिस यूनियनसे जो मुसलमान वहां गये हैं, वे लोग वहांके हिन्दुओंको घर

छोड़ने पर मजबूर करते हैं। अुनके घरोंमें घुस जाते हैं। अगर वे अैसा करें तो कौन हिन्दू वहां रह सकता है? तब क्या पाकिस्तान अिस्लामिस्तान हो जायगा? क्या अिसीलिअे पाकिस्तान बना है? कोअी हिन्दू वहां चैनसे रह ही नहीं सकता, यह दुःखकी बात है।

विठोबाका मन्दिर

पंढरपुरमें विठोबाका मन्दिर है। महाराष्ट्रमें अिससे बड़ा मन्दिर कोअी नहीं है। वह मन्दिर हरिजनोंके लिअे वहांके ट्रस्टियोंने खुशीसे खोल दिया है, अैसा तार आया था। अब वे लिखते हैं कि बड़े बड़े ब्राह्मण पुजारी अिस पर नाखुश हैं और अनशन कर रहे हैं। यह सुनकर मुझको बहुत बुरा लगा। मैं वहां जा तो नहीं सकता, मगर यहांसे दृढ़तासे कहना चाहता हूं कि पुजारी लोग अपने आपको अीश्वरके पुजारी मानते हैं, लेकिन वे सच्चे तरीकेसे पूजा नहीं करते। आज तो वे लोगोंको लूटते हैं। विष्णु भगवान अैसे नहीं हैं कि कोअी भी अुनके पास जावे और वे दर्शन न दें। अीश्वरके लिअे सब अेक हैं। सो अुन पुजारी लोगोंको अनशन छोड़ना चाहिये और कहना चाहिये कि हम सब हरिजनोंके लिअे मन्दिर खोलनेमें राजी हैं। हमारी धर्मकी आंख खुल गअी है। मन्दिरमें जानेसे पापका नाश होता है, यह माना जाता है। अगर सच्चे दिलसे पूजा करें, तो पापका नाश होगा ही। अैसा थोड़े ही है कि पापी मन्दिरमें नहीं जा सकते और पुण्यशाली ही जा सकते हैं। तब वहां पाप धुलेंगे किसके? जिन हरिजनोंको हमने ही अछूत बनाया है, वे क्या पापी हो गये? मुझे आशा है कि अनशन करनेवाले समझ जायेंगे कि यह बात कितनी असंगत है।

बम्बअीमें राशनिंग

बम्बअीमें चावल बहुत कम मिलते हैं। अेक हफ्तेमें अेक रतलसे ज्यादा नहीं मिलते। सो लोग कालेबाजारसे चावल लेते हैं। अंकुश छूटने पर भी अुस शहरमें अभी राहत नहीं मिली। अगर शहरी लोग अीमानदार बन जायं, तो ये तकलीफें मिटनी ही हैं। लोगोंका पेट भर जाय, तो चोरीका कारण ही क्यों रहे?

११०

३१-१२-'४७

दिल बदले बिना न लौटें

मेरे पास कअी खत आये हैं। सबका जवाब अभी नहीं दे सकूंगा। जिनका दे सकता हूं, देता हूं।

अेक भाअीने लिखा है कि सिन्धमें जब हिन्दुओं पर सख्ती होती है और वहां हिन्दू और सिक्ख नहीं रह सकते, तो पंजाबमें या पाकिस्तानके और हिस्सोंमें फिरसे जाकर वे कैसे बस सकते हैं? खत लिखनेवाले भाअीने मेरी अिस बाबतकी सब बातों पर ध्यान नहीं दिया। कुछ मुसलमान भाअी पाकिस्तान होकर मेरे पास आये थे। अुन्होंने अुम्मीद दिलाअी थी कि जो हिन्दू और सिक्ख पाकिस्तानसे आ गये हैं, वे वहां वापस जा सकेंगे अैसी आशा होती है। मैंने वही आपसे कह दिया था। पर मैं यह भी कह चुका हूं कि अभी वह वक्त नहीं आया है। अभी मैं किसीको वापस जानेकी सलाह नहीं दे सकता। जब वक्त आवेगा तब मैं कहूंगा। अभी तो सुनता हूं कि सिन्धमें भी हिन्दू नहीं रह सकते। यह ठीक है। चितरालसे अेक भाअी मेरे पास आये थे। अुन्होंने बताया कि वहां ढाअी सौके करीब हिन्दू-सिक्ख अभी पड़े हैं, जो निकलना चाहते हैं। सिन्धमें तो अभी बहुत हैं, हजारों हैं, जो वहांसे निकलना चाहते हैं। वे सब जब तक नहीं आ जावेंगे, हिन्द सरकार चुप नहीं बैठेगी। वह कोशिश कर रही है।

शरणार्थियोंके लौटे बिना सच्ची शान्ति नहीं

पर आखिरमें तो मैं अुसी बात पर जमा हूं। जब तक सब हिन्दू और सिक्ख भाअी, जो पाकिस्तानसे आये हैं, पाकिस्तान न लौट जावें और सब मुसलमान भाअी, जो यहांसे गये हैं, यहां न लौट आवें, तब तक हम शान्तिसे नहीं बैठ सकते। मैं तो तब तक शान्तिसे बैठ ही

नहीं सकता। हो सकता है कि कोअी शरणार्थी भाअी यहां खुश हो, पैसा भी कमाने लगे। फिर भी अुसके दिलसे खुटक कभी नहीं जायगी। अुसे अपना घर तो याद आवेगा ही। दिलमें गुस्सा और नफरत भी रहेगी। हमने दोनोंने बुरा किया है। दोनों बिगड़े हैं। अिसीलिअे दोनों भोग रहे हैं। किसने पहले किया, किसने पीछे; किसने कम, किसने ज्यादा; यह सोचनेसे काम नहीं चलेगा। हम सब अपने अपने बिगाड़को नहीं सुधारेंगे, तो हम दोनों मिट जावेंगे। जब तक हिन्दुस्तान और पाकिस्तानमें दिलका समझौता नहीं होता, हमारा दोनोंका दुःख नहीं मिट सकता। दोनों अपना अपना बिगाड़ सुधार लें, तो हमारी बिगड़ी बाजी फिर सुधर जावे।

शरणार्थी और मेहनतकी रोटी

अुन्हीं भाअीने लिखा है कि शरणार्थियोंके कैम्पोंमें कुछ घरेलू धन्धे सिखाये जावें तो अच्छा है, जिससे वे कमाकर अपना खर्च निकाल सकें। मुझे यह बात बहुत अच्छी लगी। सब चाहेंगे तो मैं सरकारसे कहूंगा और सरकार बड़ी खुशीसे अिसका अिन्तजाम कर देगी। सरकारके तो अिससे करोड़ों रुपये बचेंगे। मैं चाहता हूं कि जिस भाअीने खत लिखा है, वे अिसके लिअे आन्दोलन करें। सब शरणार्थियोंको राजी करें। शरणार्थी खुद यह कहें कि मुफ्तकी मिली खीरसे अपनी मेहनतका रूखा-सूखा टुकड़ा कहीं अच्छा है। अुससे अुनका मान बढ़ेगा। मर्यादा भी बचेगी।

अभी अेक हिन्दू बहन मेरे पास आअी थी। कहती थी कि वह अपने घरका ताला बन्द करके कहीं गअी, तो पांच छह सिक्खोंने आकर ताला तोड़ लिया और घरमें रहना शुरू कर दिया। बहनने आकर देखा तो पुलिसमें रिपोर्ट लिखाअी। सुना है, कुछ सिक्ख पकड़े भी गये। अेक भाग गया। हिन्दुओं और दूसरोंने भी अैसी गन्दी बातें की हैं। अिनसे हमारे धर्म पर बड़ा कलंक लगता है। अैसी बातें बन्द होनी चाहिये। अुस बहनने मुझसे पूछा, क्या मैं घर छोड़ दूं? मैंने कहा — कभी नहीं। सिक्ख भाअी अपना मान रखें, अपनी मर्यादासे रहें। हम सब अपनी मान-मर्यादासे रहें, तो सारा झगड़ा खतम हो जावेगा।

पूरी प्रार्थनाका ब्रॉडकास्ट

अेक और खत आया है। अुससे मैं और भी खुश हुआ। अेक भाअी लिखते हैं कि आपका रोजका भाषण तो सब रेडियो पर सुनते हैं, लेकिन प्रार्थना और भजन रेडियो पर सबको नहीं मिलते। वह भी सब सुन लें तो अच्छा हो। रेडियो क्या कर सकता है, मैं नहीं जानता। रेडियो अगर भजन भी ले ले, तो मुझे अच्छा लगेगा। ये भाअी अपना नाम भी नहीं देना चाहते। पर मैं अेक बात यह भी कहना चाहता हूं कि मैं जो रोज बोलता हूं, जो बहस करता हूं, वह भी प्रार्थना ही है। अुसीका हिस्सा है। मेरा यह सब ही भगवानके लिअे है। लड़कियां जो भजन गाती हैं, वह भगवानके लिअे गाती हैं। फिर अुसमें सुरकी मिठास हो या न हो, भक्ति तो है। जिन्हें सुरकी मिठास चाहिये अुनके लिअे रेडियो पर बहुतेरे गाने होते हैं। जिन्हें भक्तिकी मिठास चाहिये, अुनके लिअे ये भजन रेडियो पर जा सकें तो लाभ ही होगा।

बढ़ाकर कहनेसे अपना ही मामला कमजोर

कुछ भाअियोंने जूनागढ़ और अजमेरकी बाबत मुझे तार भेजे हैं। जूनागढ़में, जो काठियावाड़में है, तो मैं पला हूं। वहांका हाल मैं कह चुका हूं। अजमेरमें तो बहुत बुरी बातें हुअी हैं, अिसमें शक नहीं। वहां जलाया भी है, लूट भी हुअी, खून भी हुआ। पर बुरी बातको भी ज्यादा बढ़ाकर कहनेसे हम अपना मामला कमजोर कर लेते हैं। अिन तारोंमें बात बढ़ाकर कही गअी है। अजमेरमें दरगाह शरीफ तो ठीक है। जितना है अुतना कहिये। सरकार अमन कायम करनेकी कोशिश कर रही है। हम अुस पर भरोसा करें। भगवान पर भरोसा करें। सब अपनी अपनी गलतियोंको ठीक नहीं करेंगे, तो हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों मिट जावेंगे।

१११

१-१-'४८

आत्माकी खुराक

आज अंग्रेजी सालका पहला दिन है। आज अितने ज्यादा आदमियोंको यहां जमा देखकर मैं खुश हूं। पर मुझे दुःख है कि बहनोंको बैठनेकी जगह देनेमें सात मिनट लग गये। सभामें अेक मिनट भी बेकार जानेका मतलब है करोड़ों जनताके बहुतसे मिनट बेकार गये। फिर तो हमारा खात्मा है न? भाअियोंको चाहिये कि बहनोंको पहले जगह देना सीखें। जिस देशमें औरतोंकी अिज्जत नहीं वह सभ्य नहीं। दोनोंको अपनी मर्यादा सीखनी चाहिये। यही मनु महाराजने बताया है। आजादी मिल जानेके बाद हम सबको और भी मर्यादाके साथ बरतना चाहिये। मैं अुम्मीद करता हूं कि आगे अिससे भी ज्यादा लोग आवेंगे। पर जितने लोग आवें वे प्रार्थनाकी भावना लेकर आवें। क्योंकि प्रार्थना ही आत्माकी खुराक है। भगवानके पाससे हमें जो खुराक मिल सकती है, वह और जगह नहीं मिल सकती। मैं अुम्मीद करता हूं कि जो लोग आये हैं, वे सब यहां भी शान्ति रखेंगे। और जाते वक्त घरोंको भी अपने साथ शान्ति ले जावेंगे।

हरिजन और शराब

यू० पी० में हालमें अेक हरिजन-कान्फरेन्स हुअी थी। कहते हैं अुसमें अेक वजीरने हरिजनोंको अुपदेश दिया कि आप गन्दे रहना, गन्दे कपड़े पहनना और शराब पीना छोड़ दें। अिस पर कोअी हरिजन बोल पड़ा कि जैसे सरकार ताड़ीके दरख्तोंको अुखाड़कर फिकवा सकती है और शराबकी सब दुकानें बन्द करा सकती है, वैसे ही वह गन्दे कपड़े भी फुंकवा दे। हम नंगे रहेंगे, पर गन्दे नहीं। मैं अुस हरिजन भाअीकी हिम्मतको सराहता हूं। मैं तो ताड़ीका गुड़ बना लेता हूं। पर मैं हरिजन भाअियोंसे कहूंगा कि असली अिलाज अुनके अपने हाथोंमें है। शराब अगर दुकान पर बिकती भी हो, तब भी अुन्हें जहरकी तरह अुससे बचना चाहिये। सच यह है कि शराब जहरसे भी ज्यादा बुरी है। मजदूर लोग घरमें

आकर जो दु:ख देखते हैं, अुसे भुलानेके लिअे शराब पीते हैं। जहरसे शरीर ही मरता है, शराबसे तो आत्मा सो जाती है। खुद अपने अूपर काबू पानेका गुण ही मिट जाता है। मैं सरकारको सलाह दूंगा कि शराबकी दुकानोंको बन्द करके अुनकी जगह अिस तरहके भोजनालय खोल दे, जहां लोगोंको शुद्ध और हलका खाना मिल सके, जहां अिस तरहकी किताबें मिलें जिनसे लोग कुछ सीखें और जहां दूसरा दिल बहलानेका सामान हो। लेकिन सिनेमाको कोअी स्थान न हो। अिससे लोगोंकी शराब छूट सकेगी। मेरा यह कअी देशोंका तजरबा है। यही मैंने हिन्दुस्तानमें भी देखा और दक्षिण अफ्रीकामें भी देखा था। मुझे अिसका पूरा यकीन है कि शराब छोड़ देनेसे काम करनेवालोंका शारीरिक बल और नैतिक बल दोनों बहुत बढ़ जाते हैं, और अुनकी कमानेकी ताकत भी बढ़ जाती है। अिसलिअे सन् १९२० से शराबबन्दी कांग्रेसके कार्यक्रममें शामिल है। अब जब हम आजाद हो गये हैं, सरकारको अपना वादा पूरा करना चाहिये और आबकारीकी नापाक आमदनीको छोड़नेके लिअे तैयार हो जाना चाहिये। आखिरमें सचमुच आमदनीका भी नुकसान नहीं होगा, और लोगोंको तो बहुत बड़ा लाभ होगा ही। हमारे लिअे तरक्कीका यही रास्ता है। यह हमें अपने-आप अपने पुरुषार्थसे करना है।

११२

२–१–'४८

नोआखालीका टोप

शुक्रवारकी शामको पानी बरस रहा था। गांधीजी अपना नोआखालीका टोप लगाये हुअे प्रार्थनाकी जगह पहुंचे। लोग टोपको देखकर कुछ हंसे। प्रार्थनाके बाद गांधीजीने कुछ हंसते हुअे कहा:

नोआखालीमें किसान लोग धूपसे बचनेके लिअे अिसे ओढ़ते हैं। मैं दो बातोंकी वजहसे अिसकी बड़ी कदर करता हूं। अेक तो मुझे यह अेक मुसलमान किसानने भेंट किया है। दूसरे यह छतरीका अच्छा काम देता है और अुससे सस्ता है, क्योंकि सब गांवकी ही चीजोंसे बना है।

भजन

प्रार्थनामें जो भजन गाया गया है, आपने सुना कितना मीठा है! पर यह भजन असलमें सुबहका है। अिसमें भगवानसे प्रार्थना की गअी है कि अुठकर अिन्तजारमें खड़े भक्तोंको दर्शन दो। यह सत्य है कि अीश्वर कभी सोता नहीं है। भजनमें तो भक्तके दिलकी भावना है।

अविश्वास बुजदिलीकी निशानी है

हालमें अलाहाबादसे मेरे पास अेक खत आया है। भेजनेवाले भाअीने लिखा है कि थोड़ेसे भले लोगोंको छोड़कर किसी मुसलमान पर यह अेतबार नहीं किया जा सकता कि वह हिन्द सरकारका वफादार रहेगा — खासकर अगर हिन्दुस्तान और पाकिस्तानमें लड़ाअी हुअी। अिसलिअे थोड़ेसे नैशनलिस्ट मुसलमानोंको छोड़कर और सब मुसलमानोंको निकाल देना चाहिये। मैं कहता हूं कि हर आदमीको यही चाहिये कि जब तक कोअी बात अुसके खिलाफ साबित न हो, वह मुसलमानोंकी बातका अेतबार करे। अभी पिछले हफ्ते करीब अेक लाख मुसलमान लखनअूमें जमा हुअे थे। अुन्होंने साफ शब्दोंमें अपनी राष्ट्रभक्तिका अैलान किया। अगर किसीकी बेवफाअी या बेअीमानी साबित हो जावे, तो अुसे गोलीसे मारा भी जा सकता है, गोकि यह मेरा तरीका नहीं है। पर फिजूलकी बेअेतबारी जहालत और बुजदिलीकी निशानी है। अिसीसे साम्प्रदायिक नफरतें फैली हैं, खून बहे हैं, और लाखों लोग बेघरबार किये गये हैं। यह अविश्वास जारी रहा तो देशके अलग अलग टुकड़े हमेशाके लिअे बने रहेंगे। और आखिरमें दोनों डोमिनियन नष्ट हो जायेंगे। भगवान न करे, अगर दोनोंमें लड़ाअी छिड़ गअी, तो मैं तो जिन्दा रहना पसन्द न करूंगा। पर जो मेरी तरह लोगोंका भी अहिंसामें विश्वास होगा, तो लड़ाअी नहीं होगी और सब ठीक ही होगा।

११३

३–१–'४८

शान्ति अन्दरकी चीज है

शनिवारकी शामको गांधीजीकी प्रार्थना वेवल-कैन्टीनमें हुअी। प्रार्थनाके बादकी अुनकी तकरीरको सुननेके लिअे बहुत लोग वहां जमा हो गये थे। गांधीजीने कहा:

मुझे खुशी है कि आज मैं अपना बहुत दिनोंका वादा पूरा कर सका और अिस कैम्पके शरणार्थियोंसे बातें कर सका। मुझे बड़ी खुशी है कि यहां जितने भाअी हैं अुतनी ही बहनें हैं। मैं चाहता हूं आप सब मेरे साथ अिस प्रार्थनामें शामिल हों कि हमारे मुल्कमें और दुनियामें फिरसे शान्ति और प्रेम कायम हो। शान्ति बाहरकी किसी चीजसे, जैसे दौलतसे या महलोंसे नहीं मिलती। शान्ति अपने अन्दरकी चीज है। सब धर्मोंने अिस सचाअीका अैलान किया है। जब आदमीको अिस तरहकी शान्ति मिल जाती है, तो अुसकी आंखों, अुसके शब्दों और अुसके कामों सबसे वह शान्ति टपकने लगती है। अिस तरहका आदमी झोंपड़ीमें रहकर भी सन्तुष्ट रहता है और कलकी चिन्ता नहीं करता। कल क्या होगा, यह भगवान ही जानते हैं। श्री रामचन्द्रको, जो हमारी तरह आदमी थे, यह पता नहीं था कि ठीक अुस वक्त जब अुनके गद्दी पर बैठनेकी आशा थी, अुन्हें वनवास दे दिया जायगा। पर वे जानते थे कि सच्ची शान्ति बाहरकी चीजों पर निर्भर नहीं है। अिसलिअे वनवासके खयालका अुन पर कुछ भी असर न हुआ। अगर हिन्दू और सिक्ख अिस सचाअीको जानते होते, तो यह पागलपनकी लहर अुन परसे फिर जाती, और मुसलमान चाहे कुछ भी करते वे खुद शान्त रहते। अगर ये शब्द हिन्दुओं और सिक्खोंके दिलोंमें घर कर लें, तो मुसलमानों पर तो अपने-आप अुसका असर जरूर होगा ही।

कैम्प-जीवनका आदर्श

मैंने सुना है कि यह कैम्प कुछ अच्छी तरह चल रहा है। मैं यह बात तब तक पूरी तरह नहीं मान सकता, जब तक सब शरणार्थी

मिलकर अिस कैम्पमें अुससे ज्यादा सफाअी और तरतीबी न रखें, जितनी दिल्ली शहरमें दिखाअी देती है। आपको जो मुसीबतें भोगनी पड़ी हैं वह मैं जानता हूं। आपमें से कुछ बड़े बड़े घरोंके लोग थे। पर आपके लिअे अुतने ही आरामकी अुम्मीद यहां करना फिजूल है। आप सबको सीखना चाहिये कि नअी जरूरतोंके मुताबिक अपनेको कैसे ढाला जाय, और जहां तक बन पड़े अिस हालतको ज्यादा अच्छी बनाना चाहिये। मुझे याद है, सन् १८९९ की बोअर-वारसे ठीक पहले अंग्रेज लोग ट्रान्सवालको छोड़कर वहांसे नेटाल गये थे। वे जानते थे कि मुसीबतका कैसे सामना किया जावे। वे सबके सब बराबरकी हैसियतसे रहते थे। अुनमें से अेक अिंजीनियर था और मेरे साथ बढ़अीका काम करता था। हम सदियोंसे विदेशियोंके गुलाम रहे हैं। अिसलिअे हमने यह बात नहीं सीखी। अब जब हम आजाद हुअे हैं——और आजादी कैसी अनमोल बरकत है——मैं अुम्मीद करता हूं कि शरणार्थी भाअी-बहन अपनी अिस मुसीबतसे भी पूरा फायदा अुठावेंगे। वे अपने अिस कैम्पको अेक अैसा आदर्श कैम्प बना देंगे कि अगर सारी दुनियासे नहीं, तो सारे हिन्दुस्तानसे लोग आ-आकर अिस पर फख्र करें। प्रार्थनामें जो मंत्र पढ़ा गया है अुसका मतलब यह है कि हमारे पास जो कुछ है सब हम भगवानको अर्पण कर दें और फिर जितनेकी हमें सचमुच जरूरत हो अुतना ही अुसमें से ले लें। अगर हम अिस मंत्रके अनुसार रहें, तो अिस कैम्पमें ही नहीं, सारी दिल्लीमें, जो हालमें बदनाम हो गअी है, फिरसे नअी जान आ जावेगी और हमारे सबके जीवन अन्दरके सुखसे भर जावेंगे।

११४

४–१–'४८

लड़ाओका मतलब

मैं चन्द मिनिट देरसे आया, क्योंकि पानी बरस रहा था। मुझसे कहा गया कि प्रार्थनाकी जगह ४–५ आदमी हैं। क्या जाना है? मगर मैंने कहा कि ४–५ आदमी हों या २५, मुझको जाना ही है। यहां अितने ज्यादा आदमी आये हैं, अुसके लिअे मैं आप सबको धन्यवाद देता हूं। मैं यह मानता हूं कि आप यहां सिर्फ कुतूहलके लिअे नहीं आये, बल्कि अीश्वरके भजनके लिअे आये हैं। आजकल हर जगह ये बातें चलती हैं कि शायद पाकिस्तान और हिन्दुस्तानके बीचमें लड़ाअी होगी। यह हमारी कमनसीबी है। हम दोनों आपसमें सुलहसे बैठ सकेंगे या नहीं? मैं अिस बातसे हैरान हो गया कि पाकिस्तानने बयान निकाला है कि यूनियनने लड़ाअी छेड़नेके लिअे यू० अेन० ओ० के पास अपना केस भेजा है। यह कुछ अच्छी बात नहीं है। तब आप मुझे पूछ सकते हैं कि यूनियन यू० अेन० ओ० के पास गअी, वह क्या अच्छी बात है? मैं कहूंगा कि अच्छी भी है और बुरी भी। अच्छी अिस वास्ते कि काश्मीरकी सरहद पर चढ़ाअी होती रहती है, और अैसा कहा जाता है कि अुसमें पाकिस्तानका कुछ हाथ है। अैसा नहीं है, पाकिस्तानके अितना कह देनेसे ही काम नहीं चलता। काश्मीर यूनियनके पास मदद मांगे, तो यूनियनके लिअे मदद देना जरूरी हो जाता है। अिसमें गलती है या नहीं, यह तो अीश्वर ही जानता है।

पाकिस्तानसे जो बयान निकला है अुसमें गलती है। अुनका काम था कि बयान निकालनेसे पहले यहांकी हुकूमतसे मशविरा करते। जाहिरमें कहते हैं कि हम मिलना चाहते हैं, लेकिन अुस दिशामें कोअी ठोस कदम नहीं अुठाते। मैं पाकिस्तानके नेताओंसे यह कहूंगा कि जब देशके टुकड़े हो गये, तब किसी तरह लड़ाअी होनी ही नहीं चाहिये। धर्मके नाम पर पाकिस्तान कायम हुआ। अिसलिअे अुसको सब तरहसे

पाक और साफ रहना चाहिये। गलतियां दोनों तरफ काफी हुआीं। मगर अब भी गलतियां करते ही रहें? अगर हम दोनों लड़ेंगे तो दोनों तीसरी ताकतके हाथमें चले जायेंगे। अिससे बुरी बात और क्या होगी? दोनोंको अीश्वरको साक्षी रखकर आपसमें मिलना चाहिये। यू० अेन० ओ० के पास जो गया है, अुसे कौन रोक सकता है? अेक ही ताकत अब तो रोक सकती है — वह है दोनोंकी सद्भावना और मेलजोल। अगर हम अभी भी आपसमें समझ लें और यू० अेन० ओ० के पाससे केस अुठा लें तो वह तो राजी ही होगी। वह कोअी खिलौना थोड़े ही है। मगर जब हम मजबूर हो जाते हैं, तभी अुसके पास जाते हैं। मैं तो अभी भी अीश्वरसे प्रार्थना करूंगा कि वह हमें लड़ाअीसे बचा ले। मगर यह समझौता दिलका होना चाहिये। अगर मनमें दुश्मनी बनी रहे, तो वह तो लड़ाअीसे बदतर है। अुससे तो अच्छा यही होगा कि अीश्वर दोनोंको जी भरकर लड़ा दे। शायद अुसमें से हमें कभी साफ होना होगा तो होंगे।

बुजदिलीसे भी बुरा

दिल्लीमें कल रात जो हुआ, अुससे हमें लज्जित होना चाहिये। कहा जाता है कि खारी बावड़ीमें दुःखी स्त्रियों और बच्चोंको आगे करके पुरुष लोग मुसलमानोंके खाली मकानोंमें चले गये और जहां मुसलमान रहते थे वहां कब्जा लेनेकी कोशिश करने लगे। मगर पुलिस आअी और अुसने टीअर गैस छोड़ी तब शान्ति हुअी। शरणार्थी अपने दुःखसे अितना तो सीखें कि मर्यादासे कैसे रहना चाहिये। अिस तरह अन्धाधुन्धी मचाकर हम अपनी हुकूमतको बेकार करते हैं। क्या यहां देश-विदेशके जो अेलची आये हैं, अुन्हें हमारा झगड़ा ही देखनेको मिलेगा? अैसा हुआ तो वे लोग कहेंगे कि हमको राज चलाना ही नहीं आता। अिस तरह औरतों और बच्चोंको आगे रखना अिन्सानियतकी बात नहीं है। पुराने जमानेमें लोग गायोंको आगे रखकर लड़ते थे, ताकि हिन्दू लड़ न सकें। लेकिन वह असभ्यताकी निशानी थी। हम अिस तरह औरतोंका दुरुपयोग करते हैं। अगर हिन्दुस्तानको आजाद ही रखना चाहते हैं, तो हमें अैसी चीजोंसे बचना चाहिये।

११५

५-१-'४८

अंकुश हटनेका नतीजा

मेरे पास बहुतसे खत और तार आ रहे हैं, जिनमें लोग अंकुश अुठने पर मुझे मुबारकबाद देते हैं, और जिन चीजों पर अभी अंकुश है अुसे भी हटानेको कहते हैं। अंग्रेजीमें लिखा हुआ अेक खत मैं यहां देता हूं। खत लिखनेवाले भाअी अेक खासे अच्छे व्यापारी हैं। अुन्होंने मेरे कहनेसे अपने विचार लिखे हैं:

"आपके कहनेके मुताबिक मैं चीनी, गुड़, शक्कर और दूसरी खानेकी चीजोंका आजका भाव और अंकुश अुठनेसे पहलेका भाव नीचे देता हूं।

आजकलका भाव	नवम्बरमें अंकुश अुठनेसे पहलेका भाव
चीनी ३७॥ रु. मन	८० से ८५ रु. मन
गुड़ १३ से १५ रु. मन	३० से ३२ रु. मन
शक्कर १४ से १८ रु. मन	३७ से ४५ रु. मन
चीनीके क्यूब ११ आनेका अेक पैकेट	१॥ से १॥। रु. का अेक पैकेट
चीनी देशी ३० से ३५ रु. मन	७५ से ८० रु. मन

"आप देखते हैं कि चीनी आदिका भाव ५० फी सैकड़ा गिर गया है।

अनाज

गेहूं १८ से २० रु. मन	४० से ५० रु. मन
चावल बासमती २५ रु. मन	४० से ४५ रु. मन
मकअी १५ से १७ रु. मन	३० से ३२ रु. मन
चना १६ से १८ रु. मन	३८ से ४० रु. मन
मूंग २३ रु. मन	३५ से ३८ रु. मन
अुड़द २३ रु. मन	३४ से ३७ रु. मन
अरहर १८ से १९ रु. मन	३० से ३२ रु. मन

दालें

चनेकी दाल २० रु. मन	३० से ३२ रु. मन
मूंगकी दाल २६ रु. मन	३९ रु. मन
अुड़दकी दाल २६ रु. मन	३७ रु. मन
अरहरकी दाल २२ रु. मन	३२ रु. मन

तेल

सरसोंका तेल ६५ रु. मन	७५ रु. मन

अूनी और रेशमी कपड़ा

"अंकुश निकल जानेके कारण बाजारमें बेतहाशा अूनी और रेशमी कपड़ा आ गया है। अूनी और रेशमी कपड़ेकी कीमत कमसे कम ५० फी सैकड़ा गिर गअी है। कअी जगह ६६ फी सैकड़ा भी गिरी है।

सूती कपड़ा और सूत

"अिस आशासे कि सूती कपड़े और सूत परसे भी अंकुश जल्दी ही निकल जायेगा, कीमतें धीरे धीरे गिर रही हैं। अगर सूती कपड़े परसे पूरी तरह अंकुश अुठा लिया जाय, तो कीमत कमसे कम ६० फी सैकड़ा गिर जायगी, और कपड़ा भी ज्यादा अच्छा मिलने लगेगा। मिल-मालिकोंको अेक-दूसरेके साथ मुकाबला करना पड़ेगा। रेशमी और अूनी कपड़ेकी तरह अंकुश अुठ जानेसे सूती कपड़ा भी ढेरों मिलने लगेगा। सूती कपड़े परसे अगर अंकुश अुठाया गया, तो अुसे सफल बनानेके लिअे कमसे कम तीन साल तक हिन्दुस्तानसे बाहर कपड़ा भेजनेकी मनाही होनी चाहिये।

"सरकारी दफ्तरोंके आंकड़े तो जादूके खेल-से रहते हैं। वे खुराक और कपड़े परसे अंकुश अुठानेके रास्तेमें नहीं आने चाहिये।

पेट्रोलका राशनिंग

"पेट्रोल पर अंकुश तो युद्धके कारण लगाया गया था। अब अुसकी जरूरत नहीं है। सच्ची बात तो यह है कि अिस कण्ट्रोलसे थोड़ीसी ट्रान्सपोर्ट कंपनियोंको फायदा पहुंच रहा है और वे अिसे रखना चाहती हैं। करोड़ों जनताका तो अिसके साथ कोअी सम्बन्ध ही नहीं है। यह

कहनेकी जरूरत नहीं कि अेक अेक बस या ट्रकका मालिक, जिसके पास अेक ही रास्तेका लाअिसेन्स है, आज १०–१५ हजार रुपये हर महीने कमा रहा है। अगर पेट्रोल पर अंकुश न रहे और गाड़ियां चलानेमें किसी अेकके अिजारेका रिवाज न रहे, तो अेक गाड़ीका मालिक महीनेमें ३०० रु. से ज्यादा नहीं कमा सकता। आज तो पेट्रोलकी चिट्ठियोंकी तिजारत होती है। अेक लारीकी पेट्रोलकी चिट्ठी आज किसी ट्रान्सपोर्ट डीलरके पास १० हजारमें बेची जा सकती है। अगर पेट्रोल परसे अंकुश हटा दिया जाय, तो खुराक, कपड़े और मकानोंका प्रश्न और कअी दूसरे प्रश्न, जो आज देशके सामने हैं, अपने-आप हल हो जावेंगे। पेट्रोलके राशनिंगसे ट्रान्सपोर्ट कंपनियां पैसे कमा रही हैं और करोड़ों लोगोंका जीवन बरबाद हो रहा है।

"अंकुश हटवाकर आप दुःखी जनताकी सेवा करें, तब यह देश चन्द खुशकिस्मतोंके रहने लायक ही नहीं, बल्कि करोड़ों बदकिस्मतोंके रहने लायक भी बनेगा। अंकुश लड़ाअीके जमानेके लिअे थे। आजाद हिन्दमें अुनका कोअी स्थान नहीं होना चाहिये।"

मुझे लगता है कि अिन आंकड़ोंके सामने कुछ नहीं कहा जा सकता। हो सकता है कि यह बात मेरा अज्ञान मुझसे कहला रहा हो। अगर अैसा है तो ज्यादा जानकार लोग दूसरे आंकड़े बताकर मेरा अज्ञान दूर करनेकी कृपा करें। मैंने अूपर लिखी बातें मान ली हैं, क्योंकि जानकार लोगोंका मत भी अिसी तरफ है।

जब जनता किसी बातको मानती है और कोअी चीज चाहती है, तब लोकराजमें झिझकको कोअी स्थान नहीं रहता। जनताके प्रतिनिधियोंको जनताकी मांग ठीक रूपमें रखनी चाहिये, ताकि वह पूरी हो सके। जनताका मानसिक सहकार तो बड़ी-बड़ी लड़ाअियां जीतनेमें बहुत मदद दे चुका है।

कहते हैं कि दुनियामें जितना पेट्रोल निकलता है, अुसका अेक फी सैकड़ा ही हिन्दको मिलता है। अिससे निराश होनेका कारण नहीं। हमारी मोटरें तो चलती ही हैं। क्या अिसका यह मतलब है कि क्योंकि हम युद्ध करनेवाले लोग नहीं हैं, अिसलिअे हमें ज्यादा पेट्रोलकी जरूरत

ही नहीं? और अगर हमें ज्यादा जरूरत पड़े और दुनियामें जितना पेट्रोल निकलता है अुतना ही निकले, तो बाकी दुनियाके लिअे पेट्रोल कम पड़ेगा? टीकाकार मेरे घोर अज्ञानकी हंसी न करें। मैं तो प्रकाश चाहता हूं। अगर मैं अपना अंधेरा छिपाअूं, तो प्रकाश पा नहीं सकता। सवाल यह अुठता है कि अगर हमारे हिस्सेमें बहुत कम पेट्रोल आता है, तो कालेबाजारमें पेट्रोलका अटूट जखीरा कहांसे आता है, और गाड़ियोंका फिजूल आना-जाना बिना किसी तरहकी रुकावटके कैसे चलता है?

पत्र लिखनेवाले भाअीने जो हकीकत बयान की है, वह सच्ची हो तो चौंकानेवाली चीज है। अंकुश अमीरोंके लिअे आशीर्वाद रूप है और गरीबोंके लिअे लानत। और अंकुश रखा जाता है गरीबोंके खातिर। अगर अिजारेका रिवाज अिसी तरह काम करता है, तो अुसे अेक पलका भी विचार किये बिना निकाल देना चाहिये।

कपड़ेका कण्ट्रोल

कपड़ेके बारेमें तो अगर खादीको, जिसे आजादीकी वर्दी कहा गया है, हम भूल नहीं गये, तो कपड़े पर अंकुश रखनेके पक्षमें तो अेक भी दलील नहीं है। हमारे पास काफी रुअी है और काफी हाथ हैं, जो देहातोंमें चरखा और करघा चला सकते हैं। हम आरामसे अपने लिअे कपड़ा तैयार कर सकते हैं। न अुसके लिअे शोर-गुलकी जरूरत है, न मोटर-लारियोंकी। पुराने राजमें हमारी रेलोंका पहला काम फौजकी सेवा था, दूसरे नम्बर पर बन्दरगाहों पर रुअी ले जाना, और बाहरसे बना कपड़ा भीतर ले आना था। जब हमारी केलिको, जिसे खादी कहते हैं, देहातोंमें बनती है और वहीं खपती है, तब अिस केन्द्रीकरणकी कोअी जरूरत नहीं रहती। अपने आलस या अज्ञानको या दोनोंको छिपानेके लिअे हम अपने देहातोंको गाली न दें।

११६

६–१–'४८

यह दबाव बन्द होना चाहिये

मैंने सुना है कि बहुतसे शरणार्थी अभी भी खाली मुस्लिम-घरोंका कब्जा लेनेकी कोशिश कर रहे हैं और पुलिस भीड़को हटानेके लिअे टीअर गैसका अिस्तेमाल कर रही है। यह सच है कि शरणार्थियोंको बड़ी मुसीबतका सामना करना पड़ता है। दिल्लीकी कड़ाकेकी सर्दीमें खुलेमें सोना बड़ा कठिन है। जब पानी गिरता है तब खेमोंमें काफी हिफाजत नहीं हो सकती। अगर शरणार्थी मुस्लिम-घरोंको अपना निशाना न बनावें, तो मैं अुनके मकानोंके लिअे शोर मचानेको समझ सकता हूं। मिसालके तौर पर, वे बिड़ला-भवनमें आ सकते हैं और मुझे और अेक बीमार महिलाके साथ घरके मालिकोंको बाहर निकालकर अुस पर कब्जा कर सकते हैं। यह खुली और सीधी बात होगी, हालांकि भले आदमियोंको शोभा देनेवाली नहीं होगी। आज मुसलमानोंको जिस तरह दबाया और अपने घरोंसे निकाला जा रहा है, वह बेअीमानी और असभ्यताका काम है। पहलेसे डरे हुअे मुसलमानोंको धमकाकर घरोंसे बाहर निकालना और फिर अुनके घरों पर कब्जा कर लेना किसीके लिअे अच्छी बात नहीं होगी। अिससे किसीको फायदा नहीं होगा। मैंने सुना है कि आज सरकारने दूसरी जगह शरणार्थियोंको थोड़े मकान देनेका सुभीता किया है, लेकिन वे मुसलमानोंके घरों पर कब्जा करनेकी जिद करते हैं। अिससे साफ जाहिर होता है कि शरणार्थी अपनी जरूरतके कारण मुसलमानोंके घरों पर कब्जा नहीं करते, बल्कि वे चाहते हैं कि दिल्लीसे मुसलमानोंको साफ कर दिया जाय। अगर आम लोग यही चाहते हैं, तो मुसलमानोंको टेढ़े तरीकेसे भगानेके बजाय अुनसे अैसा साफ कह देना कहीं बेहतर होगा। यूनियनकी राजधानीमें अैसा काम करनेका नतीजा अुन्हें समझ लेना चाहिये।

हड़तालोंका रोग

बम्बअीकी खबर है कि वहां जहाज-गोदामके और दूसरे मजदूर हड़ताल करनेकी बात सोच रहे हैं। मैं सारे लोगोंसे अपील करता हूं कि वे हड़ताल न करें, फिर भले वे कांग्रेसी हों, सोशलिस्ट पार्टीके

हों —अगर सोशलिस्ट कांग्रेससे अलग माने जा सकें — या कम्युनिस्ट पार्टीके हों। आज हड़तालोंका वक्त नहीं है। अैसी हड़तालें हड़ताल करनेवालोंको और सारे देशको नुकसान पहुंचाती हैं।

सच्चा लोकराज

औंधके राजा साहबने अपनी प्रजाको कअी बरस पहले अुत्तरदायी शासन दे दिया था। अुनके पुत्र अप्पा साहबने भी अपनी प्रजाकी सेवामें जिन्दगी लगा दी है। राजा साहब और दूसरे कुछ लोगोंने यूनियनमें मिल जानेकी योजनाको करीब करीब मान लिया है। सरदार पटेलने कहा है कि राजाओंको पेन्शन मिलेगी, लेकिन मेरा विश्वास है कि औंधके राजा साहब प्रजा पर बोझ नहीं बनेंगे। जो कुछ अुन्हें मिलेगा अुसे वे प्रजाकी सेवा करके कमाना चाहेंगे। राजा साहबने मुझे लिखा है कि अुन्होंने अपने राजमें जो पंचायत-तरीका चालू किया है, वह क्या राजके यूनियनमें मिल जाने पर भी जारी नहीं रह सकेगा? राजा साहबसे यह कहा गया है कि अुनके राजके यूनियनमें मिल जाने पर वहांकी हुकूमतका ढांचा बाकीके हिन्दुस्तानके ढांचेसे मिलना चाहिये। मेरी रायमें जहां लोग पंचायत-राज चाहते हैं, वहां अुसे काम करनेसे रोक सकनेके लिअे कोअी कानून विधानमें नहीं है। औंध अेक रियासतके नाते भले खतम हो जाय, लेकिन वहां औंध नामसे पुकारा जानेवाला गांवोंका खास ग्रूप तो कायम रहेगा। अैसा हर ग्रूप या अुसका कोअी मेम्बर अपने यहां पंचायत-राज रख सकता है, भले बाकीके हिन्दुस्तानमें वह हो या न हो। सच्चे हक फर्ज अदा करनेसे मिलते हैं। अैसे हकोंको कोअी छीन नहीं सकता। औंधमें पंचायत लोगोंकी सेवा करनेके लिअे है। हिन्दुस्तानके सच्चे लोकराजमें शासनकी अिकाअी गांव होगा। अगर अेक गांव भी पंचायत-राज चाहता है, जिसे अंग्रेजीमें रिपब्लिक कहते हैं, तो कोअी अुसे रोक नहीं सकता। सच्चा लोकराज केन्द्रमें बैठे हुअे २० आदमियोंसे नहीं चल सकता। अुसे हर गांवके लोगोंको नीचेसे चलाना होगा।

आवक-जावकमें समतोल होना चाहिये

अेक दोस्तने मुझे खत लिखा है। अुसमें अुन्होंने कहा है कि किसी भी सुखी और खुशहाल देशमें मालकी आवक और जावकमें समतोल

होना चाहिये। असलिअे अुन्होंने सुझाया है कि हिन्दुस्तानको मालकी आवक अितनी सीमित कर देनी चाहिये कि वह अुसकी जावकसे कुछ कम रहे। अगर आजकी तरह चलता रहा, तो हिन्दुस्तानके साधन जल्दी ही खतम हो जायंगे। अिसलिअे अुन्होंने सुझाया है कि खिलौने और दूसरी अैसी गैर-जरूरी चीजें बाहरसे मंगाना बन्द कर दी जायं। अिसके अलावा, हिन्दुस्तान आज तक अपना कच्चा माल बाहर भेजता रहा है और बाहरसे तैयार माल मंगाता रहा है। अिससे आवक-जावकके समतोलको जरूर धक्का पहुंचेगा और हिन्दुस्तान कअी तरहसे गरीब हो जायगा। मैं खत लिखनेवाले भाअीकी यह बात मानता हूं कि हिन्दुस्तानको ज्यादासे ज्यादा स्वावलम्बी बनना चाहिये, और हिन्दुस्तान और दूसरे देशोंके बीचका व्यापार हमेशा आपसी मददके अुसूल पर टिकना चाहिये, शोषण पर कभी नहीं।

११७

७–१–’४८

गलत अुपवास

मेरे पास बहुतसी चिट्ठियां आ गअी हैं। मुझे अपना भाषण १५ मिनिटमें पूरा करना चाहिये। अिसलिअे हो सकेगा अुतनी चिट्ठियोंका जवाब देनेकी कोशिश करूंगा।

अेक भाअी लिखते हैं कि वे अुपवास कर रहे हैं और अुनका अुपवास चालू रहेगा। अैसा अुपवास अधर्म है। जो आदमी अधर्म करना चाहे, अुसे कौन रोक सकता है? मैंने काफी अुपवास किये हैं। अिस बारेमें मैं काफी जानता हूं। अिसलिअे मैं मानता हूं कि मुझे पूछकर अुपवास करना चाहिये।

विद्यार्थियोंकी हड़ताल

अखबारोंमें आया है कि ९ तारीखसे विद्यार्थी लोग हड़ताल करनेवाले हैं। यह बड़ी गलत बात है। हड़ताल करके अपना काम निकालना ठीक नहीं। मैंने काफी हड़तालें करवाअी हैं और अुनमें

सफलता भी पाअी है। लेकिन मैं जानता हूं कि हरअेक हड़ताल सच्ची नहीं होती, अहिंसक नहीं होती। विद्यार्थी-जीवनमें अिस तरह हड़तालें करना ठीक नहीं।

पाकिस्तानसे आये शरणार्थियोंकी शिकायतें

आज मेरे पास कअी दु:खी लोग आये थे। वे पाकिस्तानसे आये हुअे लोगोंके प्रतिनिधि थे। अुन्होंने अपनी दु:खकी कहानी सुनाअी। मुझसे कहा कि आप हममें दिलचस्पी नहीं लेते। लेकिन अुन्हें क्या पता कि मैं आज यहां अिसीलिअे पड़ा हूं। मगर आज मेरी दीन हालत है। मेरी आज कौन सुनता है? अेक जमाना था जब लोग मैं जो कहूं सो करते थे। सबके सब करते थे, यह मेरा दावा नहीं। मगर काफी लोग मेरी बात मानते थे। तब मैं अहिंसक सेनाका सेनापति था। आज मेरा जंगलमें रोना समझो। मगर धर्मराजने कहा था कि अकेले हो तो भी जो ठीक समझो वही करना चाहिये। सो मैं कर रहा हूं। जो हुकूमत चलाते हैं वे मेरे दोस्त हैं। मगर मैं कहूं अुसके मुताबिक सब चलते हैं अैसा नहीं है। वे क्यों चलें? मैं नहीं चाहता कि दोस्तीके खातिर मेरी बात मानी जाय। दिलको लगे तभी माननी चाहिये। अगर मैं कहूं अुसी तरह सब चलें, तो आज हिन्दुस्तानमें जो हुआ और हो रहा है वह हो नहीं सकता था। मैं कोअी परमेश्वर तो हूं नहीं। तो भी मुझसे दु:खी भाअी कहते हैं कि हमारे रहने, खाने और पहननेका कुछ प्रबन्ध तो होना चाहिये।

शरणार्थियोंका फर्ज

बात सही है। शरणार्थियोंने क्या गुनाह किया? वे तो बेगुनाह हैं। हमारे भाअी हैं। मुझे जो मिलता है वह अुन्हें न मिले, यह अिन्साफ नहीं। अुन्हें शिकायत करनेका हक है। मैं कहूंगा कि वे मकान भले मांगें, मगर साथ साथ मैं अुनसे यह भी कहूंगा कि अुन्हें जो काम दिया जाय और अुनसे हो सके सो अुन्हें करना चाहिये। जो घर मिले अुसमें रहना चाहिये। घास-फूसकी झोंपड़ी मिले, तो अुसमें भी आनन्दसे रहना चाहिये। वे अैसा न कहें कि हमें महल ही चाहिये। जो खाना-कपड़ा मिले अुसमें अुन्हें सन्तोष मानना चाहिये। घासके बिछौनोंसे

रुअीकी गादीका काम चल जाता है। अगर हम अैसे सीधे रहें तो अूंचे चढ़ सकते हैं। मजदूर लिखना-पढ़ना नहीं कर सकता, मगर लिखने-पढ़नेवाला मजदूरी तो कर सकता है।

कराचीकी वारदातें

कराचीमें क्या हो गया, आपने अखबारोंमें देखा ही होगा। सिंधमें हिन्दू और सिक्ख आज रह नहीं सकते। जिस गुरुद्वारेमें वे लोग सिंधसे आनेके लिअे रुके थे, अुसी गुरुद्वारे पर हमला हुआ। हुकूमत कहती है कि वह लाचार हो गअी है। रोक नहीं सकी। पर दबानेकी कोशिश करती है। अिस तरह हुकूमतवाले लाचार हो जाते हैं, तो अुन्हें हुकूमत छोड़ देनी चाहिये। फिर भले ही लोग लुटेरे बन जायं। यह बात मैं दोनों हुकूमतोंसे कहता हूं। मेरी निगाहमें दोनों हुकूमतोंमें कोअी फर्क नहीं है। पाकिस्तानी हुकूमत लोगोंको मरने दे, अुसके पहले तो अुसे खुद मरना है।

११८

८-१-'४८

अेक भाअी लिखते हैं कि अुन्होंने कल साढ़े तीन बजे अेक पत्र मुझे भेजा था। लेकिन अभी तक अुन्हें जवाब नहीं मिला। मेरे पास अितने खत आते हैं कि मैं सब पढ़ नहीं सकता। फिर वे अलग अलग भाषाओंमें रहते हैं। दूसरे लोग पढ़कर जो मुझे बताने जैसा होता है सो बता देते हैं। किसी आवश्यक बातका जवाब रह गया हो, तो अिन भाअीको अपनी बात दोहरानी चाहिये थी।

हरिजन और शराब

अेक भाअी पूछते हैं कि मैंने पिछले हफ्ते कहा था कि हरिजनोंको शराब छोड़नी चाहिये। तो क्या हरिजन ही छोड़ें और पैसेवाले या सोलजर वगैरा न छोड़ें? सबके लिअे अेक कानून क्यों न बने? यह प्रश्न पूछने जैसा नहीं है। दूसरे पाप करें तो क्या हम भी पाप करें? जो समझदार हैं अुनके लिअे कानून क्यों चाहिये? अुनको सोच-समझकर अपने-आप शराब छोड़ देनी चाहिये। हरिजन अनपढ़ हैं, वे मजदूरी करते

हैं। अुनको आराम या मन-बहलावका कोअी साधन नहीं मिलता। अिसलिअे वे शराब पीकर अपना दुःख भूलना चाहते हैं। मगर पैसे-वालों और सोलजरोंको तो शराब पीनेका अितना भी कारण नहीं। फौजी लोग कहेंगे कि शराबके बिना अुनका काम कैसे चल सकता है? मगर मैं फौजको ही ठीक नहीं मानता, तो फिर शराबको क्या माननेवाला हूं? मगर फौजियोंमें भी मेरे काफी दोस्त हैं। अुनमें हिन्दुस्तानी भी हैं और काफी अंग्रेज भी, जो शराब नहीं पीते। शराबबन्दीका कानून अैसा नहीं कहेगा कि पैसेवाले शराब पियें और हरिजन मजदूर न पियें।

विद्यार्थियोंमें सब पार्टियां हैं

अेक भाअी लिखते हैं कि विद्यार्थियोंकी हड़ताल होनेकी जो बात है, अुसमें कांग्रेसी विद्यार्थी शामिल नहीं हैं। यह तो कम्युनिस्ट विद्यार्थियोंकी हड़ताल है। विद्यार्थियोंमें भी सब पार्टियां होती हैं। कांग्रेसी, कम्युनिस्ट, सोशलिस्ट वगैरा। मेरी सलाह तो सबके लिअे है। कांग्रेसके विद्यार्थी हड़तालमें शामिल नहीं हैं, तो वे बधाअीके पात्र हैं। मगर कम्युनिस्ट पार्टीके विद्यार्थी हड़ताल कर सकते हैं, यह बात थोड़े ही है! कम्युनिस्ट भाअी होशियार हैं। वे देशकी सेवा करना चाहते हैं। मगर अिस तरह देशकी सेवा नहीं होती। फिर विद्यार्थी किसी भी पार्टीका पक्ष क्यों लें? विद्यार्थियोंका तो अेक ही पक्ष है। वह है विद्या सीखना। और वह भी देशके खातिर, अपना पेट भरनेके लिअे नहीं। हड़ताल अुनके लिअे और देशके लिअे घातक है। काम निकालनेके दूसरे बहुतसे रास्ते हैं। पहले जब आजादी नहीं मिली थी तब हड़तालें होती थीं। मैंने खुद कअी हड़तालोंमें हिस्सा लिया है और अुन्हें सफल बनाया है। मगर सब हड़तालें सचाअीके खातिर होती हैं, सब अहिंसक होती हैं अैसा भी नहीं। आज हुकूमत हमारे हाथमें है। यह हड़तालोंका मौका नहीं। आज देशको ज्यादा विद्यार्थी और सच्चे विद्यार्थी चाहिये। अिसलिअे मेरी अुनसे बिनती है कि वे हड़ताल न करें।

सत्याग्रह क्यों नहीं?

अेक प्रश्न आया है। अच्छा है। अुसमें लिखा है कि आप बुरी वस्तुओंका त्याग करवाना चाहते हैं। खुद भी अैसा करते हैं, यह अच्छा

है। तब आप पाकिस्तान जाकर वहांवालोंसे बुराअी क्यों नहीं छुड़वाते? वहां जाकर आप सत्याग्रह क्यों नहीं करते? यहां तो आपने काफी काम कर दिया। अब वहां भी जाअिये। मैंने अिसका जवाब दे दिया है। आज मैं किस मुंहसे पाकिस्तान जा सकता हूं? यहां हम पाकिस्तानकी चाल चलें, तो वहांके लोगोंको जाकर मैं क्या कहूं? वहां मैं तभी जा सकता हूं जब हिन्दुस्तान ठीक बन जाय और यहांके मुसलमानोंको कुछ शिकायत न रह जाय। मुझे तो यहीं 'करना है या मरना है'। दिल्लीमें हिन्दू और सिक्ख पागल हो गये हैं। वे चाहते हैं कि यहांके सब मुसलमानोंको हटा दिया जाय। बहुतसे तो चले गये। जो बाकी हैं अुन्हें भी हटा दें, तो हमारे लिअे लज्जाकी बात होगी। पाकिस्तानसे हिन्दू-सिक्ख आ जाना चाहते हैं, तो वहां सत्याग्रह कौन करे? आज सत्याग्रह कहां रहा है? सत्याग्रह नहीं है तो अहिंसा भी नहीं है। अहिंसाको भी आज कौन मानता है? आज सबको मिलिटरी चाहिये। हमने मिलिटरीको अीश्वरकी जगह दे दी है। अिसका मतलब है कि सब हिंसाके पुजारी बन गये हैं। हिंसाके पुजारी सत्याग्रह कैसे चला सकते हैं? मेरी सुनें तो आज अखबारोंकी भी शकल बदल जाय। आज अखबारोंमें कितनी गंदगी भरी रहती है? हम सत्याग्रहको भूल गये हैं। सत्याग्रह हमेशा चलनेवाली चीज है। मगर चलानेवाले सत्याग्रही भी तो चाहिये!

यूनियनमें साम्प्रदायिकताको जगह नहीं

फिर वे भाअी कहते हैं कि जब तक यहांसे मुसलमानोंको नहीं निकालेंगे, तब तक पाकिस्तानसे जो हिन्दू और सिक्ख आये हैं अुनके लिअे जगह कहांसे आयेगी? मैं मानता हूं कि जितने हिन्दू और सिक्ख पाकिस्तानसे आये हैं करीब करीब अुतने मुसलमान यहांसे चले गये हैं। बाकी जो पड़े हैं अुन्हें हटानेकी चेष्टा हो रही है। यह सब पागलपनकी बात है। हिन्दमें मुसलमानोंकी काफी तादाद पड़ी है। अिसलिअे मौलाना साहबने लखनअूमें कान्फरेन्स बुलाअी थी। अुसमें ७० हजार लोग आये थे। अिस जमानेमें अितनी बड़ी मुसलमानोंकी सभा कहीं नहीं हुअी। अुसके बारेमें अच्छी-बुरी बातें सुनी हैं। अुन्हें मैं छोड़ देना चाहता हूं।

यहां जो मुसलमान हैं अुनके प्रतिनिधि अुस कान्फरेन्समें गये थे। क्या हम अिन मुसलमानोंको मार डालें या पाकिस्तान भेज दें? मेरी जबानसे अैसी चीज कभी नहीं निकलनेवाली है। हमें दुनियाकी बुराअियोंकी नकल थोड़े ही करनी है!

बहावलपुरका डेप्युटेशन

आज मेरे पास बहावलपुरके लोग आये थे। मीरपुर (काश्मीर) के लोग भी आये थे। वे परेशान हैं। वे लोग अदबसे बातें करते थे। वे बैठे थे अितनेमें पंडितजी आ गये। पंडितजीसे भी अुनकी बातचीत हुअी। मुझे अुम्मीद है कि कुछ न कुछ हो जायगा। पूरा हो जायगा, यह मैं नहीं समझता। आज लड़ाअी छिड़ तो नहीं गअी है। मगर अेक किस्मकी लड़ाअी चल रही है। अैसी हालतमें रास्ता निकालना, सबको वहांसे निकालकर लाना बहुत कठिन है। जितना हो सकेगा अुतना करेंगे। अितना करने पर भी कोअी न बच सका या न लाया जा सका तो क्या किया जाय? हमारे पास जितनी चाहिये अुतनी गाड़ियां नहीं हैं। काश्मीरका रास्ता खुला नहीं है। थोड़ासा रास्ता है। अुससे अितनी बड़ी तादादको लाना मुश्किल है। बहावलपुरकी बात सुनने लायक है। वहांके लोगोंको भी यही कहूंगा कि अेक अिन्सान जो कर सकता है, मैं कर रहा हूं। वे लोग कहते हैं कि जो लोग दूसरे सूबोंसे आये हैं, वे यहां नौकरी वगैराके लिअे दरखास्त कर सकते हैं; लेकिन रियासतवाले नहीं। सरदार पटेलने कहा है कि अैसा फर्क नहीं होगा, फिर भी होता है। मैं समझता हूं कि अैसा नहीं हो सकता। होना नहीं चाहिये। मैं पता लगाअूंगा। अिसमें कुछ गैर-समझ होगी। अगर अैसा है तो हुकूमतवालोंको अुसे तुरन्त सुधारना होगा।

११३

९–१–'४८

बहादुरी और धीरजकी जरूरत

कल मैंने बहावलपुरके बारेमें बात की थी। बहावलपुरमें जो मन्दिर था —— मन्दिर तो आज भी है, पर किसी हिन्दूके हाथमें नहीं है, न हिन्दूकी वहां चल सकती है —— अुस मन्दिरके मुखिया आज मेरे पास आये थे। अुन्होंने देखा था किस तरह वहां हिन्दू जान बचानेके लिअे भागे थे। अुन्होंने आकर मन्दिरमें शरण ली, पर वहां भी वे सुरक्षित नहीं थे। आखिर वहांसे पिछले दरवाजेसे भागे। साथ मुखिया भी भागे। कितने ही मर गये। कअी औरतोंको बचाया। सबको नहीं बचा सके। जो वहां पड़े हैं अुनको बचानेके लिअे वे कहते थे। मैंने कहा कि अिन्सानसे जो हो सकता है वह हो रहा है। मगर दो हुकूमतें बन गअी हैं। देशके दो टुकड़े हो गये हैं। अेक राजमें दूसरे राजको दखल देनेका हक नहीं। फिर भी जो हो सकता है वह सब कर रहे हैं। आज अैसा मौका है कि हममें बहुत धीरज और बहादुरी होनी चाहिये। मौतसे डरना नहीं चाहिये। जो आदमी अपने मान और धर्मको बचानेके लिअे मरनेको तैयार है, अुसका अपमान हो नहीं सकता। मरना सबको है —— आज या कल। अिसलिअे मौतसे डरना क्या? आखिर हमें अीश्वर पर ही भरोसा रखना चाहिये। अुसकी अिच्छाके बिना कुछ हो ही नहीं सकता।

रहनेके घरोंकी समस्या

आज मेरे पास कुछ दुःखी बहनें और भाअी आये थे। वे भिखारी नहीं हैं। अुनके पास थोड़ा पैसा है। पास ही किसी मुसलमानकी कोठीमें वे तीन चार महीनोंसे हैं। मुसलमान डरसे भाग गया है। जहां मुसलमान भाअी गया है वहांसे ये हिन्दू भाअी आये हैं। मुसलमानने कहा, मेरी कोठीमें जाकर रहो सो रहने लगे। अभी हुकूमतका हुक्म आया कि कोठी खाली कर दो। किसी दूसरी हुकूमतके अेलचीके लिअे अुसकी जरूरत है। मैं मानता हूं कि अुन्हें बाहरके अेलची वगैराके लिअे मकान

चाहिये, तो वह खाली करना चाहिये। पर बदलेमें अुन्हें रहनेकी जगह मिलनी चाहिये। रामायण वगैरामें पढ़ा है कि अुन दिनों मंत्रके जोरसे शहर खड़े हो जाते थे। आज वह हो नहीं सकता है। वह मंत्र हमारे पास नहीं है। पहले भी था या नहीं, वह भी मैं नहीं जानता। अिसलिअे जो मकान हुकूमतको चाहिये वह ले; लेकिन जिनसे ले अुनके लिअे दूसरा अिन्तजाम तो होना चाहिये। अुन्हें सड़क पर बैठनेको कोअी हुकूमत नहीं कह सकती। पर मैं अुन्हें पूरी तसल्ली नहीं दे सका। मैंने कहा, मैं हुकूमत नहीं चलाता हूं, हुकूमतका सिपाही भी नहीं हूं। मेरा अपना घर भी नहीं। मैं मानता हूं कि अुनकी बात सही नहीं है। अगर है तो बड़े दुःखकी बात है। जो आदमी कानूनसे किसी मकानमें रहते हैं, अुनको अैसा नोटिस नहीं दिया जा सकता। जो लुटेरा होकर किसीके घरमें घुस बैठता है, अुसे तो निकालें नहीं तो क्या करें? पर कानूनसे रहनेवालेको अैसे नहीं निकाल सकते।

अेक गलतफहमी

अेक भाअी लिखते हैं कि पहले मैंने कहा था कि बम्बअीमें अेक आदमीको अेक सेर चावल रोज मिलता है। मैंने अेक दिनका नहीं कहा था, अेक हफ्तेका कहा था। अेक सेर रोजका तो बहुत हुआ। वे कहते हैं अेक सेर नहीं, पाव सेर रोज मिलता है। मेरी निगाहमें वह भी अच्छा है। पहले अितना नहीं मिलता था। अेक हफ्तेका अेक सेर मिलता था। अगर मैंने अेक दिनका कहा है तो वह भूल है। यह समझना चाहिये कि आज अेक सेर चावल राशनमें कैसे दिये जा सकते हैं?

बिड़ला-भवनमें क्यों?

दूसरे भाअी लिखते हैं—बिड़ला-भवनमें आप हैं, प्रार्थना होती है, पर गरीब नहीं आ सकते। पहले आप भंगीबस्तीमें रहते थे। अब वहां क्यों नहीं रहते? यह ठीक है कि यहां गरीब नहीं आ सकते। मैं जब दिल्ली आया था अुस समय दिल्लीमें मारपीट चल रही थी। दिल्ली मरघट-सा लगता था। शरणार्थियोंसे भंगीबस्ती भरी थी सरदार पटेलने कहा, आपको वहां नहीं रख सकता। बिड़ला-भवनमें रहना है।

सो यहां रहा। मेरे लिअे शरणार्थियोंको हटाना ठीक न था। और मैं अेक कमरेमें तो रह नहीं सकता। मेरे ऑफिसके कामके लिअे, साथियों वगैराके लिअे भी जगह चाहिये। मैं नहीं जानता कि अभी भंगीबस्ती खाली है या नहीं। अगर हो तो भी मेरा धर्म नहीं है कि मैं वहां चला जाअूं। अुसे दुःखियोंके लिअे खाली रखना चाहिये। यहां रहनेका मुझको शौक नहीं है। वहां रहनेका शौक जरूर है। यहां जितने गरीब आ सकते हैं आवें। आज यहां पड़ा हूं, जिससे मुसलमानोंको जितनी तसल्ली दे सकूं दूं। अुसके लिअे भी यहां पर आना अच्छा है। यहां मुसलमान ज्यादा दिलजमाअीसे आ-जा सकते हैं। शहरमें अितनी बे-फिकरी नहीं रहती। हम अैसे पागल बन गये हैं। हुकूमतवालोंके लिअे भी यहां मेरे पास आना आसान है। भंगीबस्तीमें जानेमें कुछ समय तो लगता है।

सफेदपोश लुटेरे

अेक भाअी लिखते हैं कि यहां सफेदपोश लुटेरे बहुत बढ़ गये हैं। बाअिसिकल वगैरा लूटते हैं। अैसी लूट राजधानीमें हो यह शरमकी बात है।

१२०

१०–१–'४८

अनुशासनकी जरूरत

भाषणसे पहले साधुके कपड़े पहने हुअे अेक भाअीने जिद की कि वे अपना खत गांधीजीको पढ़कर सुनावेंगे। गांधीजीको काफी दलील करके अुन्हें रोकना पड़ा। प्रार्थनाके बाद गांधीजीने भाषणमें कहा, यह देखने लायक बात है कि आज हम कहां तक गिर गये हैं। साधु होनेका, संयमका, गीता आदि पढ़नेका जो दावा करते हैं, वे अितना संयम क्यों न रखें? अुन्हें अेक बार कहनेसे ही बैठ जाना चाहिये। अितनी दलील भी क्यों? आजकल प्रार्थना-सभामें आम तौरसे सब लोग अितनी शान्ति रखते हैं वह अच्छा लगता है।

बहावलपुरके भाअियोंसे

बहावलपुरके भाअियोंकी भी अैसी ही बात है। अपने दुःखकी बात कहिये, फिर प्रार्थनामें शान्त रहिये। मुझसे किसीने कहा था कि बहावलपुरवाले भाअी आज हमला करनेवाले हैं। प्रार्थनामें चीखते ही रहेंगे। मैंने कहा, अैसा हो नहीं सकता। अुनका नमूना सबके सामने रखता हूं। अुनके दुःखका मैं साक्षी हूं। वे अितमीनान रखें कि वहांके सब हिन्दू-सिक्ख आ जायंगे। वहांके नवाब साहबका वचन है, अगरचे मैं नहीं जानता कि राजा लोगोंके वचन पर कितना भरोसा रखा जा सकता है। पर नवाब साहब कहते हैं: 'जो हो चुका सो हो चुका। अब यहां पर हिन्दुओं और सिक्खोंको कोअी दिक नहीं करेगा। जो जाना ही चाहेंगे अुन्हें भेजनेका अिन्तजाम होगा। जो रहेंगे अुन्हें कोअी अिस्लाम कबूल करनेकी बात नहीं कहेगा।' हो सकता है वहां सब सही-सलामत हों। यहांकी हुकूमत भी बेफिकर नहीं है। मैं आशा रखता हूं, अभी वहां सब लोग आरामसे हैं। आप कहेंगे, वे आज ही क्यों नहीं आते? लेकिन आपको समझना चाहिये कि पहले मुल्क अेक था। अब हम दो हो गये हैं। वह भी अेक-दूसरेके दुश्मन! अपने देशमें परदेशी-से बन गये हैं। सो जो हो सकता है सो करते हैं। वहां तो सत्तर हजार हिन्दू-सिक्ख पड़े हैं। सिन्धमें और भी ज्यादा हैं। वे वहां सुरक्षित नहीं। कराचीसे अेक तार आया है। वह मैंने यहां आनेसे पहले पढ़ा। अुसमें लिखा है कि अखबारोंमें जो आया है, अुससे बहुत ज्यादा नुकसान वहां हुआ है। आज अैसा जमाना है कि हमें शान्ति और धीरज रखना है। हम धीरज खो दें तो हार जायेंगे। हार शब्द हमारे कोशमें होना ही नहीं चाहिये। अुसके लिअे यह जरूरी है कि हम गुस्सेमें न आवें। गुस्सेसे काम बिगड़ता है। अैसे मौके पर क्या करना चाहिये सो हमें सोचना है। मैं तो आपको वह बताता ही रहता हूं।

अीरान और हिन्दुस्तान

मेरे पास आज अीरानके अेलची आये थे। वे यहांकी हुकूमतके मेहमान हैं। वे मिलने आये और कहने लगे कि "अेक काम है। अीरान

और हिन्दमें बड़ी पुरानी दोस्ती रही है। अीरानी और हिन्दी दोनों आर्य हैं। हम तो अेक ही हैं।" यह है भी ठीक। जन्दावस्ताको देखें। अुसमें बहुत संस्कृत शब्द हैं। हमारा व्यवहार भी साथ साथ रहा है। वे कहते हैं कि "अेशियामें आप सबसे बड़े हैं। आपकी बदौलत हम भी चमक सकते हैं। हम दिलसे अेक होना चाहते हैं।" गुरुदेव वहां गये थे। वे अीरानको देखकर खुश हो गये। अुन्होंने कहा — हमारे ही लोग वहां रहते हैं।

अीरानके अेलचीने कहा, अीरान और हिन्दका सम्बन्ध नहीं बिगड़ना चाहिये। मैंने कहा, कैसे बिगड़ सकता है? अुन्होंने बम्बअीका अेक किस्सा सुनाया। वहां काफी अीरानी हैं। चायकी दुकान रखते हैं। वहां काफी हिन्दू, मुसलमान, पारसी, अीसाअी जाते हैं। अुनकी चायमें कुछ खूबी है। वहां कुछ फसाद हुआ होगा। मैं नहीं जानता। सुनता हूं कुछ अीरानी मारे गये। अीरानी मुसलमान तो हैं ही। अीरानी टोपी पहनते हैं। आज हम दीवाने बन गये हैं। किसीके दिलमें हुआ होगा कि वे मुसलमान हैं तो काटो अुनको। अगर अैसा हुआ है तो बुरी बात है। मैंने पूछा, वहांकी हुकूमतके बारेमें क्या कुछ कहना है? अुन्होंने कहा, वहांकी हुकूमत तो शरीफ है। अुन्होंने जल्दीसे सब ठीक कर लिया। यहांकी हुकूमत भी बड़ी शरीफ है अैसा वे कहते थे। यहां जो मुसलमान भाअी हैं अुनके लिअे गार्ड रखे गये हैं। अुन्हें आदरसे रखते हैं। हुकूमतसे हमें कोअी शिकायत नहीं है। अुन्होंने कहा कि अीरानमें भी हिन्दू, सिक्ख, मुसलमान सौदागर सब मिल-जुलकर रहते हैं। हिन्दसे बढ़ा-चढ़ाकर खबरें जाती हैं। अुससे आगे क्या होगा सो पता नहीं, मगर हम अिस बारेमें होशियार हैं।

खुद निर्णय कीजिये

अेक भाअी लिखते हैं — "आपने अनाज वगैराका अंकुश हटवा दिया और हटवानेकी कोशिश करते हैं। कअी लोग कहते हैं यह अच्छा है। पर दरअसल अैसा नहीं। मैं आपको जता देता हूं।" मैं अिन भाअीको जानता हूं। मैंने अुन्हें लिखा है — आपने कहा तो अच्छा किया। पर मुझ तक लिखकर ही मौकूफ रखेंगे तो हारेंगे। अेक तरफसे

मुझे अितने मुबारकबादीके तार आते हैं। अुनको मैं फेंक नहीं सकता। मैं भविष्य-वेत्ता नहीं और न मेरे दिव्यचक्षु हैं। जितना अिन आंखोंसे देख सकूं, कानोंसे सुन सकूं, वही मेरे पास है। मेरे हाथ, पांव, कान, आंख जनता है। आप अपने विचार सबसे कहें। धन्यवाद देनेवाले बहुत हैं। मगर मैं दूसरा पहलू भी जानना चाहता हूं। मैं कहूं अिसलिअे आप कोअी बात न मानें। अपनी आंखोंसे देखें सो करें; मेरे कहनेसे नहीं। २० महात्मा कहें तो भी नहीं। तजरबेसे गलती करके आप सीखेंगे। जो ठीक लगे सो करें। अैसा करेंगे तभी आप आजादीको रख सकेंगे और अुसके लायक बन सकेंगे।

१२१

११–१–'४८

प्रार्थना-सभामें शान्ति

कल ही मैंने आप लोगोंको धन्यवाद दिया कि प्रार्थनामें आप आवाज नहीं करते हैं। आवाजसे झगड़ेका मतलब नहीं। मगर बहनें आपसमें बातें करें, बच्चे चीखें, तो अुन्हें प्रार्थनामें नहीं आना चाहिये। माताअें यदि बच्चोंको शान्त रहनेकी तालीम नहीं दें, तो अुन्हें दूर खड़े रहना चाहिये। अीश्वर सब जगह है अैसा मानें। वह सब सुनता है, सर्व-शक्तिमान है। हमारी बरदाश्त करता है। अुसकी दयाका हम दुरुपयोग न करें। बहनोंसे मैं कहूंगा कि वे बूढ़ेको देखकर क्या करेंगी? अुसकी आवाज सुननेको भी क्या आना था? मगर वह जो कहता है अुसमें कुछ तथ्य है, तो अुसके मुताबिक सब चलें। तब तो कुछ फायदा हो सकता है।

आन्ध्रका खत

मेरे पास आन्ध्र देशसे अेक करुण खत आया है। अेक नौजवानका और अेक बूढ़ेका खत है। बूढ़ेको मैं जानता हूं, पर नौजवानको नहीं जानता। वे नौजवान भाअी लिखते हैं कि जबसे १५ अगस्तको आजादी आ गअी है, तबसे लोगोंको लगने लगा है कि वे मनमानी कर सकते

हैं। पहले तो अंग्रेजोंका डर था। अब किसका डर है? आन्ध्रके लोग तगड़े हैं। अब आजाद हो गये तो काबूके बाहर हो गये हैं। आजादी पानेको अुन्होंने भी काफी बलिदान तो दिया है, मगर कांग्रेस आज ग़िरती जाती है। आज सबको नेता बनना है। पैसा पैदा करनेके प्रयत्न करने हैं। वे लिखते हैं कि तुम यहां आकर रहो। मुझे वह अच्छा लगता। मगर कैसे जाअूं? आन्ध्रके लोगोंको मैं जानता हूं। मेरे लिअे सब जगहें अेकसी हैं। सारा हिन्दुस्तान मेरा है। मैं हिन्दुस्तानका हूं। मगर आज दूसरे काममें पड़ा हूं। मेरी आवाज जल्दीसे जल्दी वहां पहुंच जाय, अिसलिअे यहां यह सब कह रहा हूं। वे लिखते हैं, अेम० अेल० अे० और अेम० अेल० सी० लोग गन्दगी फैला रहे हैं। अुस गन्दगीको कम करनेके लिअे मेम्बरोंकी संख्या कम करनी चाहिये। गन्दगी कम होगी तो अुसे हटाना आसान होगा।

सब पार्टियोंसे अपील

कम्युनिस्ट और सोशलिस्ट भाअी भी वहां पड़े हैं। वे लोग कांग्रेस पर हमला करके हिन्दुस्तानका कब्जा लेना चाहते हैं। अगर सब हिन्दुस्तानका कब्जा लेनेकी कोशिश करें, तो हिन्दुस्तानका क्या हाल होगा? हिन्दुस्तान सबका है। हिन्द हमारा न बने, हम हिन्दके बनें। हम सब हिन्दकी सेवा करें और वह भी निःस्वार्थ भावसे। यह हमारा पहले नम्बरका काम है। हम अपना पेट भरनेका न सोचें। अपने रिश्तेदारोंको नौकरी दिलानेकी कोशिश करें, तो काम बिगड़ जायगा।

आत्मघाती वृत्ति

मेरे पास चन्द मुसलमान भाअी आये थे। अुन्होंने कहा, पहले कांग्रेस हमें अूपर रखती थी, मगर अब हम कहां जायं और कहां तक ये तकलीफें सहन करें? अिससे बेहतर क्या यह न होगा कि हम चले जावें? तब मारपीट और तौहीनसे तो बच जावेंगे। मैंने कहा, आप खामोश रहें। हुकूमत सब कोशिश कर रही है। अगर कुछ न हुआ तो देखा जायगा। आखिरमें हम सबको भूलना है कि हम हिन्दू हैं, मुसलमान हैं, सिक्ख हैं या पारसी हैं। हम सब हिन्दुस्तानके रहनेवाले हिन्दी हैं। धर्म अपनी निजी बात है। अुसे राजनीतिक क्षेत्रमें न लावें।

अगर हिन्दू बिगड़ते ही रहते हैं, तो वे अपने-आप मर जायेंगे। किसीको अुन्हें मारनेकी जरूरत नहीं पड़ेगी। अुन्हें आत्महत्या करनी है तो करें। आज मुसलमानोंको दबायें, कल किसी औरको; यह चल नहीं सकता। जो किसीको दबानेकी कोशिश करता है वह खुद दब जाता है, यह जीवनका कानून है। हम सब हिन्दी हैं। हिन्दकी और हिन्दियोंकी रक्षा करते करते मर जावेंगे।

१२२

१२–१–'४८

अूपरी शान्ति बस नहीं

लोग सेहत सुधारनेके लिअे सेहतके कानूनोंके मुताबिक अुपवास करते हैं। जब कभी कुछ दोष हो जाता है, और अिन्सान अपनी गलती महसूस करता है, तब प्रायश्चित्तके रूपमें भी अुपवास किया जाता है। अिन अुपवासोंमें करनेवालेको अहिंसामें विश्वास रखनेकी जरूरत नहीं। मगर अैसा मौका भी आता है, जब अहिंसाका पुजारी समाजके किसी अन्यायके सामने विरोध प्रकट करनेके लिअे अुपवास करने पर मजबूर हो जाता है। वह अैसा तभी करता है, जब अहिंसाके पुजारीकी हैसियतसे अुसके सामने दूसरा कोअी रास्ता खुला नहीं रह जाता। अैसा मौका मेरे लिअे आ गया है।

जब ९ सितम्बरको मैं कलकत्तेसे दिल्ली आया था, तब मैं पश्चिम पंजाब जा रहा था। मगर वहां जाना नसीबमें नहीं था। खूबसूरत रौनकसे भरी दिल्ली अुस दिन मुर्दोंके शहरके समान दीखती थी। जैसे मैं ट्रेनसे अुतरा, मैंने देखा कि हरअेकके चेहरे पर अुदासी थी। सरदार, जो हमेशा हंसी-मजाक करके खुश रहते हैं, वे भी अुदासीसे बचे नहीं थे। मुझे अुस समय अिसका कारण मालूम नहीं था। वे स्टेशन पर मुझे लेनेके लिअे आये हुअे थे। अुन्होंने सबसे पहली खबर मुझे यह दी कि यूनियनकी राजधानीमें झगड़ा फूट निकला है। मैं फौरन समझ गया कि मुझे दिल्लीमें ही 'करना या मरना' होगा। मिलिटरी और

पुलिसके कारण आज दिल्लीमें अूपरसे शान्ति है। मगर दिलके भीतर तूफान अुछल रहा है। वह किसी भी समय फूटकर बाहर आ सकता है। अिसे मैं अपनी करनेकी प्रतिज्ञाकी पूर्ति नहीं समझता; वही मुझे मृत्युसे बचा सकती है। मृत्युसे, जिसके समान दूसरा मित्र नहीं, मुझे बचानेके लिअे पुलिस या मिलिटरीके द्वारा रखी हुअी शान्ति ही बस नहीं। मैं हिन्दू, सिक्ख और मुसलमानोंमें दिली दोस्ती देखनेके लिअे तरस रहा हूं। कल तो अैसी दोस्ती थी। मगर आज बड़ेसे बड़े मुसलमानकी जिन्दगी हिन्दू या सिक्खकी छुरी, गोली या बमसे सुरक्षित नहीं है। यह अैसी बात है जिसको कोअी हिन्दुस्तानी देशभक्त (जो अिस नामके लायक है) शान्तिसे सहन नहीं कर सकता।

अुपवासका निर्णय

मेरे अन्दरसे आवाज तो कअी दिनोंसे आ रही थी। मगर मैं अपने कान बन्द कर रहा था। मुझे लगता था कि कहीं यह शैतानकी यानी मेरी कमजोरीकी आवाज तो नहीं है! मैं कभी लाचारी महसूस करना पसन्द नहीं करता। किसी सत्याग्रहीको पसन्द नहीं करना चाहिये। अुपवास तो आखिरी हथियार है। वह अपनी या दूसरोंकी तलवारकी जगह लेता है। मुसलमान भाअियोंके अिस सवालका कि 'अब वे क्या करें' मेरे पास कोअी जवाब नहीं। कुछ समयसे मेरी यह लाचारी मुझे खाये जा रही थी। अुपवास शुरू होते ही यह मिट जावेगी। मैं पिछले तीन दिनोंसे अिस बारेमें विचार कर रहा हूं। आखिरी निर्णय बिजलीकी तरह मेरे सामने चमक गया है। और मैं खुश हूं। कोअी भी अिन्सान, जो पवित्र है, अपनी जानसे ज्यादा कीमती चीज कुरबान नहीं कर सकता। मैं आशा रखता हूं और प्रार्थना करता हूं कि मुझमें अुपवास करने लायक पवित्रता हो। नमक, सोडा और खट्टे नींबूके साथ या अिन चीजोंके बगैर पानी पीनेकी छूट मैं रखूंगा। अुपवास कल सुबह पहले खानेके बाद शुरू होगा। अुपवासका अरसा अनिश्चित है। और जब मुझे यकीन हो जायगा कि सब कौमोंके दिल मिल गये हैं, और वह बाहरके दबावके कारण नहीं, मगर अपना अपना धर्म समझनेके कारण, तब मेरा अुपवास छूटेगा।

हिन्दुस्तानके मानमें कमी

आज हिन्दुस्तानका मान सब जगह कम हो रहा है। अेशियाके हृदय पर और अुसके द्वारा सारी दुनियाके हृदय पर हिन्दुस्तानका साम्राज्य आज तेजीसे गायब हो रहा है। अगर अिस अुपवासके निमित्तसे हमारी आंख खुल जाय, तो यह सब वापस आ जायगा। मैं यह विश्वास रखनेका साहस करता हूं कि अगर हिन्दुस्तानकी आत्मा खो गअी, तो तूफानोंसे दुःखी और भूखी दुनियाकी आशाकी आंखकी किरणका लोप हो जायगा।

अीश्वर अेकमात्र सलाहकार

कोअी मित्र या दुश्मन, अगर अैसे कोअी हैं, मुझ पर गुस्सा न करें। कअी अैसे मित्र हैं जो मनुष्य-हृदयको सुधारनेके लिअे अुपवासका तरीका ठीक नहीं समझते। वे मेरी बरदाश्त करेंगे और जो आजादी वे अपने लिअे चाहते हैं वह मुझे भी देंगे। मेरा सलाहकार अेकमात्र अीश्वर है। मुझे किसी औरकी सलाहके बिना यह निर्णय करना चाहिये। अगर मैंने भूल की है और मुझे अुस भूलका पता चल जाता है, तो मैं सबके सामने अपनी भूल स्वीकार करूंगा और अपना कदम वापस लूंगा। मगर अैसी संभावना बहुत कम है। अगर मेरी अन्तरात्माकी आवाज स्पष्ट है, और मैं दावा करता हूं कि अैसा है, तो अुसे रद नहीं किया जा सकता। मेरी प्रार्थना है कि मेरे साथ अिस बारेमें दलील न की जाय और जिस निर्णयको बदला नहीं जा सकता अुसमें मेरा साथ दिया जाय। अगर सारे हिन्दुस्तान पर या कमसे कम दिल्ली पर अिसका ठीक असर हुआ, तो अुपवास जल्दी भी छूट सकता है। मगर जल्दी छूटे या देरसे छूटे या कभी भी न छूटे, अैसे मौके पर किसीको कमजोरी नहीं बतानी चाहिये।

मेरे जीवनमें कअी अुपवास आये हैं। मेरे पहले अुपवासोंके वक्त टीकाकारोंने कहा है कि अुपवासने लोगों पर दबाव डाला और अगर मैं अुपवास न करता, तो जिस मकसदके लिअे मैंने अुपवास किया, अुसके स्वतंत्र गुण-दोषके विचारसे निर्णय विरुद्ध जानेवाला था। अगर यह साबित किया जा सके कि मकसद अच्छा है, तो विरुद्ध निर्णयकी क्या

कीमत है? शुद्ध अुपवास भी शुद्ध धर्म-पालनकी तरह है। अुसका बदला अपने-आप मिल जाता है। मैं कोअी परिणाम लानेके लिअे अुपवास नहीं करना चाहता। मैं अुपवास करता हूं, क्योंकि मुझे करना ही चाहिये।

मृत्यु ही सुन्दर रिहाअी

मेरी सबसे यह प्रार्थना है कि वे शान्त चित्तसे अिस अुपवासका तटस्थ वृत्तिसे विचार करें, और अगर मुझे मरना ही है तो शान्तिसे मरने दें। मैं आशा रखता हूं कि शान्ति तो मुझे मिलने ही वाली है। हिन्दुस्तानका, हिन्दू धर्मका, सिक्ख धर्मका और अिस्लामका बेबस बनकर नाश होते देखनेके बनिस्बत मृत्यु मेरे लिअे सुन्दर रिहाअी होगी। अगर पाकिस्तानमें दुनियाके सब धर्मोंके लोगोंको समान हक न मिलें, अुनकी जान और माल सुरक्षित न रहें और यूनियन भी पाकिस्तानकी नकल करे, तो दोनोंका नाश निश्चित है। अुस हालतमें अिस्लामका तो हिन्दुस्तान और पाकिस्तानमें ही नाश होगा — बाकी दुनियामें नहीं — मगर हिन्दू धर्म और सिक्ख धर्म तो हिन्दुस्तानके बाहर हैं ही नहीं।

जो लोग दूसरे विचार रखते हैं, वे मेरा जितना भी कड़ा विरोध करेंगे अुतनी मैं अुनकी अिज्जत करूंगा। मेरा अुपवास लोगोंकी आत्माको जाग्रत करनेके लिअे है, अुसे मार डालनेके लिअे नहीं। जरा सोचिये तो सही, आज हमारे प्यारे हिन्दुस्तानमें कितनी गन्दगी पैदा हो गअी है। तब आप खुश होंगे कि हिन्दुस्तानका अेक नम्र पूत, जिसमें अितनी ताकत है और शायद अितनी पवित्रता भी है, अिस गन्दगीको मिटानेके लिअे कदम अुठा रहा है। और अगर अुसमें ताकत और पवित्रता नहीं हैं, तो वह पृथ्वी पर बोझरूप है। जितनी जल्दी वह अुठ जाय और हिन्दुस्तानको अिस बोझसे मुक्त करे, अुतना ही अुसके लिअे और सबके लिअे अच्छा है।

मेरे अुपवासकी खबर सुनकर लोग दौड़ते हुअे मेरे पास न आवें। सब अपने आसपासका वातावरण सुधारनेका प्रयत्न करें तो बस है।

आन्ध्रके दो पत्र

मैंने कल आन्ध्रसे आये हुअे दो खतोंका जिक्र आपसे किया था। पत्र लिखनेवाले वृद्ध मित्र देशभक्त कोंडा वेंकटप्पैया गारू हैं। मैं अुनके खतसे कुछ हिस्सा यहां देता हूं:

"राजनीतिक और आर्थिक प्रश्नोंके सिवा, अेक बड़ा पेचीदा सवाल यह है कि कांग्रेसके लोगोंका नैतिक पतन हो गया है। दूसरे प्रान्तोंके बारेमें तो मैं बहुत कुछ नहीं कह सकता, मगर मेरे प्रान्तमें हालत बहुत खराब है। राजनीतिक सत्ता पाकर लोगोंके दिमाग ठिकाने नहीं रहे। लेजिस्लेटिव असेम्बली और लेजिस्लेटिव कौंसिलके कअी मेम्बर अिस मौकेका अपने लिअे पूरा-पूरा फायदा अुठानेकी कोशिश कर रहे हैं।

"वे अपनी जान-पहचानका फायदा अुठाकर पैसा बना रहे हैं और मजिस्ट्रेटोंकी कचहरियोंमें पहुंचकर न्यायके रास्तेमें भी रुकावट डालते हैं। डिस्ट्रिक्ट कलेक्टर और दूसरे माल-अफसर भी आजादीसे अपना फर्ज अदा नहीं कर सकते। कौंसिलके मेम्बर अुसमें दस्तन्दाजी करते हैं। कोअी अीमानदार अफसर लम्बे वक्त तक अपनी जगह पर नहीं रह सकता — अुसके खिलाफ मिनिस्टरोंके पास रिपोर्टें पहुंचाअी जाती है और मिनिस्टर अैसे बेअुसूल और खुदगरज लोगोंकी बातें सुनते हैं। स्वराज्यकी लगन अेक अैसी चीज थी कि जिसके कारण सभी स्त्री-पुरुष आपके नेतृत्वको मानने लगे थे। मगर मकसद हल हो जाने पर अधिकतर कांग्रेसी लड़वैयोंके नैतिक बन्धन छूट गये हैं। बहुतसे पुराने योद्धा आज अुनका साथ दे रहे हैं, जो लोग हमारी हलचलके कट्टर विरोधी थे। अपना मतलब निकालनेके लिअे वे लोग आज कांग्रेसमें अपना नाम लिखवा रहे हैं। मसला दिन-ब-दिन ज्यादा पेचीदा बनता जा रहा है। नतीजा यह है कि कांग्रेसकी और कांग्रेस सरकारकी बदनामी हो रही है। लोगोंका कांग्रेस परसे विश्वास अुठ रहा है। अभी अभी यहां म्युनिसिपैलिटीके चुनाव हुअे थे। ये चुनाव बताते हैं कि कितनी तेजीसे जनता कांग्रेसके काबूसे बाहर जा रही है।

चुनावकी पूरी तैयारी करनेके बाद गंतूरमें लोकल बोर्डस (स्थानीय संस्थाओं) के मंत्रीका जरूरी संदेशा आनेसे चुनाव रोक लिये गये।

"मैं समझता हूं कि करीब दस सालसे यहां सब सत्ता अेक नियुक्त की हुअी कौंसिलके हाथोंमें रही है। और अब करीब अेक सालसे म्युनिसिपैलिटीका कामकाज अेक कमिश्नरके हाथोंमें है। अब अैसी बात चलती है कि सरकार शहरकी म्युनिसिपैलिटीका कारोबार संभालनेके लिअे कौंसिल नियुक्त करेगी।

"मैं बूढ़ा हूं। टांग टूट गअी है। लकड़ीके सहारे लंगड़ाते-लंगड़ाते घरमें थोड़ा-बहुत चलता फिरता हूं। मुझे अपना कोअी स्वार्थ नहीं साधना है। अिसमें शक नहीं कि जिलेकी और प्रान्तकी कांग्रेस कमेटी जिन दो पार्टियोंमें बंटी हुअी है, अुनके मुख्य मुख्य कांग्रेसवालोंके सामने मैं कड़े विचार रखता हूं। और मेरे विचार सब लोग जानते हैं। कांग्रेसमें फिरकेबाजी, लेजिस्लेटिव कौंसिलके मेम्बरोंकी पैसे बनानेकी प्रवृत्ति और मंत्रियोंकी कमजोरीके कारण जनतामें बलवेकी वृत्ति पैदा हो रही है। लोग कहते हैं कि अिससे तो अंग्रेजी हुकूमत बहुत अच्छी थी, और वे कांग्रेसको गालियां भी देते हैं।"

आन्ध्रके और दूसरे प्रान्तोंके लोग अिस त्यागी सेवकके कहनेकी कीमत करें। वे ठीक कहते हैं कि जिस बेअीमानीका जिक्र अुन्होंने किया है, वह सिर्फ आन्ध्रमें ही नहीं पाअी जाती। मगर वे आन्ध्रके बारेमें ही अपना निजी अभिप्राय दे सकते हैं। हम सब सावधान बनें।

बहावलपुरवाले धीरज रखें

अपने बहावलपुरके मित्रोंको मुझे यह कहना है कि वे धीरज रखें। सरदार पटेल आज दोपहरको मेरे पास आये थे। मेरा मौन था और मैं बहुत काममें था। अिसलिअे अुनसे बात न कर सका। अुनके आफिसके श्री शंकर मेरे पास आनेवाले थे। मगर कामके कारण न आ सके। अिसलिअे मैं आपका केस अुनके सामने न रख सका।

१२३

१३-१-'४८

मेरी अुम्मीद है कि मैं १५ मिनटमें जो कहना है कह सकूंगा। बहुत कहना है अिसलिअे शायद कुछ ज्यादा समय भी लगे।

आज तो मैं यहां आ सका। पहला दिन है और आज तो खाना भी खाया है। सुबह साढ़े नौ बजे खाना शुरू किया, मगर बहुत लोग आये थे सो ग्यारह बजे पूरा कर सका। मगर कलसे शायद मैं यहां तक नहीं पहुंच सकूंगा। अगर आप चाहते हैं कि प्रार्थना तो होनी ही चाहिये तो आप आवें। लड़कियां या कमसे कम अेक लड़की आ जायेगी और प्रार्थना करेगी।

बहावलपुरके शरणार्थी

कल मैंने लिखा था कि सरदारके वहांसे श्री शंकर कामके बोझके कारण मेरे पास नहीं आ सके। अुसमें गैर-समझी थी। वे बहावलपुरके बारेमें मेरे पास आनेवाले थे। मगर मणिबहनने मुझे बताया कि वे नहीं आ सकेंगे। आज अुन्होंने कहा कि अुनका मतलब अितना ही था कि श्री शंकर दो बजे नहीं आ सकते। दूसरे समय आ सकते थे। मैं यह नहीं समझा था। अिसमें कोअी बड़ी बात नहीं। मैं आशा नहीं रखता कि सरकारी नौकर प्राअिवेट व्यक्तियोंके पास आवें। मगर अुन्हें यह चीज चुभी, अिसलिअे यह स्पष्टीकरण कर दिया।

कौन गुनहगार है?

मेरे पास आज सारे दिनमें काफी लोग आये थे। सब अेक ही सवाल पूछते हैं कि किसने गुनाह किया है? किसके विरोधमें फाका है? कहां तक चलेगा? किस पर अिलजाम है? मैं अिलजाम देनेवाला कौन? किसी पर अिलजाम नहीं है। अगर मैं अिस फाकेमें से जिन्दा न अुठ सका, तो अिलजाम मुझ पर ही है। मैं नालायक सिद्ध होअूं और अीश्वर मुझे अुठा ले, तो अुसमें बड़ी बात क्या? मगर आज हिन्दू अपने धर्मका पालन नहीं करते अुसका मुझे दुःख है। अगर सब मुसलमानोंको यहांसे हटानेकी आबोहवा पैदा कर दें, तब हिन्दू-सिक्खोंने

अपने धर्मको और हिन्दको दगा दिया अैसा समझना चाहिये। यह समझने लायक बात है। लोग मुझे पूछते हैं, क्या मुसलमानोंके लिअे यह फाका है? बात ठीक है। मैंने तो हमेशा अकलियतोंका, दबे हुओंका पक्ष लिया है। आज यहांके मुसलमानोंको मुस्लिम लीगका सहारा नहीं रहा। हिन्दुस्तानके दो टुकड़े हुअे। जहां भी थोड़े लोग बिना सहारेके रह जाते हैं, अुनको मदद करना मनुष्यमात्रका धर्म है। यह फाका दरअसल आत्मशुद्धिके लिअे है। सबको शुद्ध होना है। सब शुद्ध नहीं होते हैं तो मामला बिगड़ जाता है। मुसलमानोंको भी शुद्ध होना है। अैसा नहीं कि हिन्दू-सिक्ख शुद्ध हो जायं और मुसलमान नहीं। मुसलमान भी शुद्ध और सच्चे नहीं बनेंगे तो मामला बिगड़ेगा। यहांके मुसलमान भी बेगुनाह नहीं हैं। सबको अपना गुनाह कबूल कर लेना चाहिये। मैं मुसलमानोंकी खुशामद करनेके लिअे फाका नहीं करता हूं। मैं तो सिर्फ अीश्वरकी ही खुशामद करनेवाला हूं। जब देशके दो टुकड़े नहीं हुअे थे, अुससे पहले ही हिन्दू, मुसलमान और सिक्खोंके दिलोंके टुकड़े हो गये थे। मुस्लिम लीग तो गुनहगार है, पर दूसरे मुसलमानोंने, हिन्दुओंने और सिक्खोंने भी गलतियां की हैं। तीनोंको अगर दिली दोस्त बनना है, तो अुन्हें साफदिल बनना होगा। अुनके बीचमें सिर्फ अीश्वर ही साक्षी रहे। आज हम धर्मके नामसे अधर्मी बन गये हैं। हम तीनों धर्मसे गिर चुके हैं।

फाका मुसलमानोंके नामसे शुरू हुआ है। सो अुन पर ज्यादा जिम्मेदारी आती है। अुनको निश्चय करना है कि अुन्हें हिन्दू-सिक्खोंके साथ दोस्त बनकर, भाअी बनकर रहना है। यूनियनके प्रति वफादार रहना है। वफादार हैं अैसा कहनेसे काम नहीं होता है। मैं तो अुनके कामोंसे देख लेता हूं।

सरदारकी बातें मेरे पास आती हैं। मुझे मुसलमान लोग कहते हैं कि "आप और जवाहरलालजी तो अच्छे हैं, मगर सरदार अच्छे नहीं हैं।" यह कहांकी बात है? अैसी बात करेंगे तो काम कैसे चलेगा? वे हाकिम हैं। सब मिलकर हुकूमत चलाते हैं। वे आपके नौकर हैं। सबकी साथ जिम्मेदारी है, तभी तो कैबिनेट बनती है। सरदार अगर कोअी गलती करते हैं तो मुझसे कहिये। मैं तो अुनको सब कुछ कह सकता

हूं। सरदारने क्या कहा है, यह बतानेमें अर्थ नहीं। सरदारने क्या गुनाह किया सो बताअिये। जितनी जवाबदारी पूरी कैबिनेटकी है अुतनी ही आपकी भी है; क्योंकि कैबिनेट आपके प्रतिनिधियोंकी है।

मुसलमानोंको निर्भय और बहादुर बनना है — अेक खुदाका ही भरोसा रखना है। न गांधीका, न जवाहरलालका, न सरदारका, न कांग्रेसका और न लीगका। खुदाके नामसे वे यहां रहेंगे और खुदाके नाम पर मरेंगे। हिन्दू-सिक्ख कितना भी बुरा काम करें, मगर वे बुराअी न करें। मैं तो आपके साथ पड़ा हूं। आपके साथ मरूंगा। आज मरनेके लिअे तो पड़ा ही हूं। मुझको सुनाते हैं कि सरदार काफी कड़वी बातें कह देते हैं। मैंने अुनको कअी दफा कहा है कि आपकी जबानमें कांटा है। मगर मैं जानता हूं कि अुनके दिलमें कांटा नहीं है। अुनका हृदय शुद्ध है। वे खरी बात सुनानेवाले हैं। कलकत्तेमें और लखनअूमें अुन्होंने कहा है कि "मुसलमान यहां रह सकते हैं, मगर मैं लीगी मुसलमानों पर अेतबार नहीं कर सकता।" वे कहते हैं कि कल तक जो मुसलमान दुश्मन थे, वे आज दोस्त बन गये यह मैं कभी नहीं मानूंगा। अुन्हें शक लानेका पूरा अधिकार है। अुस शकका आप सीधा अर्थ करें। मैंने कहा है कि शक जब साबित होता है तब अुसको काटें, मगर पहलेसे अुन्हें बुरा मानकर कुछ न करें।

हिन्दू-सिक्खोंका फर्ज

तब हिन्दू-सिक्ख क्या करें? कैबिनेट क्या करे? मैं अकेला रहूंगा तब भी अेक ही बात करूंगा। जो बंगाली भजन 'अेकला चलो रे' अभी गाया गया, वह गुरुदेवका बनाया हुआ है। मुझे वह बहुत प्रिय है। नोआखालीकी यात्रामें वह करीब करीब रोज गाया जाता था। अुसका अर्थ है: "तेरे साथ कोअी भी नहीं आता है, तो भी तू अकेला ही चलता जा। तेरे साथ अीश्वर तो है।" हिन्दू-सिक्ख अगर सच्चे नहीं बनते हैं और अुनमें अितनी बहादुरी नहीं है कि अितने थोड़े मुसलमानोंको हिफाजतसे रखें, तो मैं जीकर क्या करूंगा? मैं तो यही कहूंगा कि पाकिस्तानमें अगर सभी सिक्खों और हिन्दुओंको काट डालें, तो भी यहां अेक भी मुसलमानको हम न काटें। कमजोरको मारना बुजदिली है।

तब फाका छूटनेकी शर्त क्या है? शर्त यह है कि हिन्दुस्तानके और हिस्सोंमें कुछ भी हो, मगर दिल्ली बुलन्द रहे, शान्त रहे। दिल्लीका जाहोजलाल आबाद रहे। मुसलमान बेखटके दिल्लीमें घूम सकें। सुहरावर्दी साहब, जो गुंडोंके सरदार माने जाते हैं, वे भी अकेले बेखटके घूम सकें। रातको भी चले जायं, तो अुन्हें कुछ डर न रहे। अैसा हो जाय तो मेरा फाका छूट जायेगा। आज तो सुहरावर्दी साहबको मैं प्रार्थनामें नहीं ला सकता। अुनका कोअी अपमान करे, तो वह मेरा अपमान होगा। यह मुझसे सहन नहीं होगा। अिसलिअे मैं अुन्हें नहीं लाता। सुहरावर्दी कैसे भी हों, अितना मैं कह सकता हूं कि कलकत्तेमें अुन्होंने मेरा पूरा साथ दिया। मुसलमान हिन्दुओंके मकान दबाकर बैठ गये थे, वहांसे अुन्होंने मुसलमानोंको खींच खींचकर निकाला था।

हिन्दुस्तानकी, हिन्दुओंकी, मुसलमानोंकी, पारसियोंकी, अीसाअियोंकी — किसीकी भी नदामत (शरमिन्दगी) मैं नहीं चाहता हूं। हम सब सच्चे बनें, तब हिन्द अूंचा अुठेगा।

१२४

१४–१–'४८

तारोंका ढेर

हिन्दुस्तानसे और दूसरे देशोंसे मेरे पास तार पर तार आ रहे हैं। मेरी रायमें अुनमें से कअी वजनदार हैं, और मुझे अपने निश्चय पर मुबारकबाद देते हैं और अीश्वरके हाथमें सौंपते हैं। कुछ दूसरे लोग बहुत मीठी भाषामें प्रार्थना करते हैं कि अुपवास छोड़ दीजिये। हम अपने पड़ोसियोंके प्रति, चाहे अुनका कोअी भी धर्म हो, मित्रभाव रखेंगे और आपने अुपवास करते समय जो संदेश दिया है अुस पर पूरी तरह अमल करनेकी कोशिश करेंगे। तारोंका ढेर हर घंटे बढ़ता ही जाता है। मैंने प्यारेलालजीसे कहा है कि अुनमें से कुछ तार चुनकर प्रेसको दे दें। तार भेजनेवाले हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख और दूसरे जिन लोगोंने मुझे आश्वासन दिया है — अुनमें से कअी तो गिरोहों और अेसोसियेशनों

(समाजों) के प्रतिनिधि हैं — वे सब अच्छी तरह अपना वचन पूरा करेंगे, तो मेरे अुपवासको छोटा करनेमें काफी मदद करेंगे। मृदुलाबहन, जो लाहौरमें पाकिस्तानके सत्ताधीशों और सामान्य मुसलमानोंके सम्पर्कमें हैं, मुझे पूछती हैं — "यहां लोग कहते हैं कि अिस तरफ क्या किया जा सकता है? आप पाकिस्तानमें अपने मुसलमान मित्रोंसे क्या आशा रखते हैं? अिनमें पोलिटिकल पार्टियोंके मेम्बर और सरकारी नौकर भी शामिल हैं।" मुझे खुशी है कि अैसे मुसलमान मित्र भी हैं, जिन्हें मेरी सेहतकी चिन्ता है, और वे मृदुलाबहनने जो सवाल पूछा है वैसी जिज्ञासा रखते हैं। सब सन्देश भेजनेवालोंको और पाकिस्तानसे सवाल पूछनेवाले भाअियोंको मैं कहना चाहता हूं कि यह अुपवास तो आत्म-शुद्धिके लिअे है। जो लोग अुपवासके मकसदके साथ हमदर्दी रखते हैं वे सब आत्मशुद्धि करें, चाहे वे पाकिस्तानके सरकारी नौकर हों, किसी पोलिटिकल पार्टीके मेम्बर हों या दूसरे लोग हों।

पाकिस्तानसे दो शब्द

पाकिस्तानमें मुसलमानोंने गुनाह किया है। कराचीमें जो हुआ सो तो आप सुन ही चुके हैं। सिक्खों पर मुसलमानोंने हमला किया और बहुतसे बेगुनाह सिक्ख भाअी मारे गये। कअी लूटे गये और कअियोंको अपने घर छोड़कर भागना पड़ा। अब खबर आअी है कि गुजरात स्टेशन पर गैर-मुस्लिम शरणार्थियोंकी गाड़ी पर हमला हुआ। वे बेचारे सरहदी सूबेसे अपनी जान बचानेको आ रहे थे। बहुतसे मारे गये। कअी लड़कियां अुड़ा ली गअीं। यह सब दुःखद समाचार है। पाकिस्तानमें अैसा होता ही रहे, तो यूनियन कहां तक अुसको बरदाश्त करेगा? मेरे जैसा अेक आदमी फाका करे या १०० महात्मा फाका करें, तो भी यूनियनवालोंके दिलमें गुस्सा पैदा हो जायगा। पाकिस्तानमें मुसलमानोंको परिस्थिति सुधारना है। वे हिम्मतके साथ कहें कि हम तब तक चैन नहीं लेंगे, जब तक हिन्दू और सिक्ख वापस आकर आरामसे हमारे बीच नहीं रहते। यह अुनके (पाकिस्तानके) गुनाहका प्रायश्चित्त या कफ्फारा होगा।

मान लीजिये कि हिन्दुस्तानमें चारों तरफ आत्मशुद्धिकी लहर दौड़ जाय, तो पाकिस्तान पाक बन जायगा। तब वह अेक अैसा राज्य

बनेगा, जिसमें पुराने दोष और बुराअियां लोग भूल जायंगे। पुराने भेदभाव दफना दिये जायंगे। अेक अदनासे अदना अिन्सान भी पाकिस्तानमें वही अिज्जत पायेगा, और अुसी तरह अुसका जान-माल सुरक्षित रहेगा जैसे कि कायदे आजम जिन्नाका। अैसा पाकिस्तान कभी मर नहीं सकता। तब, अुसके पहले नहीं, मुझे अफसोस होगा कि मैंने पाकिस्तानको अेक 'पाप' कहा। मुझे डर है कि आज तो मुझे जोरोंसे यह कहना ही होगा कि पाकिस्तान 'पाप' है। मैं अिस पाकिस्तानका दुश्मन हूं। मैं अुस 'पाक' पाकिस्तानको कागज पर नहीं, पाकिस्तानके भाषण देनेवालोंके भाषणोंमें नहीं, बल्कि हरअेक मुसलमानके रोजाना जीवनमें देखनेके लिअे जिन्दा रहना चाहता हूं। जब अैसा होगा तब यूनियनके रहनेवाले भूल जायंगे कि कभी पाकिस्तानमें और यूनियनमें दुश्मनी थी। और अगर मैं भूल नहीं करता, तो यूनियन गर्वके साथ पाकिस्तानकी नकल करेगा। अगर मैं तब जिन्दा हुआ तो यूनियनवालोंसे कहूंगा कि वे भलाअी करनेमें पाकिस्तानसे आगे बढ़ें। हम यूनियनवालोंको आज शरमके साथ कहना पड़ता है कि हमने पाकिस्तानकी बुराअीकी झटसे नकल की। अुपवास तो अेक बाजी है। और यह अिसी बातके लिअे है कि पाकिस्तान और हिन्दुस्तान भलाअी करनेमें अेक-दूसरेके साथ मुकाबला करें।

मेरा सपना

जब मैं नौजवान था और पॉलिटिक्स (राजनीति) के बारेमें कुछ नहीं जानता था, तबसे मैं हिन्दू-मुसलमान वगैराके हृदयोंके अैक्यका सपना देखता आया हूं। मेरे जीवनके संध्याकालमें अपने अुस स्वप्नको सिद्ध होते देखकर मैं छोटे बच्चेकी तरह नाचूंगा। तब पूरी जिन्दगी तक, जिसे हमारे बुजुर्गोंने १२५ साल कहा है, जीनेकी मेरी खाहिश फिरसे जिन्दा हो जायगी। अैसे स्वप्नकी सिद्धिके लिअे अपना जीवन कुरबान करना कौन पसन्द नहीं करेगा? मेरा स्वप्न सिद्ध होगा, तब हमें सच्चा स्वराज्य मिलेगा। तब कानूनकी नजरसे और भूगोलकी नजरसे हम भले दो राज्य रहें, मगर हमारे रोजके जीवनमें हम दो नहीं होंगे। हमारा दिल अेक होगा। यह नज्जारा मेरे लिअे और आपके लिअे भी अितना भव्य है कि वह सच्चा हो नहीं सकता। तो भी अेक मशहूर चित्रकारके अेक

मशहूर चित्रमें बताये हुअे बच्चेकी तरह मुझे तब तक सन्तोष नहीं होगा जब तक मैं अुसे पा न लूं। अिससे कमके लिअे मैं जिन्दा नहीं हूं और न जिन्दा रहना चाहता। पाकिस्तानसे सवाल पूछनेवाले भाअी, जहां तक हो सके, अिस मकसदके नजदीक पहुंचनेमें मेरी मदद करें। जब हम मकसद पर पहुंच जाते हैं, तब वह मकसद नहीं रहता। मगर अुसके नजदीक जरूर जा सकते हैं। हरअेक अिन्सान अिस मकसद तक पहुंचनेके लायक बननेके लिअे आत्मशुद्धि कर सकता है।

जब मैं १८९६ में दिल्ली या आगरेका किला देखने गया था, तब मैंने वहां अेक दरवाजे पर यह शेर पढ़ा था, "अगर कहीं जन्नत है तो यहां है, यहां है, यहां है।" किला अपने जाहोजलालके बावजूद मेरी रायमें जन्नत न था। मगर मुझे निहायत खुशी होगी, अगर पाकिस्तान अिस लायक बने कि अुसके हरअेक दरवाजे पर यह शेर लिखा जा सके। अैसी जन्नतमें, चाहे वह पाकिस्तानमें हो या यूनियनमें, न कोअी गरीब होगा, न भिखारी। न कोअी अूंचा होगा, न नीचा। न कोअी करोड़पति मालिक होगा, न आधा भूखा नौकर। न शराब होगी, न कोअी दूसरी नशीली चीज। सब अपने-आप खुशीसे और गर्वसे अपनी रोटी कमानेके लिअे मेहनत-मजदूरी करेंगे। वहां औरतोंकी भी वही अिज्जत होगी जो मर्दोंकी, और औरतों और मर्दोंकी अस्मत और पवित्रताकी रक्षा की जायेगी। अपनी पत्नीके सिवा हरअेक औरतको अुसकी अुमरके मुताबिक हरअेक धर्मके पुरुष मां, बहन और बेटी समझेंगे। वहां अस्पृश्यता नहीं होगी और सब धर्मोंके प्रति समान आदर रखा जायगा। मैं आशा रखता हूं कि जो यह सब सुनेंगे या पढ़ेंगे, वे मुझे क्षमा करेंगे कि जीवन देनेवाले सूर्य देवताकी धूपमें पड़े पड़े मैं अिस काल्पनिक आनन्दकी लहरमें बह गया। जो शंकाशील हैं अुन्हें मैं विश्वास दिलाना चाहता हूं कि मेरे मनमें जरा भी अिच्छा नहीं कि अुपवास जल्दी छूटे। अगर मेरे जैसे मूर्खके खयाली सब्जबाग कभी फलित न हों, और अुपवास कभी भी न छूटे, तो अुसमें जरा भी हर्ज नहीं। जहां तक जरूरी हो वहां तक अिन्तजार करनेकी मुझमें धीरज है। मगर मुझे बचानेके ही लिअे लोग कुछ भी करेंगे तो मुझे दुःख होगा। मेरा यह दावा है कि अुपवास

ओीश्वरकी प्रेरणासे शुरू हुआ है, और जब ओीश्वरकी अिच्छा होगी तभी छूटेगा। अुसकी अिच्छाको न कोओी आज तक टाल सका है, न कभी टाल सकेगा।

१२५

१५–१–'४८

मौत दुःखोंसे छुटकारा दिलाती है

गांधीजीने अपने बिस्तर पर लेटे हुअे जो मौखिक सन्देश दिया, वह अिस प्रकार है:

मेरे लिअे यह अेक नया अनुभव है। मुझको अिस तरहसे लोगोंको सुनानेका कभी अवसर नहीं आया है, न मैं चाहता था। मैं अिस वक्त जिस जगह पर प्रार्थना हो रही है वहां नहीं जा सकता। अिसलिअे प्रार्थनामें जो लोग आये हैं, वहां तक मेरी आवाज यहांसे नहीं पहुंच सकती। फिर भी मैंने सोचा कि आप लोगों तक, जिधर आप बैठे हैं, मेरी आवाज पहुंच सके, तो आपको आश्वासन मिलेगा और मुझको बड़ा आनन्द होगा। जो मैंने लोगोंके सामने कहनेको तैयार किया है वह तो लिखवा दिया है। अैसी हालत कल रहेगी कि नहीं, मैं नहीं जानता।

आप लोगोंसे मेरी अितनी ही प्रार्थना है कि हरअेक आदमी दूसरे क्या करते हैं अुसे न देखे और जितनी आत्मशुद्धि कर सकता है करे। मुझे विश्वास है कि जनता बहुत प्रमाणमें आत्मशुद्धि कर लेगी, तो अुसका हित होगा और मेरा भी हित होगा। हिन्दुस्तानका कल्याण होगा और सम्भव है कि मैं जल्दीसे जो अुपवास चल रहा है अुसे छोड़ सकूं। मेरी फिक्र किसीको नहीं करनी है। फिक्र अपने लिअे की जाय — हम कहां तक आगे बढ़ रहे हैं, और देशका कल्याण कहां तक हो सकता है, अिसका ध्यान रखें। आखिरमें सब अिन्सानोंको मरना है। जिसका जन्म हुआ है अुसे मृत्युसे मुक्ति मिल नहीं सकती। अैसी मृत्युका भय क्या, शोक भी क्या करना? मैं समझता हूं कि हम सबके लिअे मृत्यु अेक आनन्ददायक मित्र है, हमेशा धन्यवादके लायक है; क्योंकि मृत्युसे अनेक प्रकारके दुःखोंमें से हम अेक समय तो निकल जाते हैं।

रुला रुलाकर मारना

अपने लिखित सन्देशमें गांधीजीने कहा :

कल शामकी प्रार्थनाके दो घंटे बाद अखबारवालोंने मुझे सन्देश भेजा कि अुन्हें मेरे भाषणके बारेमें कुछ बातें पूछनी हैं। वे मुझसे मिलना चाहते थे, मगर मैंने दिनभर काम किया था। प्रार्थनाके बाद भी काममें फंसा रहा। अिसलिअे थकान और कमजोरीके कारण अुन्हें मिलनेकी मेरी अिच्छा नहीं हुअी। अिसलिअे मैंने प्यारेलालजीसे कहा कि अुनसे कहो कि मुझे माफ करें और जो सवाल पूछने हों वे लिखकर कल सुबह नौ बजे बाद मुझे दे दें। अुन्होंने अैसा ही किया है।

पहला सवाल यह है — "आपने अुपवास अैसे वक्त शुरू किया है, जब कि यूनियनके किसी हिस्सेमें कुछ झगड़ा हो ही नहीं रहा।"

लोग जबरदस्ती मुसलमानोंके घरोंका कब्जा लेनेकी बाकायदा, निश्चयपूर्वक कोशिश करें, यह क्या झगड़ा नहीं कहा जायगा? यह झगड़ा तो यहां तक बढ़ा कि फौजको अिच्छा न रहते हुअे भी अश्रुगैस अिस्तेमाल करनी पड़ी और भले हवामें हों मगर कुछ गोलियां भी चलानी पड़ीं; तब कहीं लोग हटे। मेरे लिअे यह सरासर बेवकूफी होती कि मैं मुसलमानोंका अैसे टेढ़ी तरहसे निकाला जाना आखिर तक देखता रहता। अिसे मैं रुला रुलाकर मारना कहता हूं।

सरदार पटेल

दूसरा प्रश्न यह है — "आपने कहा है कि मुसलमान भाअी अपने डरकी और अपनी असुरक्षितताकी कहानी लेकर आपके पास आते हैं, तो आप अुन्हें कोअी जवाब नहीं दे सकते। अुनकी शिकायत यह है कि सरदार, जिनके हाथोंमें गृह-विभाग है, मुसलमानोंके खिलाफ हैं। आपने यह भी कहा है कि सरदार पटेल पहले आपकी हां-में-हां मिलाया करते थे, आपके जी-हुजूर कहलाते थे; मगर अब अैसी हालत नहीं रही। अिससे लोगोंके मन पर यह असर होता है कि आप सरदारका हृदय पलटनेके लिअे अुपवास कर रहे हैं। आपका अुपवास गृह-विभागकी नीतिकी निन्दा करता है। अगर आप अिस चीजको साफ करेंगे तो अच्छा होगा।"

मैं समझता हूं कि मैं अिस बातका साफ जवाब दे चुका हूं। मैंने जो कहा है अुसका अेक ही अर्थ हो सकता है। जो अर्थ लगाया गया है वह मेरी कल्पनामें भी नहीं आया था। अगर मुझे पता होता कि अैसा अर्थ किया जा सकता है, तो मैं पहलेसे अिस चीजको साफ कर देता।

कअी मुसलमान दोस्तोंने शिकायत की थी कि सरदारका रुख मुसलमानोंके खिलाफ है। मैंने कुछ दुःखसे अुनकी बात सुनी, मगर कोअी सफाअी पेश न की। अुपवास शुरू होनेके बाद मैंने अपने अूपर जो रोकथाम लगा रखी थी वह चली गअी। अिसलिअे मैंने टीकाकारोंको कहा कि सरदारको मुझसे और पंडित नेहरूसे अलग करके और मुझे और पंडित नेहरूको खामखाह आसमान पर चढ़ाकर वे गलती करते हैं। अिससे अुनको फायदा नहीं पहुंच सकता। सरदारके बात करनेके ढंगमें अेक तरहका अक्खड़पन है, जिससे कभी कभी लोगोंका दिल दुख जाता है, अगरचे सरदारका अिरादा किसीको दुःखी बनानेका नहीं होता। अुनका दिल बहुत बड़ा है। अुसमें सबके लिअे जगह है। सो मैंने जो कहा अुसका मतलब यह था कि अपने जीवनभरके वफादार साथीको अेक बेजा अिलजामसे बरी कर दूं। मुझे यह भी डर था कि सुननेवाले कहीं यह न समझ बैठें कि मैं सरदारको अपना जी-हुजूर मानता हूं। सरदारको प्रेमसे मेरा जी-हुजूर कहा जाता था, अिसलिअे मैंने सरदारकी तारीफ करते समय कह दिया कि वे अितने शक्तिशाली और मनके मजबूत हैं कि किसीके जी-हुजूर हो ही नहीं सकते। जब वे मेरे जी-हुजूर कहलाते थे तब वे अैसा कहने देते थे, क्योंकि जो कुछ मैं कहता था वह अपने-आप अुनके गले अुतर जाता था। वे अपने क्षेत्रमें बहुत बड़े थे। अहमदाबाद म्युनिसिपैलिटीमें अुन्होंने शासन चलानेमें बहुत काबलीयत बताअी थी। मगर वे अितने नम्र थे कि अुन्होंने अपनी राजनीतिक तालीम मेरे नीचे शुरू की। अुन्होंने अिसका कारण मुझे बताया था कि जब मैं हिन्दुस्तानमें आया था, अुन दिनों जिस तरहका राजकाज हिन्दुस्तानमें चलता था, अुसमें हिस्सा लेनेका अुनका मन नहीं होता था। मगर अब जब सत्ता अुनके गले आ पड़ी, तब अुन्होंने देखा कि जिस अहिंसाको वे आज तक सफलतापूर्वक चला सके अुसे अब नहीं चला सकते। मैंने कहा

है कि मैं समझ गया हूं कि जिस चीजको मैं और मेरे साथी अहिंसा कहा करते थे, वह सच्ची अहिंसा नहीं थी। वह तो नकली चीज थी और अुसका नाम है मन्द विरोध। हां, किनके हाथोंमें मन्द विरोध किसी कामकी चीज है? जरा सोचिये तो सही कि अेक कमजोर आदमी जनताका प्रतिनिधि बने, तो वह अपने मालिकोंकी हंसी और बेअिज्जती ही करवा सकता है। मैं जानता हूं कि सरदार कभी अुन्हें सौंपी हुअी जिम्मेदारीको दगा नहीं दे सकते। वे अुसका पतन बरदाश्त नहीं कर सकते।

अुपवासका मकसद

मैं अुम्मीद करता हूं कि यह सब सुननेके बाद कोअी अैसा खयाल नहीं करेंगे कि मेरा अुपवास गृह-विभागकी निन्दा करनेवाला है। अगर कोअी अैसा खयाल करनेवाला है, तो मैं अुससे कहना चाहता हूं कि वह अपने आपको नीचे गिराता है और अपने आपको नुकसान पहुंचाता है, मुझे या सरदारको नहीं। मैं जोरदार लफ्जोंमें कह चुका हूं कि कोअी बाहरी ताकत अिन्सानको नीचे नहीं गिरा सकती। अिन्सानको नीचे गिरानेवाला अिन्सान खुद ही बन सकता है। मैं जानता हूं कि मेरे जवाबके साथ अिस वाक्यका कोअी ताल्लुक नहीं है। मगर यह अेक अैसा सत्य है कि अुसे हर मौके पर दोहराया जा सकता है।

मैं साफ लफ्जोंमें कह चुका हूं कि मेरा अुपवास यूनियनके मुसलमानोंके खातिर है। अिसलिअे वह यूनियनके हिन्दुओं और सिक्खों और पाकिस्तानके मुसलमानोंके सामने है। अिस तरहसे यह अुपवास पाकिस्तानकी अकलियतके खातिर भी है। जो विचार मैं पहले समझा चुका हूं, अुसीको यहां थोड़ेमें दोहरानेकी कोशिश कर रहा हूं।

मैं यह आशा नहीं रख सकता कि मेरे जैसे अपूर्ण और कमजोर अिन्सानका फाका दोनों तरफकी अकलियतोंको सब तरहके खतरोंसे पूरी तरह बचानेकी ताकत रखे। फाका सबकी आत्मशुद्धिके लिअे है। अुसकी पवित्रताके बारेमें किसी तरहका शक लाना गलती होगी।

अुलटे अर्थकी गुंजाअिश नहीं

तीसरा सवाल यह है — "आपका अुपवास अैसे वक्त पर शुरू हुआ है, जब संयुक्त राष्ट्रीय संघकी सुरक्षा-समिति बैठनेवाली है। साथ

ही अभी ही कराचीमें फसाद हुआ है और गुजरात (पंजाब) में कत्ले-आम हुआ है। हम नहीं जानते कि विदेशके अखबारोंमें अिन वाकयातकी तरफ कहां तक ध्यान दिया गया है। अिसमें शक नहीं कि आपके अुपवासके सामने ये वाकयात छोटे लगने लगे हैं। पाकिस्तानके प्रतिनिधियोंके पिछले कारनामोंसे हम समझ सकते हैं कि वे जरूर अिस चीजसे फायदा अुठायेंगे और दुनियाको कहेंगे कि गांधीजी अपने हिन्दू अनुयायियोंसे, जिन्होंने हिन्दुस्तानमें मुसलमानोंकी जिन्दगी आफतमें डाल रखी है, पागलपन छुड़वानेके लिअे अुपवास कर रहे हैं। सारी दुनियामें सच्ची बात पहुंचनेमें तो देर लगेगी। अिस दरमियान आपके अुपवासका यह नतीजा आ सकता है कि संयुक्त राष्ट्रीय संघ पर हमारे विरुद्ध प्रभाव पड़े।"

अिस सवालका लम्बा-चौड़ा जवाब देनेकी जरूरत थी। दुनियाकी हुकूमतों और दुनियाके लोगों पर, जहां तक मैं जानता हूं, मैं यह कहनेकी हिम्मत करता हूं कि अुपवासका असर अच्छा ही हुआ है। बाहरके लोग, जो हिन्दुस्तानके वाकयातको निष्पक्षपातसे देख सकते हैं, मेरे फाकेका अुलटा अर्थ नहीं लगायेंगे। फाका यूनियनसे और पाकिस्तानके रहनेवालोंसे पागलपन छुड़वानेके लिअे है।

अगर पाकिस्तानमें मुसलमानोंकी अकसरियत सीधी तरहसे न चले, वहांके मर्द और औरतें शरीफ न बनें, तो यूनियनके मुसलमानोंको बचाया नहीं जा सकता। मगर मुझे खुशी है कि मृदुलाबहनके कलके सवाल परसे अैसा लगता है कि पाकिस्तानके मुसलमानोंकी आंखें खुल गअी हैं और वे अपना फर्ज समझने लगे हैं।

संयुक्त राष्ट्रीय संघ यह जानता है कि मेरा फाका अुसे ठीक निर्णय करनेमें मदद देनेवाला है, ताकि वह पाकिस्तान और हिन्दुस्तानका अुचित पथ-प्रदर्शन कर सके।

१२६

१६–१–'४८

ओश्वरकी कृपा

गांधीजीने बिस्तर पर लेटे हुअे जो मौखिक सन्देश दिया, वह अिस प्रकार है:

मुझे आशा तो नहीं थी कि आज भी मैं बोल सकूंगा। लेकिन यह सुनकर आप खुश होंगे कि कल मेरी आवाजमें जितनी शक्ति थी, अुससे आज मैं ज्यादा महसूस करता हूं। अिसका मतलब तो यही किया जाय कि ओश्वरकी बड़ी कृपा है। चौथे रोज मुझमें, जब मैंने फाका किया है, अितनी शक्ति नहीं रहती है। लेकिन आज तो रहती है। मेरी अुम्मीद तो अैसी है कि अगर आप सब लोग आत्मशुद्धि करनेका यज्ञ करते रहेंगे, तो बोलनेकी मेरी शक्ति आखिर तक रह सकती है। मैं अितना तो कहूंगा कि मुझे किसी प्रकारकी जल्दी नहीं है। जल्दी करनेसे हमारा काम नहीं बनता है। मैं परम शान्तिमें हूं। मैं नहीं चाहता कि कोओी अधूरा काम करे और मुझे सुना दे कि ठीक हो गया है। साराका सारा जब यहां ठीक होगा, तो सारे हिन्दुस्तानमें ठीक होगा। अिसलिअे मैं समझता हूं कि जब अिर्द-गिर्दमें, सारे हिन्दुस्तानमें और सारे पाकिस्तानमें शान्ति नहीं हुओी, तो मुझे जिन्दा रहनेमें दिलचस्पी नहीं है। ये अिस यज्ञके मानी हैं।

सच्ची सद्‌भावना

गांधीजीका लिखित सन्देश:

किसी जिम्मेदार हुकूमतके लिअे सोच-समझ कर किये हुअे अपने किसी फैसलेको बदलना आसान नहीं होता। मगर तो भी हमारी हुकूमतने, जो हर मानेमें जिम्मेदार हुकूमत है, सोच-समझ कर और तेजीसे अपना तय किया हुआ फैसला बदल डाला है। अुसको काश्मीरसे लेकर कन्याकुमारी तक और कराचीसे लेकर आसामकी हद तक सारे मुल्कको मुबारकबाद देना चाहिये। मैं जानता हूं कि दुनियाके सब लोग भी कहेंगे कि अैसा बड़ा काम हमारी हुकूमतके जैसी बड़े दिलवाली हुकूमत

ही कर सकती थी। अिसमें मुसलमानोंको सन्तुष्ट करनेकी बात नहीं है। यह तो अपने आपको सन्तुष्ट करनेकी बात है। कोअी भी हुकूमत, जो बहुत बड़ी जनताकी प्रतिनिधि है, बेसमझ जनतासे तालियां पिटवानेके लिअे कोअी कदम नहीं अुठा सकती। जहां चारों तरफ पागलपन फैला हुआ है, वहां आपके बड़ेसे बड़े नेता बहादुरीसे अपना दिमाग ठण्डा रखकर जो जहाज चला रहे हैं, अुसे क्या वे डूबनेसे न बचावें?

हमारी हुकूमतने क्यों यह कदम अुठाया? अिसका कारण मेरा अुपवास था। अुपवाससे अुनकी विचारधारा ही बदल गअी। अुपवासके बिना वे कानून अुनसे जितना करवाता अुतना ही करनेवाले थे। मगर हिन्दुस्तानकी हुकूमतका यह कदम सच्चे मानोंमें दोस्ती बढ़ाने और मिठास पैदा करनेवाली चीज है। अिससे पाकिस्तानकी भी परीक्षा हो जायगी। नतीजा यह आना चाहिये कि न सिर्फ काश्मीरका बल्कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तानमें जितने मतभेद हैं, अुन सबका बाअिज्जत आपस आपसमें फैसला हो जावे। आजकी दुश्मनीकी जगह दोस्ती ले। न्याय कानूनसे बढ़ जाता है। अंग्रेजीमें अेक घरेलू कहावत है, जो सदियोंसे चलती आअी है। अुसमें कहा है कि जहां मामूली कानून काम नहीं देता, वहां न्याय हमारी मदद करता है। बहुत वक्त नहीं हुआ जब कानूनके लिअे और न्यायके लिअे वहां अलग अलग कचहरियां हुआ करती थीं। अिस तरहसे देखा जाय तो अिसमें कोअी शक नहीं कि हिन्दुस्तानकी हुकूमतने जो किया है, वह सब तरहसे ठीक है। अगर मिसालकी जरूरत है तो मेकडोनल्ड अेवार्ड (निर्णय) हमारे सामने है। वह सिर्फ मेकडोनल्डका निर्णय न था, बल्कि सारे ब्रिटिश मंत्रि-मण्डलका और दूसरी गोलमेज-परिषदके अधिकतर सदस्योंका भी निर्णय था। मगर यरवडाके अुपवासने रातोंरात वह निर्णय बदल दिया। मुझे कहा गया है कि यूनियनकी हुकूमतके अिस बड़े कामके कारण तो अब मैं अपना अुपवास छोड़ दूं। काश, मैं अपने दिलको अैसा करनेके लिअे समझा सकता!

अुपवासका अच्छेसे अच्छा जवाब

मैं जानता हूं कि अुन डॉक्टर लोगोंकी चिन्ता, जो अपनी अिच्छासे काफी त्याग करके मेरी देखभाल कर रहे हैं, जैसे अुपवास लम्बा होता

जाता है वैसे बढ़ती जाती है। मेरे गुरदे ठीक तरहसे काम नहीं करते। अुन्हें अिस चीजका खतरा नहीं कि मैं आज मर जाअूंगा। मगर अुपवास लम्बा चला तो हमेशाके लिअे शरीरकी मशीनको जो नुकसान पहुंचेगा अुससे वे डरते हैं। मगर डॉक्टर लोग कितने ही होशियार क्यों न हों, मैंने अुनकी सलाहसे अुपवास शुरू नहीं किया। मेरा रहनुमा और मेरा हकीम अेकमात्र अीश्वर रहा है। वह कभी गलती नहीं करता और वह सर्व-शक्तिमान है। अगर अुसे मेरे अिस कमजोर शरीरसे कुछ और काम लेना होगा, तो डॉक्टर लोग कुछ भी कहें वह मुझे बचा लेगा। मैं अीश्वरके हाथोंमें हूं। अिसलिअे मैं आशा करता हूं कि आप विश्वास रखेंगे कि मुझे न मौतका डर है, न अपंग होकर जिन्दा रहनेका। मगर मुझे लगता है कि अगर देशको मेरा कुछ भी अुपयोग है, तो डॉक्टरोंकी अिस चेतावनीके परिणाम-स्वरूप लोगोंको तेजीके साथ मिलकर काम करना चाहिये। अितनी मेहनतसे आजादी पानेके बाद हमें बहादुर तो होना ही चाहिये। बहादुर लोग जिन पर दुश्मनीका शक होता है अुन पर भी विश्वास रखते हैं। बहादुर लोग अविश्वासको अपनी शानके खिलाफ समझते हैं। अगर दिल्लीके हिन्दू, मुसलमान और सिक्खोंमें अैसी अेकता स्थापित हो जाय कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तानके बाकी हिस्सोंमें आग भड़के तो भी दिल्ली शान्त रहे, तब मेरी प्रतिज्ञा पूरी हो जायगी। खुशकिस्मतीसे हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों तरफके लोग अपने-आप समझ गये लगते हैं कि अुपवासका अच्छेसे अच्छा जवाब यही है कि दोनों अुपनिवेशोंमें अैसी दोस्ती पैदा हो, जिससे हर धर्मके लोग दोनों तरफ बिना किसी खतरेके आ-जा सकें और रह सकें। आत्म-शुद्धिके लिअे अितना तो कमसे कम होना ही चाहिये।

हिन्दुस्तान और पाकिस्तानके लिअे दिल्ली पर बहुत ज्यादा बोझ डालना ठीक न होगा। यूनियनके रहनेवाले भी आखिर तो अिन्सान हैं। हमारी हुकूमतने लोगोंके नामसे अेक बहुत बड़ा अुदार कदम अुठाया है और अुसको अुठाते समय अुसकी कीमतका खयाल तक नहीं किया। अिसका जवाब पाकिस्तान क्या देगा? अिरादा हो तो रास्ते तो बहुत हैं। मगर क्या अिरादा है?

१२७

१७–१–'४८

मेरी जिन्दगी भगवानके हाथमें है

गांधीजीने बिस्तर पर लेटे लेटे माअिक्रोफोन पर ३ मिनट भाषण दिया। अुन्होंने कहा :

अीश्वरकी ही कृपा है कि आज पांचवां दिन है, तो भी मैं बगैर परिश्रमके आपको दो शब्द कह सकता हूं। जो मुझको कहना है वह तो मैंने लिखवा दिया है, जिसे प्रार्थना-सभामें सुशीलाबहन सुना देगी।

अितना है कि जो कुछ भी आप करें, अुसमें परिपूर्ण शक्ति होनी चाहिये। अगर वह नहीं है तो कुछ भी नहीं है। अगर आप मेरा खयाल रखें कि अिसे कैसे जिन्दा रखा जाय, तो बड़ी भारी गलती करनेवाले हैं। मुझको जिन्दा रखना या मारना किसीके हाथमें नहीं है। वह अीश्वरके हाथमें है, अिसमें मुझे कोअी शक नहीं है; किसीको भी शक नहीं होना चाहिये।

अिस अुपवासका मतलब यह है कि अन्तःकरण स्वच्छ हो और जाग्रत हो। अैसा करें तभी सबकी भलाअी है। मुझ पर दया करके आप कुछ न कीजिये। जितने दिन अुपवासके काट सकता हूं, काटूंगा। अीश्वरकी अिच्छा होगी तो मर जाअूंगा।

मैं जानता हूं कि मेरे काफी मित्र दुःखी हैं और सब कहते हैं कि आज ही अुपवास क्यों न छोड़ा जाय। आज मेरे पास अैसा सामान नहीं है। अैसा मिल जाय तो मैं नहीं छोड़नेका आग्रह नहीं करूंगा। अहिंसाका नियम है कि मर्यादा पर कायम रहना चाहिये। अभिमान नहीं करना चाहिये। नम्र होना चाहिये। मैं जो कह रहा हूं अुसमें अभिमान नहीं है। शुद्ध प्यारसे कह रहा हूं। अैसा जो जानता है वही रहनेवाला है।

दिलकी सफाअी

गांधीजीने अपने लिखित संदेशमें कहा : मैं पहले भी कह चुका हूं और फिरसे दोहराता हूं कि फाकेके दबावके नीचे कुछ भी न किया

जाय। मैंने देखा है कि फाकेके दबावके नीचे कअी बातें कर ली जाती हैं और फाका खतम होनेके बाद मिट जाती हैं। अगर अैसा कुछ हुआ तो बहुत बुरी बात होगी। अैसा कभी होना ही नहीं चाहिये। आध्यात्मिक अुपवास अेक ही आशा रखता है — वह है दिलकी सफाअी। अगर दिलकी सफाअी अीमानदारीसे की जाय, तो जिस कारणसे सफोअी की गअी थी वह कारण मिट जाने पर भी सफाअी नहीं मिटती। किसी प्रियजनके आनेके कारण कमरेमें सफेदी की जाती है, तो जब वह आकर चला जाता है तब सफेदी मिट नहीं जाती। यह तो जड़ वस्तुकी बात है। कुछ अर्सेके बाद सफेदी मिटने लगती है और फिरसे करवानी पड़ती है। दिलकी सफाअी तो अेक दफा हो गअी, तो मरने तक कायम रहती है। फाकेका दूसरा कोअी योग्य मकसद नहीं हो सकता।

पाकिस्तानसे दो शब्द

राजा, महाराजा और आम लोगोंके तारोंका ढेर बढ़ रहा है। पाकिस्तानसे भी तार आ रहे हैं। वे अच्छे हैं। मगर पाकिस्तानके दोस्त और शुभचिन्तककी हैसियतसे मैं पाकिस्तानके रहनेवालों और जिनको पाकिस्तानका भविष्य बनाना है अुनसे कहना चाहता हूं कि अगर अुनका जमीर (विवेक) जाग्रत न हुआ और अगर वे पाकिस्तानके गुनाहको कबूल नहीं करते, तो पाकिस्तानको कभी कायम नहीं रख सकेंगे। अिसका यह मतलब नहीं कि मैं यह नहीं चाहता कि हिन्दुस्तानके दोनों टुकड़े अपनी खुशीसे फिरसे अेक हों। मगर मैं यह साफ करना चाहता हूं कि जबरदस्तीसे मिटानेका मुझे खयाल तक नहीं आ सकता। मैं अुम्मीद करता हूं कि मृत्युशय्या पर पड़े मेरे ये वचन किसीको चुभेंगे नहीं। मैं अुम्मीद रखता हूं कि सब पाकिस्तानी समझ जायेंगे कि अगर कमजोरीकी वजहसे या अुनका दिल दुखानेके डरसे मैं अुनके सामने अपने दिलकी सच्ची बात न रखूं, तो मैं अपने प्रति और अुनके प्रति झूठा साबित होअूंगा। अगर मेरे हिसाबमें कुछ गलती रही हो तो मुझे बताना चाहिये। मैं वादा करता हूं कि अगर मैं गलती समझ गया, तो अपने वचन वापस ले लूंगा। मगर जहां तक मैं जानता हूं, पाकिस्तानके गुनाहके बारेमें दो विचार हो ही नहीं सकते।

मेरे अुपवासको किसी तरहसे भी राजनीतिक न समझा जाय। यह तो अन्तरात्माकी जबरदस्त आवाजके जवाबमें धर्म समझकर किया गया है। महा यातना भुगतनेके बाद मैंने फाका करनेका फैसला किया। दिल्लीके मुसलमान भाअी अिस बातके साक्षी हैं। अुनके प्रतिनिधि करीब करीब रोज मुझे दिनभरकी रिपोर्ट देने आते हैं। अिस पवित्र मौके पर मेरा अुपवास छुड़वानेके हेतु मुझको धोखा देकर राजा-महाराजा, हिन्दू-सिक्ख और दूसरे लोग न अपनी खिदमत करेंगे, न हिन्दुस्तानकी। वे सब समझ लें कि मैं कभी अितना खुश नहीं रहता, जितना कि आत्माके खातिर अुपवास करते वक्त। अिस फाकेसे मुझे हमेशासे ज्यादा खुशी हासिल हुअी है। किसीको अिसमें विघ्न डालनेकी जरूरत नहीं है। विघ्न अिसी शर्त पर डाला जा सकता है कि अीमानदारीसे आप यह कह सकें कि आपने सोच-समझ कर शैतानकी तरफसे अपना मुंह फेर लिया है और अीश्वरकी तरफ चल पड़े हैं।

१२८

१८–१–'४८

आगेका काम

मैंने थोड़ा तो लिख दिया है। वह सुशीलाबहन आप लोगोंको पढ़कर सुना देगी।

आजका दिन मेरे लिअे तो है, आपके लिअे भी मंगल-दिन माना जाय। कैसा अच्छा है कि आज ही गुरु गोविन्दसिंहकी जन्मतिथि है। अुसी शुभ तिथि पर मैं आप लोगोंकी दयासे फाका छोड़ सका हूं। जो दया आप लोगोंसे, दिल्लीके निवासियोंसे, दिल्लीमें जो दुःखी शरणार्थी पड़े हैं अुनसे और यहांकी हुकूमतके सब कारोबारसे मुझे मिली है, अुसे मुझे लगता है कि मैं जिन्दगीभर भूल नहीं सकूंगा। कलकत्तेमें अैसे ही प्रेमका अनुभव मैंने किया। यहां पर मैं यह कैसे भूल सकता हूं कि शहीदसाहबने कलकत्तेमें बड़ा काम किया। अगर वे मदद न

करते, तो मैं वहां ठहरनेवाला न था। शहीदसाहबके लिअे हम लोगोंके दिलमें बहुत शकूक अभी भी हैं। अुससे हमें क्या? आज हम सीखें कि कोअी भी अिन्सान हो, कैसा भी हो, अुसके साथ हमें दोस्ताना तौरसे काम करना है। हम किसीके साथ किसी हालतमें दुश्मनी नहीं करेंगे, दोस्ती ही करेंगे। शहीदसाहब और दूसरे चार करोड़ मुसलमान यूनियनमें पड़े हैं, वे सबके सब फरिश्ते तो हैं नहीं। अैसे ही सब हिन्दू और सिक्ख भी थोड़े ही फरिश्ते हैं? हममें अच्छे लोग भी हैं, और बुरे भी हैं। लेकिन बुरे कम हैं। हमारे यहां हम जिन्हें जरायमपेशा जातियां कहते हैं वे लोग भी पड़े हैं। अुन सबके साथ मिल-जुलकर हमें रहना है। मुसलमान बड़ी कौम है, छोटी कौम नहीं है। यहीं नहीं, सारी दुनियामें मुसलमान पड़े हैं। अगर हम अैसी अुम्मीद करें कि सारी दुनियाके साथ हम मित्रभावसे रहेंगे, तो क्या वजह है कि हम यहांके मुसलमानोंसे दुश्मनी करें? मैं भविष्य-वेत्ता नहीं हूं, फिर भी मुझे अीश्वरने अकल दी है, मुझे अीश्वरने दिल दिया है। अुन दोनोंको टटोलता हूं और आपको भविष्य सुनाता हूं कि अगर किसी न किसी कारणसे हम अेक-दूसरेसे दोस्ती न कर सके, वह भी यहांके ही नहीं बल्कि पाकिस्तानके और सारी दुनियाके मुसलमानोंसे हम दोस्ती न कर सके, तो हम समझ लें — अिसमें मुझे कोअी शक नहीं — कि हिन्दुस्तान हमारा नहीं रहेगा, पराया हो जायगा, गुलाम हो जायगा। पाकिस्तान गुलाम होगा, यूनियन भी गुलाम होगा और जो आजादी हमने पाअी है वह आजादी हम खो बैठेंगे।

आज मुझे अितने लोगोंने आशीर्वाद दिये हैं, सुनाया है। यकीन दिलाया है कि हम सब हिन्दू, सिक्ख, मुसलमान, अीसाअी, पारसी, यहूदी भाअी-भाअी बनकर रहेंगे और किसी भी हालतमें, कोअी कुछ भी कहे, दिल्लीके हिन्दू, सिक्ख, मुसलमान, पारसी, अीसाअी सब, जो यहांके बाशिन्दे हैं और सब शरणार्थी भी, दुश्मनी नहीं करनेवाले हैं। यह थोड़ी बात नहीं है। अिसके मानी ये हैं कि अबसे हमारी कोशिश यह रहेगी कि सारे हिन्दुस्तान और पाकिस्तानमें जितने लोग पड़े हैं वे सब मिलकर रहें। हमारी कमजोरीके कारण हिन्दुस्तानके टुकड़े

हो गये, लेकिन वे भी दिलसे मिलने हैं। अगर अिस फाकेके छूटनेका यह अर्थ नहीं है, तो मैं बड़ी नम्रतासे कहूंगा कि फाका छुड़वाकर आपने कोअी अच्छा काम नहीं किया। कोअी काम ही नहीं किया। अब फाकेकी आत्माका भलीभांति पालन होना चाहिये। दिल्लीमें और दूसरी जगहमें भेद क्यों हो? जो दिल्लीमें हुआ और होगा वही अगर सारे यूनियनमें होगा, तो पाकिस्तानमें भी होना ही है। अिसमें आप शक न रखें। आप न डरें, अेक बच्चेको भी डरनेका काम नहीं। आज तक हम, मेरी निगाहमें, शैतानकी तरफ जाते थे। आजसे मैं अुम्मीद करता हूं कि हम अीश्वरकी ओर जाना शुरू करते हैं। लेकिन हम तय करें कि अेक वक्त हमने अपना चेहरा, मुंह अीश्वरकी ओर घुमाया तो वहांसे कभी नहीं हटेंगे। अैसा हुआ तो हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों मिलकर हम सारी दुनियाको ढंक सकेंगे, सारी दुनियाकी सेवा कर सकेंगे और सारी दुनियाको अूंची ले जा सकेंगे। मैं और किसी कारणसे जिन्दा नहीं रहना चाहता। अिन्सान जिन्दा रहता है, तो अिन्सानियतको अूंचा अुठानेके लिअे। अीश्वर और खुदाकी तरफ जाना ही अिन्सानका फर्ज है। जबानसे अीश्वर, खुदा, सत श्रीअकाल, कुछ भी नाम लो; वह सब झूठा है, अगर दिलमें वह नाम नहीं है। सब अेक ही हस्ती है, तो फिर कोअी कारण नहीं है कि हम अुस चीजको भूल जायं और अेक-दूसरेको दुश्मन मानें।

आज मैं आपसे ज्यादा कुछ कहनेवाला नहीं हूं। लेकिन आजके दिनसे हिन्दू निर्णय कर लें कि हम लड़ेंगे नहीं। मैं चाहूंगा कि हिन्दू कुरान पढ़ें, जैसे वे भगवद्‌गीता पढ़ते हैं। सिक्ख भी वही करें। और मैं चाहूंगा कि मुस्लिम भाअी-बहन भी अपने घरोंमें ग्रन्थसाहब पढ़ें, गीता पढ़ें, अुनके माने समझें। जैसे हम अपने धर्मको मानते हैं, वैसे दूसरोंके धर्मको भी मानें। अुर्दू, फारसी किसी जबानमें भी बात लिखी हो, अच्छी बात तो अच्छी बात ही है। जैसे कुरान शरीफ वैसे गीता और ग्रन्थसाहब हैं। मेरा मकसद यही है। चाहे आप मानें या न मानें, अभी तक मैं अैसा करता रहा हूं। मैं आपको कहूंगा, और दावेके साथ कहूंगा कि मैं पत्थरकी पूजा नहीं करता, मगर मैं सनातनी हिन्दू हूं।

पत्थरकी पूजा करनेवालोंसे मैं नफरत नहीं करता। खुदा पत्थरमें भी पड़ा है। जो पत्थरकी पूजा करता है, वह अुसमें पत्थर नहीं, खुदा देखता है। पत्थरमें अीश्वर न मानें तो कुरान शरीफ खुदाअी किताब है यह क्यों माना जायगा? वह क्या बुतपरस्ती नहीं है? दिलोंमें भेद न रखें तो हम सब यह सीख सकते हैं। अैसा हो तो फिर यह नहीं होगा कि यह हिन्दू है, यह सिक्ख है, यह मुसलमान है। सब भाअी-भाअी हैं, सब मिल-जुलकर रहनेवाले हैं। पीछे ट्रेनोंमें आज जो अनेक किस्मकी परेशानी होती है—लड़कियोंको फेंक दिया जाता है, आदमी फेंक दिये जाते हैं, औरतें फेंक दी जाती हैं—वह सब मिट जायगी। हर कोअी आसानीसे हर जगह रह सकेंगे। कहीं किसीको डर न होगा। यूनियन अैसा बने। पाकिस्तान भी अैसा होना चाहिये। तभी मुझे शान्ति मिलेगी।

मुझको तब तक परम शान्ति नहीं मिलनेवाली है, जब तक यहांके शरणार्थी, जो पाकिस्तानसे दुःखी होकर आये हैं, अपने घरोंको वापस न जा सकें और जो मुसलमान यहांसे हमारे डरसे और मार-पीटसे भागे हैं और वापस आना चाहते हैं, वे आरामसे यहां न रह सकें।

बस अितना ही कहूंगा। अीश्वर हम सबको, सारी दुनियाको अच्छी अकल दे, सन्मति दे, होशियार करे और अपनी तरफ खींच ले, जिससे हिन्दुस्तान और सारी दुनिया सुखी हो!

अुपवासका पारणा

मैंने सत्यके नाम पर यह अुपवास शुरू किया, जिसका जाना-पहचाना नाम अीश्वर है। जीते-जागते सत्यके बिना अीश्वर कहीं नहीं है। अीश्वरके नाम पर हम झूठ बोले हैं, हमने बेरहमीसे लोगोंकी हत्याअें की हैं और अिसकी भी परवाह नहीं की कि वे अपराधी हैं या निर्दोष, मर्द हैं या औरतें, बच्चे हैं या बूढ़े। हमने अीश्वरके नाम पर औरतें और लड़कियां भगाअी हैं, जबरन धर्म-पलटा किया है, और यह सब हमने बेहयाअीसे किया है। मैं नहीं जानता कि किसीने ये काम सत्यके नाम पर किये हों। अुसी नामका अुच्चारण करते हुअे मैंने अपना अुपवास तोड़ा है। हमारे लोगोंका दुःख असह्य था।

राष्ट्रपति राजेन्द्रबाबू १०० आदमियोंको लाये, जिनमें हिन्दुओं, मुसलमानों और सिक्खोंके प्रतिनिधि थे, हिन्दू-महासभा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक-संघके प्रतिनिधि थे और पंजाब, सरहदी सूबे और सिंधके शरणार्थियोंके प्रतिनिधि भी थे। अिन्हीं प्रतिनिधियोंमें पाकिस्तानके हाअी कमिश्नर जाहिदहुसेन साहब थे, दिल्लीके चीफ कमिश्नर और डिप्टी कमिश्नर थे और आजाद हिन्द फौजके प्रतिनिधि जनरल शाहनवाज थे। मूर्तिकी तरह मेरे पास बैठे हुअे पंडित नेहरू और मौलाना साहब भी थे। राजेन्द्रबाबूने अिन प्रतिनिधियोंके दस्तखतवाला अेक दस्तावेज पढ़ा, जिसमें मुझसे कहा गया कि मैं अुन पर ज्यादा चिन्ताका बोझ न डालूं और अपना अुपवास छोड़कर अुनके दुःखको दूर करूं। पाकिस्तानसे और हिन्दुस्तानी संघसे तार पर तार आये हैं, जिनमें मुझसे अुपवास छोड़नेकी अपील की गअी है। मैं अिन सारे दोस्तोंकी सलाहका विरोध नहीं कर सका। मैं अुनकी अिस प्रतिज्ञा पर अविश्वास नहीं कर सका कि हर हालतमें हिन्दुओं, मुसलमानों, सिक्खों, अीसाअियों, पारसियों और यहूदियोंमें पूरी पूरी दोस्ती रहेगी — अैसी दोस्ती जो कभी न टूटेगी। अुस दोस्तीको तोड़नेका मतलब राष्ट्रको तोड़ना और खतम करना होगा।

प्रतिज्ञाकी आत्मा

जब मैं यह लिख रहा हूं, मेरे पास सेहत और दीर्घ जीवनकी कामनावाले तारोंका ढेर लग रहा है। भगवान मुझे काफी सेहत और विवेक दे कि मैं मानव-जातिकी सेवा कर सकूं। अगर आजका दिया हुआ पवित्र वचन पूरा हो जाय, तो मैं आपको यकीन दिलाता हूं कि मैं चौगुनी शक्तिसे भगवानसे प्रार्थना करूंगा कि मैं अपनी पूरी जिन्दगी जी सकूं और जीवनके आखिरी पल तक मानव-समाजकी सेवा कर सकूं। विद्वानोंका कहना है कि आदमीकी पूरी जिन्दगी १२५ बरसकी है; कोअी अुसे १३३ बरसकी बताते हैं। दिल्लीके नागरिकोंके साथ हिन्दू-महासभा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक-संघकी सद्भावनासे मेरी प्रतिज्ञाके शब्दोंका तो आशासे जल्दी पालन हो गया है। मुझे पता चला है कि कलसे हजारों शरणार्थी और दूसरे लोग अुपवास कर रहे हैं। अैसी हालतमें अिससे दूसरा नतीजा हो ही नहीं सकता था। हजारों लोगोंकी तरफसे

मुझे लेखीमें दिली दोस्तीके वचन मिल रहे हैं। सारी दुनियासे मेरे पास आशीर्वादके तार आये हैं। क्या अिस बातका अिससे अच्छा कोअी सबूत हो सकता है कि मेरे अिस अुपवासमें भगवानका हाथ था? लेकिन मेरी प्रतिज्ञाके शब्दोंके पालनके बाद अुसकी आत्मा भी है, जिसके पालनके बिना शब्दोंका पालन बेकार हो जाता है। प्रतिज्ञाकी आत्मा है यूनियन और पाकिस्तानके हिन्दू, सिक्ख और मुसलमानोंमें सच्ची दोस्ती। अगर पहली बातका यकीन दिलाया जाता है, तो अुसके बाद दूसरी बात आनी ही चाहिये, जैसे रातके बाद दिन आता ही है। अगर यूनियनमें अंधेरा हो तो पाकिस्तानमें अुजेलेकी आशा रखना मूर्खता है। लेकिन अगर यूनियनमें रातके मिटनेका कोअी शक नहीं रह जाता है, तो पाकिस्तानमें भी रात मिटकर ही रहेगी। अुस तरहके निशान भी पाकिस्तानमें दिखाअी देने लगे हैं। पाकिस्तानसे बहुतसे सन्देश आये हैं। अुनमें से अेकमें भी अिस बातका विरोध नहीं किया गया है। भगवानने, जो सत्य है, जैसे अिन छह दिनोंमें हमें जाहिरा तौर पर रास्ता दिखाया है, वैसे ही आगे भी वह हमें रास्ता दिखाये!

१२९

१९–१–'४८

मुबारकबाद और चिन्ता

सारी दुनियासे हिन्दुस्तानियों और दूसरे लोगोंने मेरी सेहतके बारेमें चिन्ता और शुभेच्छा बतानेवाले अनेक तार भेजे हैं। अुसके लिअे मैं अुन सब भाअी-बहनोंका आभार मानता हूं। ये तार जाहिर करते हैं कि मेरा कदम ठीक था। मेरे मनमें तो अिस बारेमें कोअी शक था ही नहीं। जिस तरह मेरे मनमें अिस बारेमें कोअी शक नहीं कि अीश्वर है और अुसका सबसे तादृश नाम सत्य है, अुसी तरह मेरे दिलमें अिस बारेमें भी कोअी शक नहीं कि मेरा फाका सही था। अब मुबारकबादके तारोंका तांता लगा है। चिन्ताका बोझ हलका होनेसे लोग आरामकी सांस लेने लगे हैं। मित्रगण मुझे क्षमा करेंगे कि मैं सबको अलग अलग पहुंच नहीं भेज सकता। अैसा करना नामुमकिन-सा है। मैं यह भी

आशा रखता हूं कि तार भेजनेवाले पहुंचकी आशा भी नहीं रखते होंगे। तारोंके ढेरमें से मैं दो तार यहां देता हूं। अेक पश्चिम पंजाबके प्रधान-मंत्रीका है। दूसरा भोपालके नवाब साहबका। अुन लोगों पर आज लोग काफी अविश्वास करते हैं। तार तो आप सुनेंगे ही। अुस बारेमें मैं कुछ कहना नहीं चाहता।

अगर ये तार अुनके दिलके सच्चे भावोंको जाहिर करनेवाले न होते, तो क्यों वे अुपवास जैसे पवित्र और गंभीर मौके पर मुझे तार भेजनेकी तकलीफ देते और अुठाते?

भोपालके नवाब साहब अपने तारमें लिखते हैं:

"सब कौमोंके दिली मेलके लिअे आपकी अपीलको हिन्दुस्तानके दोनों हिस्सोंके सब शान्तिप्रिय लोग जरूर मानेंगे। अिसी तरहसे हिन्दुस्तानके दोनों हिस्सोंमें दोस्ती और समझौता हो, अिस अपीलको भी सब लोग जरूर मानेंगे। खुशकिस्मतीसे अिस रियासतमें पिछले सालमें अपनी कठिनाअियोंका सामना हम सब कौमोंमें समझौते, प्रेम और मेलके अुसूल पर कर सके हैं। नतीजा यह है कि अिस रियासतमें शान्ति भंग करनेवाला अेक भी किस्सा न बना। हम आपको यकीन दिलाते हैं कि हम अपनी पूरी ताकतसे अिस मेलजोल और मित्रभावको बढ़ानेकी कोशिश करेंगे।"

पंजाबके प्रधानमंत्रीका तार मैं पूरा पूरा देता हूं। वे लिखते हैं:

"आपने अेक भले कामको बढ़ानेके लिअे जो कदम अुठाया है, अुसकी पश्चिम पंजाबकी वजारत तहेदिलसे तारीफ करती है और सच्चे हृदयसे अुसकी कदर करती है। अिस वजारतने अकलियतोंके जान-माल और अिज्जतको बचानेके लिअे जो भी हो सके सो करनेका अुसूल हमेशा अपने सामने रखा है। यह वजारत मानती है कि अकलियतोंको शहरियोंके बराबर हक मिलने चाहियें। हम आपको यकीन दिलाते हैं कि यह वजारत अिस नीति पर अब दुगुने जोरसे अमल करेगी। हमें यही फिकर है कि हिन्दुस्तानके अिस छोटेसे भूखण्ड (बरे-आजम) में हर जगह फौरन हालात सुधरें, ताकि आप अपना अुपवास छोड़ सकें।

आपके जैसी कीमती जिन्दगीको बचानेके लिअे अिस सूबेमें हमारी कोशिशोंमें कोअी कसर न होगी।"

चेतावनी

आजकल लोग बिना सोचे-समझे नकल करने लगते हैं। अिसलिअे मुझे चेतावनी देनी होगी कि कोअी अितने ही समयमें अिसी तरहके परिणामकी आशा रखकर अिस तरहका अुपवास शुरू न करे। अगर कोअी करेगा तो अुसे निराश होना पड़ेगा। और, अैसे अचूक और शाश्वत अुपायकी बदनामी होगी। अुपवासकी शर्तें कड़ी हैं। अगर अीश्वरमें जीता-जागता विश्वास नहीं है और अन्तरात्मासे जबरदस्त आवाज, अीश्वरीय हुक्म नहीं निकलता है, तो अुपवास करना फिजूल है। तीसरी शर्त भी लगानेकी अिच्छा होती है। मगर अुसकी जरूरत नहीं है। अीश्वरका जबरदस्त हुक्म तभी मिल सकता है, जब अुपवासका मकसद सच्चा हो, सही हो और बामौका हो। अिसमें से यह भी निकलता है कि अैसे कदमके लिअे पहलेसे लम्बी तैयारी करनी पड़ती है। अिसलिअे कोअी झटसे अुपवास करने न बैठे।

बहुत बड़ा काम सामने पड़ा है

दिल्लीके शहरियोंके सामने और पाकिस्तानसे आये हुअे दु:खियोंके सामने बहुत बड़ा काम है। अुनको चाहिये कि वे पूरे विश्वासके साथ आपस आपसमें मिलनेके मौके ढूंढ़े। कल बहुतसी मुसलमान बहनोंको मिलकर मुझे निहायत खुशी हुअी। मेरे साथकी लड़कियोंने मुझे बताया कि वे बिड़ला-भवनमें बैठी हुअी हैं। मगर जानती नहीं कि अन्दर आयें या न आयें। अुनमें से अधिकतर परदेमें थीं। मैंने अुन्हें लानेके लिअे कहा। वे आअीं। मैंने अुनसे कहा कि वे अपने पिता और भाअीके सामने परदा नहीं रखतीं तो मेरे सामने क्यों? फौरन हरअेकने परदा निकाल दिया। यह पहला मौका नहीं है, जब मेरे सामने परदा निकाला गया है। मैं अिस बातका जिक्र यह बतानेके लिअे करता हूं कि सच्चा प्रेम, और मैं दावा करता हूं कि मेरा प्रेम सच्चा है, क्या कर सकता है। हिन्दू और सिक्ख बहनोंको मुसलमान बहनोंके पास जाना चाहिये

और अुनसे दोस्ती करनी चाहिये। खास खास मौकों पर, त्यौहारों पर अुन्हें निमंत्रण देना चाहिये, और अुनका निमंत्रण स्वीकार करना चाहिये।

मुसलमान लड़के-लड़कियां आम स्कूलोंकी तरफ खिंचें, साम्प्रदायिक स्कूलोंकी तरफ नहीं। वे स्कूलके खेलोंमें हिस्सा लें। मुसलमानोंका बहिष्कार नहीं होना चाहिये। अितना ही नहीं, बल्कि अुनसे अनुरोध करना चाहिये कि वे जो धन्धे करते थे, अुन्हें फिरसे करने लगें। मुसलमान कारीगरोंको खोकर दिल्लीने नुकसान अुठाया है। हिन्दू और सिक्खोंके लिअे यह खाहिश रखना कि वे मुसलमानोंसे अुनकी रोजी कमानेका जरिया छीन लें, बहुत बुरी कंजूसी होगी। अेक तरफसे तो कोअी चीज या काम पर किसी अेकका अिजारा नहीं होना चाहिये और दूसरी तरफसे किसीको बाहर करनेकी कोशिश नहीं होनी चाहिये। हमारा देश बहुत बड़ा है। अुसमें सबके लिअे जगह है।

जो शान्ति-कमेटियां बनी हैं वे सो न जायं। सब मुल्कोंमें बहुतसी कमेटियां दुर्भाग्यसे सो जाया करती हैं। आप लोगोंके बीच मुझे जिन्दा रखनेकी शर्त यह है कि हिन्दुस्तानकी सब कौमें शान्तिसे साथ साथ रहें। और वह शान्ति तलवारके जोरसे नहीं, मगर मोहब्बतके जोरसे हो। मोहब्बतसे बढ़कर जोड़नेवाली चीज दुनियामें दूसरी कोअी नहीं है।

१३०

२०–१–'४८

समझदार बनिये

पहली बात तो यह कह दूं कि अब दिल्लीमें अमन हो गया, और अुम्मीद है कि अच्छा ही होगा और रहेगा। दस्तखत करनेवालोंने भी सत्यरूप भगवानको गवाह रखकर दस्तखत किये हैं। फिर भी कलकत्तेसे आवाज आ रही है कि दिल्लीमें जो हुआ है अुसमें गोलमाल तो न हो। यहांके दु:खी लोग भी अगर साबित कदम रहेंगे और बाहर कुछ भी हो अुससे यहां मेल बिगड़ने न देंगे, तो आप सारे हिन्दको बचा लेंगे। दिल्ली छोटी जगह नहीं है। वह पुराना शहर है। यहां

आप सचाअीसे, अहिंसासे काम करेंगे, तो आपका असर सारी दुनिया पर पड़ेगा। सरदारने बम्बअीमें जो कहा है वह आपने पढ़ा होगा। अगर न पढ़ा हो तो गौरसे पढ़ें। सरदार और पंडितजी अलग नहीं हैं। करनेकी चीज अेक ही है, कहनेका ढंग अलग अलग है। सरदार मुसलमानोंके दुश्मन नहीं हैं। जो मुसलमानोंका दुश्मन है वह हिन्दका दुश्मन है, यह समझना चाहिये। अमेरिकामें कुछ गोरे लोग हबशियोंको मार डालते हैं, फिर न्यायकी बातें करते हैं। अुसे वे बुरा नहीं समझते। पर हम अिसे पसन्द नहीं करते, वहशीपन मानते हैं। हमारे अखबार-वालोंने अुनकी बुराअी की है। हम अितना तो कह दें कि कोअी दूसरा गैर-अिन्साफी करेगा, तो अुसका बदला आप खुद न लेंगे। हुकूमत पर छोड़ देंगे तब सब काम आरामसे चल सकता है।

मैंने कहा है कि शायद अब मैं पाकिस्तान जाअूं। वह तभी होगा जब पाकिस्तानकी हुकूमत मुझे बुलावे और कहे कि तू भला आदमी है; मुसलमान, हिन्दू, सिक्ख किसीका बुरा नहीं कर सकता। पाकिस्तानकी मरकजी हुकूमत या दोनों-तीनों सूबे मुझे बुलावें और जब डॉक्टर अिजाजत दें तभी मैं जा सकता हूं। डॉक्टरोंने कहा है कि पन्द्रह दिन तो मुझे ठीक होते लगेंगे। सूखी खूराक अभी मैं नहीं खा सकता। फलोंका रस या दूध ही ले सकता हूं।

प्रधानमंत्रीका श्रेष्ठ काम

पंडितजीको मैं जानता हूं। अुनके पास अगर अेक गीला और अेक सूखा दो बिछौने होंगे, तो वे सूखे पर किसी दुःखीको सुलावेंगे और गीला खुद लेंगे या कसरत करके अपने शरीरको गरम रखेंगे। मैं यह पढ़कर बहुत खुश हुआ कि अुनका घर मेहमानोंसे भरा रहता है; फिर भी वे कहते हैं कि अपने घरमें दो कमरे निकाल दूंगा। अुनमें दुःखियोंको रखूंगा। अैसा ही दूसरे बड़े धनी लोग और फौजी अफसर भी करें, तो कोअी दुःखी नहीं रहेगा। अुसका बड़ा असर होगा। अिस खूबसूरत मुल्कमें हमारे पास अैसे रत्न हैं। दुःखी जब देखेगा कि वह अकेला नहीं है, अुसके साथ और भी हैं, तो अुसका दुःख दूर होगा और वह मुसलमानोंके साथ दुश्मनी नहीं करेगा।

मेरे फाकेके मौके पर कुछ बदमाशोंने कमानेके लिअे नोटोंका व्यापार किया। गरीबोंके हाथ नोट बेचे। अुनसे मैं कहूंगा कि आप अैसे नोट क्यों निकालते हैं? क्या पेट भरनेके लिअे कोअी सच्चा रास्ता नहीं मिलता? और, अपने करोड़ों भोले लोगोंसे कहूंगा कि आप अैसे भोले न बनें। अैसे ही भोले रहेंगे, तो हमारा काम नहीं चलेगा। अिसलिअे हमें होशियार रहना है।

काश्मीरका प्रश्न

मेरे पास अेक तार लाहौरसे आया है। काश्मीर-फ्रीडम-लीगके प्रेसिडेण्ट लिखते हैं कि आपने यह तो बुलन्द काम किया है। पर यह कामयाब न होगा जब तक काश्मीरका मामला तय न हो जाय। हिन्दकी सरकार अपनी फौज वहांसे हटा ले और काश्मीर जिसका है अुसे मिल जाय। मैं कहता हूं कि अगर काश्मीरका फैसला न हुआ, तो क्या काश्मीरके हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख अेक-दूसरेके दुश्मन रहेंगे? हमारी फौजने काश्मीर पर हमला नहीं किया। वह तो तब गअी जब काश्मीरके मुसलमान अगुआ शेख अब्दुल्ला और वहांके महाराजाने लिखा कि काश्मीरमें फौज भेजो, नहीं तो वह गया। यह ठीक है कि काश्मीर जिनका है अुनको मिले। मगर किनको मिले? वहांसे बाहरके सब लोग निकाल दिये जायं। कोअी भी न रहे तभी यह हो सकता है। पर महाराजा तो हैं। अुन्हें कोअी निकाल नहीं सकता। जब महाराजा बिलकुल निकम्मे हों तो ही निकाल सकते हैं। यह जो लिखा है ठीक नहीं है। मैं अभी फाकेसे अुठा हूं। किसीका दुश्मन नहीं। आप आकर अपना केस मुझे समझा दें।

ग्वालियर, भावनगर और काठियावाड़की रियासतें

ग्वालियरसे मुसलमानोंका तार आया है कि हमें लूटा, मारा और अनाजकी लूट चलाअी गअी। यह अगर सही है तो सबको कहूंगा कि दिल्लीका काम भी आप बिगाड़नेवाले हैं और अिससे हुकूमतको शरमिन्दा होना पड़ेगा।

अखबारमें पढ़ा है कि काठियावाड़में जितने राजा हैं, अुन्होंने फैसला किया है कि हम सब मिलकर अेक राज बनेंगे। यह सही है

तो बहुत बड़ी बात है। अुन्हें मैं बधाअी देता हूं। भावनगरने पहल की और प्रजाके हाथोंमें राज सौंप दिया। वह धन्यवाद और बधाअीके लायक है।

१३१

२१–१–'४८

पहले तो मैं माफी मांग लूं कि मैं १० मिनिट देरसे आया हूं। बीमार हूं अिसलिअे समय पर नहीं आ सका।

प्रार्थनामें बम

कलके बम फूटनेकी बात कर लूं। लोग मेरी तारीफ करते हैं और तार भी भेजते हैं। पर मैंने कोअी बहादुरी नहीं दिखाअी। मैंने तो यही समझा था कि फौजवाले कहीं प्रेक्टिस करते हैं। बादमें सुना कि बम था। मुझसे कहा गया कि आप मरनेवाले थे, पर अीश्वरकी कृपासे बच गये। अगर सामने बम फटे और मैं न डरूं, तो आप देखेंगे और कहेंगे कि वह बमसे मर गया तो भी हंसता ही रहा। आज तो मैं तारीफके काबिल नहीं हूं। जिस भाअीने यह काम किया, अुससे आपको या किसीको नफरत नहीं करनी चाहिये। अुसने तो यह मान लिया कि मैं हिन्दू धर्मका दुश्मन हूं। क्या गीताके चौथे अध्यायमें यह नहीं कहा गया है कि जहां कहीं दुष्ट धर्मको नुकसान पहुंचाते हैं, वहां अुन्हें मारनेके लिअे भगवान किसीको भेज देता है। अुसने बहादुरीसे जवाब दिया। हम सब अीश्वरसे प्रार्थना करें कि वह अुसे सन्मति दे। जिसे हम दुष्ट मानते हैं वह अगर दुष्ट है, तो अुसकी खबर अीश्वर लेगा।

हिन्दू धर्मकी कुसेवा

वह नौजवान शायद किसी मस्जिदमें बैठ गया था। जगह नहीं थी तो वह हुकूमतको दोषी ठहरावे; पर पुलिसका या किसीका कहना न माने यह तो ठीक नहीं।

अिस तरह हिन्दू धर्म नहीं बच सकता। मैंने बचपनसे हिन्दू धर्मको पढ़ा और सीखा है। मैं छोटासा था और डरता था, तो मेरी दाअी

कहती थी कि डरता क्यों है? रामनाम ले। फिर मुझे अीसाअी, मुसलमान, पारसी सब मिले, मगर मैं जैसा छोटी अुमरमें था वैसा ही आज भी हूं। अगर मुझे हिन्दू धर्मका रक्षक बनना है, तो अीश्वर मुझे बनावेगा।

बम फेंकनेवालों पर दया

कुछ सिक्खोंने आकर मुझसे कहा कि हम नहीं मानते कि अिस काममें कोअी सिक्ख शामिल था। सिक्ख होता तो भी क्या? हिन्दू या मुसलमान होता तो भी क्या? अीश्वर अुसका भला करे। मैंने अिन्सपेक्टर जनरलसे कहा है कि अुस आदमीको सताया न जाय। अुसका मन जीतनेकी कोशिश की जाय। अुसे छोड़नेको मैं नहीं कह सकता। अगर वह अिस बातको समझ ले कि अुसने हिन्दू धर्म, हिन्दुस्तान, मुसलमानों और सारे जगतके सामने अपराध किया है, तो अुस पर गुस्सा न करें, रहम करें। अगर सबके मनमें यही है कि बूढ़ेका फाका निकम्मा था, पर अुसे मरने-कैसे दें? कौन अुसका अिलजाम ले? तो आप गुनहगार हैं, न कि बम फेंकनेवाला नौजवान। अगर अैसा नहीं है तो अुस आदमीका दिल अपने आप बदलेगा ही। क्योंकि अिस जगतमें पाप कभी अपने-आप रह नहीं सकता। वह किसीके सहारे ही टिक सकता है। सिर्फ भगवान और भगवानके भक्त ही अपने सहारे रह सकते हैं। अिसीमें से हमारा असहयोग निकला। अहिंसात्मक असहयोग यहां भी ठीक है।

आप भी भगवानका नाम लेते हैं। हमला हो, कोअी पुलिस भी मदद पर न आवे, गोलियां भी चलें और तब भी मैं स्थिर रहूं और रामनाम लेता रहूं और आपसे लिवाता रहूं —— अैसी शक्ति अीश्वर मुझे दे, तब मैं धन्यवादके लायक हूं।

कल अेक अनपढ़ बहनने अितनी हिम्मत दिखाअी कि बम फेंकनेवालेको पकड़वा दिया। यह मुझे अच्छा लगा। मैं मानता हूं कि कोअी मिसकीन हो, अनपढ़ हो या पढ़ा-लिखा हो, मन है तो सब कुछ है। मन चंगा तो भीतरमें गंगा। मुझ पर तो सबने प्रेम ही बरसाया है।

बहावलपुर और सिंध

बहावलपुरवालोंने लिखा है कि हमें जल्दी निकालो, नहीं तो सब मरनेवाले हैं। मैं कहता हूं कि वे घबरायें नहीं। वहांके नवाब साहबने

आज भी मुझे तार दिया है कि वे सब कोशिश करेंगे। मैं अुस चीजको भूल नहीं गया हूं।

बम्बअीके सिंधी सिक्ख भाअियोंकी तरफसे अेक तार आया है। वे कहते हैं कि सिन्धमें १५००० सिक्ख हैं। कुछको तो मार डाला है। वे १५००० अिधर अुधर पड़े हैं। अुनकी जान और अुनका अीमान खतरेमें है। अुन्हें वहांसे निकालनेकी तजवीज कीजिये — हवाअी जहाजसे ही कोशिश कीजिये। मैं यहां जो कहता हूं वह बात अुन तक जल्दीसे पहुंचेगी। तार देरसे पहुंचते हैं। मुझसे यह बरदाश्त नहीं होगा कि १५००० सिक्ख काटे जांय, या अुनके अीमान-अिज्जत पर हमला हो। तो मैं अेक अिन्सान जो कर सकता है वह करूंगा। दूसरे, पंडितजी तो सबका ध्यान रखते ही हैं। सिंध और पाकिस्तानकी हुकूमतको मैं कहूंगा कि वे सिक्खोंको अितमीनान दिलावें कि जब तक वे वहां हैं, अुनको किसी तरहका खतरा नहीं। अगर वे यह नहीं कर सकते, तो सबको अेक जगह रखें या हिफाजतके साथ भेज दें। सिक्ख बहादुर हैं। अुनके अीमान पर हमला कौन करनेवाला है? तो सिक्ख भाअी अितमीनान रखें। मैंने कुछ पारसी भाअी वहां देखनेको भेजे हैं।

गलत मुकाबला

अेक भाअी लिखते हैं कि जब आप १९४२ में जेलमें थे, तब हमने हिंसाका भी काम कर लिया था। अुपवासमें अगर कहीं आपका अन्त हो गया, तो देशमें अैसी हिंसा फूटेगी कि आपका अीश्वर भी रो अुठेगा। अिसलिअे आपका अुपवास हिंसक होगा। आप अुपवास छोड़ दीजिये। यह बात प्रेमसे लिखी है और अज्ञानसे भी। यह सही है कि मेरे जेल जानेके बाद हिंसा हुअी। अुसीका यह नतीजा है। अुस वक्त सारा हिन्द अहिंसक रहता, तो अुसका आजका हाल कभी न होता। मेरे मरनेसे सब आपस-आपसमें लड़ेंगे, अिस बारेमें भी मैंने सोच लिया है। अीश्वरको बचाना होगा तो बचायेगा। अहिंसासे भरा आदमी मरता है, तो अुसका नतीजा अच्छा ही होगा। पर कृष्ण भगवानके मरनेके बाद यादव ज्यादा भले या पवित्र नहीं हुअे। सब कट-कटकर मर गये। तो मैं अुस पर रोनेवाला नहीं। भगवानने अिरादा कर लिया है कि अिन्हें मरने दो तो अैसा

होगा। लेकिन मैं दीन, मिसकीन आदमी हूं। मेरे मरनेसे क्या लड़ना-मारना? पर भगवान मिसकीनको भी निमित्त बनाकर न मालूम क्या क्या कर सकता है? कहते हैं अब यहांके हिन्दू-मुसलमान नहीं लड़ेंगे। मुसलमान औरतें भी दिल्लीमें घरसे बाहर आने लगी हैं। मुझे खुशी है। मैं सबसे कहता हूं कि अपने अपने दिलको भगवानका मन्दिर बना लो।

१३२

२२-१-'४८

आप देखते हैं कि आहिस्ता आहिस्ता अीश्वरकी तरफसे मुझमें ताकत आ रही है। अुम्मीद है कि जल्दी पहले जैसा हो जाअूंगा। पर यह अीश्वरके हाथोंमें है।

पंडित नेहरूका अुदाहरण

अेक भाअी लिखते हैं कि जवाहरलालजी, दूसरे वजीर और फौजी अफसर वगैरा सब अपने-अपने घरोंमें से कुछ जगह शरणार्थियोंके लिअे निकालें, तो भी अुनमें कितने लोग बस सकेंगे? कहनेवाले ज्यादा हैं, करनेवाले कम।

ठीक है। कुछ हजार ही अुनमें रह सकेंगे। काम अितना बड़ा नहीं, पर करनेवाले अेक मिसाल कायम करेंगे। अिंग्लैण्डके राजा कुछ भी त्याग करें, अेक प्याली शराब भी छोड़ें, तो भी अुनकी कद्र होती है। सब सभ्य देशोंमें अैसा होता है। सब दुःखी लोगों पर अच्छा असर होता है। अगर दूसरे लोग भी अुनकी तरह करेंगे, तो अुनके लिअे मकान वगैरा बनानेवालोंको तसल्ली मिलेगी। अगर नतीजा यह होगा कि दूसरी जगहसे भी लोग दिल्ली आने लगें तो काम बिगड़ेगा। लोगोंने समझा कि दिल्लीमें हमारी पूछताछ ज्यादा होगी।

गरीबी लज्जाकी बात नहीं है

दूसरी कठिनाअी यह है — लोग कहते हैं कि पहले कांग्रेसको अेक लाख रुपये जमा करनेमें भी मुसीबत होती थी। लोग देते तो थे, पर हम भिखारी थे। आज करोड़ों रुपये हमारे हाथमें आ गये हैं।

करोड़ों लेनेकी ताकत भले आओी, पर खर्च तो वही अंग्रेजी जमानेवाला है। जितना रुपया अुड़ाना है अुड़ावें। शानसे रहें तब अुसका असर देशसे बाहर भी पड़ेगा। अुन्हें समझना चाहिये कि पैसा शौकके लिअे खर्चना चाहिये या देशके कामके लिअे? यदि यह बात ठीक है कि हम अिंग्लैण्डके साथ मुकाबला करें तो कर सकते हैं, पर वहां अेक आदमीकी जो आमदनी है अुससे यहां बहुत कम है। अैसा गरीब मुल्क दूसरे मुल्कोंके साथ पैसेका मुकाबला करे तो वह मर जावेगा। दूसरे देशोंमें हमारे प्रतिनिधि भी यह बात समझें। अमेरिकाका मुकाबला रहने दो। खानेमें, पीनेमें और पार्टियां देनेमें वे जो दावा करते थे कि हमारी हुकूमत आवेगी, तो हमारा भी रंग-ढंग बदल जायगा, वह अुन्हें झुठला देना चाहिये। हमारे त्यागी कांग्रेसवाले भी अैसी गलती करें तो यह सोचनेकी बात है।

फिर लोग कहते हैं कि ये लोग अितने पैसे लेते हैं, तब हम हुकूमतकी नौकरी करें तो हमें भी ज्यादा पैसे मिलने चाहिये। सरदार पटेलको अगर १५०० रुपये मिलें, तो हमें ५०० तो मिलने ही चाहिये। यह हिन्दुस्तानमें रहनेका तरीका नहीं है। जब हरअेक आत्मशुद्धिका प्रयत्न करता हो, तब यह सब सोचना कैसा? पैसेसे किसीकी कीमत नहीं होती।

फिर ग्वालियर

ग्वालियर रियासतके अेक गांवमें मुसलमानों पर जो गुजरा है, अुसे बतानेवाले तारकी बात मैंने की थी। अुस बारेमें मुझे वहांके अेक कार्यकर्ताने सुनाया कि आपको मैं अेक खुशखबरी देने आया हूं। ग्वालियरके महाराजाने सब सत्ता प्रजाको दे दी है। थोड़ी जो रखी है अुसमें भी हमारा बहुमत होगा। अुन्होंने मुझसे कहा कि लोगोंको जो सत्ता मिलनी चाहिये वह मिली, यह सुनकर आप खुश होंगे। हां, मगर प्रजा-मंडलवालोंमें भेदभाव आ जाय और वे मुसलमानोंको निकालें तो मुझे क्या खुशी? अगर आप कहें कि भेदभाव नहीं होगा; क्या हिन्दू, क्या मुसलमान, क्या पारसी, क्या अीसाअी, किसीके साथ बैर नहीं करेंगे, तब तो वह मेरा ही काम हुआ। अुसमें मेरा धन्यवाद और आशीर्वाद मिलेगा ही। महाराजाको लोगोंका सेवक बनना है। अिस आत्मशुद्धिके यज्ञमें राजा-प्रजा

सबको अच्छी तरह भाग लेना है। तब तो हम सारी दुनियाके सामने खड़े रह सकते हैं। अगर हमें दुनियाकी चालको ठीक रखना है और अुसके रक्षक बनना है, तो अिसके सिवा दूसरा कोअी रास्ता नहीं है।

१३३

२३–१–'४८

नेताजीका जन्मदिन

आज मेरे पास काफी चीजें पड़ी हैं। जितना हो सकेगा अुतना कहूंगा।

आज सुभाषबाबूकी जन्मतिथि है। मैंने कह दिया है कि मैं तो किसीकी जन्मतिथि या मृत्युतिथि याद नहीं रखता। वह आदत मेरी नहीं है। सुभाषबाबूकी तिथिकी मुझे याद दिलाअी गअी। अुससे मैं राजी हुआ। अुसका भी अेक खास कारण है। वे हिंसाके पुजारी थे। मैं अहिंसाका पुजारी हूं। पर अिसमें क्या? मेरे पास गुणकी ही कीमत है। तुलसीदासजीने कहा है:

"जड़-चेतन, गुण-दोषमय,
विश्व कीन्ह करतार।
संत-हंस गुण गहहिं पय,
परिहरि वारि-विकार॥"

हंस जैसे पानीको छोड़कर दूध ले लेता है, वैसे ही हमें भी करना चाहिये। मनुष्यमात्रमें गुण और दोष दोनों भरे पड़े हैं। हमें गुणोंको ग्रहण करना चाहिये। दोषोंको भूल जाना चाहिये। सुभाषबाबू बड़े देशप्रेमी थे। अुन्होंने देशके लिअे अपनी जानकी बाजी लगा दी थी और वह करके भी बता दिया। वे सेनापति बने। अुनकी फौजमें हिन्दू, मुसलमान, पारसी, सिक्ख सब थे। सब बंगाली ही थे, अैसा भी नहीं था। अुनमें न प्रान्तीयता थी, न रंगभेद, न जातिभेद। वे सेनापति थे अिसलिअे अुन्हें ज्यादा सहूलियत लेनी या देनी चाहिये, अैसा भी नहीं था।

अेक बार अेक सज्जन जो बड़े वकील थे, अुन्होंने मुझसे पूछा कि हिन्दू धर्मकी व्याख्या क्या है? मैंने कहा, मैं हिन्दू धर्मकी व्याख्या

नहीं जानता। मैं आप जैसा वकील कहां हूं? मेरे हिन्दू धर्मकी व्याख्या मैं दे सकता हूं। वह यह है कि जो सब धर्मोंको समान माने वही हिन्दू धर्म है। सुभाषबाबूने सबका मन हरण करके अपना काम किया। अिस चीजको हम याद रखें।

सावधानीकी जरूरत

दूसरी चीज —— ग्वालियरसे खबर आअी है कि रतलामसे जो आपको अेक गांवके झगड़ेके बारेमें खबर मिली थी वह सर्वथा ठीक नहीं है। वहां कुछ दंगा हुआ तो सही; लेकिन आपस-आपसमें। अुसमें हिन्दू-मुसलमानकी कोअी बात न थी। मुझे अिससे बड़ी खुशी होती है। अुस परसे मैं मुसलमान भाअियोंको जाग्रत करना चाहता हूं। मैं तो जो चीज मेरे सामने आती है, अुसे जनताके सामने रख देता हूं। अगर अैसी बनी-बनाअी बात कहते रहेंगे, तो सबके दिलमें गलतफहमी हो जायेगी। कोअी भी चीज बढ़ाकर न बतावें। अपनी गलती बढ़ाकर बता दें। दूसरोंकी कम करके। तब यह माना जायगा कि हम आत्मशुद्धिके नियमका पालन करते हैं।

मैसूर, जूनागढ़ और मेरठ

मैसूरसे तार आया है कि आपने जो व्रत लिया, अुसका मैसूरकी जनता पर असर नहीं पड़ा। वहां झगड़ा हो गया है। मैं मैसूरके हिन्दू-मुसलमानोंको जानता हूं। जिनके हाथमें हुकूमत है अुनको भी जानता हूं। मैंने मैसूर सरकारको लिखा है कि वह जो कुछ हुआ है अुसे साफ-साफ दुनियाको बता दे।

जूनागढ़से मुसलमान भाअियोंका तार आया है। वे लिखते हैं कि जबसे कमिश्नर और सरदारने हुकूमत ले ली है, तबसे यहां हमें न्याय ही मिल रहा है। अब कोअी भी हममें फूट नहीं डाल सकेगा। यह मुझे बड़ा अच्छा लगता है।

मेरठसे अेक तार आया है। अुसमें लिखा है कि आपके अुपवासका नतीजा ठीक आ रहा है। यहां पर जो नेशनलिस्ट मुसलमान हैं, अुनसे हमें कोअी नफरत नहीं है। पर लीगी मुसलमान सीधे हो गये हैं या

हो जायेंगे अैसा मानेंगे, तो आपको पछताना पड़ेगा। आपकी अहिंसा अच्छी है, मगर राजनीतिमें नहीं चल सकती। फिर भी हम आपको कहना चाहते हैं कि आजकी जो हुकूमत है वह अच्छी है। अिसमें किसी तरहकी तबदीली नहीं होनी चाहिये।

मैं तो नहीं समझता कि तबदीलीका सवाल अुठता कहां है। मगर तबदीलीकी गुंजाअिश हो, तो जिनके हाथमें हुकूमत है अुन्हें निकालना आपके हाथोंमें है। मैं तो अितना जानता हूं कि अुनके बिना आज आप काम नहीं चला सकेंगे।

गद्दारोंसे कैसे निपटा जाय?

आज यह कहना कि राजनीतिमें अहिंसा चल नहीं सकती, निकम्मी बात है। आज जो काम हम कर रहे हैं वह हिंसाका है। मगर वह चल नहीं सकता। मेरठके मुसलमानोंने आजादीकी लड़ाअीमें काफी हिस्सा लिया है। आजकलकी राजनीति अविश्वाससे चल ही नहीं सकती। अिसलिअे हमें मुसलमानों पर विश्वास रखना ही होगा। यदि हमने तय कर लिया है कि भाअी भाअी बनकर रहना है, तो फिर हम किसी मुसलमान पर खामखाह अविश्वास न करेंगे; फिर भले वह लीगी हो। मुसलमान कहें कि हिन्दू-सिक्ख बदमाश हैं, तो यह निकम्मी बात है। अैसे ही हरअेक लीगीके लिअे यह मान लेना भी बुरा है। अगर कोअी लीगी या दूसरा कोअी भी बुरी बात करता है, तो आप अुसकी खबर सरकारको दें। हमारा परम धर्म मैंने सबको बता दिया है कि हम न्याय हुकूमतके हाथोंमें रहने दें; अपने हाथमें न ले लें। वह वहशियाना काम होगा। मेरे पास बहुतसे तार आ रहे हैं। सबका जवाब नहीं दे सकता, अिसलिअे सभाके मारफत मैं आप सबका अहसान मानता हूं। आपकी दुआ सफल हो।

१३४

२४-१-'४८

मैंने आपसे प्रार्थना तो की है कि प्रार्थनाके समय सबको शान्त रहना चाहिये। लेकिन बच्चे चीखते थे और बहनें आपसमें बातें करती थीं। अभी भी अैसा ही है। जो बच्चोंको नहीं संभाल सकते, अुन्हें बच्चोंको दूर ले जाना चाहिये।

कैदियों और भगाअी हुअी औरतोंकी अदला-बदली

अेक तार है। अुस पर मुझे कल ही कहना था। वह लम्बा है। अुसमें लिखा है कि दोनों हुकूमतोंके बीच यह समझौता हो गया है कि पश्चिम पंजाबमें जो हिन्दू या सिक्ख कैदी हैं और पूर्व पंजाबमें जो मुसलमान कैदी हैं अुनकी अदला-बदली कर देंगे। अुसी तरह भगाअी हुअी औरतों और लड़कियोंकी भी अदला-बदली कर देंगे। मगर वह थोड़े समय चलनेके बाद अब बन्द हो गया है। अुसकी वजह यह बताअी जाती है कि पश्चिम पंजाबकी सरकार कहती है कि पूर्व पंजाबमें जितने देशीराज्य हैं, अुनके सारे कैदियोंको भी साथ साथ वापस करना ही चाहिये। पूर्व पंजाबकी सरकारका कहना है कि तबादलेके समझौतेके समय देशीराज्योंके कैदियोंका सवाल अुसके सामने रखा ही नहीं गया था। अब पश्चिम पंजाबकी सरकारकी तरफसे अेक नअी शर्त डाली जाती है। अगर यह बात सही है तो ठीक नहीं है। मगर मैं तो कहूंगा कि पश्चिम पंजाबके राज्योंमें भले थोड़े ही हिन्दू कैदी हों, अुससे हमें क्या? मेरी निगाहमें तो यह नहीं हो सकता कि पश्चिम पंजाबसे अगर १० लड़कियां आती हैं, तो पूर्व पंजाबसे भी १० ही जानी चाहिये, ११ वीं नहीं। जितनी लड़कियां पूर्व पंजाबमें पड़ी हैं, औरतें हैं, पुरुष हैं, या दूसरे कैदी हैं, अुन सबको वापस कर देना चाहिये। और यह सब बिना शर्त होना चाहिये। लेकिन हमसे यह नहीं होता है, क्योंकि हममें बैर भरा है। पश्चिम पंजाबवालोंको भी मेरा यही कहना है कि माना कि कहीं कम और कहीं ज्यादा लड़कियां और औरतें भगाअी गअीं,

या कम-ज्यादा लोग कैद करके रखे गये। लेकिन अिरादेकी कमी तो कहीं नहीं थी। हमें चाहिये कि गिनती किये बिना हम सबको छोड़ दें। कोअी अेक लड़कीको ले गये वह भी गलती है, और सौको ले गये वह भी गलती है। आज तो हम सब बिगड़े हैं। बुराअीका मुकाबला क्या करना? भगाअी हुअी औरतों या कैदियोंके तबादलेका जो काम चलता है, अुसमें रुकावट नहीं आनी चाहिये। दोनों मित्रतासे काम करें, तो हमारा रास्ता साफ हो जाता है। दोनोंको मैं कहना चाहता हूं कि जो कुछ हो गया अुसे भूलकर चलना है। हमें अपने धर्मका पालन करना ही चाहिये। अगर हम समझ गये हैं कि अब हमें झगड़ा करना ही नहीं है, और हमने आत्मशुद्धि कर ली है, तो हमारे बीच अैसे सवाल अुठने ही नहीं चाहिये।

मेरे पास शिकायत आ रही है कि पश्चिम पंजाबमें जो औरतोंको अुड़ा ले गये हैं, वे अुनको जितनी संख्यामें चाहिये अुतनी संख्यामें लौटा नहीं रहे हैं। मैं तो यह बात पूरी पूरी जानता नहीं हूं। लेकिन अगर यह सही है तो शरमकी बात है। अैसा ही पूर्व पंजाबके लिअे भी है। अगर हम कहते अेक बात हैं और करते दूसरी बात हैं तो यह ठीक नहीं। अिसमें दुरुस्ती होनी चाहिये। नहीं होती तो अितिहास गवाही देगा कि जो फाका मैंने किया, अुसकी शर्तके शब्दोंका पालन तो दिल्ली-वालोंने किया, लेकिन अुसके रहस्यका नहीं।

अभी भी बहनें बहुत बातें कर रही हैं। अैसे तो मेरा काम आगे नहीं चल सकता। हमेशा प्रार्थनामें आना और अिस तरह आवाज करना ठीक नहीं। मैं कहां तक शांति रखनेके लिअे कहता रहूं? अगर आप शान्त रहें तो मैं काफी कह सकता हूं। मगर आज वह नहीं होगा।

१३५

२५-१-'४८

दिल्लीमें पूर्ण शान्ति

अब हममें दिलका समझौता हो गया है, अैसा लोग कहते हैं। मैं मुसलमानोंसे पूछता हूं और हिन्दुओंसे भी। सब यही कहते हैं कि हम अब समझ गये हैं कि अगर आपस-आपसमें लड़ते रहेंगे तो काम हो नहीं सकेगा। अिसलिअे आप अब बेफिक्र रहें। मैं यह पूछना तो नहीं चाहता कि अिस सभामें कितने मुसलमान हैं। मगर मैं सबको भाअी-भाअी बननेको कहूंगा। आप किसी भी मुसलमानको अपना दोस्त बना लें, या यह मानिये कि जो मुसलमान आपके सामने आता है वह आपका दोस्त है और अुससे कहें कि चलो प्रार्थना-सभामें आरामसे बैठो। यहां किसीसे नफरत तो है ही नहीं। दो दिनसे तो यहां काफी आदमी आ रहे हैं। अगर सब अपने साथ अेक-अेक मुसलमानको लाते हैं, तो बहुत बड़ा काम हो जाता है। अिससे हम यही बता सकते हैं कि हम भाअी-भाअी हैं।

महरोलीका अुर्स

महरोलीमें जो दरगाह है वहां कलसे अुर्स शुरू होगा। वैसे तो हर वर्ष होता है, लेकिन अिस वर्ष तो हमने दरगाहको ढहा दिया या बिगाड़ दिया था। जो पत्थरकी पच्चीकारीका काम था, वह भी तोड़ दिया गया था। अब कुछ ठीक कर लिया गया है। अिसलिअे अुर्स जैसा पहले मनता था वैसा ही अब मनेगा। वहां कितने मुसलमान आते हैं, अिसका मुझे कोअी पता नहीं है। लेकिन अितना तो मुझे मालूम है कि वहां दरगाहमें मुसलमान भी काफी जाते थे और हिन्दू भी। मेरी तो अुम्मीद है कि आप सब हिन्दू अिस बार भी शान्तिसे और पक्की भावनासे वहां जायें तो बड़ा अच्छा हो। मुझको पता तो लग जायगा कि कितने हिन्दू गये और कितने नहीं। लेकिन वे वहां जानेवाले मुसलमानोंका मजाक न करें और किसी तरहकी निन्दा न करें।

पुलिसके लोग वहां होंगे तो सही, लेकिन कमसे कम होने चाहिये। आप सब पुलिस बन जायं और सब काम अैसी खूबीसे हो कि वह चीज सारी दुनियामें चली जाय। अितना तो हो गया कि आप बड़े मशहूर हो गये हैं। अखबारोंमें भी आता है और मेरे पास तो तार और खत दुनियाके हर हिस्सेसे आते हैं। चीनसे तथा अेशियाके सब हिस्सोंसे आ रहे हैं और अमेरिका व यूरोपसे भी। दुनियाका कोअी भी देश बाकी नहीं बचा है, और सब यही कहते हैं कि 'यह तो बहुत बुलन्द काम हो गया है। हम तो अैसा मानते थे कि अंग्रेज तो वहांसे आ गये। अब हिन्दुस्तानी तो जाहिल आदमी हैं और जानते ही नहीं हैं कि अपना राज कैसे चलाना चाहिये। वे तो आपस-आपसमें लड़ते हैं।' १५ अगस्तको हमने आजादी तो ले ली। हम तारीफ भी कर रहे थे कि हम आजादीकी लड़ाअीमें तलवारके जोरसे नहीं लड़े। हमने शान्तिसे लड़ाअी की या ठण्डी ताकतकी लड़ाअी की, और अुसका नतीजा यह हुआ कि हमारी गोदमें आकर आजादी देवी रमण करने लगी। १५ अगस्तको यह घटना हो गअी। लेकिन बादमें हम अुस अूंचाअीसे नीचे गिरे और हिन्दुओं, मुसलमानों और सिक्खोंने अेक-दूसरेके साथ वहशियाना बरताव किया। लेकिन मुझे आशा है कि वह पागलपन कुछ दिनका था। आपके दिल मजबूत हैं। मालूम होता है मेरे अुपवासने लोगोंके अुस पागलपनको दूर करनेका काम किया है। मुझे आशा है कि यह हमेशाका अिलाज साबित होगा।

'अब मुझे छोड़ दें'

मैं २ फरवरीको वर्धा चला जाअूंगा। राजेन्द्रबाबू भी मेरे साथ जायेंगे। लेकिन मैं वहांसे जल्दी ही लौटनेकी कोशिश करूंगा। अखबारोंमें छपा यह समाचार गलत है कि मैं वहां अेक महीने तक ठहरूंगा। लेकिन मैं वर्धा तभी जा सकता हूं, जब आप लोग आशीर्वाद देंगे और यह कहेंगे कि अब आप आरामसे जा सकते हैं। हम यहां आपसमें लड़नेवाले नहीं हैं।

बादमें मैं पाकिस्तान भी जाअूंगा। लेकिन अुसके लिअे पाकिस्तान सरकारको मुझे कहना है कि तू आ सकता है और अपना

काम कर सकता है। अगर पाकिस्तानकी अेक भी सूबेकी हुकूमत मुझे बुलायेगी, तो भी मैं वहां चला जाअूंगा।

भाषावार प्रान्त

जब जब कांग्रेस कार्य-समितिकी बैठक मेरी हाजरीमें होती है, तब तब मैं आपको अुसके बारेमें कुछ न कुछ बता देता हूं। आज कार्य-समितिकी दूसरी बैठक हुअी और अुसमें काफी बातें हुअीं। सब बातोंमें तो आपकी दिलचस्पी भी नहीं होगी, लेकिन अेक बात आपको बताने लायक है। कांग्रेसने २० सालसे यह तय कर लिया था कि देशमें जितनी बड़ी-बड़ी भाषाअें हैं अुतने प्रान्त होने चाहिये। कांग्रेसने यह भी कहा था कि हुकूमत हमारे हाथमें आते ही अैसे प्रान्त बनाये जायेंगे। वैसे तो आज भी ९ या १० प्रान्त बने हुअे हैं और वे अेक मरकजके मातहत हैं। अिसी तरहसे अगर नये प्रान्त बनें और दिल्लीके मातहत रहें, तब तो कोअी हर्जकी बात नहीं। लेकिन वे सब अलग-अलग होकर आजाद हो जायं और अेक मरकजके मातहत न रहें, तो फिर वह अेक निकम्मी बात हो जाती है। अलग-अलग प्रान्त बननेके बाद वे यह न समझ लें कि बम्बअीका महाराष्ट्रसे कोअी सम्बन्ध नहीं, महाराष्ट्रका कर्नाटकसे नहीं और कर्नाटकका आन्ध्रसे कोअी सम्बन्ध नहीं। तब तो हमारा काम बिगड़ जाता है। अिसलिअे सब आपसमें भाअी-भाअी समझें। अिसके अलावा, भाषावार प्रान्त बन जाते हैं, तो प्रान्तीय भाषाओंकी भी तरक्की होती है। वहांके लोगोंको हिन्दुस्तानीमें तालीम देना वाहियात बात है और अंग्रेजीमें देना तो और भी वाहियात है।

सीमा-कमीशनकी जरूरत नहीं

अब सीमाबन्दी-कमीशनोंकी बात तो हमें भूल जानी चाहिये। लोग आपसमें मिल-जुलकर नकशे बना लें और अुन्हें पंडित जवाहरलालजीके सामने रख दें। वे हुकूमतकी तरफसे अुन पर दस्तखत दे देंगे। वास्तवमें अिसीका नाम तो आजादी है। अगर आप केन्द्रीय सरकारको सीमाअें तय करनेके लिअे कहें, तब तो काम बहुत कठिन हो जायगा।

१३६

२६–१–'४८

आजादी-दिन

आज २६ जनवरी, स्वतंत्रताका दिन है। जब तक हमारी आजादीकी लड़ाअी जारी थी और आजादी हमारे हाथमें नहीं आअी थी, तब तक अिसका अुत्सव मनाना जरूरी मानी रखता था। किन्तु अब आजादी हमारे हाथमें आ गअी है और हमने अिसका स्वाद चखा है, तो हमें लगता है कि आजादीका हमारा स्वप्न अेक भ्रम ही था, जो कि अब गलत साबित हुआ है। कमसे कम मुझे तो अैसा लगा है।

आज हम किस चीजका अुत्सव मनाने बैठे हैं? हमारा भ्रम गलत साबित हुआ अिसका नहीं। मगर हमारी अिस आशाका अुत्सव मनानेका हमें जरूर हक है कि कालीसे काली घटा अब टल गअी है और हम अुस रास्ते पर हैं, जिस पर आते-जाते हुअे तुच्छसे तुच्छ ग्रामवासीकी गुलामीका अन्त आयेगा और वह हिन्दुस्तानके शहरोंका दास बनकर नहीं रहेगा, बल्कि देहातोंके विचारमय अुद्योगोंके मालकी विज्ञप्ति और बिक्रीके लिअे शहरके लोगोंका अुपयोग करेगा। वह यह सिद्ध करेगा कि वह सचमुच हिन्दुस्तानकी भूमिका जायका है।

अिस रास्ते पर आगे जाते हुअे अन्तमें सब वर्ग और सम्प्रदाय अेक समान होंग। यह हरगिज न होगा कि बहुसंख्या अल्पसंख्या पर — चाहे वह कितनी ही कम या तुच्छ क्यों न हो — अपना प्रभुत्व जमाये या अुसके प्रति अूंच-नीचका भाव रखे। हमें चाहिये कि अिस आशाके फलीभूत होनेमें हम ज्यादा देरी न होने दें, जिससे लोगोंके दिल खट्टे हो जायं।

दिन-प्रतिदिनकी हड़तालें और तरह-तरहकी बदअमनी, जो देशमें चल रही है, वह क्या अिसी चीजकी निशानी नहीं कि आशाअें पूरी होनेमें बहुत देर लग रही है? वे हमारी कमजोरी और रोगकी सूचक हैं। मजदूर वर्गको अपनी शक्ति और गौरवको पहचानना चाहिये। अुनके मुकाबलेमें वह शक्ति या गौरव पूंजीपतियोंमें कहां है, जो कि हमारे आम वर्गमें भरा है? सुव्यवस्थित समाजमें हड़तालोंका बदअमनीके लिअे अवसर

या अवकाश ही नहीं होना चाहिये। अैसे समाजमें न्याय हासिल करनेके लिअे काफी कानूनी रास्ते होंगे। खुली या छिपी जोरावरीके लिअे स्थान ही न होगा। कारखानों या कोयलेकी खानोंमें या और कहीं भी हड़-तालें होनेसे सारे समाज और खुद हड़तालियोंको आर्थिक नुकसान अुठाना पड़ता है। मुझे यह याद दिलाना निकम्मा होगा कि यह लम्बा लेक्चर मेरे मुंहमें शोभा नहीं देता, जब कि मैंने खुद अितनी सफल हड़तालें करवाअी हैं। अगर कोअी अैसे टीकाकार हैं, तो अुन्हें याद रखना चाहिये कि अुस वक्त न तो आजादी थी और न ही अिस किस्मके कानूनी जाब्ते थे जो कि आजकल हैं। कअी बार तो मुझे ताज्जुब होता है कि क्या हम सचमुच ताकतकी सियासी शतरंज और सत्ता पर चुंगल मारनेकी वबा (बीमारी) से, जो पूर्व और पश्चिमके सब देशोंमें फैल रही है, बच सकते हैं! अिससे पहले कि मैं अिस विषयको यहां छोड़ूं, मैं यह आशा प्रकट किये बिना नहीं रह सकता कि यद्यपि भौगोलिक और राजनीतिक दृष्टिसे हिन्दुस्तान दो भागोंमें बंट गया, लेकिन हमारे दिल जुदा नहीं हुअे और हम हमेशाके दोस्त बनकर भाअियोंकी तरह अेक-दूसरेकी मदद करते रहेंगे और अेक-दूसरेको अिज्जतकी निगाहसे देखेंगे। जहां तक दुनियाका ताल्लुक है, हम अेक ही रहेंगे।

कण्ट्रोलका हटना और यातायात

कपड़े परसे अंकुश अुठानेके फैसलेका सब तरफसे स्वागत किया गया है। देशमें कपड़ेकी कमी कभी थी ही नहीं। और हो भी कैसे सकती है, जब कि देशमें अितनी रुअी, अितने कातनेवाले और बुनने वाले मौजूद हैं? कोयले और जलानेकी लकड़ी परसे अंकुश अुठने पर भी अितना ही सन्तोष प्रकट किया गया है। यह बड़ी देखनेकी चीज है कि अब बाजारमें गुड़ जरूरतसे ज्यादा आकर जमा हो रहा है, और गुड़ ही गरीब आदमीकी खुराकमें गर्मी देनेवाली चीजके अंशको पूरा कर सकता है। गुड़के अिन जमा हुअे ढेरोंको घटाने या जहां गुड़ बनता है वहांसे दूसरी जगह गुड़ पहुंचानेकी कोअी सूरत नहीं, अगर तेजीसे सामान ढोनेका बन्दोबस्त न हो। अिस विषयको खूब समझनेवाले अेक मित्र अपने पत्रमें जो लिखते हैं वह ध्यान देने लायक है:

“यह कहनेकी जरूरत नहीं कि अंकुश अुठानेकी नीतिकी सफलताका ज्यादा आधार अिस चीज पर ही है कि रेलगाड़ी या सड़कसे सामानके नकलो-हरकतका ठीक-ठीक बन्दोबस्त किया जाय। अगर रेलसे माल अिधर-अुधर ले जानेके तंत्रमें सुधार न हुआ, तो देशभरमें कहत (अकाल) फैलने और अंकुश अुठानेकी सब योजनाके अस्त-व्यस्त हो जानेका डर है। आज जिस तरहसे माल ले जानेका हमारा तंत्र चल रहा है, अुससे दोनों अंकुश चलाने और अंकुश अुठानेकी नीति सख्त खतरेमें हैं। हिन्दुस्तानके जुदा जुदा हिस्सोंके भावोंमें अितना भयंकर फर्क होनेकी वजह भी माल अुठानेके साधनोंकी यह कमी ही है। अगर गुड़ रोहतकमें आठ रुपये मन और बम्बअीमें पचास रुपये मनके हिसाबसे बिकता है, तो यह साफ बताता है कि रेलवे-तंत्रमें कहीं सख्त गड़बड़ है। महीनों तक मालगाड़ियोंके डिब्बोंमें से सामान नहीं अुतारा जाता। डिब्बों और कोयलेकी कमीके बहाने और तरह तरहके मालको तरजीह देनेके बहाने मालगाड़ीके डिब्बों पर माल लादनेमें सख्त बेअीमानी और घूसका बाजार गर्म है। अेक डिब्बेको किराये पर हासिल करनेके लिअे सैकड़ों रुपये खर्च करने पड़ते हैं और कअी कअी दिनों तक स्टेशनों पर झक मारनी पड़ती है। डिब्बोंकी मांग पूरी करने और डिब्बोंको चलते रखनेमें ट्रान्सपोर्टके मन्त्रीकी भी अभी तक कुछ चली नहीं। अगर अंकुश अुठानेकी नीतिको सफल बनाना है, तो ट्रान्सपोर्टके मंत्रीको रेल और सड़ककी सारीकी सारी ट्रान्सपोर्ट-व्यवस्थाकी फिरसे जांच-पड़ताल करनी होगी। तभी यह नीति जिन गरीब लोगोंको राहत देनेके लिअे चलाअी जा रही है अुनको फायदा पहुंचा सकेगी। आज अिस ट्रान्सपोर्टके कसूरसे लाखों और करोड़ों देहातियोंको सख्त तकलीफ अुठानी पड़ती है और अुनका माल मंडी तक पहुंचने ही नहीं पाता।

“जैसा मैं पहले लिख चुका हूं, पेट्रोलका राशनिंग बन्द करना ही चाहिये और सड़कसे सामान ढोनेके साधनोंका अिजारा और परमिटका तरीका बिलकुल बन्द होना चाहिये। अिजारेमें

थोड़ी ट्रान्सपोर्ट कम्पनियोंका ही लाभ होता है और करोड़ों गरीबोंका जीवन दूभर हो रहा है। अंकुश अुठानेकी नीतिकी ९५ फी सदी सफलता अुपरोक्त शर्तों पर ही निर्भर है। जो सूचनाअें अूपर दी गअी हैं अुन पर अमल हुआ, तो परिणाम-स्वरूप देहातोंसे लाखों टन खाद्य-पदार्थ और दूसरा माल देशभरमें आने लगेगा।"

घूसखोरीका राक्षस

यह बेअीमानी और घूसखोरीका विषय कोअी नया नहीं है, केवल अब वह पहलेसे बहुत ज्यादा बढ़ गया है। बाहरका अंकुश तो कुछ रहा ही नहीं है। अिसलिअे यह घूसखोरी तब तक बन्द न होगी, जब तक जो लोग अिसमें पड़े हैं वे समझ न लें कि वे देशके लिअे हैं, न कि देश अुनके लिअे। अिसके लिअे जरूरत होगी अेक अूंचे दरजेके नैतिक शासनकी। अुन लोगोंकी तरफसे, जो खुद घूसखोरीके अिस मर्जसे बचे हुअे हैं और जिनका घूसखोर अमलदारों पर प्रभाव है, अैसे मामलोंमें अुदासीनता दिखाना गुनाह है। अगर हमारी संध्याकालीन प्रार्थनामें कुछ भी सचाअी है, तो घूसखोरीके अिस राक्षसको खतम करनेमें अुससे काफी मदद मिलनी चाहिये।

१३७

२७-१-'४८

मुसलमान और प्रार्थना-सभा

प्रार्थना-सभामें गांधीजीने आज पूछा कि कितने मुसलमान हाजिर हैं? अेक ही हाथ अूपर अुठा। गांधीजीने कहा, अिससे मुझे सन्तोष नहीं होता। प्रार्थनामें आनेवाले सब हिन्दू और सिक्ख भाअी-बहन अपने साथ अेक अेक मुसलमानको लावें।

महरोलीका अुर्स

अुसके बाद महरोलीकी दरगाह शरीफमें अुर्सके मेलेका जिक्र करते हुअे, जिसमें आज सुबह वे खुद गये थे, गांधीजीने कहा, किसीको

वहां आने-जानेमें झिझक नहीं थी। मैंने जान-बूझकर मुसलमान भाअियोंसे पूछा कि हमेशा जितने आते थे अुतने तो नहीं आ सके होंगे। तो अुन्होंने कहा, कुछ डर तो रहा ही होगा। हममें अैसे लोग भी हैं न, जो डर-सा बता देते हैं। वे कहते हैं, अलाहाबादमें कुछ हो गया है, वही यहां हुआ तो हिन्दू क्या करेंगे? अिन्सान अिन्सानसे डरे, यह कितनी शरमकी बात है! लेकिन कमसे कम मैंने अितना तो पाया कि जितनी तादाद वहां मुसलमानोंकी थी, अुतनी ही हिन्दुओंकी भी थी अौर अुनमें सिक्ख भी काफी थे। पीछे अेक दुःखद बात भी मैंने देखी। वह दरगाह तो बादशाही जमानेकी है। आजकी थोड़े ही है। बहुत पुराने जमानेकी है। अजमेरकी दरगाह शरीफसे दूसरे नम्बर पर आती है। मुख्य चीज वहांका नक्काशीका काम ही था। वह बहुत खूबसूरत था। वह सब तो नहीं लेकिन काफी ढहा दिया गया है। नक्काशीकी जालियां काफी तोड़ डाली गअी हैं। मुझे यह देखकर बहुत दुःख हुआ। मैं तो अुसे वहशियाना चीज ही कह सकता हूं। मैंने अपने दिलसे पूछा, क्या हम यहां तक गिर गये हैं कि अेक जगह पर किसी औलियाकी कब्र बनाअी गअी है — और कब्र भी बहुत आलीशान, हजारों रुपये अुस पर खर्च हुअे हैं — अुसको हम अिस तरह नुकसान पहुंचावें? माना कि अिससे भी बदतर पाकिस्तानमें हुआ है। यहां अेक गुना हुआ और वहां दस गुना। अिसका हिसाब मैं नहीं कर रहा। मेरे नजदीक तो चाहे थोड़ा गुनाह करो, चाहे ज्यादा; अुसकी तुलना मैं नहीं करता। वहां जो हुआ वह शरमनाक है। लेकिन सारी दुनिया अगर शरमनाक बात करती है, तो क्या हम भी करें? अैसा नहीं करना चाहिये यह आप भी मानेंगे।

मुझको पता चला है कि दरगाहमें हिन्दू और मुसलमान दोनों काफी तादादमें आते हैं और मिन्नत भी लेते हैं। जो औलिया यहां और अजमेर शरीफमें हो गये हैं, वे अैसा बड़ा दर्जा रखते हैं। अुनके दिलमें हिन्दु-मुसलमानका कोअी भेदभाव नहीं था। यह तो अैतिहासिक बात थी और सच थी। मुझे झूठ बतानेमें किसीको कुछ फायदा नहीं। अैसे जो औलिया हो गये हैं, अुनका आदर होना ही चाहिये। पाकिस्तानमें क्या होता है अुसकी तरफ हम न देखें।

सरहदी सूबेमें और ज्यादा हत्यायें

आज ही मैंने अखबारोंमें देखा है कि पाकिस्तानमें अेक जगह १३० हिन्दू और सिक्ख कतल हो गये हैं और पीछे वहां लूट-पाट भी हुअी। किसने अुनको कतल किया? सरहदी सूबेके अूपर जो छोटी छोटी कौमें मुसलमानोंकी रही हैं, अुन्होंने बस अुन पर हमला किया और अुन्हें मार डाला। अुन लोगोंने कोअी गुनाह किया था, अैसा कोअी नहीं कहता। पाकिस्तानकी हुकूमतने जो बयान निकाला है, अुसमें यह भी कहा है कि कअी हमलावरोंको हुकूमतने मार डाला। जब वे कहते हैं तब अुनकी बात हमें मान लेनी चाहिये। वहां जो हुआ अुस पर हम गुस्सा करें और यहां भी मारना शुरू कर दें, तो वह वहशियाना बात होगी। आज तो आप भाअी भाअी होकर मिलते हैं, पर दिलमें अगर गन्दगी है, बैर या द्वेष है, तो जो प्रतिज्ञा आपने ली थी अुसे झुठला देते हैं। पीछे हम सबकी खाना-खराबी होनेवाली है। यहां सबने यह महसूस किया। किसीसे मैंने पूछा तो नहीं, पर अुनकी आंखों परसे मैं समझ गया। पाकिस्तानमें जो कुछ हुआ, अुसका हिसाब लेना हमारी हुकूमतका काम है। अुसका काम वह जाने। हमारा काम तो यही है कि अेक-दूसरेका दिल साफ करनेकी जो कसम हमने खाअी है, अुसे कायम रखें और अुस पर अमल करें।

अजमेरके हरिजन

अभी अजमेरमें राजकुमारीबहन चली गअी थीं। अुन्होंने वहांकी अेक खतरनाक और हमारे लिअे बड़ी शरमकी बात सुनाअी। वहां जो हरिजन रहते हैं अुनसे वहांवाले काम लेते हैं और वे करते हैं। मगर जिस जगह वे रहते हैं, वह बहुत गन्दी और मैली है। वहां तो हमारी ही हुकूमत है और अच्छी खासी हुकूमत है। वहांके हिन्दू और सिक्ख अमलदार अिसी हुकूमतके मातहत काम करते हैं। क्या अुन्हें खयाल नहीं आता कि अैसा शरमका काम हम कैसे करते हैं? वहां सफेद पोशाक पहननेवाले बहुतसे हिन्दू हैं। वे खासा पैसा कमाते हैं और खुशहालीमें रहते हैं। वे क्यों न अेक दिनके लिअे हरिजन-बस्तीमें जाकर रहें? वे अगर वहां जायें तो अुन्हें कय हो जायगी और अुनमें से कोअी तो

शायद मर भी जावेंगे। अैसी जगह अिन्सानोंको रखना, क्योंकि अुनका यह गुनाह है कि वे हरिजनोंके घर पैदा हुअे, बहुत बुरी बात है। यहां दिल्लीमें भी मैं हरिजनोंकी बस्तीमें गया हूं। वह भी बहुत खराब है। मगर अजमेर अुससे भी बदतर है। यह बड़ी शरमकी बात है। क्या अैसी शरमनाक बातें हम करते ही रहेंगे? हमने आजादी तो पाअी। लेकिन अुस आजादीकी तब तक कोअी कीमत नहीं, जब तक हम अिस तरहकी चीजें बन्द नहीं कर सकते। यह अेक दिनमें बन्द हो सकता है। क्या हम हरिजनोंको सूखी जगहमें नहीं रख सकते? वे मैला अुठानेका काम तो करें, लेकिन वे मैलेमें ही पड़े रहें अैसा तो नहीं हो सकता। हमारी तो आज अकल मारी गअी है। हमारे पास हृदय नहीं रहा और हम अीश्वरको भूल गये हैं। अिसीलिअे तो गुनाहके काम करते जाते हैं। और पीछे हम अेक-दूसरेका अैब निकालें, दूसरोंको दोष दें और खुद निर्दोष बनें, यह बड़ी खतरनाक बात है।

मीरपुरके दुःखी

अन्तमें अेक और बात कहना चाहता हूं, और वह है मीरपुरके बारेमें। अेक दफा तो मैंने थोड़ासा कहा भी था। मीरपुर काश्मीरमें है। अब वह हमलावरोंके हाथमें है। वहां हमारी काफी बहनें थीं। अुन्हें वे अुड़ा ले गये हैं। अुनमें बूढ़ी भी हैं और नौजवान भी। वे अुनके कब्जेमें पड़ी हैं। अुन्हें वे बेआबरू भी कर लेते हैं, अिसमें मेरे दिलमें कोअी शक नहीं। खाना भी अुन्हें बुरा दिया जाता है। चन्द बहनें तो पाकिस्तानके अिलाकेमें हैं — गुजरात जिलेमें झेलम तक शायद पहुंची होंगी।

मैं तो कहूंगा कि जो हमलावर हमला कर रहे हैं, अुनमें भी कुछ तो मर्यादा होनी चाहिये। मैं हमलावरोंसे कहता हूं कि आप अिस्लामको बिगाड़नेके लिअे यह काम कर रहे हैं और कहते यह हैं कि आजाद काश्मीरके लिअे कर रहे हैं। कोअी खानेके लिअे लूट-पाट करे, वह मैं समझ सकता हूं। लेकिन जो छोटी लड़कियां हैं, अुन्हें बेअिज्जत करना, अुन्हें खाने और पहननेको न देना, यह भी क्या आपको कुरान शरीफने सिखाया है? और पीछे पाकिस्तानमें जिन लड़कियोंको अुठाकर ले गये हैं, अुनके बारेमें मैं पाकिस्तानकी हुकूमतसे

मिन्नत करूंगा कि अिस तरहकी जो भी लड़कियां हैं, अुन्हें वापस कर दें और अपने घरोंको जाने दें।

बेचारे मीरपुरके लोग मेरे पास आये हैं। वे काफी तगड़े हैं और शरमिन्दा होते हैं। मुझे सुनाते हैं कि क्या वजह है कि हमारी अितनी बड़ी हुकूमत अितना-सा काम भी नहीं कर सकती? मैंने अुन्हें समझानेकी कोशिश तो की। जवाहरलालजी अिस बारेमें कोशिश कर रहे हैं और बहुत दुःखी हैं। लेकिन अुनके दुःखी होनेसे और अुनके कोशिश करनेसे भी क्या? जो लोग लुट गये हैं, ताराज हो गये हैं, जिन्होंने अपने रिश्तेदारोंको गंवा दिया है, अुनको कैसे सन्तोष दिलाया जाय? आज जो भाअी आया अुसके १५ आदमी वहां कतल हो गये हैं। अुसने कहा, अभी जो वहां पड़े हैं अुनका क्या हाल होनेवाला है? मैंने सोचा कि दुनियाके नामसे और अीश्वरके नामसे वहां जो हमलावर पड़े हैं, अुनसे और अुनके पीछे पाकिस्तानसे भी यह कहूं कि आप बिना किसीके मांगे अपने-आप शोहरतके साथ अुन बहनोंको वापस लौटा दें। अैसा करना आपका धर्म है। मैं अिस्लामको काफी जानता हूं और मैंने अुस बारेमें काफी पढ़ा भी है। अिस्लाम यह कभी नहीं सिखाता कि औरतोंको अुड़ा ले जाओ और अुन्हें अिस तरह रखो। वह धर्म नहीं, अधर्म है। वह शैतानकी पूजा है, अीश्वरकी नहीं।

१३८

२८-१-'४८

बहावलपुरके दोस्तोंसे

प्रार्थनाके बाद अपना भाषण शुरू करते हुअे गांधीजीने जिक्र किया कि बहावलपुरके कुछ भाअियोंकी शिकायत थी कि अुन्होंने मिलनेका समय मांगा था, पर अुन्हें समय नहीं दिया गया। गांधीजीने अुनके लिअे समय निकालनेका वचन दिया, और विश्वास दिलाया कि अुनके लिअे जो भी किया जा सकता है किया जा रहा है। अुन्होंने कहा कि डॉ० सुशीला नय्यर और लेसली क्रॉस साहब बहावलपुर चले गये हैं और नवाबने अुनकी पूरी सहायता करनेके लिअे कहा है।

राजधानीमें शान्ति

भगवानकी कृपासे यूनियनकी राजधानी दिल्लीमें तीनों जातियोंमें फिरसे शान्ति कायम हो गअी है। अिससे सारे हिन्दुस्तानमें हालत जरूर सुधरेगी।

दक्षिण अफ्रीकाका सत्याग्रह

दक्षिण अफ्रीकाका जिक्र करते हुअे अुन्होंने कहा — आप जानते हैं कि दक्षिण अफ्रीकामें हमारे लोग अपने हक़ोंके लिअे लड़ रहे हैं। यहां अिस तरह कोअी किसीके हक नहीं छीनता कि लोग कहीं जमीन न ले सकें, जहां रहना चाहते हों वहां रह न सकें। हरिजनोंके हमने जरूर अैसे हाल कर दिये हैं। पर बाकी हिन्दुस्तानमें अैसा कुछ है ही नहीं। लेकिन दक्षिण अफ्रीकामें तो अैसा है अुसका मैं गवाह हूं। अिसलिअे वे वहां हिन्दुस्तानका मान रखनेके लिअे और हिन्दुस्तानके हकोंके लिअे लड़ रहे हैं। बहुत तरीकोंसे वे लड़ सकते हैं। लेकिन वे तो सत्याग्रही होनेका दावा करते हैं। अिसलिअे सत्याग्रहकी लड़ाअी लड़ रहे हैं। अुनके तार भी आ जाते हैं। वे बिना परवानेके कहीं जा भी नहीं सकते — जैसे नेटाल, ट्रान्सवाल, हिल स्टेट, केप कॉलोनी वगैरामें अैसा सिलसिला रहा है। दक्षिण अफ्रीका अेक खंड जैसा है; कोअी छोटा-मोटा मुल्क नहीं है। नेटालसे अगर परवाना मिले तो वे ट्रान्सवाल जा सकते हैं, नहीं तो नहीं। तो अुन सबने कहा कि यह हमारा भी मुल्क है। क्यों हमारे अिधर अुधर जानेमें किसी तरहकी रुकावट हो? बहुतसे तो वहां चले भी गये, और मुझे कहना पड़ेगा कि अिस वक्त तो वहांकी हुकूमतने कुछ शराफत बताअी है। अुन्हें अभी तक पकड़ा नहीं। ट्रान्सवालका जो पहला शहर आता है फाकसेस वहां वे चले गये हैं। आगे चलकर अुन्हें पकड़ सकते हैं, पर अभी तक पकड़ा नहीं है। हुकूमतके सिपाही तो वहां मौजूद थे, लेकिन वे सब देखते रहे और अुन्हें कुछ कहा नहीं। वहां अुन्हें मोटर भी खड़ी मिली, जिसमें बैठकर वे आगे चले गये। और वहां जलसा हुआ जिसमें अुनका स्वागत-सत्कार किया गया। मैंने सोचा कि अितनी खबर तो आपको दे दूं। यह बड़ी बहादुरीका काम है। वहां हिन्दुस्तानी छोटी

तादादमें हैं, लेकिन छोटी तादादमें रहते हुअे भी अगर सब हिन्दी सत्याग्रही बन जावें तो अुनकी जय ही है। कोअी रुकावट अुनके आगे नहीं ठहर सकती। लेकिन अैसा अभी तक बना तो नहीं है। जैसे यहां वैसे वहां सब तरहके लोग रहते हैं। वहां थोड़े हिन्दू भी हैं और मुसलमान भी। वे सब मिल-जुलकर यह काम करते हैं। वे जानते हैं कि अिसमें कमानेकी कोअी बात नहीं। और मैले आदमियोंसे तो यह लड़ाअी लड़ी भी नहीं जाती। वे जोहान्सबर्ग तक पहुंच तो गये हैं। लेकिन आखिर तक तो बचे नहीं रह सकते, अैसा मेरा खयाल है। अुन्हें चलते ही जाना है, आखिर तक जाना है, जब तक कि पकड़े न जावें। पकड़नेका वहांकी हुकूमतको हक है, क्योंकि सत्याग्रहमें यह चीज तो पड़ी ही है कि जब कानूनका भंग किया जाय तब अुन्हें पकड़ सकते हैं, और जेलके भीतर जाकर वे कानूनकी पाबन्दी करते हैं। मैं तो अितना ही कहूंगा कि हमारी तरफसे अुन्हें धन्यवाद मिलना ही चाहिये। और वह है। मैं जानता हूं कि अिस बारेमें दूसरी आवाज निकल ही नहीं सकती। वहांकी हुकूमतसे भी मैं कहता हूं कि अैसे जो लोग लड़ते हैं, अितनी शराफतसे लड़ते हैं, अुन्हें हलाक क्या करना है? अुनकी चीजको समझ लें और फिर आपसमें समझौता क्यों न कर लें? अैसा क्यों हो कि जिसकी सफेद चमड़ी है, वह काली चमड़ीवालेके साथ कुछ बहस नहीं कर सकता? या अगर वहांके हिन्दुस्तानियोंको सन्तोष देना है, अिन्साफ देना है, तो अुसके लिअे अुन्हें लड़ना क्यों पड़े? अगर हिन्दुस्तानी भी अुसी जगह रहें, तो अुन्हें (गोरोंको) कष्ट क्या हो सकता है? अुन्हें कोअी कष्ट नहीं होना चाहिये। दक्षिण अफ्रीकाकी हुकूमतको हिन्दुस्तानियोंके साथ सलाह-मशविरा करके सलूकसे रहना चाहिये और अुनको सन्तोष दिलाना चाहिये। आज हम भी आजाद हैं और वे भी आजाद हैं, और अेक ही हुकूमतके हिस्सेदारोंकी हैसियतसे रहते हैं। दक्षिण अफ्रीका भी अेक डोमिनियन है, अिण्डियन यूनियन भी अेक डोमिनियन है और पाकिस्तान भी अेक डोमिनियन है। तब सब भाअी-भाअी बनकर रहें, यह अुनके गर्भमें पड़ा है। अिससे अुलटे, वे आपस-आपसमें लड़ें और हिन्दुस्तानको अपना दुश्मन मानें — हिन्दु-

स्तानियोंको जब वहां शहरीके हक न मिलें, तो फिर वे दुश्मन नहीं तो और क्या हैं? —तो यह समझमें न आ सके अैसी चीज है। क्यों अैसा माना जाय कि जो काली चमड़ीवाले हैं वे निकम्मे हैं? अगर वे अुद्यम कर सकते हैं और थोड़े पैसेमें रह सकते हैं, तो वह क्या कोअी गुनाह है? लेकिन वह गुनाह बन गया है। अिसलिअे अिस सभाके मारफत मैं दक्षिण अफ्रीकाकी हुकूमतसे कहना चाहता हूं कि वह सही रास्ते पर चले। मैं भी वहां २० वर्ष तक रहा हूं। अिसलिअे मेरा भी वह मुल्क बन गया है, अैसा कह सकता हूं। यह सब कहना तो मुझे कल चाहिये था, लेकिन कह नहीं पाया।

मैसूरके मुसलमान

मैसूरके मुसलमानोंने कुछ दिन पहले तार भेजा था कि आपके अुपवासका यहां कुछ भी असर नहीं हुआ और मुसलमानोंको हलाक किया जा रहा है। अिस बारेमें मैंने कुछ कहा भी था। अुसके अुत्तरमें आज मैसूरके गृहमंत्रीका तार आया है, जिसमें पहले तारका खंडन किया है और बताया है कि मुसलमानोंके साथ अिन्साफ करनेकी पूरी कोशिश हो रही है। जैसे मैं सबसे कहता हूं वैसे मैसूरके मुसलमान भाअियोंसे कहूंगा कि वे किसी चीजके बारेमें अतिशयोक्ति न करें। अैसा करनेसे मेरे हाथ-पांव बंध जाते हैं और मैं किसी कामका नहीं रहता। मैं पहले भी कह चुका हूं और फिर मुसलमान भाअियोंसे कहता हूं कि वे किसी चीजको बढ़ाकर न कहें; अगर कर सकें तो कुछ कम ही करें। यही रास्ता है हिन्दू, मुसलमान और सिक्खोंके मिल-जुलकर और भाअी-भाअी बनकर रहनेका। अितना बूढ़ा हो गया हूं तो भी सारी दुनियामें दूसरा कोअी रास्ता मैंने नहीं पाया।

दाताओंसे दो शब्द

हमारे लोग अैसे भोले हैं कि डाकमें ही पैसे भेज देते हैं। मुझे अपने पिताके समयसे तजरबा है। अुनके पास कुछ जेवर था —अेक छोटासा मोती था, लेकिन कीमती था। अुन्होंने वह डाकसे भेज दिया। तबसे मैं जानता हूं कि अैसा नहीं करना चाहिये। अुसमें कोअी चोरी नहीं है, लेकिन खतरा तो अुठाना ही पड़ता है। कोअी डाकको खोल

ले, तो फिर मोती कोओी छिपा थोड़े ही रह सकता है? और पैसे तो अुन्हें फिर भी खरचने ही पड़े, क्योंकि अुसकी पहुंचका तार मंगवाया। तो मेरे पिताको अिस चीजका दुःख हुआ। लेकिन आज भी मेरे पिताके जैसे भोले आदमी हैं। वे समझ लेते हैं कि पैसे भेजने हैं, तो कौन अुन्हें बीचमें छुअेगा? आज तक तो खैर अैसे ही पैसे आते रहे हैं। आज तो अेक भाअीने अेक हजारसे अूपरके नोट डाकमें बन्द करके भेज दिये। अुसकी रजिस्ट्री भी नहीं कराअी और न बीमा। जो मामूली टिकट लिफाफे पर लगाते हैं सो लगाकर भेज दिये। आजकल तो लोग बहुत बिगड़ गये हैं। पैसा खा जाते हैं और रिश्वत भी लेते हैं। लेकिन ये नोट तो मेरे पास आ गये। यह अच्छी बात है। और हमारे पोस्ट आफिसके लिअे यह छोटी बात नहीं कि अिस तरह अितने पैसे सुरक्षित आ जाते हैं। वे देखना भी नहीं चाहते कि भीतर क्या है? जब वे मुझको सब कुछ सुरक्षित भेज देते हैं, तो दूसरोंको भी भेज देते होंगे। लेकिन पैसे भेजनेवालोंसे मुझे कहना है कि अुन्हें अिस तरहका खतरा नहीं अुठाना चाहिये, क्योंकि आखिर कुछ बदमाश तो रहते ही हैं। डाकको अगर कोअी खोल ले, तो मेरे और जिन हरिजनोंके लिअे अुन्होंने रुपये भेजे हैं अुनके क्या हाल होनेवाले हैं? और जो दान देनेवाले हैं अुनके क्या हाल होंगे? तो वे ठीक तरीकेसे रुपये भेजें। अुस पर जो खर्च हो सो काटकर भले अुतना कम भेजें। डाकखानेमें जो लोग काम करते हैं, अुन्हें तो मैं मुबारकबाद देता हूं कि वे अिस तरह काम करते हैं कि कोअी घूंस नहीं लेते। बाकी जो सब महकमे हैं वे भी अैसा ही करें। जो लोगोंका पैसा हो अुसकी हिफाजत करें। किसीसे रिश्वतका पैसा न लें, तो हम बहुत आगे बढ़ जाते हैं। अैसा लालच किसीको होना ही नहीं चाहिये और किसीके रास्तेमें रखना भी नहीं चाहिये। अिसलिअे मैं अिन दानियोंसे कहूंगा कि आप मनीआर्डर भेज दें। अुसमें कितने पैसे लगते हैं? अैसा भी न करें तो रजिस्टर्ड पोस्टसे भेज दें। अुसमें पैसा थोड़ा ही ज्यादा लगता है और खैरियतसे सब पहुंच जाता है। अैसा आप न करें कि मामूली डाकसे हजारोंके नोट भेज दें।

२९–१–'४८

कहनेकी चीजें तो काफी पड़ी हैं। आजके लिअे मैंने ६ चुनी हैं। १५ मिनटमें जितना कह सकूंगा कहूंगा। देखता हूं कि मुझे यहां आनेमें थोड़ी देर हो गअी है। वह होनी नहीं चाहिये थी।

बहावलपुरके लिअे डेप्युटेशन

सुशीलाबहन बहावलपुर गअी है। वहांके दुःखी लोगोंको देखने गअी है। दूसरा कोअी अधिकार तो है नहीं, न हो सकता था। फ्रेण्डस सर्विसके लेसली क्रॉस साहबके साथ वह गअी है। मैंने फ्रेण्डस यूनिटमें से किसीको भेजनेका सोचा था, ताकि वह वहांके लोगोंको देखे, मिले और मुझे सब हालात बता दे। अुस समय सुशीलाबहनके जानेकी बात नहीं थी। लेकिन जब अुसने सुना कि वहां पर सैकड़ों आदमी बीमार पड़े हैं, तो अुसने मुझे पूछा कि मैं भी जाअूं क्या? मुझे वह बहुत अच्छा लगा। वह नोआखालीमें काम करती थी, तबसे फ्रेण्डस यूनिटके साथ अुसका सम्पर्क था। वह आखिर कुशल डॉक्टर है और पंजाबके गुजरात अिलाकेकी है। अुसने भी काफी गंवाया है। क्योंकि अुसकी तो वहां काफी जायदाद है। फिर भी अुसके दिलमें कोअी जहर पैदा नहीं हुआ। वह गअी है, क्योंकि वह पंजाबी जानती है, हिन्दुस्तानी जानती है। अुर्दू और अंग्रेजी भी जानती है। वह क्रॉस साहबको मदद दे सकेगी। वहां जानेमें खतरा तो है। लेकिन अुसने कहा, मुझको क्या खतरा है? अैसे डरती तो नोआखाली क्यों जाती? पंजाबमें बहुत लोग मर गये हैं, बिलकुल मटियामेट हो गये हैं। लेकिन मेरा तो अैसा नहीं। खाना-पीना मिलता है, सब कुछ अीश्वर करता है। सो आप भेजेंगे और क्रॉस साहब ले जायेंगे, तो मैं वहांके लोगोंको देख लूंगी। मैंने क्रॉस साहबसे पूछा, सुशीलाको आपके साथ भेजूं क्या? वे खुश हो गये। कहने लगे, यह तो बहुत ही अच्छी बात है। मैं अुनके मारफत वहांके लोगोंसे अच्छी तरह बातचीत कर सकूंगा। फ्रेण्डसमें कोअी हिन्दुस्तानी जाननेवाला रहे, तो बड़ी भारी चीज हो जाती है। सुशीला बहन आवें, अुससे बेहतर क्या हो सकता है? क्रॉस साहब रेडक्रॉसके

हैं। रेडक्रॉसके माने यह थे कि लड़ाओके मरीजोंकी दवादारू करना। अब तो वे लोग दूसरा-तीसरा काम भी करते हैं। यँह सवाल कि डॉक्टर सुशीला क्रॉस साहबके साथ गओी है या क्रॉस साहब डॉक्टर सुशीलाके साथ गये हैं, जरा पेचीदा हो जाता है। मगर पेचीदा नहीं है। वे दोनों दोस्त हैं। सेवाभावसे गये हैं। पैसा कमानेकी तो बात ही नहीं। क्रॉस साहब मेरे मित्र हैं और सुशीला तो मेरी लड़की है। मैं अुसका बाप हूं। तो मैंने अुसे बड़ी करनेके लिअे नहीं भेजा। कोओी अैसा न सोचें कि वह तो डॉक्टर है और क्रॉस साहब दूसरे हैं। कौन अूंचा है कौन नीचा है, अैसा भेदभाव न करें। क्रॉस साहब औरत साथ हो तो अुसे आगे कर देते हैं। अपने आपको पीछे रखते हैं। मगर निस्स्वार्थ सेवामें अूंचे-नीचेका भेद नहीं होता। अगर कोओी भेद है तो क्रॉस साहब बड़े हैं। सुशीला अुनके साथ अुनकी मददके लिअे गओी है। वे दोनों आकर मुझे वहांके हाल बतावेंगे। मुझे नवाब साहबने लिखा है कि मुझे कओी लोग झूठी बातें भी लिख देते हैं, अुन्हें माननेका मेरा क्या अधिकार है? सो मैंने सोचा कि मुझे क्या करना चाहिये। और मैंने क्रॉस साहबको और सुशीलाबहनको बहावलपुर भेजा। वहांके मुसलमानोंका तार आ गया है कि वे वहां पहुंच गये हैं। वहांसे लौटेंगे तब मुझे सब सही हालात बता देंगे। तीन-चार दिनमें लौटनेवाले थे, मगर कुछ काम निकल आया होगा सो नहीं आये।

मैं अुनका सेवक हूं

अभी बन्नूके कुछ भाओी-बहन मेरे पास आ गये थे। शायद चालीस आदमी थे। वे परेशान तो थे, पर अैसी हालत नहीं थी कि चल न सकें। हां, किसीकी अंगुलीमें घाव लगे थे; कहीं कुछ था, कहीं कुछ था। अैसे थे। मैंने तो अुनका दर्शन ही किया और कहा कि जो कुछ कहना हो ब्रजकृष्णजीसे कह दें। लेकिन अितना समझ लें कि मैं अुन्हें भूला नहीं हूं। वे सब भले आदमी थे। अुनका गुस्सेसे भरा होना स्वाभाविक था, मगर वे मेरी बात मान गये। अेक भाओी थे। वे शरणार्थी थे या कौन थे, मैंने पूछा नहीं। अुन्होंने कहा — "तुमने बहुत खराबी कर दी है। क्या और करते ही जाओगे? अिससे बेहतर है कि जाओ।

बड़े महात्मा हो तो क्या हुआ? हमारा काम तो बिगाड़ते ही हो। तुम हमें छोड़ दो। हमें भूल जाओ। भागो।" मैंने पूछा, कहां जाऊं? पीछे अुन्होंने कहा, हिमालय जाओ। तो मैंने डांटा। वे मेरे जितने बुजुर्ग नहीं। वैसे तो बुजुर्ग हैं, तगड़े हैं, मेरे जैसे पांच-सात आदमियोंको चट कर सकते हैं। मैं तो महात्मा रहा। कमजोर शरीर। घबराहटमें पड़ जाअूं, तो मेरा क्या हाल होगा? तो मैंने हंसकर कहा, क्या मैं आपके कहनेसे जाअूं? किसकी बात सुनूं? कोअी कहता है यहीं रहो, कोअी कहता है जाओ। कोअी डांटता है, गाली देता है; कोअी तारीफ करता है। तो मैं क्या करूं? अीश्वर जो हुक्म करता है वही मैं करता हूं। आप कह सकते हैं, आप अीश्वरको नहीं मानते। तो कमसे कम अितना तो करें कि मुझे अपने दिलके अनुसार करने दें। आप कह सकते हैं कि अीश्वर तो हम हैं। तब परमेश्वर कहां जायगा? अीश्वर तो अेक है। हां, यह ठीक है कि पंच परमेश्वर है। मगर यह पंचका सवाल नहीं। दुःखीका बेली परमेश्वर है, लेकिन दुःखी खुद परमात्मा नहीं। जब मैं दावा करता हूं कि हरअेक स्त्री मेरी सगी बहन है, लड़की है, तब अुसका दुःख मेरा दुःख है। आप क्यों मानते हैं कि मैं आपका दुःख नहीं जानता, आपके दुःखमें हिस्सा नहीं लेता, हिन्दुओं और सिक्खोंका मैं दुश्मन हूं, और मुसलमानोंका दोस्त हूं? अिस भाअीने मुझे साफ साफ कह दिया। कोअी गाली देकर लिखते हैं, कोअी विवेकसे लिखते हैं कि हमें छोड़ दो, चाहे हम दोजखमें जायें। तुमको हमारी क्या पड़ी है? तुम भागो। लेकिन मैं किसीके कहनेसे कैसे भाग सकता हूं? किसीके कहनेसे मैं खिदमतगार नहीं बना। किसीके कहनेसे मिट नहीं सकता। अीश्वरकी अिच्छासे मैं जो हूं, बना हूं। अीश्वरको जो करना है करेगा। अीश्वर चाहे तो मुझे मार सकता है। मैं समझता हूं कि मैं अीश्वरकी बात मानता हूं। मैं हिमालय क्यों नहीं जाता? वहां रहना तो मुझे पसन्द पड़ेगा। अैसा नहीं कि वहां मुझे खाना-पीना-ओढ़ना नहीं मिलेगा — वहां जाकर शान्ति मिलेगी। मगर मैं अशान्तिमें से शान्ति चाहता हूं; नहीं तो अुस अशान्तिमें मर जाना चाहता हूं। मेरा हिमालय यहां है। आप सब हिमालय चलें, तो मुझको भी अपने साथ लेते चलें।

मेहनतकी रोटी

मेरे पास शिकायतें आती हैं—वे सही शिकायतें हैं—कि यहां जो शरणार्थी पड़े हैं, अुनको खाना देते हैं, पीना देते हैं, पहननेको देते हैं। जो हो सकता है सब करते हैं। लेकिन वे मेहनत नहीं करना चाहते, काम नहीं करना चाहते। जो अुन लोगोंकी खिदमत करते हैं, अुन्होंने लम्बी-चौड़ी शिकायत लिखकर दी है। अुसमें से मैं अितना ही कह देता हूं। मैंने तो कह दिया है कि अगर दुःख मिटाना चाहते हैं, दुःखमें से सुख निकालना चाहते हैं, दुःखमें भी हिन्दुस्तानकी सेवा करना चाहते हैं—अुसके साथ अपनी सेवा तो हो ही जाती है—तो दुःखियोंको काम तो करना ही चाहिये। दुःखीको अैसा हक नहीं कि वह काम न करे और मौज-शौक करे। गीतामें तो कहा है, यज्ञ करो और खाओ—यज्ञ करो और जो शेष रह जाता है अुसको खाओ। यह मेरे लिअे है और आपके लिअे नहीं है अैसा नहीं है—यह सबके लिअे है। जो दुःखी हैं अुनके लिअे भी है। अेक आदमी कुछ करे नहीं, बैठा रहे और खाये। यह चल नहीं सकता। करोड़पति भी काम न करे और खाये, तो वह निकम्मा है, पृथ्वी पर भार है। जिसके पास पैसा है वह भी मेहनत करके खाये तभी बनता है। हां, कोअी लाचारी है—पैर नहीं चलते, अंधा है, वृद्ध हो गया है, तो अलग बात है। लेकिन जो तगड़ा है वह क्यों न काम करे? जो कोअी जो काम कर सकते हैं सो करें। शिविरोंमें जो तगड़े लोग पड़े हैं, वे पाखाना भी अुठावें। चरखा चलावें। जो काम कर सकते हैं सो करें। जो लोग काम करना नहीं जानते, वे लड़कोंको सिखावें। अिस तरह काम लें। लेकिन कोअी कहे कि केम्ब्रिजमें जैसी पढ़ाअी होती थी वैसी करावें—मैं, मेरा बाबा केम्ब्रिजमें सीखे थे, लड़केको भी वहां भेजें, तो वह कैसे हो सकता है? मैं तो अितना ही कहूंगा कि जितने शरणार्थी हैं, वे काम करके खायें, अुन्हें काम करना ही चाहिये।

किसान

आज अेक सज्जन आये थे। अुनका नाम तो मैं भूल गया। अुन्होंने किसानोंकी बात की। मैंने कहा, मेरी चले तो हमारा गवर्नर-जनरल किसान होगा, हमारा बड़ा वजीर किसान होगा, सब कुछ किसान

होगा; क्योंकि यहांका राजा किसान है। मुझे बचपनसे सिखाया था — अेक कविता है: "हे किसान, तू बादशाह है।" किसान जमीनसे पैदा न करे, तो हम क्या खायेंगे? हिन्दुस्तानका सचमुच राजा तो वही है। लेकिन आज हम अुसे गुलाम बनाकर बैठे हैं। आज किसान क्या करे? अेम० अे० बने? बी० अे० बने? — अैसा किया तो किसान मिट जायगा। पीछे वह कुदाली नहीं चलायेगा। जो आदमी अपनी जमीनमें से पैदा करता है और खाता है, सो जनरल बने, प्रधान बने, तो हिन्दुस्तानकी शकल बदल जायेगी। आज जो सड़ा पड़ा है वह नहीं रहेगा।

मद्रासमें खुराककी तंगी

अन्तमें गांधीजीने कहा, मद्रासमें खुराककी तंगी है। मद्रास सरकारकी तरफसे दूत यह कहनेके लिअे श्री जयरामदासके पास आये थे कि वे अुस सूबेके लिअे अन्न देनेका बन्दोबस्त करें। मुझे मद्रासवालोंके अिस रुखसे दुःख होता है। मैं मद्रासके लोगोंको यह समझाना चाहता हूं कि वे अपने ही सूबेमें मूंगफली, नारियल और दूसरे खाद्य-पदार्थोंके रूपमें काफी खुराक पा सकते हैं। अुनके यहां मछली भी काफी हैं, जिन्हें अुनमें से ज्यादातर लोग खाते हैं। तब अुन्हें भीख मांगनेके लिअे बाहर निकलनेकी क्या जरूरत है? अुनका चावलका आग्रह रखना — वह भी पालिश किया हुआ चावल, जिसके सारे पोषक तत्त्व मर जाते हैं — या चावल न मिलने पर मजबूरीसे गेहूं मंजूर करना ठीक नहीं है। चावलके आटेमें वे मूंगफली या नारियलका आटा मिला सकते हैं और अिस तरह अकालको आनेसे रोक सकते हैं। अुन्हें जरूरत है आत्म-विश्वास और श्रद्धाकी। मद्रासियोंको मैं अच्छी तरहसे जानता हूं। दक्षिण अफ्रीकामें अुस प्रान्तके सभी भाषावाले हिस्सोंके लोग मेरे साथ थे। सत्याग्रह-कूचके वक्त अुन्हें रोजानाके राशनमें सिर्फ डेढ़ पौंड रोटी और अेक औंस शक्कर दी जाती थी। मगर जहां कहीं अुन्होंने रातको डेरा डाला, वहां जंगलकी घासमें से खाने लायक चीजें चुनकर और मजेसे गाते हुअे अुन्हें पकाकर अुन्होंने मुझे अचरजमें डाल दिया। अैसे सूझ-बूझवाले लोग कभी लाचारी कैसे महसूस कर सकते हैं? यह सच है कि हम सब मजदूर थे। तो अीमानदारीसे काम करनेमें ही हमारी मुक्ति और हमारी सभी आवश्यक जरूरतोंकी पूर्ति भरी है।

सूची

अकबर हैदरी, सर ११९
अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी १५२–५३, १६७–६८, १९१, २३५
अखिल भारत चरखा-संघ १४६, २३२, २४३–४४, २७२
अजमलखां, हकीम ४०, १७१, २८३, २९१
अजमेर २४९;–के हरिजन ३७८–७९
अन्सारी, डॉ० १०, ४३, १७१, २८३
अफ्रीका –का सत्याग्रह ३८१–८२; –दक्षिण ४९; ९२–९३, ११०, १७२–७६, २००, २६५; –पूर्व ९३, २६३–६४
अबुल कलाम आजाद, मौलाना १५७, २७३, ३१७, ३५३
अमतुस्सलामबहन ७६
अरविन्द, ॠषि ११९
अलीभाओी १७०, २५१
अहमदाबाद २१५, ३४१
आगाखान महल १६७
आचार्य कृपालानी १८६
आजाद हिन्द फौज १२९
आन्ध्र ३२४, ३३०
आभा गांधी ३२
आर्यनायकम् २५४
आशादेवी २५४
आसफअली साहब १३
अिंग्लैण्ड ४७, १५६, २८१
अिकबाल १२०
अिन्दिरा गांधी २७
अिमाम साहब ७२
अिरविन, लॉर्ड ९९
अिस्फहानी साहब १७२
अिस्लाम ८, १९१, २७०, ३२९
अीरान ८५, २२८; –और हिन्दुस्तान ३२२
अेमरी, मि० २६
अेशियाटिक लेबर कान्फरेन्स १०८
अेस० पी० बर्नार्ड, डॉ० १७४
ऑरेंजिया १७४

कनु गांधी ७६
कम्युनिस्ट पार्टी ३१२
कलकत्ता ४५, १०७, २४९, ३२६; –की शान्तिसेना ११४
कस्तूरबा-ट्रस्ट १०८, २३२, २४१–४२
कांग्रेस ३०, ७०, १४६, १६६–६७, २०५, २५४–५५, २८१–८२, ३२५; –प्रेसिडेण्ट १३; –वर्किंग कमेटी ३८, ५३, १६३, १६५
काकासाहब ९६
काठियावाड़ ३६, १६०, २०८–०९, २४९, २९९
काश्मीर ११३, १२०–२१, १२९–३०, १८३–८४, २०७–०८, २८०–८३, ३०६–०७
काश्मीर-फ्रीडम-लीग ३५९
किदवंअी साहब ९८
कुरान शरीफ १७, ९९, १२१–२२, १४९, २३०
कुरुक्षेत्र ६१, ९४, १५२, १९४–९५
कृष्णादेवी ९४
केप कॉलोनी ३८१
केसी, मि० १४५
कोंडा वेंकटप्पैया गारू ३३०
खरे, पंडित ९६
खादी प्रतिष्ठान ७६, १८९
खानबन्धु ७
खिलाफत आन्दोलन १९८
ख्वाजा साहब ९०

गंगाबहन २५१
गजनफरअली, राजा २३७
गुजरात ७९, २५१
गुड़गांव १५८, १९१, २६७
गुरु अर्जुनदेव ४३, ५६
गुरु गोविन्दसिंह ५६, २७९, ३४९
गुरु ग्रंथसाहब ६–७, ४३, १८२, २७९
गुरुदेव (रवीन्द्रनाथ ठाकुर) १२९, ३२३, ३३४
गुरु नानक ७, ३९, २०९
गोपीचन्द भार्गव, डॉ० १५८, २२१–२२, २६७
गोसेवा-संघ २७२
गोस्वामीजी १०६
ग्रामोद्योग-संघ २३२, २७१–७२

चरखा-जयन्ती ७९
चर्चिल, मि० ४६-४९, ६४-६५, १४२

जगजीवनराम २२६
जगदीशन् १०८–०९

जन्दावस्ता ३३, २४६, ३२३
जफरुल्ला साहब १७२
जमनालालजी १४६
जम्मू १६२, २०७, २८१
जयरामदास दौलतराम ३८९
जलियांवाला बाग २५
जवाहरलाल नेहरू ४, ५३, ७२, १००, १६३, २०६-०७, २२५, २६३–६४, ३४१, ३५८; –का अुदाहरण ३६३
जाकिरहुसैन, डॉ० ५–६, २५४
जामसाहब २११
जामिया मिलिया ५–६
जाहिदहुसैन साहब ३५३
जिन्ना, कायदे आजम ४, १३९, १५६–५७, १६३, २९५
जीवराज महेता, डॉ० ४३, १०८, ११०
जूनागढ़ ३६, ११३, १५९–६१, २०८–०९, २९९
जोहान्संबर्ग २७३, ३८२

ट्रान्सवाल २७३, ३०४, ३८१
ट्रूमेन, प्रेसिडेण्ट ६८–६९

ठक्कर बापा १३८
ठाकुरदत्त, पंडित ४०
ठाकुर साहब (राजकोट) २१६

'डॉन' २०८–०९

ढेबरभाओी १६३, २१६, २२८

तालीमी संघ २३२, २४३, २५४, २७२
तिबिया कॉलेज ४०, २८३, २९०
तेजबहादुर सप्रू, सर ८७, २६४
दातारसिंह, सर २६९
दिलीपकुमार राय ११९, १२४
दीनशा महेता, डॉ० १०, ४२
देशबन्धु गुप्ता ८२

नओ तालीम २५३–५४
नटेसनजी २६६
नन्दिता कृपालानी १२९
नबाब–भोपाल ३५५
निजाम हैदराबाद १६१
नियोगी, श्री ११७
नेटाल अिण्डियन कांग्रेस १७४
नेशनल कान्फरेन्स १८३
नोआखाली ७६, १२४, २७७, ३३४

पंजा साहब २१
पटियाला २८३–८४
पांडिचेरी आश्रम ११९
पाकिस्तान ४, १४, २२, २४, २६, २८, १०७, १४७, १९३, २०२, २१९, २२५, २६७,

२७७, ३३६–३७, ३४३; –पश्चिम १३२, १३७; –पूर्व ९०, २५८
पानीपत १५२–५३, २७१
प्यारेलाल ७६, २७७–७८, ३३५
प्रिवी कौंसिल १८१–८२, २००

फ्रेण्डस सर्विस ६१

बचित्तरसिंह ५३
बर्मा १७५, २२९–३०
बाअिबल ३३, २६७
बाबा खड़कसिंह ३९, ५६
बारामूला १६३, १८३
बिड़ला-बन्धु ३, १०६
ब्रजकृष्णजी १३६
बी० सी० राय, डॉ० ४३
ब्रिटिश कामन-वेल्थ ४७–४९, १७४–७५

भारत-सेवक-समिति ८२
भूतो साहब १५६, १६३

मगनलाल गांधी ९६–९७
मण्डल साहब ७९
मथाअी, डॉ० २६८
मद्रास १०९, २७३, ३८९
मनु गांधी ३२
मनोहर दीवान १०७
महरोलीका अुर्स ३७०, ३७६–७७
महादेवभाअी देसाअी १६७
महारोगी सेवा मंडल १०८
माअुन्टबैटन, लॉर्ड १५६
माअुन्टबैटन, लेडी १५२
मारवाड़ी व्यापारी-मंडल २२९
मीर मकबुल शेरवानी १८३–८४
मीराबहन १६७, २८७
मीराबाअी १५६, २७०
मुस्लिम चेम्बर ऑफ कॉमर्स २२९
मुस्लिम लीग १५६, २०२, २७३, २८१, ३३३
मृदुलाबहन २३७, ३३६, ३४३
मेकडोनल्ड अेवार्ड ३४५
मैसूर ८८–८९, ३८३

यरवडा जेल १४६, ३४५
युक्तप्रांत मुस्लिम शान्ति-मिशन २४७
यूरोपियन व्यापारी-मंडल २२९

रतलाम –के महाराजा ११४; –में हरिजन सुधार ११४–१५
रंधावा साहब २८७
राजकुमारी अमृतकुंवर ३, १०८, ११०, १५७
राजकोट १५६, २१५
राजेन्द्रप्रसाद, डॉ० ६५, १३२, १४५–४६, १८८, २६९; –राष्ट्रपति ३५३

रामपुर (स्टेट) १७०–७१
रामभजदत्त, पंडित ९२
राममनोहर लोहिया १४६
रामस्वामी मुदालियर ८८
रामेश्वरी नेहरू २३७
रावलपिण्डी ३३, १०६
राष्ट्रीय स्वयंसेवक-संघ १०, १७१–७२, २२६, ३५३
रिचार्ड साआीमोण्डस ६१
रुद्र, प्रिंसिपाल १०
रेडक्रॉस सोसायटी ६१

लंका ३७, २३०
लखनअू मुस्लिम कान्फरेन्स ३१७
लायलपुर २३२, २३५–३६
लाला लाजपतराय २६५
लाला श्रीराम १४५
लियाकतअली साहब ४, २०७–०९, २३१
लेसली क्रॉस साहब ३८०, ३८५-८६

वर्धा १०७, ३७१
विजयलक्ष्मी पंडित १७२, २२६–२७
विनोबा १०७
वेवल केंटीन ६, ३०३

शामळदास गांधी १६३, २०८–०९, २२८
शाहनवाज, जनरल ३५३
शेख अब्दुल्ला (शेरे-काश्मीर) ९८, १३०, १८३–८४, २०७–०८, २९२, ३५९
शौकदुल्ला, डॉ० ११
श्रीनिवास शास्त्री १०८

संतसिंह, सरदार १९९–२००
संतोखसिंह ५६–५७
संयुक्त राष्ट्रसंघ ८०, १७२, २२६–२७, ३०५–०६, ३४२–४३
सतीशचन्द्र दासगुप्त १८९
समाजवाद ६४
समाजवादी पार्टी १४५–४६, ३११–१२
सरकार –अंग्रेजी ४८, २४९; –दक्षिण अफ्रीका ३८२; –पश्चिम पंजाब ९; –पाकिस्तान ४, १२,१६, ३६; ५१, ११३, १२०, १६१, १९४, २७७, २८२, २९३, ३७१; –पूर्व अफ्रीका २६४; –हिन्दुस्तानी संघ ४, १२, ३६, ५१–५२, १२९–३०, १३९, १५९–६१, १८०, २८२, २९२, ३०२

सरदार वल्लभभाओी पटेल ३, ७२, १०४, १३८, २०६-०९, २४१–४२, ३४०–४२
सरोजिनी नायडू १६७
साने गुरुजी १४०
साबरमती आश्रम ७२, ९६
सासून अस्पताल ११९
सिंध ४०, १९०, २३९, २५५, २९५, ३१५
'सिविल अेण्ड मिलिटरी गजट' २५७
सुचेता कृपालानी १८५
सुब्बालक्ष्मी २३४
सुभाष बोस १२९, १४३, ३६५-६६
सुवर्णसिंह, सरदार २२१–२२
सुशीला नय्यर, डॉ० ४३, ९१, १०८, ३८०, ३८५–८६
सुहरावर्दी साहब ९०, ३३५
सेवाग्राम २३२
सोनीपत १९३
सोमनाथ मंदिरका जीर्णोद्धार २११
'स्टेट्समैन' २७७
स्मट्स, जनरल २२७

हजरत अुमर २८०
हजरत मुहम्मद २७४
हरिजन-सेवक-संघ १५८, १९७, २७२
हार्डिंज लायब्रेरीकी सभा २८८
हारेस अेलेक्जेण्डर, प्रो० ६१
हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन २६६
'हिन्दुस्तान टाअिम्स' २५६
हिन्दू धर्म ४४, ८०, ११३, १९१, २९३, ३२९, ३६०
हिन्दू महासभा १७१–७२, २१७, २७५
हैलीफैक्स, लॉर्ड ९९

सर्वोदय

लेखक : **गांधीजी**

अिस पुस्तिकाकी रचना प्रसिद्ध अंग्रेज लेखक जॉन रस्किनकी पुस्तक 'अन्टु दिस लास्ट' के आधार पर की गअी है, जिसने गांधीजीके जीवनमें तत्काल महत्त्वका रचनात्मक परिवर्तन कराया था। अिसमें बताया गया है कि हमारा ध्येय अधिक लोगोंका अुदय, सुख, कल्याण करना नहीं, परन्तु सब लोगोंका अुदय और कल्याण करना होना चाहिये। यह ध्येय किस तरह सिद्ध किया जा सकता है, अिसकी पुस्तकमें स्पष्ट चर्चा की गअी है। गांधीजीके सर्वोदयके आदर्शको माननेवालों और अुस पर अमल करनेकी अिच्छा रखनेवालोंको यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिये।

कीमत ०.३५ डाकखर्च ०.१३

हिन्द स्वराज्य

लेखक : **गांधीजी**

गांधीजीके संपूर्ण जीवन-कार्यमें जो श्रद्धा काम करती रही, वह सारी 'हिन्द स्वराज्य' में हमें मिलती है। अतः गांधीजीके विचार-सागरमें अिस छोटीसी पुस्तकका असाधारण महत्त्व है। यह पुस्तक द्वेषधर्मके स्थान पर प्रेमधर्म सिखाती है, हिंसाकी जगह आत्म-बलिदानको रखती है और पशुबलसे टक्कर लेनेके लिअे आत्मबलको खड़ा करती है। भारतीय जीवनमें अिस पुस्तकका स्थान सदा अमर रहनेवाला है।

कीमत ०.७० डाकखर्च ०. २०

188